

श्री महावीर ग्रन्थमाला—द्वितीय पुष्प

★ प्रशस्ति—संग्रह ★

प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
जयपुर



(आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश
एवं हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक-
प्रशस्तियों का अपूर्व संग्रह)

★

सम्पादक—

श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री

प्रकाशक:—

बन्धीचन्द गंगवाल

मंत्री—

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी

महावीर पार्क रोड

जयपुर

प्रथमावृत्ति

४०० प्रति


श्रावण वीर निर्माण सं० २४७६

चि० सं० २००६०

अगस्त १९५०

मूल्य

छह रुपया



पुस्तक — प्राप्ति स्थान

१—मंत्री कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड जयपुर (राजस्थान)

२—क्षेत्र कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी [जिला जयपुर]

8637




मुद्रक—

भंवरलाल जैन न्यायनीर्थ,

श्री वीग प्रेम,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर।



दुःख शब्द

—:०—

यह लिखते हुये अत्यधिक दुःख एवं वेदना होती है कि आज भा० रामचन्द्रजी ग्विन्दूका मन्त्री अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी इस संसार में नहीं रहे । यदि वे होते तो वे ही इस पुस्तक के प्रकाशक बनते । इस प्रशस्ति-संग्रह को शीघ्र प्रकाशित देखने की उनकी अतिशय उत्कंठा थी । लेकिन काल के सामने किसी की भी नहीं चली, यही सोच कर सन्तोष कर लेना पड़ता है । श्री ग्विन्दूकाजी के हृदय में साहित्य प्रकाशन की कितनी प्रबल उन्मत्ता थी-यह उनके प्रकाशकीय वक्तव्य से अन्धरी तरह जाना जा सकता है । राजस्थान के जैन भण्डारों की विस्तृत सूची बनाने के बृहद् कार्य को प्रारम्भ तो वे कर गये; लेकिन दुःख है कि वे इसे पूर्ण नहीं देख सके । अब हमें साहित्य प्रकाशन के इस पवित्र कार्य को और भी तेजी के साथ करना है जिससे उनकी स्वर्गीय आत्मा को भी शान्ति मिल सके । मैं आशा करता हूं मुझे समाज का अधिक से अधिक सहयोग मिलेगा जिससे राजस्थान के अज्ञात अवस्था में पड़े हुये साहित्य को प्रकाश में लाया जा सके ।

बधीचन्द गंगवाल

जयपुर

मंत्री—प्रबन्ध कारिणी कमेटी

ता० ३१-७-५०

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषतः जयपुर प्रान्त मे दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान है, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की वाट देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किय जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय मे काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज मे कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त ५० अख्यराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारंभ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व स-पाठक अश्रेणी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहव मुख्तार देवबंद वालों से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी मे लाने तथा वही बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा-ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दरजा

मानती है, नित नये मन्दिर तथा नयी प्रतिमाओं का निर्माण कराती हैं और लाखों रुपया मेले प्रतिष्ठादि कार्यों मे प्रतिवर्ष व्यय करती है, उस समाज के लिये किसी एक ग्रंथ की १००० कापी भी नहीं खरीद सकना कितनी लज्जा की बात है। इस तरफ समाज का लक्ष्य होना ही चाहिये। यदि नये प्रकाशित ग्रन्होने वाले थों की १००० प्रतियों मे से ५०० भी ग्रन्थ के छपते ही विक्रि जावें तो भी बहुत से ग्रन्थों का उद्धार हो सकता है इसलिये समाज से मेरी नम्र प्रार्थना है कि जो भी ग्रन्थ प्रकाशित हों उसकी एक एक कापी हर एक शास्त्र भण्डार तथा पचायती मन्दिरों मे अवश्य विराजमान करे — जैन धर्म की स्थिरता एवं उन्नति का यह सबसे बडा साधन है। आशा है कि हमारी धर्मप्राण समान इस तरफ अवश्य ध्यान दंगी और साहित्य प्रचार के पवित्र कार्य मे सहयोग देकर साहित्य सेवियों का उत्साह बढ़ावेगी

जयपुर
ता० १-६-५०

विनीत
रामचन्द्र खिन्दूका
मत्री प्र० का० कमेटी
दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

प्रस्तावना

प्राचीन काल में मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पत्रों (ताम्रपत्र व ताडपत्र) तथा कागजों पर हाथ से लिख लिख कर ही अपने साहित्य एवं ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत में सैकड़ों एवं हजारों विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगों को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के इस युग में शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एवं गांव में मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यों ने ज्ञान के चार भेदों में शास्त्रज्ञान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन में उतारा। जिस तरह मन्दिरों को बनवाने एवं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाने में पुण्यलाभ वतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारों को भेंट करने में भी कम पुण्यलाभ नहीं वतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं में रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यों के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमें प्रत्येक मन्दिर में शास्त्रभण्डार के दर्शन होते हैं अन्यथा हजारों वर्षों से राध्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा में नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यों के इस उपदेश को अन्तरशः पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुत भाग इस पुण्य कार्य में भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने में साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रों की प्रतिलिपियां करवाकर उसका अत्याधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकांश अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एवं भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तियां इस सभ्य में दी गई हैं। एक तो वे जो स्वयं कवि अथवा ग्रन्थकर्ता द्वारा लिखी गयी हैं तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी हैं। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहां के शासक का परिचय आदि दिये हुये होते हैं। लेखक प्रशस्ति में सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहां के शासक का नाम, उसके पश्चात् भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, इसके पश्चात् लिपि करवाने वाले का विस्तृत वंश परिचय, लिपि किस निमित्त से करायी गयी और अन्त में लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति में निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्ता जब साधु अथवा भट्टारक होते हैं तो वे अपना वंश परिचय नहीं लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते हैं उसका ही परिचय लिखते हैं। संस्कृत ग्रन्थों को अधिकांश ग्रन्थ प्रशस्तियां इसी

प्रकार की हैं। यही नहीं किन्तु इनके लेखकों ने श्रावकों के अनुरोध का भी बहुत कम उल्लेख किया है। इस दिशा में अपभ्रंश ग्रन्थों की प्रशस्तियां बड़े महत्त्व की हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में कवियों अथवा ग्रन्थकर्त्ताओं ने अपने परिचय में भी अधिक उन श्रावकों का परिचय लिखा है जिनके अनुरोध से उन्होंने ग्रन्थ का निर्माण किया था। उदाहरणार्थ महाकवि श्रीधर ने अपने पार्श्वनाथ चरित्र में श्रावक नट्टल साहू का जो सुन्दर वर्णन लिखा है वह पठनीय है। श्रीधर ने ही नहीं किन्तु महाकवि पुष्पदन्त वीर नयनन्दि, श्रीचन्द्र, यशःकीर्ति, धनपाल, रघु, माणिक्यराज आदि सभी ने श्रावकों का बड़ा ही सुन्दर परिचय लिखा है। इस प्रकार हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियां भी कम महत्त्व की नहीं हैं। अधिकतर प्रशस्तियों में कवियों और लेखकों ने अपना अच्छा परिचय लिखा है। हिन्दी और अपभ्रंश भाषा में ग्रन्थ समाप्ति का भी समय प्रायः सभी लेखकों ने दिया है।

इन सबके अतिरिक्त ग्रन्थ प्रशस्तियों में ग्रन्थकारों ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों, लेखकों का भी नामोल्लेख किया है जो बड़े महत्त्व का है। इन पूर्ववर्ती आचार्य-लेखकों का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थ में कम एवं अपभ्रंश साहित्य में अधिक हुआ है। संस्कृत ग्रन्थों में पूर्ववर्ती आचार्यों का उल्लेख करने वालों में ज्ञानभूषण, नेमिदत्त एवं श्रुतसागर आदि प्रमुख हैं तथा अपभ्रंश साहित्य में नयनन्दि, श्रीचन्द्र, हरिपण, कनकामर तथा धनपाल आदि प्रमुख हैं। महाकवि धनपाल ने तो नामोल्लेख के अतिरिक्त उन आचार्यों की कृतियों का भी उल्लेख किया है। महाकवि नयनन्दि ने अपने मकलविधि निधान काव्य में जैनतर विद्वानों के नामों का भी उल्लेख किया है जो इतिहास की दृष्टि में बड़े महत्त्व की वस्तु है। जैनतर विद्वानों के नामों में बररुचि, चामन कालिदास, मयूर, श्रीहर्ष, शेरर, परांजलि आदि प्रमुख हैं। संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में किसी किसी ग्रन्थकर्त्ता ने अपनी अन्य २ कृतियों का भी उल्लेख किया है और इस दिशा में भट्टारक शुभचन्द्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

इस सग्रह में केवल आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में उपलब्ध शास्त्रों की प्रशस्तियों का ही संग्रह है। भण्डार में सभी प्रतियां कागज पर ही लिखी हुई हैं। सन् १३६१ में लिखित प्रति भण्डार में सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति है। इस भण्डार के शास्त्रों की प्रतिलिपियां भारत के प्रायः सभी ग्राम व नगरों में लिखी गयी हैं और फिर वहां से इस भण्डार को भेंट स्वरूप दी गयी हैं। दक्षिण में बीजवाड़ा तथा सिकन्दराबाद, उत्तर में लाहौर तथा मुल्तान, पूर्व में ढाका और पश्चिम में गुजरात आदि प्रान्त एवं नगरों में लिखित प्रतियों का भण्डार में संग्रह है। इससे इस भण्डार की महत्ता को काफी अच्छी तरह से समझा जा सकता है। साधारण रूप से दिल्ली आगरा, नागपुर, ग्वाल्जियर तथा जयपुर प्रान्त में लिपिवद्ध प्रतियों का संग्रह है। बैलगाड़ियों के इस युग में तथा मुगलों के कठोर शासन में भी श्रद्धालु श्रावकों ने जैन साहित्य की कितनी वृद्धि की तथा उसे सुरक्षित रखा यह हमारे लिये किनने गौरव की बात है।

भाषा के अनुसार प्रशस्तियों को तीन भागों में बांटा गया है प्रारम्भ में संस्कृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं, तत्पश्चात् प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा की प्रशस्तियां आती हैं तथा अन्त में हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संग्रह है। ग्रन्थ प्रशान्ति के साथ लेखक प्रशान्ति भी लगा दी गयी है जिससे ग्रन्थ की कितनी प्रतियां कब और कहाँ कहां हुई इस परिचय के साथ २ ग्रन्थ निर्माण के समय का भी अनुमान लगाया जा

सकता है। अब तीनों भागों का संचिप परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड़ कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सकलकीर्ति, शुभचन्द्र, सकलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोमकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आधार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने साधु अवस्था धारण करने के पश्चात् ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी साधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एवं कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

प्राकृत अपभ्रंश-विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जैनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जैनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्रायः सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदत्त, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द्र, हरिषेण, अमरकीर्ति, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रङ्गु, माणिक्यराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इसके पश्चात् भी रङ्गु, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्यराज ने १६वीं शताब्दी तक इस भाषा में खूब साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्रायः सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उस समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तियां प्रायः सभी विषय एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विशद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे इसलिये इन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी अच्छा परिचय लिखा है। आमेरशाह भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे आगे है। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य

भण्डारों में अभी तक नहीं मिली है अथवा जिनको भारत में एक दो प्रतियाँ ही हैं। इनमें सकलविधि विधान (नयनदि) बाहुबलि चरित्र (धनपाल) तथा परमेश्वर प्रकाशसार (श्रुतकीर्ति)—आदि उल्लेखनीय हैं। भण्डार में प्राकृत साहित्य तो काफी मात्रा में है किन्तु प्राकृत ग्रन्थों की प्रशान्तिया बहुत ही कम है—इसीलिये इनका अधिक सग्रह नहीं दिया जा सका।

हिन्दी विभाग—

हिन्दी भाषा की उन पुस्तकों की प्रशान्तियों का सग्रह दिया गया है। १५वीं शताब्दी से पूर्व की अठारह से दोगे रचना नहीं है। भट्टारक मरुलकीर्ति द्वारा निर्मित 'आराधनाभार प्रतियोध' प्रशस्ति संग्रह में हिन्दी की सबसे पुरानी रचना है। १६वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में जिनदास भट्टारक ज्ञानभूषण, धर्मदास चतुष्पल एवं ठन्डुरानी की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में धर्मोपदेश, श्रावकाचार (धर्मदास) तथा पंचेन्द्रिण कोल (ठन्डुरानी) दो रचनायें भाषा और गैली की दृष्टि से भी उत्तम हैं। १७वीं शताब्दी में पद्य के साथ गद्य के भी दर्शन होते हैं। पाडे राजमल्ल कृत समयसार भाषा की रचना संग्रह १६६० के आस पास हुई थी। इस रचना में हमें आज से ४०० वर्ष पूर्व की हिन्दी गद्यगैली के दर्शन होते हैं। अजयराज कृत चतुर्दशगुणस्थानचर्चा आदि कृतियाँ भी इसी शताब्दी की रचनायें हैं। १७वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में ब्रह्म रायमल्ल बनारसीदास, रूपचन्द्र, त्रिभुवनदास, कुसुमचन्द्र आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों की कृतियाँ सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। १८वीं शताब्दी में गद्य साहित्य खूब लिखा गया। ऐमा मतूस पड़ता है कि जन साधारण में गद्य की ओर रुचि बढ़ रही थी। गद्य लेखकों में पाडे रूपचन्द्र, हेमराज, दीपचन्द्र कासलीवाल आदि हैं। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद ही नहीं किया, किन्तु दीपचन्द्रजी ने तो स्वतन्त्र रचनायें भी लिखीं। इसी प्रकार इस शताब्दी में पद्य साहित्य में भी उत्कृष्ट रचनायें मिलती हैं। इनमें भैरव्या भगवतीदास एवं भूधरदास आदि की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इसके आगे की रचनायें भण्डार में बहुत ही कम हैं तथा उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं है।

भट्टारक इतिहास—

जैन साहित्य के निर्माण में भट्टारकों का प्रमुख हाथ रहा है। प्राचीन काल में इनका अधिकांश समय साहित्य निर्माण में ही व्यतीत होता था। एक एक भट्टारक की अधीनता में बहुत से गिण्य रहा करते थे। इनका कार्य पठन पाठन के अतिरिक्त ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ करना भी होता था। भट्टारक गण श्रावकों को उत्साहित एवं प्रेरित किया करते थे जिससे श्रावकगण प्रायः व्रतविधान समाप्त करने पर अथवा अन्य समय पर ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ करवा कर शास्त्र भण्डारों को भेंट करते थे। जब कोई भट्टारक नवीन रचना का निर्माण करते तब तो उसमें अपने से पूर्व के प्रायः सभी प्रमुख भट्टारकों का परिचय लिखते थे। यही नहीं, किन्तु जब उनके शिष्य भी किसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि करते तब भी अपने गुरु भट्टारक की परम्परा का उल्लेख करते थे। प्रशस्ति-संग्रह में इस सम्बन्ध में काफी साहित्य मिलता

है। संप्रह में अधिकांश प्रशस्तियां एवं लेखक-प्रशस्तियां आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय में होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती है। यद्यपि इनमें भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है, उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्त्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्त्ति के सभी पट्टधर शिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त सेनगण, पुष्करगण एवं विन्नागण में होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

जैन समाज की प्रमुख जातियां—

उत्तर भारत में खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रक्षा एवं वृद्धि में विशेष हाथ रहा है। राजस्थान में प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहां के साहित्य निर्माण एवं प्रचार का अधिकांश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों में व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल में अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीधर ने १२वीं शताब्दी की रचना में जिस नट्टल साह की प्रशंसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंचाल, सिंधु, गौड़ आदि सभी देशों में व्याप्त था। महा पंडित रड्धू ने अपनी अधिकांश रचनायें इसी जाति में उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनों जातियों के अतिरिक्त बघेरवाल, श्रीमाल, पुरवाल, लमेचू, जैमवाल आदि जातियों में उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेट दिया हुआ साहित्य भी काफी संख्या में मिलता है। इसी प्रकार इक्ष्वाकु, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वंश के एवं कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-संप्रह में आये हुये आचार्य-लेखकों एवं कवियों का अति संक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जा रहा है—

संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सुविख्यात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यों में आप अग्रगण्य हैं। आपका जीवन के सम्वत्स में अनेक कहानियां प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल में आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे अजेग एवं उत्कर्षमय बना दिया। आपने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी राजवार्तिक, अष्टशती, न्यायविनिश्चयालंकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।

आप नवीं शताब्दी के महा विद्वान् थे।

२. अपिनिगति—परमारग्य के राजाओं ने सम्मानित विद्वानों में इनका विशेष स्थान माना जाता है। ये माधुरसंघ के आचार्य थे तथा नावम्बेन के गिण्य थे। इन्होंने मुभापिनरत्नमोह (१०५०), धर्मपरीक्षा (१०७०) पंचसंप्रह (१०७३), व्यासनाचार, नामाधिकार, भाषनादात्रिशिका एवं योगमार प्राकृत आदि ग्रन्थों की रचना की है। इनकी भाषा काफी प्रौढ़ एवं उच्चकोटि की है।

३. आशाधर—ये मूल निवासी साइलगाह थे लेकिन महाबुद्धिन गौरी के आक्रमणों से व्रत होकर वारा नगरी में आकर रहने लगे थे। ये द्वयेरगल जति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम सल्लक्षण, माता का नाम श्री रत्नी, पत्नी का नाम सरावनी एवं पुत्र का नाम छाहड था। आशाधर जीवन भर गृहस्थ रहे और इसी-अवस्था में रह कर उन्होंने अपरिणित साहित्य का निर्माण किया। इनका काव्य, न्याय, सिद्धान्त, अलंकार, योगशास्त्र एवं वैद्यक आदि सभी विषयों पर अधिकार था। इन्होंने २० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की। आशाधर ने जैन साहित्य पर ही कलम नहीं चलाई किन्तु जैनतर साहित्य पर भी अपने पांडित्य की अमिट छाप छोड़ी और अष्टागद्दय, काव्यालंकार, अमरकोष जैसे ग्रन्थों पर टीका लिखी। जैन ग्रन्थों में जिनयत्कल्प, सागर और अनगारवर्मासृत त्रिपदिम्भृतिशास्त्र आदि ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, दोष प्रमेयरत्नाकर, भरतेश्वराभ्युदय, ज्ञानदीपिका, राजमनीविप्रलंब, आध्यात्मरहस्य, काव्यालंकार टीका, अष्टागद्दय चोतिनी टीका अभी तक अप्राप्त ही हैं। आप १३वीं शताब्दी के उत्कृष्ट विद्वान् माने जाते हैं।

४. श्री ऋणदास—कवि लाहौर के निवासी थे। लेकिन ग्रन्थ की काल्यवल्ली नगर में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम हर्ष था जो तत्कालीन व्यापारियों में बड़े प्रसिद्ध थे। काष्ठानंघ से इनका सम्बन्ध था और रत्नमण्डल इनके गुरु थे। श्री पूरमल्ल के आग्रह से इन्होंने मुनिसुव्रत पुराण की रचना की थी। इनके छोटे भाई का नाम मंगलदास था।

५. गुणसुन्दर—इन्होंने संवत् १४२६ में मलामर स्तोत्र की वृत्ति लिखी थी। ये आचार्य गुणचन्द्रमूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका सम्बन्ध ऋपल्लीय गच्छ से था।

६. गुणाक्षर मूरि—इन्होंने संवत् १७०४ सम्यक्त्वर कौमुदी की रचना की थी। कवि ने अपने आपको चैत्रगन्ध से सम्बन्धित बतलाया है।

७. गुणमद्राचार्य—भगवत्जिनेसनाचार्य के समान गुणभद्र भी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। इन्होंने आदिपुराण को ही पूरा नहीं किया किन्तु उत्तरपुराण, आत्मानुशासन और जिनवत्तचरित्र की भी रचना की। इनका समय विद्वानों ने शक संवत् ७४० से ८२० से पूर्व तक निर्दिष्ट किया है।

८. चन्द्रकीर्ति—सारस्वत व्याकरण के टीकाकार हैं। नागपुरीय तपोगच्छ के आप अधिनायक आचार्य रहे थे। संवत् ११७५ के पश्चान् होने वाले सभी आचार्यों का आपने स्मरण किया है। इस गन्ध के

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम सुबोधिका टीका है।

१०. चन्द्रकीर्ति—काष्ठासंघ में होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा में ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पास रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१०. चारित्रसुन्दरगणि—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र सूरि को स्तरण किया है उनके पश्चात् होने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. जिनसेनाचार्य—हरिवंश पुराण के कर्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम कीर्तिपेण एव दादा गुरु का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर में शके संवत् ७-५ में समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों में सर्वोपरि है। इसका ग्रन्थ परिमाण चारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गों में समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वें सर्ग में भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्पर का उल्लेख किया है।

१२. ज्ञानकीर्ति—यजोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्ति यति वादिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नान के आग्रह से की थी। नान उस समय वगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्भेद शिखर की यात्रा पर गये तो वहां इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि स्वयं वगाल प्रान्त के अकच्छरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने ग्रन्थ को संवत् १६५६ में समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेंट किया था।

१३. ज्ञानभूषण—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रशिष्य एव भुवनकीर्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के अच्छे विद्वान थे। इनका मूल निवास स्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक बनने के पश्चात् अहीर, वागड़, तौलव, तैलंग द्राविड़, एव महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तों और गाँवों में ही विहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत में भी घूम कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञान-तरंगिणी सुन्दर एव सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एवं कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा में भी आपकी कई रचनाये मिलती हैं इनमें आदीश्वरभाग उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल संवत् १५६० है।

१४. धर्मकीर्ति—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) में की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेकप्रशस्तियों में हुआ है। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को संवत् १६६९ में समाप्त किया था। संवत् १६७० की प्रति में लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक बने थे।

१५. आचार्य नरेन्द्रसेन—इन्होंने सिद्धान्तसारसंग्रह की रचना की है। आप वीरसेन के प्रशिष्य एव गुणसेन के शिष्य थे।

१६. **प्रभाचन्द्र**—परमार नरेश भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजा जयसिंहदेव के शासन काल में इन्होंने साहित्य निर्माण किया था। इन्होंने प्रमेयफलमार्त्तण्ड एवं न्यायकुमुदचन्द्र जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। महाकवि पुष्पदत्त के आदिपुराण और उत्तरपुराण पर टिप्पणी लिखी है। इनके अतिरिक्त जैनेन्द्र व्याकरण, शब्दान्मोजमास्कर, रत्नकरण्डटीका, क्रियाकलापटीका समाधितंत्रटीका, आत्मानुशासनतिलक, द्रव्यसंग्रह पंजिका, प्रवचनसरोजभास्कर, सर्वार्थसिद्धि टिप्पण आदि रचनायें भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

१७. **कायस्थ पद्मनाभ**—कायस्थ जाति में होने वाले जैन कवियों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपने महासुनि गुणकीर्ति के उपदेश से तोमर वंश में उद्भव राजा वीरसेन्द्र के शासन काल में रचनायें की थीं। वीरसेन्द्र के महामात्य श्री कुशराज थे और इन्होंने ही पद्मनाभ को यशोधर की रचना करने के लिये उत्साहित किया। ग्रन्थ तैयार होने के पश्चात् मतोष नाम के जैसवाल ने उसकी बहुत प्रशंसा की तथा विजयसिंह जैसवाल के पुत्र पृथ्वीराज ने उक्त ग्रन्थ की अनुमोदना की थी। पद्मनाभ ने कुशराज के वंश का विस्तृत परिचय दिया है। कवि ने यशोधरचरित्र को १५ वीं शताब्दी के प्रथम काल में लिखा था।

१८. **भगवत्जिनसेनाचार्य**—ये हरिवंशपुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन से भिन्न आचार्य हैं। इनके गुरु का नाम आचार्य वीरसेन था। जिनसेन अपने समय के महान विद्वान एवं सिद्धान्त के प्रणेण्ड ज्ञाता थे। इन्होंने धवला और जय धवला की टीका को पूर्ण करके जैन समाज का महान उपकार किया है। इन टीकाओं के अतिरिक्त आदिपुराण एव पार्श्वस्युदय की भी रचना की। आचार्य महोदय ने आदिपुराण को पूर्ण करने से पहिले ही संसार से विदा ले ली किन्तु आपके महान् कार्य को योग्य एवं प्रतिभाशाली शिष्य आचार्य गुणभद्र ने पूरा किया। आदिपुराण उच्च श्रेणी का प्रथमानुयोग महाकाव्य है।

१९. **पं० मेधावी**—श्री चिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे। धर्मसंग्रहश्रावकाचार को हिसार नगर में प्रारम्भ करके नागपुर में सन् १५४१ में समाप्त किया था। उस समय नागपुर पर फिरोजशाह का शासन था। मेधावी ने श्रावकाचार की समन्तभद्र, वसुनन्दि एव आशाधर कृत श्रावकाचारों के अध्ययन के पश्चात् रचना की थी।

२०. **रामचन्द्र मुमुक्षु**—पुण्याश्रवकाचारों के कर्त्ता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु मुनि केशवनन्दि के शिष्य थे। पुण्याश्रवकाचारों का जैन समाज में बहुत अधिक प्रचार है। इनके वंश परम्परा के सम्बन्ध में अधिक परिचय नहीं मिलता है।

२१. **रत्नमन्दिरगणि**—भोजप्रबन्ध के कवि श्री रत्नमन्दिर गणि तपोगुरु के साधु थे। इनके गुरु का नाम सोमसुन्दरगणि था। इन्होंने अपनी रचना को सन् १५१७ में समाप्त किया था।

२२. **वादिचन्द्र**—ज्ञानसूर्योदय नाटक के कारण वादिचन्द्र जैनसमाज में बहुत प्रसिद्ध हैं। उक्त नाटक की रचना प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर की गई है। ज्ञानसूर्योदय की इन्होंने संवत् १६४८ में समाप्त किया था तथा इसके पश्चात् यशोधरचरित्र को संवत् १६५७ में रचा। इनका पवनदूत नामक एक खण्ड

काव्य भी है जिसकी पद्य संख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. विवेकनन्दि—इनका जन्म बघेरवाल जाति में हुआ था । इनके नाना श्री नारियका तथा माता निजोणी थीं । 'त्रिभंगीसार' की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा में लिखी उसके परचरित् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत में टीका का निर्माण किया था ।

२४. ब्रह्म कामराज— इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की । कवि ने सकलकीर्ति की भट्टारक परम्परा में होने वाले भट्टारकों की अच्छी नामावली दी है । प्रशस्ति में इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है । पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर में स्थापित किया ।

२५. ब्रह्मजिनदास— भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे । अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनाये लिखी हैं । संस्कृत में इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की है जिनमें हरिविण पुराण, पद्मपुराण, जम्भूस्वामी चरित्र, हनुमच्चरित्र, व्रतकथाकोष आदि उल्लेखनीय हैं । हिन्दी में आदिनाथपुराण, श्रेणिकचरित्र, सम्पत्करास, यशोवरास, धनपालरास, व्रतकथाकोष आदि रचनाये उल्लेखनीय हैं । इन पर गुजराती का अस्यधिक प्रभाव झलकता है ।

२६. ब्रह्मनेमिदत्त— ये अग्रवाल जाति के थे । गोयल इनका गोत्र था । मालव देश में आशानगर के रहने वाले थे । भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे । सवत् १५८५ में इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शांतिदास के अनुरोध से रचना की थी । इसके अतिरिक्त सुदर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है । सुदर्शनचरित्र में इन्होंने ग्रथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मालूम पड़ता है कि सुदर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी ।

२७. ब्रह्मरायमल्ल— हूंचड़ जाति में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम महीय एव माता का नाम चपा था । समुद्र तट पर स्थित ग्रीवापुर में इन्होंने भक्तार स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था । संवत् १६६७ में रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है ।

२८. ब्रह्मजित— सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानदि के शिष्य थे । आपका जन्म गोलश्रंगार जाति में हुआ था । इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था । हनुमच्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है ।

२९. भट्टारक सोमसेन— ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे । इन्होंने पद्मपुराण की रचना बैराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी । उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक सवत् १६५६ में निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है । लेकिन इसी की एक लेखक प्रशस्ति में शक सवत् १६१६ दे रखा है ।

३०. सकलकीर्ति— १५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं साहित्य सेवी थे । इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अभ्ययन किया था । इन्होंने अपने आपको भट्टारक

पद्मनन्द का शिष्य लिखा है। अपने जवरदस्त प्रभाव के कारण इन्होंने एक नयी भट्टारक परम्परा की स्थापना की। उनकी परम्परा में ब्रजजनदास, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र आदि उच्च कोटि के साहित्य निर्माता हुये। इन्होंने सभी भाषाओं में साहित्य रचना की। आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसारसंग्रह, यशोधर चरित्र, वट्ट-मानपुराण, आदि रचनायें संस्कृत में एमोकारमन्त्रफलगीत, आराधनासार आदि रचनायें हिन्दी में लिखीं।

३१. सकलभूषण—भट्टारक शुभचन्द्र के समय के विद्वान् थे। इन्होंने भट्टारक शुभचन्द्र के पास ही अध्ययन किया और इन्हीं की देख रेख में अन्य रचना की। शुभचन्द्र ने करकण्डुचरित्र के निर्माण में इनसे काफी सहायता ली थी। सकलभूषण भट्टारक वार्दाभसिंह के शिष्य एवं सुमतिकीर्ति के बड़े भाई थे। सन् १६०७ में इन्होंने मदनमय से उपदेशरत्नमाला नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। रचना मुन्द्र एवं सरस है।

३२. मोमकीर्ति—भट्टारक रामसेन की शिष्य परम्परा में से भट्टारक भीमसेन के शिष्य थे। इन्होंने सन् १५३० में प्रवृत्तचरित्र को समाप्त किया था।

३३. मोमप्रसूति—मिन्द्र प्रकरण कवि की रचना है। इसमें अन्धी २ मूर्तियाँ हैं। इसका हिन्दी अनुवाद महाश्वि बनारसीदास एवं कौरपाल ने मिलकर किया था। इसी से उक्त रचना का महत्त्व जाना जा सकता है। इसका दूसरा नाम मूर्तमुक्तावली भी है। कवि ने विजयसहाचार्य के चरण कमलों में बैठ कर इसकी रचना की थी।

३४. श्रुत्सागर—ये १६ वां शताब्दी के विद्वान् थे। इनके गुरु का नाम विद्यानन्द था। श्रुत्सागर ने अपने को कालकालमवल, कालकालगौतम, उभयभाषाकविचक्रवर्ति, व्याकरणकमलमार्तण्ड आदि अनेक विशेषणों से अलङ्कृत किया है। इन्होंने अधिकांश ग्रन्थों की टीका लिखी है उनमें से यशस्तिलकचन्द्रिका, तन्वार्थवृत्ति जिनसहस्रनामटीका औद्योग्यचिन्तामणि, महाभिमंफटीका, वनकथाकोप आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं।

३५. शुभचन्द्र—भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में आपका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। पटभाषाकविचक्रवर्ति, त्रिविधविद्याधर आदि विशेषणों से आप जनता द्वारा विभूषित किये गये थे। आपने सिद्धान्त एवं पुराण साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया था। इन्होंने संस्कृत में ४० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से चन्द्रप्रभुरित्र, जीवधर चरित्र, पाण्डवपुराण श्रेणिकचरित्र, स्वामीकान्तिक्रियानुप्रेक्षा की टीका आदि उल्लेखनीय हैं।

३६. हर्षकीर्ति—इन्होंने योगचिन्तामणि ग्रन्थ का संग्रह किया था। यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। इनका सम्बन्ध नागपुर के तपोगच्छ से था तथा चन्द्रकीर्ति इनके गुरु थे।

प्राकृत-अपभ्रंश ग्रन्थों के लेखक

३७. स्वर्धनु—अपभ्रंश भाषा के आचार्यों में आप सबसे प्राचीन आचार्य हैं। इनके पिता का नाम

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयंभु था। स्वयंभु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयंभु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की - पद्मचरिय, रिद्धयेमिचरिड या हरिवंशपुराण, पंचमिचरिड। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयंभु की रचनाएँ सबसे प्राचीन हैं। रचनाएँ साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि रविपेणाचार्य के पीछे हुये हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति -- माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। संवत् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। इसमें १८ संधियाँ हैं। संवत् १४६६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत--अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के आश्रयदाता महामात्य भरत और नन्न थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पदवियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनाएँ मिलती हैं। महापुराण के दो खंड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खण्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण--इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले संवत् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड़ देश में श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एव माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मगलाचरण में चतुर्मुख, स्वयंभु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा में कुल ११ संधियाँ हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१. महाकवि वीर--कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड चागड था। यह काष्ठा संघ की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कविवर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और अर्थ की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जगन्नाथामी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको संवत् १०७६ माघ शुक्ला दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेघवन में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ स्त्रियाँ जिनवती, ओमावती, लीलावती, और जपादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२. श्रीचन्द--ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नकरण्ड को संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनी थे और इसी अवस्था में इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीवाल्मीकि के शासक कर्ण

नरेन्द्र के अध्ययन के लिये ग्रन्थ रचना की थी। कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख मुनी कनकामर ने भी किया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ति आचार्यों—वीरनन्दि, समंतभद्र, विद्यानन्दि, वीरसेन, जिननेन, गुणभद्र, सोमदेव, स्वयंभु, पुष्पदन्त, श्रीधर आदि का उल्लेख किया है। कवि श्रुतकीर्ति के शिष्य थे।

४३. नयनन्दि—महाकवि स्वयंभु एव पुष्पदन्त के पश्चात् इनका नाम अपभ्रंश के श्रेष्ठ कवियों में गिना जाता है। इनके दो महाकाव्य मिलते हैं, सुदर्शन चरित्र और सकलविधिविधान और ये दोनों ही सभी ऋषियों से उच्च श्रेणी के काव्य हैं। सुदर्शन चरित्र की रचना इन्होंने सवत् ११०० में भोजदेव के राज्य में की थी। सकलविधिविधानकाव्य को इन्होंने आचार्य हरिश्चिह्न के अनुरोध से बनाया था। इस काव्य में आपने वररुचि, वामन, कालिदास, बाण, मयूर, जिनसेन श्रीहीर्ग राजगोखर, पाणिनी, प्रवरसेन, वीरसेन, अकलक, रूद्र गोविन्द, भामह, भारवि, चण्डगुह स्वयंभु, पुष्पदन्त, श्रीचन्द्र, प्रभाचन्द्र आदि आचार्यों का स्मरण किया है। नयनन्दि आचार्य माणिक्यनन्दि के शिष्य थे। कवि ने धारा नगरी एव राजा भोज का बड़ा ऐतिहासिक वर्णन किया है। इन दोनों काव्यों के आधार पर कितने ही ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की जा सकती है।

४४—श्रीधर — अपभ्रंश भाषा के महाकवि ५० श्रीधर १२ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखित ३ रचनायें उपलब्ध हैं, पार्श्वनाथचरित्र, भविष्यदत्तचरित्र तथा सुकुमालचरित्र। पार्श्वनाथचरित्र को सवत् ११८६ में भविष्यदत्त को १२३० में तथा सुकुमालचरित्र को संवत् १२०८ में समाप्त किया था। इनके अतिरिक्त अन्य कितनी रचनायें अपभ्रंश में लिखीं, इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। ये कायस्थ जाति के थे और माथुर कुल में पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम नारायण एव माता का नाम रूपिणी था। ये देहली के रहने वाले थे। इन्होंने दिल्ली को 'दिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है। अपने प्रथम महाकाव्य को इन्होंने नट्टल साह के अप्रह से लिखा था। उस समय नट्टल साह सारे भारत में प्रख्यात थे। कवि ने लिखा है कि अंग वग कर्लिंग आदि सभी देश में आपकी कीर्ति व्याप्त थी।

४५—महाकवि अमरकीर्ति — इन्होंने सवत् १२७४ में पट्कर्मोपदेशरत्नमाला को समाप्त किया था। रचना वृत्त ही सुन्दर एव प्रिय है। इनकी रचना के आधार पर ही पीछे के संस्कृत कवियों ने अनेक रचनायें लिखीं। इनकी माता का नाम चञ्चिणी एव पिता का नाम गुणपाल था।

४६—कनकामर — ये मुनि थे। इन्होंने अपने गुरु का नाम पं० मंगलदेव लिखा है। ये ब्राह्मण वंश के चन्द्र ऋषि गोत्र में उत्पन्न हुये थे और वेराग्य लेकर दिगम्बर मुनि बन गये थे। करकण्डु चरित्र को इन्होंने 'आमाडप' नगरी में लिखा था। कवि ने अपनी रचना में सिद्धसेन, समंतभद्र, अकलक, जयदेव, स्वयंभु और पुष्पदन्त का उल्लेख किया है। कनकामर ने अपनी रचना में कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख किया है। इन्हीं के आश्रित श्रीचन्द्र कवि भी थे जिन्होंने रत्नकरण्ड को ११२० में समाप्त किया था। इसी के आधार पर इनका समय १२वीं शताब्दी निश्चित होता है।

४७—यशःकीर्ति — अपभ्रंश साहित्य में यशःकीर्ति द्वारा लिखित दो काव्य मिलते हैं—पाण्डवपुराण तथा चन्द्रप्रभचरित्र। यशःकीर्ति मुनि थे और इसी अवस्था में इन्होंने दोनों काव्यों की रचना की थी।

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश में उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगावपुर में लिखवाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र में इन्होंने 'महाकवि' विरोपण से अपने आपको अलंकृत किया है।

४८—पं० लाखू — इन्होंने संवत् १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लक्खण भी था। आपका सन्मान करने वालों में श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय हैं और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लाखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणित्सेन — अपभ्रंश भाषा में इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश में वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि पद्मनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा में इनके द्वारा रचित उद्देशमाला श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती हैं इससे ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कथा और श्रीपालचरित्र इन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं में नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थावस्था में ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि संग्रह में १५१२ में लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध — इनके पिता का नाम रत्हण था। कवि गुज्जर कुल के सूर्य थे। प्रद्युम्न चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अमियचन्द्रु) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल — ये १५वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुवलिचरित्र तथा (भविष्यदत्तचरित्र) १५वीं शताब्दी की रचनायें हैं। महाकवि ने बाहुवलिचरित्र काव्य के प्रारम्भ तथा अन्त में बहुत सुन्दर प्रशस्ति लिखी है। ये गुज्जर देश के रहने वाले थे। पिल्हणपुर इनका निवास स्थान था। उस समय वहाँ वीसलदेव राजा राज्य करते थे। इनके पिता का नाम सुहदेव तथा माता का नाम सुहदा था। ये पोखर जाति में उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली को योगिनीपुर लिखा है तथा वहाँ

के शासक का नाम महम्मदसाह लिखा है। ग्रंथ को लिखाने वाले श्रावक का कवि ने विस्तृत परिचय दिया है। इन सब के आनेरिक्त कवे ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियों का नामोल्लेख उनकी कृतियों के साथ साथ किया है।

५५—धनपाल (द्वितीय)—महाकवि धनपाल से ये भिन्न कवि हैं। इनका जन्म धरुण्डवाण वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम माएसर तथा माता का नाम धनश्री था। इनके द्वारा लिखेन भविष्यद्वचन चरित्र अपभ्रंश भाषा के प्रकाशित होने वाले काव्यों में सर्व प्रथम है।

५६—पंडित रडधू—अपभ्रंश भाषा में सबसे अधिक रचनाये लिखने वालों में पंडित रडधू का नाम सर्व प्रथम आता है। इनके काव्यों में उच्च साहित्य के दर्शन होने हैं। इनके गुरु का नाम गुणकीर्ति था। ये ग्वालियर के निवासी थे और अधिकांश साहित्य का निर्माण उक्त स्थान पर ही किया था। इन्होंने आत्मसंवोधन काव्य, धनकुमारचरित्र, पद्मपुराण, मेघेश्वरचरित्र, श्रीपाल चरित्र, सन्मतिजिनचरित्र, नेमिनाथचरित्र, आदि-पुराण, यशोवरचरित्र, जीवधरचरित्र, पार्वनाथपुराण, सुकौशलचरित्र आदि २५ स अधिक की रचना की हैं। इन्होंने प्रत्येक ग्रंथ के अन्त में अपने सन्निप्र परिचय के अतिरिक्त ग्रंथ लिखाने वाले का विस्तृत परिचय दिया है और इसके साथ साथ वहा के राज्य शासन का भी इतिहास लिखा है। इनके समय में ग्वालियर पर लोभर वंश के मणि श्रोडू गरेन्द्र सिद्धजी का शासन था तथा वंश के राजकुमार का नाम कीर्तिपाल था। इनका समय १५ वीं शताब्दी का अनुमानित किया गया है।

५७—श्रुतकीर्ति—ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। ये देवेन्द्रकीर्तिके प्रशिष्य एवं त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। मालवा प्रान्त में मडवगढ़ इनका निवास स्थान था। इन्होंने हरिवंश पुराण की रचना संवत् १५५२ में समाप्त की थी तथा परमेष्ठिप्रकाशसार को संवत् १५५३ में समाप्त किया था। दोनों ही काव्य भाषा को दृष्टि से उत्तम हैं।

५८—माणिक्यराज—ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनकी माता का नाम वसुवरा था। माणिक्य राज के गुरु पद्मनन्दि थे इनके पहिले पाच आचार्य हो गये थे। इन्होंने दो चरित्र काव्यों की रचना की है अमरसेन चरित्र को संवत् १५५६ चैत सुदी ५ के दिन रोहतक में देवराज चौधरी से आग्रह से समाप्त किया था तथा नागकुमार चरित्र को संवत् १५५६ फाल्गुण सुदी ६ के दिन संपूर्ण किया था। इसमें जगसी के पुत्र साहु टोडरमल्ल का विस्तृत परिचय एवं प्रशंसा की गयी है। श्री टोडर मल्ल के पढ़ने के लिये ही उक्त चरित्र का निर्माण करना पडा था। दोनों ही काव्य अपभ्रंश की सुन्दर रचनायें हैं।

५९—मगवतीदास—ये देहली के भट्टारक गुणचन्द्र के प्रशिष्य तथा भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे। हिनार, सहिजावपुरा, सकिसा, कपिस्थल आदि स्थानों में रहने के पश्चात् ये दिल्ली में आकर रहने लगे थे। इनके पूर्वज अम्बाला जिले के बूढिया नामक ग्राम के निवासी थे। ये अपभ्रंश दि जैन थे। अपभ्रंश भाषा में

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० में समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम कान्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनायें मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य के कवि एवं लेखक

६०—किशनसिंह — कवि रामपुर के निवासी संगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड़ कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहाँ पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत् १७८४ में समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रवाहुचरित्र एवं रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई है।

६१—कुमुदचन्द्र — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाचिन्ती, ऋषभविवाहलो, भरतवाहुवल्लिखन्द आदि रचनायें लिखी हैं। भरतवाहुवल्लिखन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ में समाप्त किया था।

६२—कुसुललाभगणि — संवत् १६१६ में जैसलमेर में इन्होंने 'माधवानलचौपाई' को पूर्ण की थी। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—खडगसेन— ये लाभपुर (लाहौर) के निवासी थे। लाहौर में उस समय अच्छे विद्वान् रहते थे। इन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम लण्णराज था। कवि के पूर्वज पहले नारनोल में रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल में चतुर्भुज बैरागी के पास शिक्षा प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् १७१३ में सम्पूर्ण किया था।

६४—सुशालचन्द काला— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने विद्याध्ययन किया था। इनका मूल निवास स्थान देहली था। लेकिन सांगानेर भी कभी आकर रहा करते थे। इनके पिता का नाम सुन्दर एवं माता का नाम अभिधा था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७८०), पद्मपुराण (१७८३), अन्यकुमारचरित्र, जन्मचरित्र, प्रनकथाकोश आदि ग्रन्थों की रचना की है।

६५—चतुरूमल— ये ग्वालियर के निवासी थे। इनके पिता का नाम जसवत था। इन्होंने संवत् १५७१ में 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके समय में ग्वालियर के शासक महाराजा मानसिंह थे। नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. छीतर टोलिया— ये मोजमावाद के रहने वाले थे। इन्होंने होली की कथा को संवत् १६६० में समाप्त की थी। उस समय जयपुर के राजा मानसिंह का वहाँ राज्य था। रचना साधारण है।

६७. जयसागर—ये भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। गंधार नगर के भट्टारक श्री मल्लिभूषण की शिष्य-

परम्परा से उनका मन्त्रव्य था। हृदय जात में उत्पन्न श्री रामा तथा उसके पुत्र के पढ़ने के लिये संवत् १७३२ में इन्होंने 'सीताहरण' नामक काव्य की रचना की थी।

६८. जोधराज गौदीका—ये नागानेर के निवासी थे। उनके पिता का नाम अमरराज था। हरिनाथ मिश्र के पास रह कर इन्होंने प्रीतिकर चरित्र, कथामोप, धर्मसरोवर, मन्व्यरत्नकौमुदी, प्रवचनसार, भावदीपिका आदि रचनायें लिगी थीं।

६९. जगतगय—ये आगरे के निवासी थे। इनके पिता का नाम नरलाल था। सिंघल इनका गोत्र था। संवत् १७२२ में इन्होंने पद्मनद्विपचरिणिका को समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त आगम विलास एवं सम्यक्काकौमुदी आदि भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

७०. टीकम—इन्होंने सवन् १७१२ में चतुर्दशीचौगट्ट नामक रचना समाप्त की थी। ये 'कालख' (जयपुर) के रहने वाले थे। आप धार्मिक चर्चाओं के अच्छे जानकार थे।

७१. टकूरसी—इन्होंने 'दृग्गणचरित्र' तथा 'पंचद्रिय बेल' ये दो रचनायें लिगी हैं। दोनों ही भाषा और भावों की दृष्टि से उत्तम रचनायें हैं। पंचद्रिय बेल को कवे ने सवन् १७२५ में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम बेल्ट था और ये भी अच्छे कवि थे।

७२. त्रिभुवनचन्द्र—ये महाकाव्य बनारसीदास एवं हृषिकेश के समकालीन कवि थे। इन्होंने अनित्यपचाशत, प्रस्ताविकदोहे, पदद्रव्यवर्णन, फुटकरकवित्त आदि रचनायें लिखी हैं। सभी रचनायें उच्चकोटि की हैं।

७३. दीपचन्द कामलीवाल—ये सागानेर के रहने वाले थे लेकिन फिर आमेर आकर रहने लगे थे। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों ही प्रकार का साहित्य लिखा है। चिद्विलास, गुणन्यासभेद अनुभवप्रकाश आदि गद्य में तथा अध्यात्म पच्चीसी, द्वादशानुप्रेक्षा, परमात्मपुराण आदि पद्य में इनकी रचनायें मिलती हैं। चिद्विलास को इन्होंने सवन् १७५६ में समाप्त किया था।

७४. पं० दौलतरामजी—ये मूल निवासी बनवा के थे। जयपुर के महाराजा का इन पर विशेष प्रेम था। ये उदयपुर में महाराजा की ओर से राज्य कार्य करते थे। श्रावको की संगति से इनको जैन ग्रन्थों के अध्ययन की रुचि हुई। धीरे धीरे इनकी रुचि बढ़ती गई और ये अपना अधिकांश समय साहित्य-सर्जना में ही लगाने लगे। इन्होंने पुण्याश्रयकथाकोश, क्रियाकोश, अध्यात्मधारहखड़ी, वसुनन्दिश्रावकाचार की टीका तथा पद्मपुराण की भाषा लिखी है। वसुनन्दिश्रावकाचार की टीका इन्होंने उदयपुर में बेलजी सेठ के अनुरोध से की थी। ये श्री आनन्दराम के पुत्र थे। संवत् १८०० के पूर्व ही इन्होंने

रचनायें लिखी हैं ।

७६—**देवेन्द्रकीर्ति**— ये भट्टारक सकलकीर्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक पद्मानन्दि के शिष्य थे । इन्होंने सूरत निवासी संघपति श्री जेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर में प्रद्युम्नप्रबन्ध को संवत् १७२२ में समाप्त किया था । प्रबन्ध की भाषा साधारण है ।

७७—**दिलाराम**— इनके पूर्वज खड्डेले के रहने वाले थे । वहां से बूंदी नरेश के अनुरोध से बूंदी आकर रहने लगे थे । इनका गोत्र पाटणी था । कवि ने बूंदी नगर तथा वहां के राजघश की खूब प्रशंसा लिखी है । इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है । इन्होंने दिलारामविलास और आत्मद्वादशी ये दो रचनायें लिखी हैं । कवि ने दिलारामविलास को संवत् १७६८ में समाप्त किया था । इनकी वर्णन शैली अच्छी है ।

७८—**धर्मदास**— कवि धारहसैनी (द्वादशश्रेणी) जाति में उत्पन्न हुये थे । इनके पूर्वज अपने-प्रान्त में बहुत ही प्रतिष्ठित थे । इनके पिता का नाम राम और माता का नाम शिषी था । कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ में समाप्त किया था । रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है । इसमें जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है ।

७८. **नथमल विलाला**— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद में भरतपुर में और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे । इनके पिता के नाम शोभाचन्द्र था । इनने सिद्धान्तसारदीपक की रचना भरतपुर में सुखराम की सहायता से की थी और भक्तामर की भाषा हीरापुर में पं० लालचन्द्र जी की सहायता से की थी । इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवंधरचरित्र, जम्भूस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियां हैं ।

७९. **नरेन्द्रकीर्ति**— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे । इन्होंने नेमीश्वर चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है ।

८०. **नेमिचन्द्र**— ये भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य थे । आमेर इनका निवास स्थान था । संवत् १७९३ में इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी । कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है । कवि के छोटे भाई का नाम भगदू था । इनका गोत्र सेठी था । कवि के रूपचन्द्र, इंगरसी, लक्ष्मीदास, दोदराज आदि शिष्य थे ।

८१. **प्रभाचन्द्र मुनि**— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है । प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है । इनके समय के सम्बन्ध में विशेष ज्ञात नहीं हो सका है । तत्त्वार्थसूत्र भाषा की एक प्रति संवत् १८०३ की लिखी हुई शास्त्र भण्डार में है ।

८२. पांडे जिनदास— ब्रह्म शांतिदास के पास इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। ये मथुरा के रहने वाले थे। यहीं रहते हुए सन् १६४२ में जम्बूश्यामी चरित्र को समाप्त किया था। आपकी एक अन्य रचना जोर्ग रासो भी है जिसकी भाषा एवं शैली उत्तम है।

८४. पांडे रूपचंद— इन्होंने सोनगिरि में सन् १७२१ में महाकवि बनारसीदास कृत समयसार की गद्य टीका लिखी थी। सोनगिरि में श्री जगन्नाथ श्रावक रहते थे और उन्हीं के अभ्ययन के लिये कवि को पद्य से गद्य में अनुवाद करना पड़ा। ग्रन्थ की भाषा सुन्दर एवं प्रौढ़ है।

८५. परिमल्ल— इनके पितामह का नाम रामदास एवं पिता का नाम अस्तिमल्ल था। ये विरहिया जाति के थे। इनके पूर्वज म्वालियर के रहने वाले थे। स्वयं परिमल्ल आगरे में रहते थे। इन्होंने अकबर के शासन काल में श्रीपालचरित्र की रचना की थी।

८६— बनारसीदास — जैन हिन्दी साहित्य के सूर्य महाकवि बनारसीदास १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये आगरे के निवासी थे। माता पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण इनका विवाह बचपन में ही हो गया था। ये प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। प्रारम्भ से ही इनको कविता करने का शौक था। यौवनावस्था से ये संसारिक भगडों में फसे रहे। इसी अवस्था में इन्होंने नवरम पद्मवती नामक पुस्तक की रचना की लेकिन जब उसकी असत्यता भासू हुई तो इन्होंने उमें गोमती नदी में बहा दिया। इसके पश्चात् इनका मुकाव आध्यात्मिकता की ओर हुआ और फिर नाममाला, नाटक समयसार, बनारसीविलास, एवं अर्द्धकथानक का निर्माण किया। कवि की सभी कृतिया उच्च कोटि की हैं।

८७— भैरवा, भगवतीदास — ये आगरे के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम लालजी था। ये ओसवाल जैन थे तथा कटारिया इनका गोत्र था। महाकवि बनारसीदास के समान ये भी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। कवि हिन्दी, संस्कृत, फारसी, गुजराती आदि सभी भाषाओं के विद्वान् थे। हिन्दी के आन्तरिक अन्य भाषाओं में भी इनकी कवितायें मिलती हैं। आपकी कविता अलंकार एवं प्रसाद गुण से ओत प्रोत रहती है।

८८. भूधरदास — ये आगरे के रहने वाले थे। खण्डेलवाल जाति में इनका जन्म हुआ था। इनकी ३ रचनायें उपलब्ध हैं— पार्ष्वपुराण, जैनशतक तथा पद संग्रह। ये कवि ही नहीं थे, किन्तु जैन सिद्धान्त के अच्छे विद्वान् भी थे। पार्ष्वनाथपुराण इनका बहुत ही सुन्दर काव्य ग्रन्थ है। इनके बनाये हुये पद जैन समाज के अत्यधिक प्रिय हैं।

८९. मनोहरदास — ये धामपुर के निवासी थे। आसू साह के यहाँ इनका आश्रय था। सेठ के सम्बन्ध में इन्होंने बड़ी मनोरंजक घटना लिखी है। सेठ की दरिद्रता आने के कारण वह बनारस से अयोध्या चले गये किन्तु वहाँ के सेठ ने उन्हें खूब सम्मान तथा अतुल सम्पत्ति देकर वापिस ही विदा कर दिया।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. राजमल्ल— उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत् १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. रूपचंद— कविवर रूपचंद पांडे रूपचन्दजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास ने गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एव नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. लब्धरुचि—ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्दनपुरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ में समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति में भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरु परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. लोहट—इनका जन्म बघेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा था। ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बड़े थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा में श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने संवत् १७२१ में समाप्त किया था।

९४. लक्ष्मीदास— पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पंडितजी ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र संवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. ब्रह्म रायमल्ल—ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न-२ स्थानों पर लिखी थी। इनमें हरसोर गढ, रणथम्भोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध है। रायमल्ल अन्त में आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीश्वर रास, हनुमंतकथा, प्रह्लादचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीपालरास भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय हैं। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान होने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. ब्रह्म गुलाल— ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगभूषण के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता में रह कर कविता किया करते थे। त्रेपनक्रिया को इन्होंने संवत् १६९५ में समाप्त की थी। ग्वालियर पर उस समय सलीम (जहांगीर) का राज्य था।

६७ सुरचंद— वे इन्द्रभूषण के प्रशिष्य एवं ब्रह्म श्रीपति के शिष्य थे । कवि ने गृहस्थावस्था में रह कर रत्नपाल रासो की रचना की थी । कविता साधारण है । कविता पर गुजराती का प्रभाव है । रासो की रचना संवत् १७३२ में हुई थी ।

६८ समयसुन्दरगाणि— सकलचन्द्र इनके गुरु थे । वे सरतरगच्छ के मुनि थे । संवत् १६९८ में इन्होंने षट्पावति चरित्र को समाप्त किया था ।

अन्त में मैं श्री महावीर अतिशय क्षेत्रज्ञकमेटी के सभी सदस्यों तथा विशेषत श्रीमान् मन्त्री महोदय को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजस्थान के जैन साहित्य के प्रकाशन का दृढ़ संकल्प किया है । श्रद्धेय गुरुवर्य पं० चैतसुखदास जी न्यायतीर्थ को धन्यवाद देना छोटे मुंह बड़ी बात करना है क्योंकि यह सब उनकी कृपा का फल है । भा० भंवरलाल जी न्यायतीर्थ प्रो० वीरप्रेस भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने में बहुत योग दिया है । इसके अतिरिक्त सम्माननीय प० जुगलकिशोर जी मुत्तार तथा प्रो० रामसिंह जी तोमर एम ए भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय समय पर अपनी बहुमूल्य सन्मति देकर मुझे उत्साहित किया है ।

प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने का काफी प्रयत्न किया गया है किन्तु फिर कुछ खटकने योग्य कमियाँ रह सकती हैं । आशा है विद्वानगण इस ओर उदारता से ध्यान देंगे ।

जयपुर
१-७-५०

कस्तूरचन्द कासलीवाल

शुद्धाशुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ तथा पंक्ति
ससारभीमुखे	संसारभीमुपे	१ × ७
भयेंडु	भयेंदु	२ × ८
प्राकृत	अपभ्रंश	२ × १३
प्रार्थना ते	प्रार्थनातो	३ × ३०
प्रणित	प्रीणित	३ × ५
चंचद्रूचः	चंचद्रूचः	५ × १५
षठ्वाधिकः	षट्थधिकाः	८ × ७
बहून्यग्नि	बहन्यग्नि	८ × २५
राद्रस्यो तत्पुराणं	राद्रस्यै तत्पुराण	१३ × ६
र्मद	मेंद	१३ × ६
त्रिभगसार	त्रिभगीसार	१८ × ३
सयौरजनः	सपौरजनः	२१ × २
वर्णतां	वर्णनां	२६ × २
सर्वकर्मरिसंतान	सर्वकर्मरिसंतानं	४१ × २
प्रख्यातमनपां	प्रख्यातमनीपां	४२ × २०
वीरनार्थ	वीरनाथ	५६ × २१
अकञ्चरपुर	अकञ्चरपुर	५६ × २१
भव्यौघनिस्तारकः	भव्यौघनिस्तारकः	६० × २
घातद्रामा	घा तद्रामा	६१ × २
जैसत्रालान्यथे	जैसत्रालान्ये	६५ × १७
अभपद	अभवद	६७ × १
वृहजित	वृह अजित	६९ × २०
तदीय	तदीय	७० × ४
भमिणि	भामिणि	८१ × ३
घवते	मघवते	६१ × २
मुण दाण इट्ट	मुणिदाणइट्ट	१०७ × ५
णरयण	णरयणत्त	१०७ × २०
पावसु	परवसु	११२ × १२

मनामहारि	सतावहारि	११४ × ७
भिरिकरमसीट्टु	भिरिकरमसीट्टु	११७ × १८
माहवसेगु	माहवसेगु	१२८ × १
करुत्तु	करुत्तु	१२८ × ५
छट्टु	छट्टु	१५५ × १३
नयू	णायू	१५७ × २३
१६०५	१६२४	१८७ × ६
काल प ता	कालव नाहं	२०८ × २८
त्रि	विद्युव	२२० × १६
पहन	पट्टन	२२३ × १२
कवर्ही	कहीं	२३३ × २३
ले	लेस	२३३ × १३
मत्तार	सनरह	३३६ × २३
अन	आलि	२४४ × १३
मु दिगयाल	मु गिदयाल	२५१ × ४
वयाहोई	वयावा होई	२५१ × २०
त्रिनसिंह	किशनसिंह	२५४ × २३
अभ्रह	रिसह	२६३ × ४
निरगय	निरगय	२६३ × ४
सप्त	सेहर	२८७ × ५
जमडपु	जसडधु	२८८ × १६
पिगलु	पिगलु	२८७ × १६

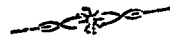
विषय—अनुक्रम

नाम	पृष्ठ संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
प्रकाशकेय ब्रह्मज्ञ		प्रयत्नपर प्रा कृत वृत्ति (ब्रह्मरन्ध्र)	३६
प्रस्तावना		पाण्ड्यपुराण (शुभचन्द्र)	३७
शुद्धाशुद्धिपत्र		पुण्याश्रवकथाकोश (रामचन्द्र)	६६
		पुराणमारम्भह (सकलकीर्ति)	४१
		भक्त्यामरन्तोत्रवृत्ति (गुणमुद्र)	४२
		" (रायमल्ल)	४३
		" (अम्बरप्रभसूरि)	४३
		भोजप्रबन्ध (रत्ननिन्दरगणि)	४४
		महावीर पुराण (आशाधर)	४४
		महीपाल चरित्र (चारित्रमुन्दरगणि)	४५
		मुनिमुन्नत पुराण (कृष्णदाम)	४७
		मेघदूतावचरि (मुमतिविजय)	४८
		मेघदूत टीका (मेघराज)	४६
		यशोधर चरित्र (ज्ञानकीर्ति)	४६
		" पदानाम्भ	४१
		यशोधर चरित्र (सकलकीर्ति)	४३
		योगचिन्तामणि (हर्षकीर्ति)	५३
		राजवार्त्तिक (अकलंकदेव)	५४
		वररंगचरित्र (वर्द्धमान देव)	५४
		वर्द्धमानपुराण (सकलकीर्ति)	५६
		श्रावकाचारमार (पदानन्दि मुनि)	५७
		श्रीपालचरित्र (नेमिदत्ता)	५६
		श्रेणिकचरित्र (शुभचन्द्र)	६१
		सम्यग्ग्य कौतुडी	६३
		" गुणाकरसूरि	६४
		सारस्वत चन्द्रिका सटीक (चन्द्रकीर्ति)	६४
		सिद्धान्तसार संप्रह (नरेन्द्रसेन)	६६
		सिन्दूर प्रकरण (सोमप्रभसूरि)	६७
		सुदर्शन चरित्र (नेमिदत्ता)	६७
		स्वामीकाशिकेयानुप्रेक्षा सटीक (शुभचन्द्र)	६८
संस्कृत			
आदिपुण्य (जिनमेनाचार्य)	१		
आदिनाथपुराण (सकलकीर्ति)	२		
क्षत्रपुराण सटीक (प्रभाचन्द्राचार्य)	३		
उपदेशरत्नमाना (सकलभूषण)	४		
भरकण्ठ चरित्र (शुभचन्द्र)	५		
कर्मकाण्ड सटीक (ज्ञानभूषण)	६		
चन्द्रप्रभाचरित्र (शुभचन्द्र)	७		
जम्बूद्वीपप्रप्रिमग्रह (सुनेन्द्रकीर्ति)	८		
जम्बूद्वीपमीचरित्र (जिनदाम)	९		
जयकुमारपुराण (कामराज)	१०		
जिनसद्वचनामसटीक (श्रुतसागर)	१३		
जीवंधर चरित्र (शुभचन्द्र)	१४		
ज्ञानमूर्त्तौदय नाटक (वाडिचन्द्रसूरि)	१६		
तत्त्वज्ञानतरंगिनी (ज्ञानभूषण)	१६		
त्रिभंगीमार टीका (विवेकनन्दि)	१७		
दुर्गपदप्रबोध (वल्लभगणि)	१८		
धन्यकुमारचरित्र (सकलकीर्ति)	१९		
धर्मपरीक्षा (अमितिगति)	१९		
धर्मसंप्रह श्रावकाचार (मेधावी)	२१		
नेमिनाथपुराण (नेमिदत्ता)	२६		
पद्मपुराण (सोमसेन)	२७		
" (चन्द्रकीर्ति)	३०		
" (धर्मकीर्ति)	३१		
प्रतिष्ठापाठ (आशाधर)	३३		
अमुष्मचरित्र (सोमकीर्ति)	३४		

नाम	पृष्ठ संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
मन्वन्तर्यश्रौमुदी (मेवा)	६६	पंचास्तिकाय प्राभृत	(कुन्दकुन्दाचार्य) १३२
हनुमन्चरित्र (ब्रह्म अजित)	६६	प्रद्युम्नचरित्र	(महाकवि सिंह) १३२
हरिवंशपुराण (जिननास)	७०	बाहुबलिचरित्र	(धनपाल) १३८
हरिवंशपुराण (जिनसेन)	७३	भविष्यदत्तचरित्र	" १४७
		भविष्यदत्तचरित्र	(श्रीधर) १५०
प्राकृत—अपभ्रंश		मदनराजय	(हरिदेव) १५३
अमरमेनचरित्र (नाणिकराज)	७६	मृगांकलेखाचरित्र	(भगवतीदास) १५४
आचाराग सटीक (श्रीलाक्यचार्य)	८५	मेघेश्वरचरित्र	(रङ्घू) १५६
आत्मसंशोध कौट्य (रङ्घू)	८५	यशोधरचरित्र	(पुष्पदंत) १५६
आदिपुराण (पुष्पदंत)	८६	रत्नकरण्ड शास्त्र	(श्रीचन्द्र) १६४
दत्तपुराण (पुष्पदंत)	९०	वर्द्धमान चरित्र	(जयमित्रहल) १६७
उपदेशमाला (धर्मदासगाणि)	९३	वर्द्धमानकथा	(नरसेन) १७०
उपासनाव्ययन (वसुनन्दि)	९३	पद्मर्मापदेशरत्नमाला	(अमरकीर्ति) १७१
करन्यदुचरित्र (कनकामर)	९४	पद्महाड सटीक	(कुन्दकुन्दाचार्य) १७४
स्मृतिप्रकृति (नैमिचन्द्र)	९६	श्रावकाचार	(लक्ष्मीचन्द्र) १७५
कर्मशास्त्रमटीका	९७	श्रीपालचरित्र	(नरसेन) १७६
क्रियाकलाप	९७	श्रीपालचरित्र	(रङ्घू) १७८
क्रियाकलापनुति (समन्तभद्र)	९७	सकलविधिनिधानकौट्य	(नयनन्दि) १८१, १८५
चन्द्रप्रभचरित्र (यग कीर्ति)	९८	सन्मतिजिनचरित्र	(रङ्घू) १८१
जम्बूनदीचरित्र (वीर)	१००	सुदर्शनचरित्र	(नयनन्दि) १८७
जिनदत्तचरित्र (प० लाडू)	१०१	सुलोचनाचरित्र	(गणिवेवसेन) १९०
जन्मनाच रत्न (रङ्घू)	१०४	मुकमाल चरित्र	(पूर्णभद्र) १९२
बसंभरीना (हरिपंग)	१०८	मुकमालचरित्र	(श्रीधर) १९३
नागलुमाचरित्र (पुष्पदंत)	११०	हरिवंशपुराण	(श्रुतकीर्ति) १९५
नागलुमाचरित्र (नाणिकराज)	११३	हरिपण्य चरित्र	(अज्ञात) १९६
पद्मचरित्र (स्वयम्भू)	२८२		
पद्मपुराण (रङ्घू)	११६		
परमेश्वरचरित्र (श्रुत कीर्ति)	१२०		
पाण्डवपुराण (यग कीर्ति)	१२२		
पद्मनाथपुराण (पद्मकीर्ति)	१२७		
पाश्र्वनाथचरित्र (श्रीधर)	१२७		
		हिन्दी	
		अज्ञित्यपंचाशत	(त्रिभुवनचंद्र) २०१
		अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	(नन्ददास) २०१
		अष्टाहिका कथा	(जीवणरामगोधा) २०२
		"	(खुशालचन्द्र) २०२

नाम	पृष्ठ संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
अग्निनाथस्तुति	(कमलकीर्ति) २०३	धर्मरासो	(अचलकीर्ति) २२७
आदिपुराण	(ब्रह्मजिनदास) २०३	धर्मोपदेशश्रावकाचार	(धर्मदास) २२८
आदित्यवारकथा	२०५	नवचक्रभाषा	(हेमराज) २३०
आदीश्वरफाग	(ज्ञानभूषण) २०५	नेमीश्वर गीत	(चतुर्भक्त) २३१
आराधना प्रतिबोध	(सकलकीर्ति) २०६	नेमीश्वरचंद्रायण	(नरेन्द्रकीर्ति) २३२
ऋषभविवाहलो	(कुमुदचन्द्र) २०६	पद्मनन्दिपंचविंशिका	(जगतराय) २३३
कर्णवृतपुराण	(विजयकीर्ति) २०७	पंचेन्द्रियबोल	(ठक्कुरसी) २३४
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	(बनारसीदास) २०७	पंचास्तिकायभाषा	(हेमराज) २३५
कथाकोश संग्रह	(ब्र० जिनदास) २०८	परमार्थदोहा	(रूपचन्द) २३५
चतुर्दशी चौपई	(टीकम) २०८	प्रद्युम्नप्रबोध	(देवेन्द्रकीर्ति) २३६
चरचासमाधान	(भूधरदास) २०९	प्रवचनसार	२३८
चन्द्रनृपरास	(लक्ष्मणरुचि) २०९	प्रद्युम्नरासो	(रायमल्ल) २३६
चिद्द्विलास	(दीपचंद काशलीवाल) २११	पार्श्वनाथ चौपई	(महेन्द्रकीर्ति) २३९
चेतन कर्म चरित्र	(भगवतीदास) २१२	पार्श्वनाथपुराण	(भूधरदास) २४०
चौदह गुणस्थानचर्चा	(अखयराज) २१२	पोसहरास	(ज्ञान भूषण) २४०
छन्दशिरोमणि	(शोभानाथ) २१२	बनारसी विलास	(बनारसीदास) २४१
जन्मस्वामी चरित्र	(जिनदास) २१३	वाशिठिया बोलरो स्तवन	(कान्तिसागर) २४२
जैन शतक	(भूधरदास) २१४	भरतवाहुबलि छंद	(कुमुदचन्द्र) २४३
तत्त्वार्थसूत्रभाषा	(प्रभाचन्द्र) २१५	भविष्यदत्तकथा	(रायमल्ल) २४३
त्रिभुवननी वीनती	(गंगादास) २१६	भक्तामरस्तोत्रभाषा	(नथमलविलाल) २४४
त्रिलोकदर्पण	(खड्गसेन) २१६	मृगावती चरित्र	(समयमुन्दरगण) २४७
त्रेपनक्रिया	(ब्रह्म गुलाल) २१६	माधवानल चौपई	(कुसललाभाण) २४७
त्रेपनक्रियाकोश	(किशनसिंह) २२०	मिथ्यादुकड	(जिनदास) २४८
त्रेपनक्रिया विनती	(कुमुदचन्द्र) २२१	यशोधर चरित्र	" २४८
दशलक्षणव्रतकथा	(ज्ञानसागर) २२२	यशोधर चरित्र	(लक्ष्मीदास) २४९
दिलाराम विलास और		यशोधर चौपई	(लोहट) २५०
आत्मद्वादशी	(दिलाराम) २२२	योगीरासो	(पाडे जिनदास) २५२
धनपालरास	(ब्रह्म जिनदास) २२४	रत्नपालरासो	(सुरचन्द) २५३
धर्मपरीक्षा	(मनोहरदास) २२३	राजुल पञ्चीसी	(लालचन्द विनोदिलाल) २५४
धर्मस्वरूप	(ब्रह्म गुलाल) २२७	रात्रिभोजनकथा	(किशनसिंह) २५४

नाम	पृष्ठ संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
वसुनन्दिश्रवणचरित्र	(दौलतराम) २५५	सीताहरण	(जयसार) २६७
व्रतकथाकोश	(नुशाल वर) २५६	सुदर्शनरासो	(रायमल्ल) २६९
वैद्यमनोसव	(केशवदास नयनमुद्र) २५७	श्रावणचरित्ररासो	(जिनसेवक) २६६
समयसार कलशा भाषा	(राजमल्ल) २५७	श्रीपाल चरित्र	(परिमल्ल) २७१
समयसार नाटक	(बनारसीदास) २५८	श्रीपालरास	(रायमल) २७२
समयसार नाटक भाषा	(रूपचन्द्र) २६०	हरिवंशपुराण	(नेमीचन्द्र) २७८
सम्यक्प्रकौमुदीकथा	(जोधराज) २६१	होली की कथा	(छीतर ठोलिया) २८१
सम्यग्प्रवरास	(त्रिभुवनदास) २६३	शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ	२८८
सिद्धान्तसार दीपक	(नथमल त्रिलाला) २६४	की सूची	२६६
सिन्दूरश्रकरण	(बनारसीदास) २६६	ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची	३०१
सीमाचरित्र	(रायचन्द्र) २६६	यति भट्टारक आदि की अनुक्रमणिका	



आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के
ग्रन्थों का
प्रशस्ति-संग्रह

१. आदिपुराण ।

रचयिता श्री जिनसेनाचाय तथा गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । साइज १२×११। इञ्च । पत्र संख्या ३६६. लिपि संवत् १८०३ माघ सुदी १५. प्रति मे ४२वें सगे तक आचार्य जिनसेन का नाम दे रखा है तथा अन्तिम पांच सगों मे आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

संगलाचरण—

श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीशुपे ।

घर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुखे ॥१॥

अन्तिम पाठ—

यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयभूगति,

यक्ताशेषपरिग्रहोपि सुधियां स्वामीति यः शब्दते ।

मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेवोपकारीमतो,

निर्दानोपिवुधैरुपास्यचरणो यः मोस्तुवः शांतये ॥

दृश्यापे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिपटिलक्षणमहापुराणसंग्रहे प्रथमतीर्थेकरचक्रधरपुराण-परिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपर्व समाप्तः ।

संवत् १८०३ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री मूलसंघे बल स्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुदाचायो-न्वये भट्टारकश्रीविश्वभूषण तच्छिष्य ब्रह्मश्रीविनयसारजी तच्छिष्य ब्रह्म श्रीहर्षसागरजी तद्गुरुभ्राता पंडित हरिकृष्णजी तच्छिष्य पं० जीवनरामजी तदनुचर पं० हेमराजस्येदं पुस्तकं पठनार्थं पंडित हरिकृष्णेन दत्तं ।

प्रति न० २. पत्र संख्या ४३७. साइज ११।।५ इञ्च ।

संवत् १५८७ वर्षे मार्ग शुद्धि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंदाभाये कुंद-कुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तस्मिन् भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तस्मिन् भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

पक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पंक्ति ३६-४२. अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ पट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रन्थ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७. लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

वंदे श्रीवृषभं देवं दिव्यलक्षणलजितं ।

प्रणितप्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तम ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिगच्छे

गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।

श्रीकुन्दकुन्दगुरुपट्टपरंपरयां

श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूजिताक्षः ॥१॥

तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।

भट्टारकः श्रीसकलादिकीर्तिः प्रसिद्धनामाजनिपुरय्यमूर्तिः ॥२॥

भुवनकीर्त्तिगुरुतत्तर्जितो, भुवनभासनशासनमंडनः ।

अजनि तीव्रतपश्चरणज्जमो, विविधधम्मसमृद्धिसुदेशकः ॥३॥

श्रीज्ञानभूपापरिभूषितांगः, प्रसिद्धभङ्गिद्वयकलानिधानः ।

श्रीज्ञानभूपाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्वाविव भानुरासीत् ॥४॥

भट्टारकश्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे वरलेब्धकीर्त्तिः ।

महामना मोक्षसुखाभिलाषी वभूव जैनावनियार्च्यपादः ॥५॥

भट्टारकश्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपंकेरुहातगमरश्मिः ।

त्रैविद्यत्रयः सकलप्रसिद्धो वादीभसिद्धो जयताद्धरित्रयां ॥६॥

पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः

शातोद्योतः शीलशालीसुधीमान् ।

जीयात्सूरिः श्री सुमत्यादिकीर्त्तिः

गच्छाधीशः कर्मकांतिरुलावान् ॥७॥

तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्ना सकलभूषणः ।

सूरिर्जिनमते - लीनमनाः संतोषपोषकः ॥ ८ ॥

तेनोपदेशसद्गुणमालासंज्ञो मनोहरः ।

कृतः कृत्तिजनानंदनिमित्तं ग्रन्थ एषकः ॥ ९ ॥

श्रीनेमिचंद्राचार्याद्विद्यतीनामाग्रहात्कृतः ।

सद्वर्द्धमानां येषां प्रार्थना ते मयैषकः ॥ १० ॥

सनादिशान्ये वरु षोडशशतवत्परमुविक्रमतः ।
 श्रायणमाने शुक्ले पक्षे षष्ठ्या कृनोऽथ ग्रथः ॥ ११ ॥
 न यथा ख्यातिनिमित्ति न चाभिमानेन विरचितो ग्रंथः ।
 चर्मरत्नानां गृह्णिता हिताय च भवस्य पुण्याय ॥ १२ ॥
 चावत्सिद्धः सिद्धधामप्रपन्नामेकाद्या वे भूराः भूरि सत्याः ।
 चद्रादित्याद्याश्च खे सत्यसत्याः नतिष्ठते तावदास्ता ममाय ॥ १३ ॥
 श्रीवीरगौतमाद्यैश्च श्रेणिकस्य पुर ५रा ।
 यदुक्तं तच्च सङ्गमयापीह निरूपितं ॥ १४ ॥
 सिद्धांतशास्त्रयुक्त्या 'द्विविद्धं' यन्मयोदितं ।
 क्षमित्यं मुनीशैस्तत्सर्वशास्त्राद्विचारणैः ॥ १५ ॥
 न्यूनमन्तरमात्राद्यैरज्ञानान्मयकात्रयत् ।
 प्रोक्तं चमरा तदेषि सारदे श्रीजिनास्यजे ॥ १६ ॥
 जिनसिद्धमूरिपाठकसाधुमुनीनाश्चतुर्विधस्य संवस्य ।
 विदधतु मगलमदुल सुक्तिं सुक्तिं च यच्छतु ॥ १७ ॥
 सहस्रं त्रितयं चैव त्रिशतत्रयशीतिसयुतं ।
 ३३३ अनुष्टुपछंदसा चास्य प्रमाणं निश्चितं बुधैः ॥ १८ ॥

इति भट्टारक श्रीशुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसरलभूषणविरचितायां उपदेशरत्नमालायां पुण्यपट्टकस्मिन्
 प्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नमः अष्टादशपरिच्छेदः ।

सत्रत् १८२६ मिति मार्गेश्वर सुदी २ बृहस्पतिगारे सवाईचयपुरनगरे चंद्रप्रभचैद्यालये पंडितो
 त्मरंडितजी श्री रायचंदजी तत् शिष्य सेवक सवाई रामेण इदं पुस्तकं लिपिकृतं ॥

प्रति न० २, पत्र संख्या १३६, साङ्ग ११।।×१।। इच्छ । लिपि सत्रत् १७४५, प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

सत्रत्सरे वाणादि मुनीदुर्मते १७४५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्विंशतिशु गुरुवारं शनभिषा
 नक्षत्रे शुभनामयोगे श्रीमच्छण्डप्रभचैत्यागारे पातिसाह श्री अवरगसाहि तत्तमात महाराजा
 श्री रासिंहजी राज्ये श्रीमूलसधे नद्याप्रान्ते बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुदाचायान्त्रये भट्टारक श्री देवेन्द्र
 कीर्त्ति स्तम्भे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्तिदेवा स्तम्भे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिनिभा
 गार्भाये धैर्योदार्यपाडित्यसौजन्यप्रमुखगुणगणामणि रोहणीक्षितिभृतः भट्टारकश्रीजगत्कीर्त्तितदाम्नाये
 खड्गलक्ष्मणान्त्रये छावडा गोत्रे साह श्री गगाराम; वज्रगोत्रे साह श्री अनन्दराम, साह श्री खेतसी साह श्री
 मार्या, पहाड्या गोत्रे साह श्री वनमालीदास तत्पुत्र नदराम साह श्री तेजसिंह, सेठी गोत्रे साह श्री मनराम
 साह श्री पूरा, साह मेधा तिलोकचंद; पांड्या गोत्रे साह श्री वेणा, साह श्री ढोला, साह बडसीजी, पाटणो

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जंमा. ब्रजमेरा गोत्रे साह श्री पूरा एते सर्वाः भट्टारक श्री जगस्कीर्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूगम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी गगद् संज्ञाय एताभ्यामिदं पुस्तकं नामपट्कर्मोपदेशरत्नमालाग्रंथं सर्वे श्रावकाः लिखाप्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं ।

५. करकरडुचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र तथा मुनि श्री सकल भूपण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६ । साइज १० १/४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । रचना सवत् १६११. लिपि संवत् १८६१. प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रशस्ति—

ऽीमूलसंधे जनि प्रद्वानंदी तत्पट्टधारा सकलादिकीर्तिः
कीर्ति कृता येन च समर्थलोके शास्त्रार्थवक्त्री सकला पवित्र ॥ १ ॥
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाधिपो भवनभासनभूर्गमतिस्तुतः ।
एतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाहि खगेट् क्षितिभूत्तमः ॥ २ ॥

x x x x x x x x x

पट्टे तस्य गुणांनुधिन्न तधरो धीमान् गरीयान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्रपप विदितो वादीभसिहो महान् ।
तेनेहं चरितं विचारुचिरं चाकारि चंचद्रूवः
श्रीमच्छ्री करकंडुनामनृगतिः नीत्यान्तरस्तं द्विपं ॥ ३ ॥

चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं प्रद्वानाभ चरितं शुभचन्द्रः ।
रन्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकारं ॥ ४ ॥
वंदनायाः कथा येन दृष्ट्वा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचर्चाया धृतिः सद्दृत्तशालिनी ॥ ५ ॥
त्रिशच्चतुर्विंशतिपूजनयः वृद्धं च सिद्धार्चनं मात्त्रिघत्तं ।
एतस्मिन्तीयार्चनमत्रचित्रं चितामणीयाचर्चनमुच्चरिभ्युः ॥ ६ ॥
श्रीकर्मदाह विधिवंधुरसिद्धसेवां

नानागुणौद्यगणनाथसगर्वनं च ।

श्रीपार्श्वनाथव काव्यमुपजिगां च
यः सचकार शुभचन्द्रयतीवद्रं ॥ ७ ॥

दद्यापनमदीपिष्ठा पल्योपमविधिश्च यः ।

चारित्र्यशुद्ध तपसश्च जुस्त्रिद्वादशात्मनः ॥ ८ ॥

शंसयिन्नदनविद्वारण अपशब्दसुखंढनं परं ।
 तन्कं स तत्त्वनिर्णयवरस्वरुभ्रसंबोधनीवृत्ति ॥ ६ ॥
 अध्यात्मपद्यवृत्तिर्सद्वाथोपूर्वतोभद्रं ।
 यो कृत् सद्बुद्धाकरणं चित्तमस्मिन्नामधेय च ॥ १० ॥
 युग्मं कृत्वा येनामप्राप्तिः सर्वार्थं प्ररूपिका ।
 स्तोत्राणि च पावित्र्याणि षट्पदाः श्रीजिनेशानां ॥ ११

* * * * *

करकडु नरेन्द्रस्य चरितं तेन निर्ममम् ।
 जिनेशपूजनेप्रीत्येत्यैदं समुद्धृत्य शास्त्रतः ॥ १२ ॥
 शिव्यस्तस्य समृद्धिवृद्धिशिवो यस्तर्कवादीवरो
 वैराग्यादित्रिशुद्धिवृद्धजनकः सर्वार्थसुहोमहान् ॥
 संप्रीत्यासकलादिभूषणमुनिः सशोध्य वेदं शुभ,
 तेनालोखिसुपुस्तकं नरपतेराद्यसुचर्येशिनः ॥ १३ ॥

* * * * *

द्वयादौ विक्रमतः शातसमुद्रात्चेकादशाब्दविका
 भाद्रैमासिसमुद्रालयुगतिर्घोखङ्गे जावाद्देपुरे ।
 श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदने चक्रो चरित्रत्विद,
 राज्ञः श्रीशुभचन्द्र सूरि यतियश्चंपाक्षिपस्याद्भुवं ॥ १४ ॥

इति श्री शुभचन्द्रविरचितमुनीश्रीसकलभूषणसहाय्यसापेक्षे भव्यजनजेगीयमानयशोराशि श्री
 करकडुमहाराजचरिते करकडु वीक्षाग्रहणसर्वार्थसिद्धिगमनो नाम पंचदश सर्गः ।

६. दार्मिककांडसटीक ।

टीकाकार श्री ज्ञानभूषण तथा श्री सुमतिकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५१ । साइज १२५५ ॥
 ३५३ । टीका काल १६ वीं शताब्दी । लिपि संवत् १७७७ । प्रतिपूर्णं तथा सुन्दरं है ।

संमत्ताचरण—

महावीरं प्रणम्यादौ विश्वतस्वप्रकाशक ।
 साप्यं हि कर्मकांडस्य वक्ष्ये भव्यहितकरं ॥
 विद्वान्दिसमल्ल्यादि भूपलक्ष्मीदु सद्गुरुन् ।
 वीरेन्दुज्ञानभूप हि वंदे सुमतिकीर्तिकं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमहाभाधुर्लक्ष्मीचंद्रोयतीश्वरः ।
तस्य पट्टे च वीरेन्दुर्विबुधो विश्रवदितः ॥ १ ॥
तदन्वये दयाभोधिर्ज्ञानभूपोगुणाकरः ।
टीर्का हि कर्मकांडस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामांकिता सूरी श्रीसुमतिकीर्ति विरचिता कर्मकांडस्य टीका समाप्तः ।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अपाढ सुदी, ६ भौमदिने श्रीमद्भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकीर्ति तच्छिष्य
पंडितकिशनदासस्य वाचनार्थे लिखितं महात्मा धनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये ।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ परं १० पंक्तियां तथा
प्रति पंक्ति में, ३८-४२ अक्षर । विषय—आठवें तीर्थकर, श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र । प्रति पूर्ण तथा
नवीन है ।

मंगलाचरण—

भ्रीवृषं वर्षभं वंदे धृगदं वृषभांकिर्त ।
वषभादिसभाश्लिष्ट पादद्वितयपंकजं ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभं जिनं स्तौमि चन्द्रकांतं सुचंद्रक ।
चंद्रांकं चेहितं चंद्रैश्चंद्रिकाहततामसं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यसारादिसुलोकप्रथान्, सद्गोष्मटादीन् वरदीवहेतून् ।
सत्तर्कशास्त्राष्टसहस्यधीशान् नो वेद्म्यहं मोहवशी कृतांतः ॥ १ ॥
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेश, स्तुवश्च सद्भिः सकलैः परैश्च ।
क्षम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि शुभं न दक्षीत् ॥ २ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः ।
तत्पट्टधारी भुवनादिकीर्ति, जीयाच्चिरं धमंधुरीणदत्तः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनिवोधबुद्धनिखलन्यायादिशास्त्रार्थ—

कश्चिद्रूपामृतपानलालसमतिः श्रीज्ञानभूषोजयी ।

जीयात् पंचमकालकल्पशिखरी तत्पट्टधारी चिरं,

श्रीमच्छ्री विजयादिकीर्तिमुनियो भूयाश्शास्त्रार्थवित् ॥ ४ ॥

सोम प्रभः सोममसानतेजाः श्रीमोमनल्लाङ्घनड्डकांतिः ।
सोम. सुमूर्तिश्च दरोतु माङ्ग्यं श्री शौभचन्द्रस्य सुयोगिनः मः ॥ ५ ॥

यः संश्रणोति भजते निखिलं चरित्र,
यः ऋयतिप्रथयतीदुनिभस्यभावात् ।

यः पाठयन् पठयति जिनभक्तिरागात्,
स सिद्धिभीरुमुखपंकजमश्नुतेऽपि ॥ ६ ॥

पण्ड्यविक्रान्तर्वे शतपञ्चशामनाः
प्रमण्णमस्य विद्वयं लेखकैः पाठकैः सदा ॥ ७ ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभचरिते भट्टारक श्रीशुभचन्द्रविरचिते भगवतो निर्वाणगमनो नाम दशमः सर्ग ।

सबत्सरे मदनविक्रमवसुखरूपमिने मामोत्तममासे श्री चन्द्रप्रभुतीर्थकरजन्मनि पवित्रते चैत्रमासे कृष्णपक्षे
ज्ञालसोटशुभस्थानमध्ये वनोपवननदीधिक्ताम्रगारसमाकुले महाराणाधिगज श्री सवाई प्रतापसिंहराज्य-
प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्यान्ताये पण्डित श्री परसराम जी तन् शिष्य अण्णदराम
चि० तदन्तेवासी भगवान्नाम पठनार्थं लिखायित ॥

८. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ८२. साइज १३x५ इञ्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर १५ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४० अक्षर रचना संवत् १८३३.

सगलाचरण—

श्री वीरं प्रणिपत्योचै विघ्नसंदोहनाशकं ।
प्राग्व्य कार्यकर्त्तार वक्ष्ये द्वीपप्रज्ञप्तिकं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एवं श्रीपद्मनन्दिशुण्णकक्षितो मानसे मे पदं स्तं,
कृत्वायस्था. सुकृतकृतं श्रीसुरेन्द्रादिकीर्त्तः ।
श्रीमत्क्षेमेन्द्रभीर्त्तिप्रवरसुचिवरप्रेष्टशिष्यस्य नित्य,
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रवररञ्जनादिपणीवद्विधातुः ॥ १ ॥
अहो वह्नियग्निवस्त्रिदुमित अमलो पौष शुक्लस्य पष्टयं,
श्रीमन्नाभेयगोद्वे विततुमतिना, प्राकृतात्संस्कृतेन,
श्रीमूलार्ये सुमंघे तनुमतिविदां बोधनायार्थमेवा,
वक्ष्ये नोच्छैः प्रवक्ष्या सकलजनशुभासंगलं मे करोतु ॥ २ ॥

श्रीमद्वलात्कारगणे सुरभ्ये सरस्वतीगच्छसुनीद्रपूज्ये ।
 श्रीकुन्दकुन्दान्वयके सरोजे देवेन्द्रकीर्तिः प्रथमभूवभानुः ॥ ३ ॥
 भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके भूत्यमहीन्द्रकीर्तिः ।
 देवेन्द्रकीर्तिर्ममैव गुरुर्या भूम्यां ततोऽभूत्तत्सा सुधीरः ॥ ४ ॥

x x x x x x x x x x

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रहे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदे नाम त्रयोदशपरिच्छेदः समाप्तः ।

६. जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०५. साइज १०।x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में २८-३१ अक्षर । विषय-अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र । लिपि सवत १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवद्धमानतीर्थेशं वन्दे मुक्तिवधूवरं ।
 कारुण्यजलधि देवं देवाधिपनमस्कृतं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिविदितः पृथिव्यां ।
 सरस्वतीगच्छविभूषणं च, वभूव भूत्यालिसरोजहंसः ॥ १ ॥
 ततोऽभवत्तस्य जगत्पसिद्धेः, पट्टे मनोज्ञे सकलादिकीर्तिः ।
 महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निर्मथराजा जगति प्रतापी ॥ २ ॥
 जयति सकलकीर्तिः पट्टपकेजभानुः,
 जयति भुवनकीर्तिः विश्वविख्यातकीर्तिः ।
 बहुयतिजनयुक्ते, मुक्तिमाग्रेप्रणेता,
 कुसुमशाविजेता भव्यसन्मर्गनेता ॥ ३ ॥
 त्रिवुधेजनिपेव्यः सत्कृतानेककाव्यैः,
 परमगुणनिवासः सद्वृत्तालीविलासः ।
 विजितकरणमारः प्राप्तसंसारवारः,
 स भद्रु गतदोषः शम्भणे वः सतोपः ॥ ४ ॥
 पष्टाष्टमां देस्तपसो विधाता,
 क्षमाभिधः श्रीनिलयं धरिण्यां ।

जीयाञ्जितानेरुपरीपहारिः

संबोधयन् भव्यगण चिर सः ॥ ५ ॥

भ्रातास्ति तस्य प्रथितः पृथिव्यां सद्ब्रह्मचारी जिनदासनामा ।

तनोति तेन चा त परित्रं, जवृद्धिनाम्नो मुनिमत्तमस्य ॥ ६ ॥

देशे विदेशे सततं विहार, वितन्वता येन कृताः सुलोकाः ।

विशुद्धसर्वज्ञमतप्रवीणाः परोपकारव्रततत्परेण ॥ ७ ॥

मद्ब्रह्मचारी किल धर्मवासन्तस्यास्ति सिष्यः ऋषिबद्धसख्यः ।

सौजन्यवद्भो जलदः कृतोय, तद्योगतो व्याकरणप्रवीणः ॥ ८ ॥

कविमेहादेव इति प्रसिद्धस्तन्मित्रमास्ते द्विजवंशारदनं ।

महीरले नूनमसौ कृतश्च, साहाय्यतस्तस्य सुधर्मं हेतोः ॥ ९ ॥

ग्रन्थः कृतोऽय जिननाथभवत्या, गुणानुरागाच्चमहामुनीनां ।

पूजाभिमानाद्रहितेन नूनं मया प्रशस्तः परमाथं बुद्ध्या ॥ १० ॥

ये श्रूयन्ति चरित्रमुत्तममिदं श्री जवुनाम्नो मुने,

नानाचित्र कथाविभूषितमतिप्रवीण्यसत्रो वन ।

तेषां स्याद्बहुपुण्यकर्मनिपुणा बुद्धिः शुभ भूरिव,

त्यक्तशेषभवप्रसूतसुखसार्थस्यासुधर्मास्पद ॥ ११ ॥

पठनीयपाठनीयशास्त्रमेतन्मुनीश्वरैः ।

जवृष्ट्यामिचरित्राद्य रोमांचजननं नृणां ॥ १२ ॥

ज्ञतव्य शारदे देवि यदत्रस्खलित मया ।

मोहप्रमादवशातः श्रुताब्धौ को न मुह्यति ॥ १३ ॥

जंवृष्ट्यामिजिनाधीशो भूयान्मांगल्यसिद्धये ।

भवतां भुवि भो भव्याः श्री वीरांतम केवली ॥ १४ ॥

एकविंशतिसंख्यानि शतान्यत्र चरित्रके ।

त्रिंशद्युतानि श्लोकानां, शुभानां सति निश्चितं । १५ ॥

इति श्री जम्बूवामिचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिशिष्य ब्रह्मचारी श्रीजिनदास विरचिते विद्युच्चर-
दहामुनिसवार्थसिद्धि गमन नामैकादशः सर्गः ।

१०. जयकुमार पुराण ।

रचयिता ब्रह्म कामराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११
पक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रतिपूरां है तथा प्राचीन है । लिपि सवत् १७१६ ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभ नृसुरार्चिवतं ।
 भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥
 नमः श्री शांतिनाथाय शांतिर्कारये निशं ।
 पचभ्यस्सद्गुरुभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराण योगिनो वरं ।
 पठनपाठनश्रोतृशीलानां जयपुण्यदं ॥ १ ॥
 प्राप्तिशिवो जयीदेयाज्जयोस्माभिः स्तुतः श्रुतः ।
 युस्माभिर्नः पुराणस्य व्याजाद्भ्रतत्रयं वचः ॥ २ ॥
 प्रकथयतेऽन्वयोऽथात्र ग्रंथकृद्ग्रंथभक्तजः ।
 मूलसंधे वरे वीरपारंपर्याञ्चतुर्गणे ॥ ३ ॥
 अभूद्गणो बलात्कारः पद्मनंथ दि पंचसु ।
 नामास्मिन्श्च मुनिप्रोव शारदा बलवाचकः ॥ ४ ॥
 आचार्या कुदकुदाद्यात्तस्मादनुक्रमादभूत् ।
 सकलकीर्तियोगीशो ह्यानी भट्टारकेश्वरः ॥ ५ ॥
 येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वाग्वरादिके ।
 निग्रंथे न कवित्वादिगुणे न बाहंता पुरा ॥ ६ ॥
 तस्माद् भुवनकीर्ति श्रीज्ञानभूषणयोगीराट् ।
 विजयकीर्त्तयोऽभवन् भट्टारकपदेशिनः ॥ ७ ॥
 तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिर्कीर्त्ति संयमि ।
 गुणकीर्त्याह्वया आसन् बलात्कारगणेश्वरः ॥ ८ ॥
 ततः श्री गुणकीर्त्तीयपदव्योमदिवाकरः ।
 चादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् वादिभूषणः ॥ ९ ॥
 तत्तदाधीश्वरो विश्वव्यापिनी श्वेतकीर्त्तिधृत् ।
 रामकीर्तिरभूदस्य रामो वा सुखदो गुणैः ॥ १० ॥
 तस्मात् स्वगच्छतिरस्ति स पद्मनन्दी ।
 निष्णांतकोकसुखकारकपद्मनन्दी ।
 भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी
 श्रीरामकीर्त्तिपदभूधरपद्मनन्दी ॥ ११ ॥

यः शब्दतर्कपरमागमत्रिद्विरुगी

रागो शिवे त्रिहितसर्वतपः समूहः ।

भान्यत्र वस्त्रपरिवर्जनजातरूपः,

कालकलौ परिहृतात्तिलवस्तुचोभः ॥ १२ ॥

पश्चाणा ह्यजनक्षणेऽस्य यतिनो वशादिवालस्यविद्

धृत्वामे समरदिसिहनृगतिः खड्ग पुरस्थेति सः ।

प्राहसि प्रविस्तीर्य मां मुनिवन्द्यं चात्रराशि प्रथो

राजन्यं कुरु सप्रगृह्य सतदां स्वामीकृतान्नाचलत् ॥ १३ ॥

गिरिपुर विपतिन्तु पपुंभवस्तमभिवीक्ष्य मुद्रौह्यमते प्रभुः ।

गिरिधरादिमह्यससमाह्वय जलधिरंबु च येन विद्यु यथा ॥ १४ ॥

तदुपदेशवशेन तदीयसत्प्रवरपुण्यभराकृतसाहसः ।

जयपुराणमिदं तनुबुद्धिना दक्षतमगजनाथसुवर्णिना ॥ १५ ॥

नामप्रवसभवर्षडितजीवराजमेधावतात्सफलसौख्यकरः कृतोऽस्य ।

जैनालयः स्थपतिबुद्धभरादपूर्वो ग्रंथो नु वा जयभृतो जिनदर्शनोर्व्या ॥ १६ ॥

मह्यारकस्य गुरुवंधुरभूत्सद्गो-

मेधावतः सुमतिर्नीतिमुनेर्गुणाचर्यः ।

आचार्यमुख्यसकलादिमभूपणाख्य-

स्तच्छिष्य सूरिरभद्रत् स नरेन्द्रकीर्तिः ॥ १७ ॥

पूर्णास्य वक्तृकवितादिगुणोरदधोः

शिष्यो बभूव नृपमान्यनरेन्द्रकीर्तिः ।

वर्षीस्मरा भवयुपः सहिलाड्यनाख्यः,

शिष्योऽस्ति तस्य जयसेवकक्रामराजः ॥ १८ ॥

मात्रासंधिविभक्तिलिगवचनात्काररीत्यादिभिः,

प्रोक्तं यद्रहितसरस्वतिमया ग्रंथेऽत्र मूरीश्वरोः ।

निर्वाह्य विदभावतः क्षममयिन्नंतद्विहिते बालके,

मातेवास्फुटवाग्रते शिवकरा तारुण्यकालाद्भुते ॥ १९ ॥

दुःसंध्यादिमलं विनाश्य गुणिनः सत्रीक्ष्य यूयं बुधाः,

हर्षन्तः केचिच्छिवं कुरुत भो ग्रंथद्वेहः स्वात्मनि ।

शुद्ध सज्जनता गुणाद्बुद्धमिवा कृतादिनैर्भक्त्यदं,

गंभीरं पृथुलं त्रिवर्गसालिलं पंकशरद्वंसराः ॥ २० ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,
सम्यक्पदेन सहितो भवसौख्यवर्गान् ।
अन्योत्थकर्मजनकाव्विमुग्धस्य काचि-
चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोऽन्यः ॥ २१ ॥

अमृतवाद्भि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमंदिरचपलकरु ।
समूहोः साहताः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये ॥ २२ ॥
शिल्पिरुत्पादयत्येव जिनत्रिवं तथा कविः ।
शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानितं जनोः ॥ २३ ॥
राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमंदपाटस्यमुख्ये ।
पश्चात् संवत्सरस्य प्ररचितमदतः पंच पंचाशतोद्दि ।
अध्राध्राक्षोरु संवत्सरनिकरयुजः फागुणे मासि पूर्णे ।
द्रमेवोचोदयाख्ये सुकवि वनयिनो लालजिष्ठोश्च वाक्यात् ॥ २४ ॥
सकलकीर्तिकृतं पुरुदेवजं समवलोक्य पुराणमियंकृतिः ।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च वृहदलं जिनसेनकृतकृता ॥ २५ ॥

इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरुरूपदेश ब्रह्मकामरा त्रिविरचिते प० जीवराज-
सहाय्यात् त्रयोदशमः सर्गः ॥

प्रति न० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति
में ३७-४२ अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

संवत् १६६१ वर्षे भाद्रवा बुदी ३ शुके श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदा-
चायान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तदन्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवा
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदीस्तदाम्नाये श्री गुर्जरदेशे श्री सूरतविदार श्री वासपूज्यचैत्यालये हुबडजात य
साह श्री संतोपी भ्राता साह जीवराज तयोः जननी आर्यिका बाई करमा तथा स्थविराचार्य श्री नरेंद्र कीर्त्ति-
रत्नच्छिष्य ब्रह्म श्री लाड्यका तत्च्छिष्यब्रह्म श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाप्य दत्तं ॥

संवत् १७३० वर्षे ब्र० कामराजेन स्वाभिष्ट शिष्य ब्र० बाघजीष्टवे जयपुराणमिदं दत्तं ॥

११. जिनसहस्रनाम सटीक ।

मूलकर्ता आचार्य जिनसेन । टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६१ ।
साइज १२×५॥ इच्छ । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

प्रशस्ति—

अर्धतः निवृत्ताय त्रिविधमुनिजनभारती चार्द्धतीऽड्या

महृद्यो कुरुकुटो विबुधजनदवात्सर्वनःपूज्यपादः

विद्यन्तदोन्मत्तः कलिमन्दिरणः श्रीसमंतादिभद्रो

भूयान्मे भद्रवाद्भवभवमथनो मंगलं गौतमादि ॥ १ ॥

श्रीवद्वानन्दिपरमात्मरः प्रवित्रो

वेदेन्द्रकीर्त्तिप्रसाधुजना भवेद्यः ।

विद्यादिनदिशरमूर्तिरत्नपर्वोद्यः,

श्रीमन्निर्मृषण इतोमन्त्र च मंगलं मे ॥ २ ॥

× × × × × ×

श्रीश्रुतसागरकृतिवरत्रचनामृतपानमत्र शैर्विहितं

जन्मजरायमराहरं तिरनरं चैः गित्र लब्ध ॥ ३ ॥

अग्नि न्वास्ति समस्तमयतिजकः श्रीमूलसधं,

वृत्तं यत्र सुपुक्षुवगाशिवदं ससेवितं साधुभिः ।

विद्य नदिगुरु स्त्वहान्तिगुणवद्गच्छगिरः सांप्रतं,

साच्छिन्त्यश्रुत्सागरेण रत्रिना दीक्षा त्रिर नन्दु ॥ ४ ॥

इत्याचार्यश्रीश्रुतसागरविचिताया त्रिननामसश्चटीकायामनकृच्छतविश्वरणे नाम दशमोऽध्यायः ।

१२. जीवंधर चरित्र ।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साङ्ग १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पाक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३६ अक्षर । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है । रचना संवत् १५६६. लिपि मयन १६३२. जीवंधर चरित्र अभी तक अप्रकाशित है ।

मगलाचरणा—

श्रीसन्मति. सता कुर्यात्ससीहितं फलं पर ।

द्वेनाप्येत महायुक्तगजस्य वरवैभवः ॥ १ ॥

प्रशस्ति तथा अन्विम पाठ—

श्री मुनसधो यतिमुख्यसेव्यः, श्रीभारतीगच्छविशेषशोभः ।

मिध्यासतध्यांतविनाशदहो, जीयाच्चिरं श्रीशुभचंद्रभासी ॥ १ ॥

श्रीमद्विकनभूनेर्वसुद्वन्द्वैतेशतेसमह,

वेदेन्यूननरे समे शुभतरे पिमासे वरे च सुजौ ।

वारे गीर्वाणतिका त्रयोदशतिथौ सन्नूतने पत्तने,

श्री चन्द्रप्रभाम्नि वै विरचितं त्रेद मया तोपतः ॥ २ ॥

इति श्री जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमौल्यगमनघर्णननामत्रयोदशो भलः ।

संवत् १६३६ वष अषाढ सुदी १३ सोमवारे सांपणाग्रामे राय श्री सुरजनजी प्रवत्तमाने श्री मूलसंधे नश्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवातच्छिष्य-मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री लज्जितकीर्तिदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री चन्द्र-कीर्तिदेवास्तदाम्नाये गवडेलाजान्वये साहगोत्रे साह श्री कमा तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या करणादे द्वितीया लहुडी । तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र साह ऊदा, द्वि० सा. माधु. वृ. सा० माधु चतुर्थ सा. चादु पंचम सा. कालु । सा. ऊदा तद्भार्या उत्पिदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम पुत्र जिनपूजापुरदगान्, दानगुणे श्रेयांस, कीर्ति-गुणे रामचन्द्र, शीलगुणे सुदर्शन, प्रभावनागे वप्त्रकुमार, इत्याद्यनेकगुणालंकृतगानान साह श्री भीखा तद्भार्या दानशीलतपभावना भावलदे तयोः पुत्राः चत्वारिः । प्रथम पुत्र साह जेसा भार्या जसमादे, द्वि० पुत्र म्पेटा, तृतीय चि० चेणा चतुर्थ चि० हरीदास । द्वितीय पुत्र साह सेखा तद्भार्यातिस्रः प्र० भा० शृंगारदे तयोः पुत्र चि० तेजा । द्वितीया भार्या सक्तादे । तृतीया भार्या संकरदे । सा, माधु भार्या मुक्तादे तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. वीतु भार्या वीतादे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र खीवा द्वितीय पुत्र सांगा । तृतीय पुत्र माल्हा । द्वितीय पुत्र धर्मा भार्या धारादे तत्पुत्र ताल्ह । तृतीय पुत्र लाखा भार्या लखमादे । चतुर्थ पुत्र परन्नत भार्या पाटमदे । पंचम पुत्र नानू भार्या नारंगदे । सा. माधु भार्या पदमपती । साह चांदू भार्या दानशीलतप-भावना सुहाणीचांदणदे तयोः पुत्रा त्वत्वारः । प्रथम पुत्र कुलमडन सा. श्रिया तद्भार्या प्रथम सुहागदे द्वि० भार्या लाहुडी । द्वितीय पुत्र हीरा भार्या हीरादे तृ० पुत्र बोहित भार्या बहुरगदे चतुर्थ पुत्र होला भार्या हरपमदे । साह कालू भार्या द्वे प्रथम केलवदे, द्वितीया भार्या कौतगदे तयोः पुत्राः चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० आखा भायो अहंकारदे द्वि० पुत्र चि० देना तृतीय पुत्र गढमन्न चतुर्थ पुत्र जालप एतेषां मध्ये जिनपूजा-पुरंदरान्, राजसभाशृंगारहारोपमन्, सौम्यगुणचद्रमा प्रतापगुणसुर्यसम, गंभीरगुणसमुद्रतुल्यान इत्याद्यनेक गुणगुणालंकृतगानान् साह श्री ऊदा तत्पुत्र कुलमडन साह सेखा तेनेदं कर्मक्षयार्थं जीवंधरचरित्रं लिखाप्य पं० श्री पदारथपठनाय दत्तं ।

१३. ज्ञानसूर्योदय नाट ।

रचयिता श्री वादिचंद्रसूरि । भाषा संस्कृत । मन्त्र संख्या ३१, साहज १०।।४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४०-४४ अक्षर । रचना संवत् १६४८. लिपि संवत् १८३५. श्री वादिचन्द्र सरस्वतिगच्छ के आचार्य थे तथा प० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । नाटक अभी तक अप्रकाशित है ।

संगज्ञाचरण—

अनाद्यनतत्त्वं च पञ्चयज्ञात्मनूतये ।
अनंतनाहिमाताय नमोकारणमस्तुते ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

मूलसंधे समामाद्य ज्ञानभूषं दुधोत्तमा ।
दुःखतरं हि भवाभोविं. सुतरं मन्थने इति ॥
तत इमलभूषणं नमभद्रैर्गवरीये मत
च चन्द्रोत्तरः सभानिचतुर. श्रीमत्प्रभावंद्रमा ।
तत्पट्टे जनि वादिवृन्दतिलक श्री वादिचन्द्रोयति .
तेनाय व्यरात्र प्रयोषतरं गुर्भव्याञ्जसशोधनः ।
दसुवेदरनादजादे वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मयूक्तगरे विद्धोऽयं दोषसरन्मः ॥

इति मूर्तिश्री वादिचंद्रविरचिते ज्ञानसूर्योद्देशे नामनाटके आत्मकमन्त्रयविवरणेनो चतुर्थोऽध्यायः

संवत् १२३५ मिति आषाढ शुद्धी १३ सोमवासरे लिखापितं एह श्री पूलीचंद गोधा धर्महैतवे
निकित्त जती मूरजमन् वृत्रांतीमध्ये रात्रे श्री रावराजा श्रीविष्णुसिंहजी ।

१४. तत्त्वज्ञानतरंगिणी

रचयिता सुदुल्लु भट्टारक श्री ज्ञानभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२ । साइज १२×५। इच्छ
प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३६-४० अक्षर । रचना संवत् १५६०. लिपि संवत् १२२५.
तरंगिणी प्रशसित हो चुकी है ।

संगलाचरण—

प्रणम्यशुद्धचिद्रूपं सानंदं जगदुत्तम ।
तत्त्वं क्षणादिकं वच्मि तदर्धी तस्य लब्धये ॥

प्रशस्ति—

ज्ञान श्री सकलादिकीर्त्तिमुनि यः श्रीमृनसधेष्टी-
रत्त-द्वेदयपर्वतेरविरभूद्भव्यांजुज्ञानंदकृत ।
विख्यातो भुवनादिकीर्त्तिरथयस्तत्पादकंजेरजः,
तत्त्वज्ञानतरंगिणी स कृतवानेतां हि चिद्भूषण ॥
क्रीडति ये प्रविश्ये मां तत्त्वज्ञानतरंगिणी ।
ने स्वर्गादिमुखं प्राप्य सिद्धयति तदनंतर ॥ २ ॥

ये च विक्रमातीताः शतपंचदशाधिकाः ।
 पष्टिसंवत्सराः जातास्तदेयं निर्मिताकृतिः ॥ ३ ॥
 ग्रन्थसख्यात्रविज्ञेयाः लेखकैः पाठकैः क्लृप्ता ।
 षड्विंशदधिका पंचशती श्रोतृजनैरपि ॥ ४ ॥

इति सुमुक्षुभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचितायां तत्त्वज्ञानतरंगिण्यां शुद्धचिद्रूपप्राप्तिकमप्रतिपादकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

संवत् १८२५ लिखत माण्डव चंद्रमहात्मना सनाईज पुरमध्ये ।

१५. त्रिभंगीसार टीका ।

टीकाकार श्री विवेकनन्दि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ३४. साइज ११×४। इत्यत्र ।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञं करुणार्णवं त्रिभुवनाधीशार्च्यपादं विभुं ।
 यं जीवादिपदार्थमार्थकलने लब्धप्रशंसं सदा ॥ १ ॥
 कर्मद्रुमोन्मूलनदिकवरीन्द्रं सिद्धांतपाथो नघिदृष्टपारं ।
 षड्विंशदाचार्यगुणैः प्रयुक्तं नमाम्यहं श्रीगुणभद्रसूरिं ॥
 या पूर्वैः श्रुतमुनिना टीका कर्णाटरुभाषया विहिता ।
 लाटीयभाषया सा विख्याते सोमदेवेन ।

× × × × ×

। शिपस्य नेमचंद्र वृषभाद्यान् विपश्चिमान् जिनेान् सवान् ।
 २५ ये स्वभाषयाहं विंशदां टीका त्रिभंग्यायां ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेंद्रस्य पुलोमपुत्रा प्रयानारायणस्याब्धिसुता वभूव ।
 तथा तदेवस्य विजोगिनाम्नी प्रिया सुधर्मा सुगुणा सुशीला ॥१॥
 तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कोमुदवृद्धिकारी ।
 व्याध्रे रवालां बुनिधिः सुरत्नं जीयाच्चिरं सर्वजनानवृत्तिः ॥ २ ॥
 श्रीमज्जिनोक्तानि समजसानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मशक्त्या ।
 श्रीमूलसंवाब्धि विवर्द्धनेदोः श्रीपूज्यपादं प्रसुसत्प्रसादात् ॥ ३ ॥

× × × × × × ×

श्रीपद्माद्रियुगे जिनस्य नितरां लीनः शिवाशाधरः ००१

सोमः सद्गुणभाजनं सविनयः सत्पात्रदाने रतः ।

सद्व्यक्तं यमुः सदा बुधमनोद्दलादीं चिर भूते,
 नद्यादिना विद्येदिना विनचिता दीना सुवोधविधा ॥ ४ ॥
 इति त्रिशशांसारटीका समाप्ता ।

१६. दुर्गापदप्रबोध ।

रचयिता वाचनाचार्य श्री बल्लभ गण । साया मच्छन । पत्र संख्या ३० । साहज १०४३। इच्छ ।
 प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ७३-७६ अक्षर है । प्रति जीर्ण है, अनेक स्थानों पर अक्षर मिट
 गये हैं ।

संगलाचरण—

न्यन्ति श्री दायकं देवं नाचक शान्तिनाचकं ।
 सद्वृद्धिनाचकं शास्त्रकारिणां प्रणपरदां ॥

प्रशस्ति—

श्री अक्षरराजाधिप.....प्राप्तभाव्यरीचीनां तेषां गुरुराजानां धर्मं राज्ये सुविख्याते । भूमि-
 धम् १६=१ सन्धे वर्षे सुखाधिके मासे मात्तिके मप्तमी दिने..... ।

पुत्रोत्वेन सुरी ब्रह्मी शरण्यं ब्राह्मणः श्रियः ।
 विद्याधिप्यं पराभूना येषां तं ऽ मीथं जयति ॥ १ ॥
 ज्ञानविमलनामानः उपाध्यायाः गुणाश्रयः
 तर्कसाहित्यनिर्द्वातप्रमुखप्रथसद्विधः ॥ २ ॥
 नया शिष्यवरैश्चक्रे श्री श्रीवल्लभवाचकैः ।
 दुर्गापदप्रबोधोऽयं प्रकृतज्ञानहेतवे ॥ ३ ॥
 श्री हेमचंद्रमूर्तिः कृते निगानुशासने ।
 विद्यते या शुभा वृत्तिः तस्या दुर्गार्थबोधः ॥ ४ ॥
 * * * * *
 इति श्री दुर्गापदप्रबोधः समाप्तः ।

संवत् १८१२ म मिति पोष सुदी १० आदित्यदिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणै सरस्वती-
 गच्छं कुंदुन्नाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री महेंद्रभीतिदेवास्तत्पट्टे मंडला-
 चार्य श्रीअनन्तकीर्ति स्तद्गाम्नाये खडेलवालान्वये बडजात्या गोत्रे साह श्री ठाकुरसी तत्पुत्राश्रित्यारः
 प्रथम पुत्र साह श्री गोरधनदास तत्पुत्र साह श्री मयागाम, द्वितीय पुत्र साह श्री सूर्यमल तत्पुत्र साह श्री नव-
 निधिराम, तृतीय पुत्र साह श्री थोवराज तत्पुत्र साह श्री साहिवराम, चतुर्थ पुत्र साह श्री परमानंद तत्पुत्रौ
 चि० राजाराम हरिचन्द्रौ एतेषा मध्ये साह श्री नवनिधिरामेन इदं ग्रंथं मंडलाचार्य श्री १०८ श्री अनन्त
 कीर्ति जी तच्छिष्य पठिन उद्यरामाय धदीपितं ।

१७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साइज ११x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नमः श्री वद्धमानाय पंचरत्न्याणभागिने ।
जिनाथ विश्वे ॥थाय मुक्तिभर्त्रे गुणवधये ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थकरं जगत्रयहिताः सिद्धाः अनन्ताविदः
पंचाचारपरायणश्रैगणिनः सत्पाठैः साधवैः
स्वमुक्त्यादिसु साधकावरसपो युक्तश्च वंशा सुता
भव्यैश्च मया दिशतु शिवद सन्मंगलं मेभवे ॥ १ ॥
भवेयुः श्रीमतीधन्यकुमारख्यसुयोगिनः ।
चरित्रस्याखिलाः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसंख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारकं श्री पद्मानन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्तिं विरचिते धन्यकुमारतपः
संबोधसिद्धि गमनो नाम सप्तमो सर्गः ।

संवत् १५३३ वर्षे पौष सुदी ३ शुभे श्रवणे नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरज्राण गयासुहो न राज्ये प्रसिद्धाने श्रीमूलसंधे वल्लाटकारगणे सरस्वतिगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रद्धानन्दिदेवास्तत्पद्मे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पद्मे भट्टारक श्री सिद्धकीर्तिदेवाः तच्छिष्य मुनि रत्नभूषण तन्निमित्ते खंडेलवालान्वये साह नाथू तद्वार्या नैणसिरी तयोः पुत्राः पचायण भार्यापुसरी । साह तेजा भार्या तेजसिरी । तत्पुत्र साह हंगर । साह गोलहा भार्या गोलहसिरी तयोः पुत्रौ साह दासा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थमिदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रवक्षं ।

१८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमितगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६०. साइज १२x४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना संवत् १०७०. लिपि संवत् १७३३. प्रति साधारण अवस्था में है । ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नभस्वत्प्रयंतुंगशाले जगद्गृहे बोधमयः प्रदीपः ।
समंततो द्योतयते यदीयो भवतुं ते तीर्थकराः श्रिये नः ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सिद्धान्तकथोनिधिवारगसी श्रीदीरसनोऽर्जानमूरिचये ।
 श्रीमोक्षुगनां वसिना वसिष्टः जगद्यद्विष्वसविधां यतिष्टः ॥ १ ॥
 भासितात्रिलपत्रार्थममृशो निम्नेलोमिनगतिर्गणनाथः ।
 वासरो द्विनमणैस्त्रि तस्माज्जारनेभ्य कसलाकरत्रोथी ॥ २ ॥
 नेमिपण्णगणनायकतन.

पावन दृष्टमधिष्ठितोविभुः ।

पादंतीतिरिवास्तममथो

योगगोपनपरोगणार्चिचतः ॥ ३ ॥

ज्योतिर्नारी शमवृमथारो माधवसेनः प्रणरसेनः ।

योऽभवद्स्माच्छक्तिमदस्मा यो यतिसारः प्रशमितमारः ॥ ४ ॥

धर्मपरीक्षाकृतवरेत्या

, धर्मपरीक्षामखिलशररत्या

शिष्यवरिष्टोमितगतिनामा

तस्य पत्रेष्टो ? नद्य मग्धामा ॥ ५ ॥

x x x x x x x x x x

सवत्सराणां विगते सहस्रे संवत्तौ विक्रमपार्थिवस्य ।

इदं निषेद्धान्ममनं समाप्तं जिनेन्द्रधर्म्मामितियुक्तशास्त्र ॥

इति धर्मपरीक्षया ममिन गतिष्ठताया समाप्तः पणिच्छेदः ।

संवत् १७३३ कार्तिक सुदी २ दिने शुक्रवारे श्रीपातसाह मुलिकगीर राज्ये सहादरामध्ये सा० पर-
 सराम तत् पुत्र बनारसीनास तत्पुत्र निर्मलदास लिखाधितं । लेखकश्चे तांवररामचदेन लिख्यतं ।

प्रति न० २ । पत्र संख्या १४५ । साइज १०x५ इच्छ । लिपि संवत् १६६६ ।

अथ सवत्सरे श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६६६ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथी ३ ५ कवारे
 श्री मूलमघे नंद्यान्नाय वलात्कारंगणे सरस्वते.गच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र-
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः द्वितीयः शिष्यमंडलाचार्य श्रीसुवन-
 कीर्तिदेवास्तत्पट्टे म. श्रीधर्मकीर्तिदेवास्तत्पट्टे म. श्रीविसालकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा-
 स्तत्पट्टे स श्री नेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिस्तद्गाम्नाये गंगवाल गोत्रे जोवनेरवास्तव्ये राजि
 मनोहरदासविजयराज्ये सा० काळ् तस्य भार्या कवलदादे तस्य पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० तेजा तस्य भार्या तिल-
 कादे तस्य पुत्राः षट् । प्रथम पुत्र ना तिलोका तस्यफाया तद्दुसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० अचण्ण

द्वितीय पुत्र चि० करभचंद । सा० तेजा द्वितीय पुत्र सा० वेगा तस्य भार्या वेगमदे तस्य पुत्र चि० गोवीदास । सा० तेजा तृतीय पुत्र चि० सीहा चतुर्थ पुत्र चि० हीरा पंचम पुत्र चि० नराइण षष्ठ पुत्र चि० सिरीपाल एतेषां मध्ये सा० रूप तस्य पुत्र चि० हंगरसी इदं धर्मपरीक्षानामशास्त्र मुनिगुणचद्राय प्रदत्तं

प्रति न० ३. पत्र संख्या ११×५ इच्छ । लिपि संवत् १५६६.

संवत् १५६६ पौष वृदि ६ शुक्ले दूष्टिकापथदुर्गे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुवा-
चायान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक भीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तदा-
म्नाये मिथ्यातमभवांतसूर्याः परमसौद्धांतिकर्महलाचार्यः श्रीसहनन्दिदेवास्तच्छिष्य वादिगजवेशरिचरित्रपात्र-
परमतपस्वीमंडलाचार्यः श्री धर्मकीर्तिदेवाः । तस्याम्नाये सकलगुणसमन्वितपंडिताचार्यः अभू भार्या साध्वी
लाडो पुत्र ६ प्रथम पुत्र पं० दीन भायाद्वितीयः पुत्रः पं० घाघो तृतीयपुत्रः पं० धीरु भार्या साध्वी सुलखा ।
चतुर्थपुत्र वीरु पंचमपुत्र पं० दासे षष्ठ पुत्र खरगु एतेषां मध्ये साध्वी सुलखा एतत् शास्त्रं लिखापितं ।

१६. धर्मसंग्रह श्रावकाचार ।

रचयिता पंडित श्री मेधावी । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७१ । साइज ११×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३६-४३ अक्षर । रचना संवत् १५४१. लिपि संवत् १५४२ । कवि ने बादशाह
फिरोजखां के शासन का उल्लेख किया है तथा लिपिकर्ता ने बहलोल,साह के राज्य का उल्लेख किया है ।
ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

श्रियं दद्यात् स वो देवो नित्यानंदपदप्रदां ।

यस्यानंतानिदृग्मानवीर्यसौख्यान्वनतवत् ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

मेधाविनो गणधरात् स निशम्य धर्मं

श्रीगौतमादिति सयौरजनः प्रशस्त ।

भूयो निजं दृढतरां प्रविधाय दृष्टिं,

नत्वा जिनं मुनिवरांश्च गृहं जगाम ॥ १ ॥

अनादिकाल भ्रमता मया या नाराधिता क्वापिधिराधितैव ।

आराधनां मंगलकारणीं, तामाराधयामीह जिनेंद्रभक्तः ॥ २ ॥

इति सूरि श्री जिनचंद्रांतेवासिना पंडितमेधाविना श्रीधर्मसंग्रहे सल्लेखनास्वरूपकथनं श्रेणिकराजस्य

गृहप्रवेशनं च दशमोधिकारः

प्रशस्ति--

स्वस्ति स्वतिलकायमानमुकुटधृष्टांहिपाथोरुहे,

स्वस्त्यानंदचिदात्मने भगवते पूजार्हं ते चार्हते ।

स्वस्ति प्रार्णहिंनन्नाय विभवे गिद्धाय बुद्धायते
 ग्वस्त्युत्तिजगतिनाः र दतस्वरधाय शुद्धायते ॥ १ ॥

१

गगात्तपत्रचमगमनपुष्पवृष्टी

पित्रीन्द्रमसगमृहकरवेणुत्तदाः ।

ये ऽ नतवो वसुखदर्शनवीर्ययुक्ता—

स्ते मन्तु नोजिनधराः शिवसोख्यदा वै ॥ २ ॥

सन्धयत्त्वसुख्यशुण्णरत्नतदात्तये, संभूय लोकाशरसि स्थितमादधानाः ।

सिद्धाः सदा निरुपमागतमूर्त्तिवद्या, भूयास्सुनाशु सम ते भवदुःखहान्यैव ॥ ३ ॥

मूलोत्तरादिगुणराजिविराजमानाः

क्रोधादिदूषणमहीघृतद्वित्तमानाः ।

ये पचधाचरणचारणलब्धमानाः

नदतुं ते मुनिवराः बुधवंद्यमानाः ॥ ४ ॥

ये ऽ ध्यापयन्ति धनयोपनतान्विनेयान्

सद्द्वादशांगमखिलं रद्दास प्रवृत्तान् ।

अर्थं दिशति च धिया विधिवद्विदत-

स्ते ऽ ध्यापकाः हृदि मम प्रवसतु सतः ॥ ५ ॥

रत्नत्रय द्विविधमप्यमृताय नूनं,

ये ध्यानमौननिरतास्तपसि प्रधानाः ।

ससाधयन्ति सतत परभावमुक्ता

२

स्ते साधवो ददतु वः श्रियमात्मलाना ॥ ६ ॥

३

लोकोत्तमाः शरणमगलमगभाजामहं द्विमुक्तस्समुनयो जिनधर्मकाश्च ।

ये तान्नमामि च दधामि हृदं बुजेहं, संसारवारिधिसमुत्तरणैकसेतून् ॥ ७ ॥

स्याद्वाग्चिह्नं खलु जैनशासनं, जीयात्त्रिलोकीजनशर्मसाधनं ।

चक्रो सता वद्यमनिघयोधनं, जन्मव्ययधौव्यपदार्थशासनं ॥ ८ ॥

सन्नदिसंधसुरवर्त्मदिवाकरोभू-

च्छ्रीकुन्दकुन्द इति नाम मुनिश्वरोऽसौ ।

जीयात्स यद्विहितशास्त्रसुधारसेन
 मिथ्याभुजंगगरलं जगतः प्रणष्टं ॥ ६ ॥
 आम्नाये तस्य जातो गुणगणसहितो निम्मलब्रह्मपूतः
 सद्बिद्या पारयातो जगति सुविदितो मोहरागव्यतीतः ।
 भूरिश्रीपद्मनन्दी भवविह्वलिनदी नाविको भव्यनदी
 स्थन्नित्यानित्यवादी परमतत्रिलसन्निर्मदी भूतवादी ॥ १० ॥
 तत्पट्टे शुभचद्रकोऽजनि जनिध्रौव्यांतरुपार्थवि-
 द्वेषा स तपसां विधानकरणाः सद्धर्मरक्षाचणः ।
 येनोद्योति जिनैर्द्रदर्शननभो नक्तं कलौ ज्योत्सना,
 सद्बृत्त्यामृतगवर्भया गुरुबुधा नंदात्मना स्वात्मना ॥ ११ ॥
 तस्मान्नीरनिधेरिवेदुरभवच्छ्रीमज्जिनैर्द्रर्गणी ,
 स्याद्वादावरमंडलैकृतगतिर्दिग्वाससां मडनः ।
 यो व्याख्यानमरीचिभिः कुवलये प्रल्हादनं चक्रिवान् ,
 सद्बृत्तः सकलः कलंरुविकलः पट्टवर्कनिष्णातधीः ॥ १२ ॥
 श्रीमत्पुस्तकगच्छसागरानशानाथः श्रुतादिमुनि-
 जर्तौर्हन्मततर्ककंशतया न्यायवादिनो योऽभिनत् ।
 यस्मादष्टसहस्रिकां पठतिवान् विद्वभरन्यैरहं,
 सोऽयं सूरमत्तल्लिको चिजयते चारित्रपात्रं भुवि ॥ १३ ॥
 सूर श्री जिनचद्रस्य समभूद्रत्नादिकीर्त्तिमुनिः,
 शिष्यस्तत्रविचारसारमतिमानसद्ब्रह्मचर्यान्वितः ।
 योनेकैर्मुनिभिस्त्वगुणाप्रतिभिराभातीहमौड्यौर्गणो,
 चन्द्रो व्योम्नि यथा गृहैः परिवृत्तो यैश्चोलसत्कान्तिमान् ॥ १४ ॥
 तच्छिष्यो विमलादिकीर्त्तिरभवन्निसन्धचूडामणि-
 र्यो नाना तपसा जितेंद्रियगणः क्रोधेभकुंभे शृणिः ।
 भव्यांभोजविरोचनोहरशशांकाभस्वकीर्योवृलो,
 नित्यानंदचिदात्मलीनमनसे तस्मै नमो भित्तवे ॥ १५ ॥
 यः वक्ष्यापटमात्रवस्त्रमत्तलं धत्ते च पिच्छं लघु,
 लोचं कारयते सकृत् करपुटे भुक्ते चतुर्यादिभिः ।
 दीक्षां श्रौतमुनीं वभार नितरां सत्क्षुल्लकः साधकः,
 आर्यो दीपक आख्यात्र भुवने सौदीप्यतां दीपवत् ॥ १६ ॥

छात्रोऽभूज्जैनचंद्रो विमलनर्मतिः श्रावकाचारभृच्च-
 स्वगोतानुकजानोद्धरणतुरुहो श्रीपुहीमारुसूतः ।
 मोहाख्यः पठितो वै जिनमतनयनः श्रीद्विमारे पुरेस्मिन्,
 ग्रंथ प्रार्थितेन श्रिमद्द्विनि वसता नूनमेव प्रसिद्धेः ॥ १७ ॥
 लण्डनक्षेत्रे निषेवेति सुन्दरे, श्रिया पुरे नागपुर समस्ति तत् ।
 पेरोजगता नृपति प्रयाति न्यायेन शौर्गेण रिपून्निहन्ति च ॥ १८ ॥
 नंदनि यस्मिन् धनवान्यसंपदा लोकाः स्वसंतानगणेन धर्मतः ।
 जंनाघनाश्चैत्यगृहेषु पूजनं सत्सवदानं विवर्त्यनारतं ॥ १९ ॥
 नेत्राग्नी नाना निरससह बुधः, पूर्य व्यधा प्रथमिम तु कालिके ।
 चन्द्राद्वि वाग्लेक १५५१ मितेत्रात्सरे, कृष्णे त्रयोदशं उनिश्चशक्तितः ॥ २० ॥
 चन्द्रप्रभमद्धानि तत्र मडितं कृटस्थसकृ भस्मुकेतनादिभिः ।
 महाभियेकादिमहोत्सवैर्लसत, प्रवृद्धसगीतरसेन चातिशं ॥ २१ ॥
 नेवाविनाम्नः रुचिता कृतोयं, श्रीनन्दनोर्हृदपद्मभृगः ।
 यो नन्दनो भूज्जिनदाससंज्ञो, तु मोदको स्यास्तु सुदृष्टिरेवः ॥ २२ ॥
 महानभद्रवसुनन्दिच्छत समीक्ष्य
 सद्भावकाचरणमारविचारद्दद्य ।
 प्राशाधरस्य च युवस्य विशुद्धवृत्तेः
 श्रीधर्मसंप्रहमिम कृतवानह भो ॥ २३ ॥
 यद्यर्थशेषः क्वाचिदर्थजातः शब्देषु वा छन्दसि कोथवा स्यात् ।
 युक्त्या विरुद्धं गणित मया यत् . मशोध्य तत् साधुधियः पठतु ॥ २४ ॥
 शास्त्रं प्राच्यमतीवगभीर पृथतुरमर्थैर्ज्ञातुमलकः ।
 तस्मादल्प पिच्छलममल कृतमिदमन्वोपकृतौ नूनं ॥ २५ ॥
 गद्वांन्त मया कारि न कीर्त्तौ न च धनमाननिमित्तं त्वेतत् ।
 हितबुद्ध्याकेवलमपरेषां स्वस्य च बोधविशुद्धिविष्टयै ॥ २६ ॥
 सदृशनं निरतिचारभवंतुभव्याः
 श्रद्धा दिशतु हितपात्रजनायदानं ।
 क्वर्तु पूजनमहो जिनपुंगवानां,
 पांतु व्रतानि मतर्तं सह शीलकेन ॥ २७ ॥
 गाट तपन्तु जिनमार्गंरतामुनीन्द्राः संभावयंतु निजतत्त्वमनद्यमुक्तं ।
 धर्मा भवेद्विजयत्रान्पतिः पृथिव्यां, दुर्भिक्षमत्र भवतान्न कदाचनापि ॥ २८ ॥

राध्यं न चांश्रामि न भोग्यमपदो, न स्पर्शवासनं न च रूपयौवनं ।
मद्वे हि संसारनिमित्तमंगिनां, तवान्वमृष्टं क्षणिकं च दुःखदं ॥ २६ ॥

यद्दुःखं भवभृतां भवकाननेऽस्मिन्
दंभ्र यतां विविधदुःखमृगाग्निभोमे ।

रत्नत्रयं १०० द्वाव्यावधायि तन्मे,

द्वेषाम्नु देव तव पादयुगप्रसादात् ॥ ३० ॥

४ ज्ञानभावात् यदि किञ्चिन्ननं, प्ररूपितं व्याप्याधिकं वभाषे ।
सर्वद्वयक्रोदभविक्के हि तन्मे, क्षांत्वा हृदयेऽधिवासं सदास्त्रं ॥ ३१ ॥

यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः भ्जानस्य पीठंगिरि—

स्त्वाकाशे शशिभानुविभवमधरे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।

व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्तातां,

तदच्च श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥

भूगर्भः चरणजिनस्य शरणं तदर्थाने मे रतिः

भृद्वज्जन्मनि प्रियतमानंगद्विमुक्तंगिरी ।

सद्भक्तिस्तपमश्च शक्तिरनुक्ता द्वेषापि मुक्तिप्रदा,

प्रथम्यास्य फले न किञ्चिदपरं या चेत्योर्गस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥

व्याख्याति वाचयति शान्त्रमिदं शृणोति

चिद्वंश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात् ।

अन्टेन लेखयति वा लिखति प्रदत्ते,

स म्याल्लघुश्रुतवश्च महश्च कीर्तिः ॥ ३४ ॥

शांतिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शांतिर्नृपाणां सदा,

शांतिः सुप्रजशां तयोभ्रभृतां शांतिर्मुनीनां सदा

शोचुणां कविताकुनां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,

शांतिः शांति रथाग्नि जीवनमुचः श्री सज्जनम्यापि च ॥ ३५ ॥

यः वदयागपरंपरा प्रकुरुते यं सेवते सत्तमा,

येन स्यात् सुखकीर्ति जीवितं मुक्त स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।

यस्मान्नास्त्यपरः मुदृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रय—

स्तं धर्मादिकसंप्रहं श्रयत भो यस्मिन् जनो बल्लभः ॥ ३६ ॥

कूपान्निःकाश्य पातुं भवति हि मलिल्ल दुःखं यस्य .स्य

केनाऽन्येन नृनोत्कृष्टनिहतमद्वोऽन्यथा वा तद्वेव ।

नद्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनविवरणात् ज्ञातुऽर्थोऽत्र शक्यः

कैश्चिज्ज्ञातप्रमोचैस्तदितरसुगमो ग्रंथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥

धर्मसंप्रहमिम निशान्य यो, धर्ममार्गमवगम्य चेतन ।

धर्मसंप्रहमल करोत्यसौ, सिद्धिसौत्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥

वमतः मङ्गलमंगलावली, रौद्रीपतिविभूतिमान्बली ।

स्यादनतराणभाक्कैवली, वसेत्संप्रहमतः क्रियासुधीः ॥ ३९ ॥

सुधी. क्रियाद्यलममुप्य, रक्षणे

तैः लाभः परहस्तयोगतः ।

जानत्कविश्राति मधप्रवर्त्तन

भूयत्समुक्तश्च परपोकृद्यतः ॥ ४० ॥

चतुर्दशशतान्यस्य चत्वारिंशोत्तराणि वै ॥

मन्वर्षं प्रमाणाभावेद्य लेखकेत्वेन सशय ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रंथे ऋक्सर्ववसंसूचिकाचूलिकः समाप्ता ।

श्रीविष्णुमादित्यराज्यात् सवत् १५४२ वर्षे कातिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वद्वभोजन चैत्यालषे
द्विराज्ञाने श्री हिमागपेरजजावत्तने सुलतान श्री वहलोलमाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाथै
वरस्यनौगच्छे, चलान्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः..... * * * * * ।

२०. नेमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५० साहज १०×४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठे
पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा बहुत छोटे हैं । विषय-
भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि सवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिने नत्वा लोकलोकप्रकाशकं ।

त्तदुगणमहं वक्ष्ये भक्त्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥

×

नमन्नेन्द्रगौलीनां लसत्कान्तिसरोवरे ।

धन्य पादद्वयं प्राप्य प्रोल्लसत्कमलश्रिय ॥ २ ॥

सर्वसौभाग्यमद्रोहः सर्वशक्रसमर्चितः ।

यो शत्रुघ्नं सर्वसौख्यानां, कारणं भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्सूक्तमंत्रतिलके भारस्वतीये शुभे,
 विद्यानन्दिगुरुप्रपट्टकमलोल्लामप्रदो भास्करः ।
 ध्यानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्र्यचूडामणिः
 श्रीभट्टारकमल्लिभूपगुगुरु जीयात्सतां भूतले ॥ १ ॥
 प्रोक्तमभ्यक्त्वरन्तो जिनकथितमहासप्तमंगीतरंगैः
 निद्वैतैकांतमिथ्यामतमक्तनिकरक्रोधनक्रान्तिदूरः ।
 *
 श्रीमज्जनेन्द्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि
 जीयान्मे मूरित्रयंत्रनिचयलसंतुण्यपण्यः श्रुताच्चिः ॥ २ ॥
 मिथ्यावादांधकाराजयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राहिपद्मे,
 वृद्धे निवृद्धमर्कजिनेगदितमहाज्ञानविज्ञानबंधुः ।
 चारित्र्योत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलौकिकत्रयुः,
 जीयादाचार्यवर्यो विशदगुणनिधिः सिंहनन्दिमुनीन्द्रः ॥ ३ ॥
 अस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—
 नेमिपुराणमेतुलं शिवमौल्यकारी,
 चक्रे मयापि मतिमुच्छ्रयत्र भक्त्या,
 कुर्याद्वदं शुभमतं मम मंगलानि ॥ ४ ॥
 शांति कान्ति मुक्तीत्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः
 सौभाग्यं साधुसंगं मुगपतिमहित सौरजैनेन्द्रधम्मै ।
 विद्यां गोत्र पवित्रं मुजनजनेशनं पुत्रपौत्रादिजात्यं,
 श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं वात्र भक्त्याः पवित्रं ॥ ५ ॥

इति श्री त्रिभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणो भट्टारके श्रीमेलिजभूषणशिष्याचार्यः श्रीसिंहनन्दि-
 चामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमस्कृत्याणवर्णनो नाम षोडशोमोधिकारः ।

संवत् १६४३ शाके १५०८ समये फागुणवृदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोभननामयोगे श्रीमत्कां-
 ध्यासंधे नदीतटगच्छे, विद्यागणे भट्टारक श्रीविजयकीर्ति तत्पुत्रे आचार्य श्रीपद्मकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री
 धर्मसागर तच्छिष्य पं० केशवद्वेन इदं पुराणं लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साठज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ परं ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति
 में २५-३० अक्षर । प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सीम लंगने से बदल गया है ।

* जिनेन्द्र इत्यपि पाठः

सवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे मङ्गला तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाड-
मध्ये श्री जहागीर राव्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंदाग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचायोन्ये
भट्टारक श्रीपद्मनाम्बदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक
श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदाग्नाये खडेलवाला-
न्ये अजमेरागोत्रे साह वीवा तस्य भार्या बहरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह मल्हा तस्य भार्या
मैन्हालादे तस्य पुत्राः त्रयः । प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे ।
साह मल्हा द्वितीय पुत्र साह केशौ तस्य भार्या कसुभदे । साहा मल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या
ललतादे । तस्य पुत्र साह भोजा चीरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम
भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः । प्रथम पुत्र साह पेमा । द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या
आसलदे । साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुमा तस्य भार्या प्रथम कुभलदे द्वितीया कैरादे । साह पेमा चतुर्थ पुत्र
साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया रुजाणदे तस्य पुत्र साह सुद्रचिरंणजी । साह पेमा पंचम
पुत्र साह पचायण ।

२१. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २६७ । साइज ६।४४।
इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २६-२६ अक्षर । लिपि सवत् १७५१ ।

मगनाचरण—

वदेऽहं सुव्रतं देव पंचकृत्याणनायकं ।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृन्दसुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

× × × × × ×
शके षोडशशतवर्षके पट्पंचासत्सुक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारं शुभे दिने ।
निष्पन्न चरितं रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥
महेन्द्रकीर्तियोगीन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया ।
सोमसेनेन रामस्य पुराणं पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥
यदुक्तं रविपेणेन पुराणं विस्तराद्धरं ।
तदेवात्र च संकुच्य किञ्चिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥
गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्तिफलाप्तये ।
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

राज्यं न वाङ्मामि न भोग्यसपदो, न ह्यर्गवासनं न च रूपयौवनं ।
सर्वं हि संसारनिमित्तमंगिनां, तदान्वमृष्टं क्षणिकं च दुःखदं ॥ २६ ॥

यद्दुःखं भवभृतां भवकाननेऽस्मिन्
दंभ्रयतां विविधदुःखमृगारिभीमे ।

रत्नत्रयं ॥ २७ ॥ सौख्याविधायि तन्मे,

द्वेषास्तु देव तव पादयुगप्रसादात् ॥ ३० ॥

६ ज्ञानभावात् यदि किञ्चिन्नूनं, प्ररूपित क्वाप्यधिक वभाषे ।
सर्वज्ञवक्रोद्भविके हि तन्मे, ज्ञात्वा हृदब्जेधिवसे सदात्वं ॥ ३१ ॥

यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः स्नानस्य पीठंगिरि—

स्त्वाकाशे शशिभानुविवमधरे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।

व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्ततां,

तद्वच्च श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥

भूयासुःचरणाजिनस्य शरणं तद्दर्शने मे रतिः

भूयाज्जन्मनि प्रियतमासंगादिमुक्ते गिरौ ।

सद्भक्तिस्तपसश्च शक्तिरतुला द्वेषापि मुक्तिप्रदा,

प्रथस्यास्य फले न किञ्चिदपरं या चेत्तयोगैस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥

व्याख्याति वाचयति शास्त्रमिदं शृणोति

चिद्वंश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात् ।

अन्येन लेखयति वा लिखति प्रदत्ते,

स स्याल्लघुश्रुतवश्च सहस्र कीर्तिः ॥ ३४ ॥

शांतिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शांतिर्नृपाणां सदा,

शांतिः सुप्रजशां तयोभरभृतां शांतिर्मुनीनां सदा

श्रेतृणां कविताकृतां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,

शांतिः शांति रथाग्नि जीवनमुचः श्री सज्जनस्यापि च ॥ ३५ ॥

यः वरयाणपरंपरा प्रकुरुते थं सेवते सत्तमा,

येन स्यात् सुखकीर्ति जीवित मुरु स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।

यस्मान्नागत्यपरः सुदृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रय—

स्तं धर्मादिकसग्रहं श्रयत भो यस्मिन् जनो वल्लभः ॥ ३६ ॥

कूपान्निःकाश्य पातुं भवति हि सलिल्ल दुःखं यस्य यस्य

केनाप्यन्येन नूनोत्कुटनिहतमहोऽन्यथा वा तदेव ।

नद्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनत्रिवरणात् द्वातुऽर्थोऽत्र शक्यः

त्रैश्विकज्ञानप्रदोचैस्तदितरमुगमो प्रथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥

धर्मसंग्रहमिम निशम्य यो, धर्ममार्गमवगम्य चेतनः ।

धर्मसंग्रहमल करोत्यसौ, सिद्धिसौख्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥

धमतः मकलमंगलावली, रौद्रसीपतिविभूतिमान्बली ।

स्यादनतगुणभाक्केवली, धर्मसंग्रहमतः क्रियासुधीः ॥ ३९ ॥

सुधी क्रियाद्यत्नमुत्थ, रक्षणे

तैः लाभः परहस्तयोगतः ।

जानत्कविश्रांति मयप्रवर्त्तने

भूयात्समुक्तश्च परपोकृषतः ॥ ४० ॥

चतुर्दशशतान्यस्य चत्वारिंशोत्तराणि वै ।

सर्वं प्रमाणमावेद्य लेखकेत्वेन संशय ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रन्थस्त्रिसर्वससूचिकाचूलिकः समाप्तः ।

श्रीविष्णुमादित्यराज्यात् सवत् १५४२ वर्षे कातिक सुदी ५ गुरुदिने श्री ब्रह्ममान चैत्यालये विराजमाने श्री हिसारपेराजावत्तने सुलतान श्री बहलोलमाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगण्डे ब्रह्माकारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः..... .. ।

२०. नैमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नैमिन्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५०, साइज १०×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा बहुत छोटे हैं । विषय-मगवान नैमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि सवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकं ।

तत्पुराणमहं ब्रह्मे भव्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥

×

नमहेवेन्द्रमौलीनां लसत्कान्तिनरोवरे ।

यस्य पादद्वयं प्राप्य प्रोल्लसत्कमलप्रिय ॥ २ ॥

सर्वमौभाग्यमदौह. मर्वशक्रसमर्चितः ।

यो भवत्सर्वसौख्यानां, कारणं भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
 विद्यानन्दिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।
 ज्ञानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्रचूडामणिः
 श्रीभट्टारकमल्लिभूपणगुरु र्जीयात्सतां भूतले ॥ १ ॥
 प्रोद्यत्सम्यक्स्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरंगैः
 निद्धु तैकांतमिथ्यामनमलनिकरक्रोधनक्राव्दूरः ।

✽

श्रीमज्जेनेद्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि
 जीयान्मे सूरिवर्योन्नतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः । २ ॥
 मिथ्यावादांधकाराक्षयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राह्निपद्म,
 वृ दे निवृत्तमर्त्तर्जिनगदितमहाज्ञानविज्ञानबंधुः ।
 चारित्रोत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलोकैकवधुः,
 जीयादाचार्यवर्यो विशदगुणनिधिः सिंहनन्दिमुनीन्द्रः ॥ ३ ॥

यस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—
 नेमिपुराणमतुलं शिवमौख्यकारी ,
 चक्रे मयापि मतिमुच्छ्रतयात्र भक्त्या,
 कुर्याददं शुभमत्तं मम मंगलानि ॥ ४ ॥
 शांतिं कान्तिं सुकीर्त्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः
 सौभाग्यं साधुसगं सुरपतिमर्दितं सारजैनेन्द्रधम्मं ।
 विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजनजनशतं पुत्रपौत्रादिजात्यं,
 श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं वात्र भव्याः पवित्रं ॥ ५ ॥

इति श्री त्रिभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणो भट्टारक श्री मल्लिभूपणशिष्याचार्यः श्रीसिहनन्दि-
 नामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमकल्याणवर्णनो नाम षोडशमोधिकारः ।

संवत् १६४३ शाके १५०८ समये फागुणवुदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोभननामयोगे श्रीमत्का-
 षासंधे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति तत्पट्टे आचार्य श्री पद्मकीर्त्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री
 धर्मसागर तच्छिष्य पं० केश वद्धेन इदं पुराणं लिखित ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या २१६, साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति
 में २५-३० अक्षर । प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सीम लगने से बदल गया है ।

✽ जिनेन्द्र इत्यपि पाठः

सवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे मङ्गल्या तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाह-
मघ्ये श्री जहांगीर राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये
भट्टारक श्रीषडनान्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक
श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवाला-
न्वये अजमेरागोत्रे साह वीवा तस्य भार्या बहरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह माल्हा तस्य भार्या
मैस्हालादे तस्य पुत्राः त्रयः । प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे ।
साह माल्हा द्वितीय पुत्र साह केसौ तस्य भार्या कसुभदे । साहा माल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या
ललतादे । तस्य पुत्र साह भोजा चीरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम
भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः । प्रथम पुत्र साह पेमा । द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या
आसलदे । साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुमा तस्य भार्या प्रथम कुंभलदे द्वितीया कैरादे । साह पेमा चतुर्थे पुत्र
साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया रुजाणदे तस्य पुत्र साह सुद्रचिरंणजी । साह पेमा पंचम
पुत्र साह पचायण ।

२१. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६७ । साइज ६॥४४॥
इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पत्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २६-२६ अक्षर । लिपि सवत १७५१ ।

मगनाचरण—

वदेऽह सुव्रतं देव पंचरुल्याणनायकं ।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृत्सुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

x x x x x x
शके षोडशशतवर्षके पट्पंचासत्सुक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारि शुभे दिने ।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥
महेन्द्रकीर्त्तियोगोन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया ।
सोमसेनेन रामस्य पुराणं पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥
यदुक्तं रविपेणेन पुराणं विस्तराद्वरं ।
तदेवात्र च संकुच्य किंचिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥
गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्त्तिफलाप्तये ।
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

× × × × × ×
 रविपेणकृते ग्रंथे कथा यावत्प्रवर्तते ।
 तावच्च सकलात्रापि वर्तते वर्णतां त्रिना ॥ ६ ॥
 वैराट् त्रिपये रम्ये जितुरनगरे वरे मंदिरे ।
 पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रंथः शुभे दिने ॥ ७ ॥
 सेणगणोति विख्याते गुणभद्रो भवन्मुनिः ।
 पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेन यतोश्वरः ॥ ८ ॥
 तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।
 स्वस्यनिर्वाणहेत्वर्थं संचेपेण महात्मनः ॥ ९ ॥
 यस्मिन्निदं पुरे शास्त्रं श्रएवन्ति च पठन्ति वा ।
 तत्र सत्र सुखं क्षेम परं भव निर्मोर्गर्ल ॥ १० ॥
 सेणगणे यतिपरमपवित्रे वृषभसेनगणधर शुभवंशे ।
 पंडितवर्गसुखकरं जातः सोमसुसेनयतिवरमुख्यः ॥ ११ ॥
 श्रीमूलसंधे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरिः
 पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारके भूद्विदुषां शिरोमणिः ॥ १२ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारक्यो सोमसेनविरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णनो नाम त्रयत्रिंशत्तमो-
ऽधिकारः ॥

संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ मिति भाद्रवा सुदी १४ वृहस्पतिवारे श्रीमूलसंधे नद्यान्ताये वला-
 त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति-
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति तच्छिष्याचार्यवर्य आचार्य श्री
 शुभचंद्र तच्छिष्य पंडित श्री ताराचंद्र पंडित श्रीनगरराज पंडित श्रीजीवराज पंडित श्री देवकरण पंडित
 श्रीमेघराज पंडित मयाचन्द्र इत्यादि पंडित ७ तदात्राये पञ्चवारा देशे लिवारणनगरे खंडेल-
 बालवशे भौसा गोत्रे साह श्री विलासभायां बहुरंगदे तयोः पुत्र साह श्री नेहंदु भायां नमोनेमादे तयोः
 पुत्रः साह श्री गुणराज भार्या सुगणादे तयोः पुत्र साह श्री पासो भायां पाटमदे तयोः पुत्रः साह श्री टोडरमल
 भार्या लाडी तयोः पुत्र साह श्री दयालदास भार्या दाहिमदे तयोः साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयोः पुत्र
 साह श्री जीवराज भार्या जौणोद तयोः पुत्र साह श्री आणंदराम भार्या अणदादे द्वितीय पुत्र साह श्री चि०
 घखतराम भार्या बखतावरदे एतेषां मध्ये साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयोः पुत्र साह श्री जीवराज पितृभ्यां
 भक्तिकार्ये श्री सोलहकारणदशलक्षणकां व्रतां का उद्यापन व्रहोत व्रथाह से भंडार क्रियो ज्ञानदानार्थ श्री
 रामपुराणाजी शास्त्र घटायो आचार्य श्री शुभचंद्रजी ने ।

- २२. पद्मपुराण ।

रचयिता श्रीमच्चन्द्रक्रीत्ति । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या ४१२. प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । साइज ११×४।। इन्द्र ।

मंगलाचरण—

सिद्धं जिनं सद्व्यसाधनं साधनाद्यथ ।
सद्व्यसाधनं ध्रौव्यव्ययोरस्यं कितं मत्तं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सत्काष्ठसंघभवनद्रितदाख्यगच्छे
जातो मुनिः सकलसद्गुणमंडितात्मा ।
श्रीरामसेन इति यस्य जगत्प्रकाशं,
वादीभक्तिसरपतेरभिधानमासीत् ॥ १ ॥
तस्यान्वये समभवत् क्लृप्तसूरिवर्यः
श्रीधर्मसेन इति नाम दधन् मनोहं,
यस्येहवादिक्किंसेरिणो विशाला
कीर्त्तिजगद्र चिरमंडपगा वभूव ॥ २ ॥
तस्याभवद् विमलसेन इति प्रसिद्धः
सूरिपदांबुजविक्रानसप्तसप्तः ।
प्राप्तानवद्यशुभविद्यद्वारकीर्त्तिः
विद्वज्जनप्रकरपूजितपादपीठः ॥ ३ ॥
तस्याभ्यभुदखिलपंडितपूर्णताम्रि
संस्तुपंकजरेविः सुचरित्रपात्र ।
नाम्नार्थमत्प्रधिगात् न विशालकीर्त्ति—
यस्मात्प्रबोधमधिगम्य बुधा नन्दुः ॥ ४ ॥
तत्पट्टसागरानशाकर आचिरासीत्
श्रीविश्वसेन इति नाम दधन् मुनीन्द्रः ।
यादृशानां समधिगम्य जगत्प्रबोधम्
लब्धा समस्तवृजिनार्णवपारमापत् ॥ ५ ॥
तत्पट्टेभ्यभवत् समस्तजनताव्यामोहवन्यादवो
विद्वत्पंकजभास्कराः मुनिजनोः सेव्यांघ्रिपाथोरुहः ।

विद्याभूषण इत्यशेषविदुषां भोजप्रकाशेन योः

नाम्नाख्येन बुधान्.....दहोकांस्कान्मुनीन्द्रश्चरं ॥ ६ ॥

श्रीभूषणाख्यो भवदस्यपट्टे भट्टारको लब्धसमस्तविद्यः ।

यो वादिगर्वाकुलशैलव्रजो नाबोधयत्काञ्चिदप्यचोभिः ॥ ७ ॥

लब्धा गुरुत्वं च खलु वाक्प्रतित्वं कलानिधित्वं च महामतियैः ।

प्रकाशतां देवसभे.....यासीत् किं तस्य वाच्यं तपसो महत्त्वं ॥ ८ ॥

तस्यास्त्येको नामतश्च द्रकीर्तिः

शिष्यं स्वाम्यं च यंचुजेदिदिरोमः ।

पात्रे जाड्यापि अस्मिन्नजस्रं

जाता दृष्टिः सद्गुरोः स्नेहपूर्णा ॥ ९ ॥

तेन व्यधायि मुनिनाखिलदोषहारी लोकत्रयप्रथितसारमुदारभावं ।

सीतारघूत्तमत्ररिभ्रपयोधिरत्नं कल्पेष्टदानविधिपद्मपुराणमेतत् ॥ १० ॥

रघुपतितरुस्मान्पातुसम्यक्तबीजः

शुभभवति शास्त्रो योगिसंसत्पलाशः ।

सुरमधुपयुतेश्रीपञ्चकल्याणयुक्तो

लसद्भूतफलोऽयं संतपः पीठवंशः ॥ ११ ॥

यावद्धरामेष सुमेरुशैलो विभक्तिं सूर्यश्चतपत्यज्ञज्ञं ।

तावत्सुदि प्रज्ञपुराणमेतद् भूयो जनानां निखिलज्ञाघहारि ॥ १२ ॥

इति श्रीमच्चन्द्रकीर्तिमुनीन्द्रविरचितं पद्मपुराणं समाप्तमगमत् ।

२३. पद्मपुराणं ।

रचयिता भट्टारक श्री धर्मकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २५१. साइज १०x४। इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है । रचना संवत् १६६६ लिपि संवत् १६७०.

मंगलाचरण—

शकालीमौलिरत्नांशुवारिधौतपद्मचुर्जे ।

ज्ञानादिमहिमाव्याप्तं विष्टपं विष्टपाधिर्षं ॥ १ ॥

मुनिसुव्रतनामानं सुव्रताराधितकर्म ।

चदे भक्तिभरानम्रः श्रेयसे श्रेयसि स्थितं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एतद्कथाश्रवाद्भव्यः श्रद्धावान् सक्रियायुतः ।

संसाराब्धिं समुचीर्युः प्राप्नुयात् शिन्नमुल्लवणं ॥ १ ॥

अथाभवन्मूलसुसंघएव गच्छे सरस्वत्यभिधेगणे च
 वलाकृतौ श्री मुनिपद्मनन्दिः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धेसूतिः ॥ २ ॥
 देवेंद्रकीर्त्तिश्च वभूव तस्य पट्टे महिष्टेसु महानुभावः ।
 त्रिलोककीर्त्तिस्ततश्चात्तदीक्षो भट्टारकतत्पदलब्धनिष्ठः ॥ ३ ॥
 सहस्रकीर्त्तिमुनिवृद्धसेव्यो यशःसुकीर्त्तिः शुभकीर्त्तिसिंधुः ।
 वभूव भट्टारकसत्पदस्थो मुनिः स्मरारेर्हने प्रवीणः ॥ ४ ॥
 तत्पट्टपंकेजविकाराणे यः साम्यं विभर्त्तीह सहस्रमानोः ।
 हतस्मरारिर्जितदुःकप्रायो विनष्टदुर्भाव च यो महात्मा ॥ ५ ॥
 यं वीक्ष्य लोकप्रवभासुरांगतपस्विनं शास्त्रविदं मुनीशं ।
 भजति मिथ्यात्नं च, यं न ज्ञातु क्रियापरं शीलनिधि सुशांतं ॥ ६ ॥
 यं सेव्यमानाः, सततं सुशिष्याः विद्वातत्प्राप्तभासुरांगाः ।
 भविन्त नूनं जगति प्रकाशस्तंपःकृशा गौरविणो गुणौघैः ॥ ७ ॥
 यं सेवमानः समकुत्तिजार्तं मुनीशमासीद्दुचुषत्तपालः ।
 पदुत्ववाग्मित्तकत्रित्वचित्त्वविनीततासद्गुणरत्नपात्रं ॥ ८ ॥
 एवं विधोऽसौ मुनिसंघसेव्यो भट्टारको भासितदिक् समूहः ।
 संघस्य कल्याणवर्तिः प्रदेया-नाम्नांगुः श्रीलक्षितादिकीर्त्तिः ॥ ९ ॥
 तच्छिष्यस्तत्पदस्थो व्रतनिचययुतो जैनपादाब्जभृगोः ।
 नाम्नाघर्मादिकीर्त्तिमुनिरमलमनास्तेन चैतत्पुराणं ।
 स्वल्पप्रज्ञेन दृष्टं निजदुरितघयप्रक्षयाय हिताय,
 भव्यानां च परेषां भवणसुपवने प्रोद्यतानामजस्रं ॥ १० ॥

मूलकर्त्तापुराणस्य भी जिनश्चोत्तरस्तथा ।
 गणीशो यतयोन्ये च उत्तरोत्तरकर्त्तकाः ॥ ११ ॥
 इदं श्री रविपेणस्य पुराणं वीक्ष्य निर्मितं ।
 चिरस्थेयाः क्षिती भव्यैः श्रुतं चाधीतमन्वहं ॥ १२ ॥
 संवत्सरे द्वयष्टशते मनोज्ञे चैकौन सप्तत्यधिके सुभासे ।
 श्रीश्रावनेसूर्येदिने कृतीया तिथौ देशेषु हि मालवेषु ॥ १३ ॥
 सरोजपुर्य्यामिवधर्मपूर्या सहायतः श्री ललितादिकीर्त्तिः ।
 पारंगतरचास्य पुराणचार्द्धे र्हं प्रहीणोपि मतिभ्रपंचैः ॥ १४ ॥
 तत्कर्कव्याकरणदोलंकारादिन् प्रपंचतः ।
 न वेद्महं ततस्तेषां च्युतौ कार्याचमासतां ॥ १५ ॥

प्रथो विस्तारणीयोयं सद्भिः परहिते रतैः ।
यतः पद्मानि सूतेभस्तद्ग्रंथं नयतेनिलः ॥ १६ ॥
अथ धर्मोर्जनैरुक्तो बद्धतामात्र शास्वतः ।
संघस्य तुष्टिपुष्टी च भूयास्तां सर्वकर्मसु ॥ १७ ॥
क्षेमं च सवलोकानां भूयाच्च विजयी नृपः ।
काले काले प्रवर्षतां मेघामौभख्यकारिणः ॥ १८ ॥
व्याधयो यान्तु नाशं च दुर्भिक्षं चौरमारयः ।
प्रलयं यांतु पृथ्वीस्तु फलिनी धर्मशक्तिततः ॥ १९ ॥
श्रोतृणां पाठकानां च लेखकानां तथैव च
भूयात्कल्याणसत्प्रार्थमचक्रप्रसादतः ॥ २० ॥
धमकार्येषु सर्वेषु सत्रोरच जिनदेवताः ।
सहार्थिन्योह भूय सुः प्रमादपरिमुच्य च ॥ २१ ॥

इति श्री पद्मपुराणे भट्टारक श्रीधमंकीर्त्तिविरचिते पद्मदेवनिर्वाणगमनवर्णनो नाम चतुश्चत्वारिंश
पञ्चः ॥

संवत्सरे १६७० मिते मासे चंद्रकारावदाते पक्षो मंगलास्य दीपां मंगल..... तिरस्कृतां
विघ्नप्रसारे रविवारे प्रशस्तगुणाश्रेष्ठायां ज्येष्ठायां च घनो-पवनादिशोभाभरित..... सेखमंलासे महानगरे
विवृज्जनपूरिताकारे चंद्रप्रभजिनागारे श्रीमति नष्टाघे मूलसघेह शारदागच्छे वद्धितसुकृतवने बलात्कारगणे च
स्वयशसा व्याप्ताखिलमूर्त्ति भट्टारको यशःकीर्त्ति नामासीत् । तत्पट्टे ललितवाक्यामृत न्यक्कृताखिलमूर्त्ति भट्टारको
ललितकीर्त्तिर्वर्त्तते । तत्पट्टोदयाद्वाघिनमूर्त्तिभट्टारको धमंकीर्त्तिः वर्त्तते मुनीन्द्रः । तेनेदमुपासिकाधिपितद्रव्येण
लेखियित्वा निजांते वासिने गांगानाम्ने प्रदत्तअधीत्यो-

२४. प्रतिष्ठापाठ ।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६४. साइज १०।।५४ इच्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर । रचना संवत् १२८५. इसका दूसरा नाम जिनयज्ञ कल्प
भी है । ग्रंथ मे ६ अधिकार हैं तथा सम्पूर्ण पद्य संख्या ६५४ हैं । ग्रन्थ छप चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमानस्ति सपादलक्षविषयः शाकंभरीभूपणः

तत्र श्री रतिधाममडलकरं नामास्ति दुर्गं महत् ।

श्री रत्न्यामुदपादि तत्र विमलव्याघ्रे रवालान्वयात्,

श्री सल्लक्षणतो जिनेंद्रसमयश्रद्धालुराशाधरः ॥ १ ॥

व्याघ्रे रवालवरवंश सरोजहंसः

काव्यामृतोयः सपानसुस्रगात्रः ।

सत्सङ्गत्य तनयो नयविश्वचक्षु

राशाधरो विजयतां कविकालिद सः ॥

× × × × × ×
आशावरवं मयि विद्ध सिद्धं निसर्गसौं गमजयं ।

सगस्वती पुत्रतयादेतद्वयं परं वाच्य मयं प्रपंच ॥

× × × × ×
श्रीमद्वर्जुनभूपालराज्यश्रावकसंज्ञुत्ते ।

जिनवमादय धं यो नलकच्छपुरे वसन् ॥

× × × × ×

विक्रमवर्ष सपंचार्शांत द्वादशशतेष्टनीतेषु ।

आश्रिनि सितांत्यद्विमे साहसमल्लापरख्यस्य ॥

× × × × × × ×

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साङ्ग १०॥४॥ इच्छ । प्रति जीर्ण शोण अवस्था में है ।

संवत् १५६० वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमायां त्रिंशो शनिवारे अदेहद्वारपल्लीनगरे श्रीमूलसंधे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनन्ददेवा न्तसद्दे भद्वारक श्री त्रिद्यानिदिदेवा स्तसद्दे भद्वारक श्री नन्देनुरणदेवा स्तसद्दे भद्वारक श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवा स्तेषां शिष्य त्र० श्रीवृषभदासस्य उदेशान् श्री शांतिदान लिखायितः ॥

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५५. साङ्ग १३५५॥ इच्छ ।

संवत् १७२० वर्षे भाद्रमासे प्रतिदशतिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंधे नद्यन्नाये बलात्कारगणे कुन्दकुंदाचार्यान्वये भद्वारकवृन्दशोभित श्रीमन्त्रेन्द्रकीर्ति तन् शिष्य पंडितराज श्री तेजपालजी तन् शिष्य आचार्य श्री चंद्रकीर्तिजी तन् शिष्य पं० घासीराम पं० श्रीवनी चिरंजीवी नयाचंद्र पठनार्थ लिखायितं ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री सोमकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०५. साङ्ग १०५॥ प्रत्येक पृष्ठ पर १५-१८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर । रचना संवत् १५३० लिपि संवत् १७२४. सोलह सर्ग हैं । चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है ।

मंगलचरण—

श्रीमंतं सन्मति नत्वा नेमिनाथं जिनेश्वरं ।

विश्वजेतापिमदतो वायितुं न शशाक वं ॥ १ ॥

श्रान्तम पाठ तथा प्रशस्ति—

नंदीतटाग्ये विमले सुगच्छे श्री गममेनो गुणवाग्निशशिः ।
 बभूव तस्यान्वयशोभकारो श्री रत्नकीर्त्तिः दुरितापहारी ॥ १ ॥
 श्रीलक्ष्मीमनोऽत्र ततो बभूव शीलालयः मर्वगुणैरुपंतः ।
 तस्यैव पट्टोद्धरणैकवीरः श्री भीमसेनः प्रगुणः प्रवीरः ॥ २ ॥
 श्री भीमसेनस्यपदप्रसादान् मोमादिकीर्त्तियुतेन भूमौ ।
 रम्यं चरित्रं विनतं स्वभक्त्या संसोध्य भव्याः पठनीयमेतत् ॥ ३ ॥
 संवत्सरे सन्निधि सन्नकेवि वर्षत्रि-त्रिंशो ऋयुतेपवित्रे ।
 विनिर्मितं पौषसुदेश्रतभ्यां त्रयोदश या बुधवारयुक्ता ॥ ४ ॥
 यावन्मेरु महीतलोति विदितो यावद्भविमडले
 यावद्भूमलयः परग्रहणो यावत्सता चेष्टितं ।
 तावन्नंदतु शास्त्रमेतदमलं श्री शान्तिचैत्यालये,
 भक्त्या येन विनिर्मितं सुखकरं तस्यान्तुवे सर्वदा ॥ ५ ॥
 यावन्मेरु मही यावच्चंद्रार्कं तारकाः ।
 त वन्नदात्वदं नूनं चित्रं पापनाशनं ॥ ६ ॥

इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री नेमिनाथप्रद्युम्नशबकुमरअनुरुद्धादि
 निवाणगमन नाम षोडशः सर्गः ॥

संवत् १७२४ वर्षे कार्तिके शुदी १३ दिने श्री मालवदेशमध्ये श्री सुलतानपुर मध्ये लिखितं शुभं ॥

संवत्सरे रसैकरुसैकांकयुक्तेः मासि भाद्रपदे सितेतिरे प्रथमयां तिथौ सजीवाया कृष्णगढपुरे श्रीमन्महा-

भूपवहादुरसिंहजिद्राज्ये श्री मूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये
 भट्टारक जिह्वा रत्नकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक जिह्वा विद्यानन्दि जी तत्पट्टे भट्टारक जिह्वा महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे
 भट्टारक श्री अनंतकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री भवनभूषणजी तत्पट्टे सकलविमलकलकलरुलानिधिः करवि
 मलतरयशो वरसावगीकृतदिकप्रमादिकरभव्यः भव्यनिवराज्ञानासारांधकारक्षयैककारणप्रभाकरः सवचोः
 विराजमानमहामानजनैधिमत्रातः महाबलपंचानसमानः क्रोयम'नसायालोभमहधराधरवज्रोपमान सकलेतर-
 यतिगणनक्षत्रेशविराजमानतरवरजनविहितः प्रशंसवरगुणगणरंलगणरत्नाकरः भट्टारकप्रवर भट्टारक-
 जिह्वा १००८ श्री विजयकीर्त्तित्विनयतत्परविनेयाचार्यजिह्वा देवेन्द्रभूषणजीतत्सतीर्थं बुधास्त्रिलोक
 चंद्रः सदारामस्ति ब्रुनेया बुधा दयाचद्र बद्धमान विमलदास दौलतिराम ऋषभदास गुलावचंद्र भगवानदास
 वीरदास मोती जगजीवणत्यभि धानधरा एतेषां पठनार्थं आचार्य श्री देवेन्द्र भूषणेन स्वपठनार्थं इदं
 चरित्रं लिखितं ।

२६. प्रवचनसार प्राभृत वृत्ति ।

श्री ब्रह्मरत्नदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८२. साइज १०×४॥ इच्छ । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन

है । लिप नवत् १५५३.

मगलाचरण—

नमः परमचैतन्यस्त्रात्मोत्थसुखसंपदे ।

परमागमसाराय, सिद्धाय परमेष्ठिने ॥

समाप्त—

एवं पूर्वोक्तक्रमेण एषु सुरासुर इत्याद्येष्टोत्तरशतगाथापर्यन्तं सम्यक्ज्ञानाधिकारस्तदनन्तरं तन्हा-
तस्मिन् माड इत्यादि दशोत्तरशतगाथापर्यन्तं ज्ञेयाधिकारोऽपरनामदर्शनाधिकारस्तदनन्तरं एवं पणमियसिद्धे
इत्यादि . . . महाधिकार त्रयेणैकादशाधिकत्रिंशत गाथाभिः प्रवचनसारप्राभृतवृत्तिः समाप्ता । सवत् १५४३
वर्षे भाद्रपद सुदी ६ तिथौ ।

प्रशस्ति—

श्रीजिनसूरस्य वाक्योत्तरकरोत्तराः ।

अज्ञानध्यातनाशाय भवतु जगतः पर ॥ १ ॥

श्रीदेशीमूलसत्रे च नद्याम्नाये लसद्गणे ।

बलात्कारि जगद्बधे गच्छे सारस्वत्याभिधाः ॥ २ ॥

श्रीमत्कुन्दादिकुन्दाख्यमूरेरन्वयकेभवत् ।

पद्मनदी शिवानंदी भट्टारकपदस्थितः ॥ ३ ॥

तत्पद्मभोजमर्तुः शुभचन्द्रोगणाग्रणी ।

तद्वदे चाभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिवोग्रणी ॥ ४ ॥

तच्छिष्यम्वदगुणैः प्राप्तवाच्यपद्वी मुनिः ।

रत्नकीर्त्तिरित्येतत्तदाम्नाये बभूव च ॥ ५ ॥

मगदी गोरा तद्भार्या गुणसिरि तयोः पुत्राः स० सागा, सं० गोगा सं० देवा रत्नपाल तयोः मध्ये सं०
गोगा तद्भार्या चैव इदं ज्ञानावरणीन्मर्मज्ञयार्थं श्रीमन्मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्यमुनिविमलकीर्त्तिप्रदत्तमिदं
पुस्तकं । लिखित ५० गोगा ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ७७, साइज १०×४॥ इच्छ । प्रति पूर्ण है लिखावट मुन्दर है ।

संवत् १५७७ वर्षे आपादमुदी ३ श्रीमूलसत्रे बलात्कारगणे नद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-
चार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पद्मे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पद्मे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्-
शिष्यमडलाचार्यः अमचन्द्रमन्ताये खडेलवालान्वये भौसागोत्रे साह पौराज भार्या पित्रसिरि तत्पुत्र सा.

तिहुणा द्वितीय वीरदाम तिहुणा भार्या श्रीमति तत्पुत्र सा. लोहट भार्या ललितादे तत्पुत्रमेघा नेमाभार्या नमणसिरी तत्पुत्र दुलहणी भार्या जैणादे असू तत्पुत्र आसू इदं शास्त्रं नागपुरमध्ये लिखाप्य श्री मुनिधर्म-चन्द्रायदत्तं ।

२७. पाण्डवपुराण ।

रचयिता आचार्य श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४७. प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३०-३४ अक्षर । रचना संवत् १६०८, लिपि सवत् १८३१. ग्रन्थ में २५ अधिकार हैं । प्रशस्ति में शुभचन्द्र ने अपनी १० रचनाओं का तथा कितने ही स्तोत्रों का उल्लेख किया है । पाण्डवपुराण की रचना मे शुभचन्द्र को अपने शिष्य श्रीपाल वर्णी से सहायता प्राप्त हुई है । ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही है । प्रति नवीन है लेकिन दीमक ने खा लिया है । अन्तिम पाठ नहीं है ।

भंगलाचर—

सिद्धं सिद्धार्थसर्वस्वं सत्त्विदं सिद्धसत्पद ।
प्रमाणनयसंसिद्धं सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥
वृषभं वृषभं भातं वृषभाकं वृषोन्नतं ।
जगत्सृष्टिविधातारं वंदे ब्रह्माणमादिमं ॥ २ ॥
चन्द्राभं चंद्रशोभाद्यं चंद्रार्च्यं चन्द्रसंस्तुतं ।
चन्द्रप्रभं सदा चन्द्रमीडे सच्चन्द्रलाञ्छनं ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

तादृग्विधोऽहं प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवंश्चसद्भिः सकलैः परैश्च ।
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, वाल्ये जने को हि हितं न कुर्यात् ॥ १ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः ।
कीर्त्तिः कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्री सकला पवित्रा ॥ २ ॥
भुवनकीर्त्तिरभूद् भुवनाधिपैः ।

भुवनभास्करचारुमतस्ततः ।

वरतपश्चरणोद्यतमानसो

भवभयाहि खगेट् क्षितिवत्समी ॥ ३ ॥

चिद्रूपवेत्ता चतुरश्ररंतनं

चिद्रूपश्चाचितपादपद्मकः ।

सूरिश्चचंद्रादिचयेश्चिनोतु वै

चारित्रशुद्धिखलु नः प्रसिद्धिदां ॥ ४ ॥

विजयकीर्त्तियंतिमुदितात्मको,

ह्यजिततान्त्रमतः सुगतै स्तुतः ।

अत्रतु जेनमतः सुमतो मतो

नृपतिभि र्भवतो भवतो ॥ ५ ॥

पट्टे तस्य गुणां वुर्ध्वं व्रतधरो धीमान् गरीचान्त्रः

श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एव विदितो वादीभसिहोमहान् ।

तेनेहं चरितं विचार सुकरं चाकारि चचन्द्रचां,

पात्रो श्रीशुभसिद्धि सात जनकं सिद्धयै सुताना सदा ॥ ६ ॥

चन्द्रनाथचरित चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।

मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥

चंदनाया कथा येन बद्धवा नांदीश्वरी तथा ।

आशाधरकृताचार्या वृत्तः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥

त्रिंशच्चतुर्दशतिपूजनं यः सद्बद्धसिद्धाचने मान्यधत्ता ।

सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चित मणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ९ ॥

श्री कमदाहार्वाचिवधुरसिद्धसेवां

नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।

श्रीपार्श्वनाथवरकान्यसुपंजिकां च यः,

स चकार शुभचन्द्रचंद्रतथीचद्रः ॥ १० ॥

उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविशेषचयः ।

चारित्रशुद्धितपसश्चतुर्त्रिंशद्दशात्मनः ॥ ११ ॥

संशयवदनविदारणमशब्दसुखडन परं तक्कं ।

स तत्त्वानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्ति ॥ १२ ॥

अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वाथैर्पूर्वसर्वतोभद्रं ।

योक्तसद्व्याकरणं वितामणिर्नामधेयं च ॥ १३ ॥

कृता येनागप्रहसिः सर्वा गार्थं प्ररुपिका ।

स्तोत्राणि च पत्रिन्नाणि पट्पादः श्री जिनेशिनं ॥ १४ ॥

तेन श्री शुभचन्द्रदेवविदु-सत्यांढवानां परं,

दीप्यद्वशशनिभूपणं शुभभरभ्रात्रिष्णुशोभकरं ।

शुभद्भारतीनाम निमेलगुणं सच्छब्दचितामणिं,

पुष्पत्पुण्यपुराणमन्त्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तभ्य समृद्धिवृद्धिविशदो यस्तके वेदीवरो,
 वैराग्यादिविशुद्धिवृद्जनकः श्रीपालवर्णोमहान् ।
 सशोध्याखिल पुस्तक वरगुणं सत्यांढवानामिदं
 तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वं वरे पुरतके ॥ १६ ॥
 श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थ संग्रहे ।
 साहाय्यं सचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥
 ये भवन्ति पठन्ति पाण्डवगुणं सलेखयंत्यादरात्—
 लक्ष्मीराज्यनराधिपस्यच सुता चाक्रित्वशकेशिना ।
 भुक्त्वाभोगमिदं पुराणमखिलं संवोभुवत्फुल्लता,
 मुक्तो ते भवभीमनिम्नजलधिं संतीये शांतं गताः ॥ १८ ॥
 अर्हतो ये जिनेन्द्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभव्यान् ,
 सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददत् इह शिवं साधवः.....

x x x x x x

संवत् १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्तिः आम्नाये आचार्य श्री विजयकीर्ति शिष्य रूपचद उपदेशात् आदौ वासी शेरपुर अधुना वासी कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति जैतरामजी भ र्या वाई अनोपमात्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति तुलारामजी साहजी श्री वर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी तुलारामस्य भार्या वाई जगा वर्द्धमानजी भार्या वरधादे ताराचदस्य भार्या तारमदे वाई कुदना वर्द्धमानस्य पुत्र उमेदराम । ताराचदस्य पुत्र मणिचंदजी अ.त्मकल्याणार्थं ज्ञानावरणीकमंक्षयाथं साहजी श्री धर्ममूर्ति श्री तुलारामजी घटापित शास्त्र पाण्डवपुराण ।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयिता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु । भ.पा संस्कृत । पत्र सख्या १५६, साइज २०x४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४६ अक्षर । कोश में ५२ कथायें हैं । ग्रन्थ के अन्त सूची दे रखी है ।

संगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानभ्य वस्तुत्वप्रकाशकं ।
 वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानकं ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे केशवनन्दिदिव्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-
 वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः ।

विजयकीर्तियंतिमुदितात्मको,

ह्यजिततान्वमतः सुगतै स्तुतः ।

अत्रतु जैनमतः सुमतो मतो

नृपतिभिर्भवतो भवतो ॥ ५ ॥

पट्टे तस्य गुणांशुर्ध्वजत्रधरो धीमान् गरोद्यान्वरः

श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एष त्रिदितो वादीभसिंहोमहान् ।

तेनेष्टं चरितं विचार सुकर चाकारि चचन्द्रां,

पांद्रो श्रीशुभसिद्धि सात जनकं सिद्धयै सुतानां सदा ॥ ६ ॥

चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।

मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥

चंदनाया कथा येन बद्धवा नांदीश्वरी तथा ।

आशाधरकृताचार्या वृत्तः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥

त्रिंशच्चतुर्निशतिपूजनं यः सद्बद्धसिद्धाचने मान्यधत्ता ।

सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चित्तं मणीयार्चनमुच्चरिष्युः ॥ ९ ॥

श्री कमवाहार्चिबधुरसिद्धसेवां

नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।

श्रीपार्श्वनाथवरकान्यसुपंजिका च यः,

स चकार शुभचन्द्रचंद्रतर्थाचन्द्र ॥ १० ॥

चष्टापनमटीपिष्टं पलयोपमत्रिघेशचयः ।

चारित्रशुद्धितपसश्चतुर्त्रिंशद्दशाल्मनः ॥ ११ ॥

संशयवदनविदारणमशब्दसुखडनं परं तत्कर्कं ।

स तन्त्रानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्तिं ॥ १२ ॥

अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थपूर्वसर्वतोभद्रं ।

योक्तसद्व्याकरणं चित्तमणिर्नामधेयं च ॥ १३ ॥

कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वार्थार्थं प्ररूपिका ।

स्तोत्राणि च पत्रित्राणि पट्टपादः श्री जिनेशिनं ॥ १४ ॥

तेन श्री शुभचन्द्रदेवत्रिदु-सखांडवानां परं,

दीप्यद्दशविभूषणं शुभभरभ्राजिष्णुशोभकरं ।

शुभद्भारतोनाम निमलगुणं सच्छब्दचिंतामणिं,

पुष्पपुण्यपुरीणमन्त्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तस्य समृद्धबुद्धिविशदो यस्तके वेदीवरो,
 वैराग्यादिविशुद्धिवृद्धंजनकः श्रीपालवर्णमिहान् ।
 सशोध्याखिल पुस्तक वरगुणं सत्पांडवानामिदं
 तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वं वरे पुरतके ॥ १६ ॥
 श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थ संग्रहे ।
 साहाय्यं सचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥
 ये भवन्ति पठन्ति पांडवगुणं सलेखयंत्यादरात्-
 लक्ष्मीराज्यनराधिपस्यच सुता चक्रित्प्रशक्तेशिनानां ।
 भुक्ताभोगामिदं पुराणमखिलं सर्वोभुवत्सुज्जता,
 मुक्तो ते भवभीमनिम्नजलधि संतीये शान्तं गताः ॥ १८ ॥
 अर्हतो ये जिनेन्द्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभव्यान् ,
 सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददत् इह शिवं साधवः ...

× × × × × ×

संवत् १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसधे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री सुरेन्द्रमूर्तिः आम्नाये आचार्य श्री विजयकीर्ति शिष्य रूपचंद्र उपदेशात् आदौ बासी शेरपुर अधुना बासी कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहाजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति जैतरामजी भार्या बाई अनोपमातत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति तुलारामजी साहजी श्री वर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी- तुलारामस्य भार्या बाई जगां वर्द्धमानजी भार्या वरधादे ताराचंदस्य भार्या तारमदे बाई कुदना वर्द्धमानस्य पुत्र उमेदराम । ताराचंदस्य पुत्र मणिकचंदजी अ.त्मकल्याणार्थं ज्ञानाद्वरणीकमंचयाथं साहजी श्री धर्ममूर्ति श्री तुलारामजी घटापित शास्त्रं पाण्डवपुराणं ।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु । भ.पा संस्कृत । पत्र संख्या १५६. साइज १०x४॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४६ अक्षर । कोश में ५२ कथायें है । ग्रन्थ के अंत सूची दे रखी है ।

मंगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानस्य वस्तुत्प्रकाशकं ।
 वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानक ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे केशवनन्दिदिव्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-
 वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः ।

प्रशस्ति—

यो भव्याञ्जदिव्यकरो यमकरो मारंभपचाननो,
 नानादु.खविधाविकर्मकुम्भृतो वज्रापते दिव्यधीः ।
 यो योगीन्द्रनरैर्द्रवदितपद्मे विद्यार्णवोत्तीर्णवान्,
 ख्यात. केशवनदिदेवयति यः श्री कुन्दकुन्दान्वयः ॥ १ ॥
 शिष्योऽभूत्तस्य भव्यः सकलजनहितो रामचन्द्रो सुसुष्ठुः,
 ज्ञात्वा शब्दापशब्दान् सुविशदयशसः पद्मनद्याह्वयात्
 वंधा वादीभसिद्धात्परमयतिपत्ने सो व्यघाद् भव्यहेतो
 अथ पुण्याश्रवणस्य गिरिसमितिमितै दिव्यपद्यैः क्रयार्थैः ॥ २ ॥
 कुंदकुंदान्वये ख्याते त्यातो देशे प्रणाप्रणी ।
 अभूत् सधाधिपः श्रीमान् पद्मनन्दी त्रिरात्रिकः ॥ ३ ॥
 वृषभाधिरुटो गणयोगणोद्यतो
 विनायकानदितचित्तवृत्तिकः ।
 उमाममानिगित ईश्वरोपम
 स्तनोप्यभूत् माघवनदिपडितः ॥ ४ ॥
 सिद्धांतशास्त्रार्णवपारदश्चा
 मासोपवासो गुणरत्नमूपः ।
 शब्दाद्विचार्यो विबुधप्रधानो,
 जानस्ततः श्रीवसुनन्द्रिसूरिः ॥ ५ ॥
 दिनपतिरिर्वान्त्यं भव्यपद्माधिवोष्ठी
 मुरागिरिरिवदेवैः सर्वदा सेव्यपादः ।
 जलनिधिरिव शश्वन् सवसत्त्वानुकंपी,
 गणभृदजनिशिष्यो मौलिनामातदीयः ॥ ६ ॥
 कलाधिलामः परिपूर्णवृत्तो
 दिग्बगलकृति हेतुभूतः ।
 श्री नदिसूरिमुनिवृद्धबंधः
 तस्माद्भूच्चंद्रमानकीर्त्तिः ॥ ७ ॥
 चार्वाकवैद्विजिनसार्यशिवद्विजानां,
 वात्मस्त्रवादिगमकत्वकवित्ववित्तः ।
 साहित्यतर्कपरमागमभेदभिन्नः
 श्री नदिसूरिगगनांगनपूर्णचंद्रः ॥ ८ ॥
 समाप्त'ऽयं पुण्याश्रवाभिधानः.....

२६. पुराणसार संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत (गद्य) । पत्र संख्या १२६, साहज १३४४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५१ अक्षर । विषय—आदिपुराण उत्तर पुराण प्रायश्चित्तपुराण आदि के सार का वर्णन । लिपि संवत् १८२२, संग्रह अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

सर्वकर्मो रसंतानं हत्वा येन तपस्विना ।
मोक्षश्रीसाधिता तस्मै नमोऽजितजितात्मने ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

धर्मांगं धर्ममूलं गुणगणसदनं तीर्थराजस्य ज्ञातं
विश्वाचर्यं विश्वबंधं गणधररचितं कीर्तितं कीर्त्तिमद्भिः ।
भव्याराध्यं शरण्यं भवभयसकृता धर्मिणांमुक्ति हेतोः,
दुः कर्मघ्नं हि जीयान्नरसुरमुनिभिः ज्ञानतीर्थ धरिभ्यो ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

संवत् १८२२ वर्षे शाके १६८७ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णापक्षे तिथौ ८ सोमवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शिवयोगे श्री मूलसंधे नंदाभ्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रधानन्दिदेवास्तत्पट्टे द्वितीयशिष्यमंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीविशालकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्री लक्ष्मीचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्रीनेमचंद्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भानुकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भूषणजी देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीअमरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिजी तदाभ्नाये त्रयोदशप्रकारचारित्रप्रतिपालक आचार्य श्री १०८ लक्ष्मीचन्द्रजी तत्पट्टे आचार्य १०८ नरेंद्रकीर्त्तिस्तत्पट्टे पूरमपूज्य सकलगुणगणालकृताचार्य १०८ श्री सकलकीर्त्तिजी तत्पट्टे पंचमहाव्रतधारकः पंचसमितिधारकः त्रयगुप्तिसाधकः अष्टाविंशमूलगुणयुक्तः द्वाविंशपरिषदसहनधीरः सप्तदशसयमभेदनित्याचरन् आचार्यवर्ष्यैर्यैः सकलशिरोमणि आचार्य जी श्री १०८ श्री ज्ञेयकीर्त्ति जी तच्छिष्य लिखितं पठित जोधराज द्वितीय शिष्य पं० ईसर स्वहस्तेन ।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८२४ वर्षे मार्गशिरमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ शनिवासरे श्री मूलसंधे नंदाभ्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री चन्द्रकीर्त्ति जी तदाभ्नाये खंडेवालान्वये नागपुरवास्तव्ये महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्री विजयसिंह जी राज्यप्रवर्त्तमाने पाटली गोत्रे साहजी श्री हीरानंदजी तस्य भार्या हीरादे तत्पुत्र सा० ट कुदास भार्या तिलकादे । तत्पुत्र सा० जीवराज तस्य भार्या जिणादे तयो पुत्राः त्रयः । प्रथम पुत्रा सा० ईसरदास

द्वितीय सा० कपूरचंद तस्य भार्या कपुरादे तस्य पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० बधूरीम भार्या बोहरगदे
द्वितीय पुत्र सा० जीवणगाम तस्य भार्या जिणादे तृतीय पुत्र सा० कचरदास तस्य भार्या कचरादे चतुर्थ पुत्र
सा० गुलाबचंद तस्य भार्या गुलाबदे । तृतीय पुत्र सा० डालुराम तस्य भार्या डालमदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम
पुत्र सा० चूडह तस्य भार्या चूडहदे द्वितीय पुत्र सा० फतेचंद तस्य भार्या फतमलदे । सा० मनुजी तस्य
भार्या मानादे तयो पुत्रा मा० भानुजी तस्य भार्या भावलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र रूपचन्द तस्य भार्या
रूपलदे द्वितीय पुत्र रामचन्द । सा० कचरदास जी तस्य भार्या कचरदे तयोः पुत्रः साह रिपभदास भार्या
रिपमादे । साह गुलाबचन्द तस्य पुत्र सा० भिलाजी भार्या भिलादे तयोः पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र मोतीराम
द्वितीय पुत्र माणिकचंद तृतीय पुत्र नैणचंद चतुर्थ पुत्र दोलतराम । साह फतेहचंद तस्य पुत्र मयाराम पुतेपा
मध्ये जिनपूजापुरंदरान् संवभार सुरंधुरान् जिनचैत्यालययात्राप्रतिष्ठाकरणसमर्थान् द्वादशव्रतप्रतिपालकान्
मद्रूपदेशनिवर्थाहकान् साहजी श्री रिपभदासजी इदं शास्त्र सकलपुराणाख्यं लिखाप्य स्वहानावरणीकर्मक्षय
निमित्तं मत्सारा आचार्यवर्य श्री १०८ श्री जेमकीक्षेत्रे प्रदत्तं ॥

३०. भक्त्यामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार श्री गुणसुंदर । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २८. साङ्ग १०॥४४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
१७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४४ अक्षर । लिपि संवत् १४०६. लिपि संवत् १६५४. श्री गुणसुंदर
आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे । इनका दूसरा नाम गुणाकरसूरि भी है ।

वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीचंद्रगच्छेऽभयसूरिवंशे श्रीरुद्रपल्लीयगणविचंद्राः ।

श्रीचंद्रसूरिप्रवरावभुम्ते येभ्रातरः श्रीत्रिमल्लेंदुसंज्ञाः ॥ १ ॥

तत्पट्टे जिनभद्रसूरिगुरवः संलब्धलेखप्रभाः ।

सिद्धांतान्मुषिकुभसभवनिना. प्रख्यातमन पां शुभाः ॥ २ ॥

जातः श्रीगुणेश्वरार्थिभयगुरुन्तस्मान्तपोनिर्मलः ।

शोल. श्रीनिलजोगत्तिलक इत्य.....प्रणोः ॥ ३ ॥

मृदु धमकविः कविस्वध्याता चारत्रचारुकरुणाः कृष्णास्तकामः ।

तस्यद्रुभूपणमणिगतदूषणोऽभूल श्रं.मान् मुनीन्द्र गुणचंद्र गुरुर्गिरिश्वा ॥ ४ ॥

संप्रत्य निर्देश. भयदेव सूरिणा ।

गुणचंद्रसूरि शिष्यः गुणसुन्दरवाचकोलपे मतिः ॥ ५ ॥

वर्षे पट्टविगाधि रुचतुहं शशती मितेवपंती ।

आश्विनमासे रचितामरस्वपत्तनिवृत्तिः ॥ ६ ॥

x x x x x x

इति श्री भक्त्यामरवृहत् वृत्ति समप्ता ।

संवत् १६५४ वर्षे कार्तिक शुक्लचतुर्दश्यां लिखित सारुंडानगर मध्ये ।

३१. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तकार ब्रह्म श्रीरायमल्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या-३५. साइज ११।।५६।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५-३६ अक्षर । टीका लाल सवत् १८६७ लिपि संवत् १६६८. वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीमद् ह्रं वडवशमडणमणिर्महीयेति नामा वणिक्,
 तद्भार्या गुणमंडिता व्रतयुता चांपामितीताभिधा ।
 तस्नुत्रो जिनपादपंकजमधुपो रायादिमल्लो व्रती
 चक्रे वृत्तिमिमा स्तवस्य नितरं नत्वा श्रोयाद्दीदुर्कं ॥ १ ॥
 सप्तपष्ठ्यधिके वर्षे षोडशाख्ये (१६६७) हि संवति ।
 अंपादरवेतपक्षस्य पचम्यां बुधवारंके ॥ २ ॥
 श्रीवापुरे महीसिंधो स्तटभार्गसमाश्रिते ।
 प्रोक्तं गदुर्गसयुक्ते श्रीचन्द्रप्रभसद्गनि ॥ ४ ॥
 वणिनः कर्मसीनाम्नः वचनात् मयकारचि ।
 भक्तामरस्य सद्वृत्तः रायमल्लेन वणिना ॥ ४ ॥
 इति श्री ब्रह्मरामल्लेन विरचिता भक्तामरस्तोत्र वृत्तिः समाप्ता

संवत् १६६८ वर्षे कार्तिक बुदी १३ शनिवारे श्री काष्ठासवे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री भूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति तत्पट्टाभरण श्री भट्टारक श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टाभरण भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन विजयराज्ये भट्टारक श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टाभरण श्री कल्याणसागरस्य पठनार्थे ।

३२. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तकार श्री अमरप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज १०।।५४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर ।
 मगलाचरण—

अन्यानतिमराधानां ज्ञानां ज्ञानाजनशलाकया ।
 नेत्रोन्मुनिमीलतेजेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

प्रशस्ति—

श्रीअमरप्रभसूरिणां वैदुष्यगुणभूषिताः ।
 भक्तामरस्तवीवृत्ति प्रकापुः सुखवोचिकां ॥ १ ॥

संवत् १६३६ माघ सुदी २ सोमवासरे लिख्यितं पंडित शिरोमणि केसोदास आपजोग्यपठनर्थं लिख्यते कायस्थ पूरनमल माथुरान्वये ।

संवत् १६६५ पौष वुदी ११ बृहस्पतिवासरे शेरपुर वास्तव्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये महाराजा श्रीजगन्नाथराज्ये श्रीमूलसधे नद्याम्नाये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा मत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्तदान्नाये खडेलवालान्वये सौगणी गोत्रे सा० सांगा तद्भार्ये प्र० सिंगारदे द्वि० लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० सा० नांदा तद्भार्ये द्वे प्र० नारंगदे द्वि० षडौडी तयोः पुत्राः चत्वारः प्रथम सा० टीला तद्भार्या त्रिभुवनदे । द्वि० सा० मोहन चि० गूलर एतेषां मध्ये सा० नांदा तद्भार्या नारिंगदे इदं शास्त्रं देवशास्त्रगुरुभक्तितया भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तये प्रदत्तं ।

३३. भोजप्रबन्ध ।

रचयिता श्री रत्नमन्दिर गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. साइज १२x५। इञ्च । ग्रन्थ पद्य संख्या ३३३१. रचना संवत् १५१७ लिपि संवत् १८०५. ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचर—

ॐकारः कल्पकारस्करनिकरतिरस्वारिदानातिरेकः,

शब्दब्रह्मैकरत्नाकरह्रिमिकरणः कारणं मंगलाना ।

देयावः शुद्धबुद्धि निरवधिमहिमांमभोनिधिः,

सर्वसिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनभिदधदधकं धीमदाराधनीयः ॥१॥

प्रशस्ति—

भोजे प्रबन्धराजेऽस्मिन् रत्नमन्दिरलेखिते ।

कवीरश्वरकृतानंदोऽधिकारः सप्तमोऽभवत् ॥ १ ॥

ज्ञातः श्री गुरुभोमसुन्दरगुरुश्रीमत्तपागच्छप,

स्तत्पादांबुजपट्पदो विजयते श्रीनन्दिरत्नगणा ।

तन् शिष्योस्ति च रत्नमन्दिरगणी भोजप्रबंधोऽद्भुत,

स्तेनासौ मुनिभूमभूतशशिभृत् १५१७ संवत्सरे निर्मितः ॥ २ ॥

संवत् १८०५ वर्षे मितौ चैत सुदी ११ त्रिंशो लिखितं जती प्रयागदासेन ।

३४. महावीर पुराण ।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १०।।४x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर ।

मंगलाचर—

वीर नखेंद्रभूति ' च त्रिपट्टिश्रेष्ठपुंश्रितं ।
इति वृत्तं ब्रूवे स्मृत्यै समासेन यथागमं ॥ १ ॥

प्रशस्ति —

सोहमाशाघरः कंठमलं कर्तुं सधर्मणां ।
पंजिकालं कृतं प्रथमिमं पुण्यमरीरचं ॥ १ ॥
× × × × × ×
संक्षिप्यतां, पुराणान् नित्यस्वाध्यायसिद्धये ।
इति पंडितजाजाद्विज्ञप्ति प्रेरिकात्र ये ॥
× × × × × ×
प्रमारचशांवादींदु देवपालनृपात्मजे ।
श्रीम देव सिरथाम्नावंतीभवत्पलं ॥
नलकछपुरे श्रीमान् नैमिचैत्यालयेसिधत् ।
प्रथो संखिनवद्येक विक्रमार्कं समात्यये ॥
खडिलां वंशे महनकमलश्रीसुतः सुहृक् ।
धीनाको वद्धतां येन लिखिता स्वाद्य पुरितका ॥

३५. महीपालचरित्र ।

रचयिता श्री चारित्रसुन्दरगणि । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ३३. साइज १०×४ इत्यत्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । रचना संवत् १५२५ के आप पास । लिपि संवत् १८२५. ग्रन्थ जामनगर से प्रकाशित हो चुका है ।

प्रारम्भिक पाठ—

यस्यांशदेशे शतकुंतलाली, दूर्वाङ्कुरालीव विभाति नीला ।
कल्याणलक्ष्मी वसतिः सदिश्यादादीश्वरो मंगलेमालिकां वः ॥
यस्यांक्रमोपास्तित्वशाज्जडोपि, विना श्रमं वाङ्मयपारमेति ।
सदा चिदानंदमयभवरूपा सा सारदा पातु रतिपरां मे ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

महीपालस्यैवं चरितमिदमुद्यद्दसमयं,
मया प्रोचे पुण्यातिशयविशदं शश्वदधिया ।
प्रसादेन श्रीमज्जिनवरपतेश्चापि सुगुरोश्च,
नद्यादे तद् भुवि कविजनानंदजनकं ॥ १ ॥

नित्य सच्छुक्लपक्षस्थितिरिति विशदो नाशितो स्यामपक्षो,
 विन्वस्तामोषदोयो बहुमुनिसहितो भूरिशोभाभिरामः ।
 विश्वाल्हादं ददानो हतनिखिलतमाः शश्वदाप्तोदयोत्र,
 श्रीमद्धोपरविद्युवदयं राजते शुद्धवृत्तः ॥
 कल्याणवलिशालिनोत्रसुमनः श्रेणीभित्तो विश्रुतः,
 श्रीमान् वृद्धतपोगणो विजयतेऽयं मेरुवलिश्चलः ।
 त्रिशूलंकरणस्य विसृतजुपः सन्नं दनस्यान्वहं,
 भां विस्फाति युतस्य यस्य पुरतः पादा इवान्ये गणाः ॥ ३ ॥
 तस्मिन् विस्मयकारि चारुचरितं चारित्रचूडामणिः,
 श्रीमान् श्रीविजयेंद्रसूरिरभन्नद्भव्यांगचिंतामणिः ।
 तत्पट्टे समभून्महीन्द्रमहितः भीक्षेमकीर्त्तिगुरुः,
 कारकात्रोविद्युधान् धिनोति नितरं यत्कालवृत्तिस्तथा ॥ ४ ॥
 श्री रत्नाकरसूरय समभवन् ज्ञानांबुरत्नाकरा ,
 कीर्त्तिस्फीतिमनोहराशुभगुणाश्रेणीलतांभोधर ।
 यन्नाम्नात्र तयो गणो यमभजद्रत्नाकराख्यांपरां,
 ख्यातेन क्षिति मंडलेऽपिसकले सत्यां तमो हारिणाः ॥ ५ ॥
 तस्यानुक्रमपूर्वशैलतरणिः कामद्विपोधत्सृणिः,
 सूरीशोभयसिंह इत्यजनिसद्योगीन्द्रचूडामणिः ।
 तत्पट्टे प्रकटभ्रमाव त्रिदितो विध्वस्तत्राविद्युणिः,
 जज्ञे श्री जयपुंड्रसूरिरसमो भव्यात्मचिंतामणिः ॥ ६ ॥
 कीर्त्तियस्य निरस्तापनिवहासच्छीलदंडस्थिता,
 चंचच्चंद्रकलोच्चलादशदिशां श्वे तात्पत्रापते ।
 तत्पट्टे स्फुट्वादि कुजरघटा सिंहो हृदं होत्रजः,
 सूरीन्द्रो जयताच्चिरं गणधरः श्री रत्नसिंहाभिधः ॥ ७ ॥
 तस्यानेकविनेयसेव्रतपदांभोजभव्यावली,
 चंचन्नेत्रचक्रोरचंद्रसदृशास्यान्नभ्रभूमिपतेः ।
 शिख्याणूरचांचकार चतुरश्चारित्ररग्याभिधो,
 विश्वार्थ्यकरं महीपचरितं नानाविचारोद्धरं ॥ ८ ॥
 श्री रत्नसिंहगुरुपादशिरोरुहालि-
 शचारित्रसुंदरकवि यदिदं ततान ।

तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाख्य,

सर्गः समाप्तिमगमत् किल पंचमोयं ॥ ६ ॥

इति भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि शिष्यमहोपाध्याय श्री चारित्रसुंदरगणिविरचिते श्री महीपालचरिते चा काव्ये पंचमः सर्गः । संवत् १८२५ तपसि मासे कृष्णपक्षे कर्मवादां जयादे मध्ये पूर्णा कृतम् । टोंकनगर-मध्ये लिखिता जती पूरणचन्द्रेण लिखापिता विद्वत् सुखरामजी पठनार्थं ।

३६. मुनिसुव्रतपुराण ।

रचयिता ब्रह्म श्रीकृष्णदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११६. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४७ अक्षर । रचना सवत् १६८१. लिपि संवत् १८५०. पुराण अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

देवेन्द्रार्चितसत्पादपंकजं प्रणमाम्यहं ।

आदीश्वरजगन्नाथं सृष्टिधम्मेकरं भुवि ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ प्रशस्ति—

काष्ठासंघे वरिष्ठे ऽजनिमुनिपनुतो रामसेनोभदंत,

स्तत्पादांभोजसेवाकृतविमलमतिः श्रीभीमसेनः क्रमेण ।

तत्पट्टे सोमकीर्त्तिर्यवनपत्किरांभोजसपूजितांहि,

रेतत्पट्टोदयाद्भौ जिनचरणलयीश्रीयशः कीर्त्तिरेनः ॥ १ ॥

कमलपतिरिवाभूच्छ्रुयुदयाद्यतंसेन,

उदितविशदपट्टे सूर्यशैलेन तुल्ये ।

त्रिभुवनपतिनाथांहिद्वयाशक्तचेत,

स्त्रिभुवनजनकीर्त्तिनमितत्पट्टधारी ॥ २ ॥

रत्नभूषणभदंतन्यायनाटकपुराणसुविधः । '

वादिकुंजरघटाकटसिंहस्तत्पट्टे ऽजनिरंजनभक्तः ॥ ३ ॥

देवतानिकरसेवितपाद श्रीवृपेशविभुपादप्रसात् ।

कोमलेन मनसा कृत एष ग्रंथ एव विदुषां हृदिहारः ॥ ४ ॥

सोधयंतु विबुधाविविरोधामत्पुराणमदएवमनोर्ज्ञं ।

संभवति सुजनाः खलु भूमौ ते सदा हितकराहतपापाः ॥ ५ ॥

.....ऽथ वर्षे १६८१ श्री कीर्त्तिकारव्ये ।

धवले च पत्ने जीवे त्रयोदशपरहयामे कृष्णन सौख्याय विनिर्मितोऽयं ॥ ६ ॥

लोहपत्तननिवासमद्देभ्यो हर्ष एव वरिणजामित्र हर्षः ।
 तत्सुतः कविविद्यः कमनीयो भातिमगलसहोदरकृष्णः ॥ ७ ॥
 श्रीकल्पवल्लीनगरे गरिष्ठे श्रीब्रह्मचारीश्वर एव कृष्णः ।
 कटावलं व्यूज्जितपूरमद्भः प्रवर्द्धमानोहितमाततान ॥ ८ ॥
 पंचविंशतिसंयुक्तं सहस्रत्रपमुत्तम ।
 श्लोकसत्येतिनिर्दिष्टकप्णेन कविबेधसा ॥ ९ ॥

इति श्रीपुराणचंद्रोदयमुनिमुत्रतपुरे श्रीपूरमद्भंके हर्षवीरिकादेहज ब्रह्मश्री मंगलदासाप्रज ब्रह्म-
 चारीश्वरकृष्णदासविरचिते रामदेवशिवगमन त्रयोविंशतितमः सर्गः समाप्तः । संवत् १८५० का पोपमासे
 शुक्लपक्षे त्रयो १ गुरुवासरे लिखित महात्मा संभूताम् ॥

सवत्सरे गृन्थशराष्ट्रेदु १८५० मिते पोपमासे शुक्लपक्षे पंचमपांतिथौ चन्द्रवासरे हूंढाहडदेशे
 सवाईजयपुरनगरे श्री वृषभदेवचैत्यालये श्री मूलसधे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे कुंडकुंडाचार्यान्वये अंवावती-
 पट्टे भट्टारकशिरोरत्न श्रीमहेन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक पट्टोदयात्रिदिनमणिनभश्रीमत्सेमेन्द्रकीर्तिदेवस्त-
 त्पट्टांभोजमार्त्तण्डचण्डोद्योतितपरवादिभपंचानभट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिस्तद्गाम्नायेखंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे-
 षीवृष्योक्तशिरोमणि साहश्रीसतोषरामः तद्भार्या संतोपसुखदे तत्सुत्रचिरंजीव श्रीधर्मधुरंधर वधूरांमजी
 तद्भार्या वधूदे तत्सुत्र चिरजीविश्रीमोहनलाल एतेषा मध्ये दानपूजात्रतशीलप्रभावक श्रावकधर्मक्रियापरायण-
 चिरजीविश्रीवधूरामेण्ड मुनिमुत्रत पुराणं लिखाप्य निजज्ञानवरणीकर्मक्षयार्थं भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्तये घटापितं ॥

३७. मेघदूतावचूरि ।

टीकाकार श्री मुनिविजय । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०. साङ्ग ६।५४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ४६-४८ अक्षर । लिपि संवत् १७५१.

टीकाकार न मंगलाचरण—

शारदां च गुरु नत्वा मेघदूतावचूरिका ।
 मुनिविजयनेयं क्रियते सुगमत्वया ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

राजरंजनदत्ताश्च पाठकाः मुनिमंडले ।
 जीयाः सुधीः वनाः शाश्वन् श्रीमद्विनयमे रवः ॥ १ ॥
 मुनिविजयनेयं विहता सुगमत्वया—
 वचूरिः शिशुबोधार्थं तेषां शिष्येण धीमता ॥ २ ॥
 विक्रमस्ये पुरे रथेऽभीष्ट देव प्रसादतः ।
 मेघाद्वताभिधानस्य पूर्णकाव्यस्य साह्यदा ॥ ३ ॥

३८. मेघदूत टीका ।

टीकाकार श्रीमेघराज । मापा संस्कृतः । पत्रं सख्या ११५ । मापज १२५५ इत्यम् । प्रत्येकं पृष्ठं पर १५ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ४०-४५ अक्षर ।

टीकाकार का मंगलाचरणम्—

नत्वाहं परमात्मानं मया प्रतिशयसंयुतं ।

मेघदूतस्य काव्यस्य कुर्वे टीकां सुबोधिकां ॥ १ ॥

अन्तिम समाप्ति—

इति श्री कालिकासठर्तं मेघदूतकाव्यं तस्य सुबोधिका नाम्नी टीका वृत्ति समाप्तः ।

संवत्सहस्रसुसुनीद्वयत्सरे वैशाखवह्निनवम्यां तिथौ कविवासरे श्रीगणेशचंद्रसूरिगण्डे ज्योतिषकस्य श्री १०८ श्री होराजने चंद्रास्तेपां शिष्यामहोपाध्यायः श्रीगणेशचंद्रास्तच्छिष्य श्रीधरचरणजी तच्छिष्य श्रीलालचंद्रजी तच्छिष्य मुनिरत्नचंद्रेण्य लिखित ॥

३९. यशोधर चरित्रम् ।

रचयिता श्री धनकीर्ति । मापा संस्कृतः । पत्रं सख्या ६८ । मापज १२५५ इत्यम् । प्रत्येकं पृष्ठं पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३३-३७ अक्षर । प्रति पृष्ठं तथा सुन्दर हे ।

मंगलाचरणम्—

श्रीमन्नाभिसुतो ज्ञीयाज्जिनो विजितकुर्नयः ।

मंगलार्थं न तो वस्तु सर्वदा मंगलप्रदः ॥

अन्तिम पाठ तेषां प्रशस्ति—

अपादिपुर्याः मविधे मुदेशे वग्नाभवा सुन्दरतां दृक्ने ।
 ख्य ते पुरेऽरुद्धरनामके च चैत्यालये श्री पुरुतीथे यस्य ॥
 श्री भूलसधे च सरस्वतीति गच्छे वलात्कारगणे प्रसिद्धे ।
 श्री कुन्दकुन्दान्वयके यतीशः श्री नादिभूपो जयतीह लोके ॥ २ ॥
 तद्गुरुसुधुभुवनममच्यः पंकयकीर्ति परमराविक्रः ।
 सूरिपदासो मदनविभुक्तः सद्गुणशशि जयतु चिरं सः ॥ ३ ॥
 शिष्यस्तथोद्भानिसुकीर्तिनामा श्री सूरिरत्नाल्पसुशास्त्रवेत्ता ।
 चरित्रमेतद्विर्विर्तं च तेनाचद्राकर्षता रंजयताद्धरित्र्या ॥ ४ ॥
 शते षोडशकोन पष्टिवत्सरके शुभे ।
 माघे शुक्ले प षचम्यां रचितं भृगुवानरे ॥ ५ ॥
 राधाधिराजोऽत्र तदा विभाति श्री मानसिहोजित चैरिवर्गः ।

अनेग्राजेन्द्रदिनन्यगतः स्वदानसतर्पितविश्वलोकः ॥ ६ ॥
 प्रतापस्यस्तपतीह यस्य द्विगा शिगस्तु प्रविषायपाद ।
 प्रन्याय तुर्ध्यात मशस्यदूर पद्माकर यः प्रनिहाशयेच्च ॥ ७ ॥
 तस्यैव गताऽस्ति महान्यायो नानू सुनामा विदितो वरिष्ठो ।
 समेदशू रो च जिनेन्द्रोहमष्टःपदेऽदिम्बकधारी ॥ ८ ॥
 यांकर्यद्यत्र च तीर्थनाथाः सिद्धिगता विशतिमानयुक्ताः ।
 य कारयेन्नित्यमनेक सध्यायात्रांधनैः परमां च तस्या ॥ ९ ॥
 तत्राथना च सप्राय जयवर्तव्यस्य च ।
 ध्यात्रद्वयचितं चैतच्चरित्रं जयतां चिरं ॥ १० ॥
 श्री च रद्वोम्तु शिवायते हि श्री पद्मकीर्त्तिष्ट त्रिधाययो यः ।
 श्री ज्ञानकीर्त्ति प्रविषद्य पादो नानू स्ववर्षेणयुतस्य नित्य ॥ ११ ॥

इति श्री यशोधरमहाराज चरितं महारक श्री वादिभूषण शिष्याचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति विरचिते
 गजाधिरान महाराजमानसिह प्रवान साह श्री नानूनामांकिते महारक श्री अभयकृत्यादि दीक्षाग्रहण
 न्दुर्गादिप्राप्तिरर्णो नाम नवमः सर्ग ॥

सवन् १६६१ श्रावणमासे कृष्णमासे द्वितीयातिथौ ऋजुवासरे बंगदेशे श्रक्करनगरे राजाधिराज
 श्री मानसिह राज्यप्रवृत्तेमाने श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे
 श्री रुद्रकृष्णायान्वये महारक श्री पद्मनाभदेवा तस्यष्टे महारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तस्यष्टे महारक श्री जिन-
 चन्द्रदेवास्तस्यष्टे महारक श्री प्रभाचंद्रदेवा तस्यष्टे महारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तज्जम्नाये खडेलवालान्वये गोधा
 गोत्रे माह श्री याचकजननदोह कल्पवृक्ष श्रवणाच रचगणनिरतचित्तः साह श्री चाचा तस्य भार्या चौसरदे
 तया पुत्रमंत्रयः प्रथमपुत्र माह नेना तस्य भार्या निमलदे तस्य पुत्र साह वल्लू तस्य भार्या बालहदे द्वितीय
 पुत्र माह जेमा तस्य भार्या जेमरुदे तस्य पुत्र चि० कलू तस्य भार्या सैतुकदे तस्य पुत्र चि० दुगां तस्य भार्या
 दुगां दे तृतीय पुत्र मड श्री पंचाङ्ग तस्य भार्या द्वे प्रथमभार्या पाटमदे द्वितीय भार्या भावलदे । प्रथम
 भार्या स्वपतिच्छिदानुगामिनी शीलालकृतगात्रा. सध्या पाटमदे तयो पुत्र प्रथम दानगुणश्रेयास सकल-
 जन नदगारनस्ववचनप्रनपालन नमर्थसर्वोपकारक साह श्री नाथू तद्भाया नारंगदे तयो पुत्र चत्वार प्रथम
 पुत्र चि० दृ गरमी तस्य भार्या कोटमदे द्वि० पुत्र चि० मोहनदास तृतीय पुत्र चि० नारायणदास चतुर्थ पुत्र
 चि० श्यभद्र म । माह श्री पंचाङ्ग तस्य भार्या द्वितीय भावलदे तयो पुत्राश्चत्वारः देवशास्त्रगुरुभक्तत्परान्
 नयदिनचामिचेरविनाशानुरीचमत्कृतनगनिकरान् श्री जिनपूजापुरद्वारान् राजामभाश्रु गारहार न् प्रथमपुत्रसाप
 श्री हरपा तद्भाय्ये द्वे प्रथमभार्या हरपदे नस्य पुत्र चि० प्रयागदास तद्भाया दाडिमदे साह श्री हरपा
 तस्य द्वितीय भार्या प्रतापदे माह श्री पंचाङ्ग तस्य तृतीय पुत्र साह श्री हीरा तस्य भार्या हमीरदे । साह

श्री पंचाङ्ग तस्य चतुर्थपुत्र मानू तस्य भार्या महिमादे । तस्य पचम पुत्र चि० केसोदास तस्य भार्या कस्मोरदे
एतेषां मध्ये भवकुलाकाशप्रकाशनचंद्र सज्जमजनचक्ररोचक्षु चद्रमंडल श्रीभवगन् मुखोद्गत प्रवचन श्रद्धामृत
पानसंछर्दितानादिकालानमिथ्यास्त्रमहागरल साह श्री नाथू तेनेद यशोधरचरित्रं लिखाय्य भट्टारक श्री
चद्रकीर्त्ति तस्य शिष्य आचार्य श्री शुभचंद्राय दत्तं कमेक्ष्यनिमित्तं ।

४०. यशोधर चरित्र ।

रचायता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८६. साइज ६×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ
पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । लिपि संवत् १७६६. यशोधर चरित्र अभी तक प्रकाशित
नही हुआ है ।

मंगलाचरण—

परमानंद जननी भवसागर तारिणी ।
सतां वितनुतां ह्यानजदमीचन्द्रप्रभप्रभुः ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

उपदेशेन ग्रन्थोऽयं गुणकीर्त्तिमहासुनेः ।
कायस्थ पद्मनाभेन रचितः पूर्वं सूत्रतः ।
सतोष जैसवाल्लेन संतुष्टेन प्रमोदिना ।
अतिश्लाघितो ग्रन्थो यमर्थं संग्रहकारिणा ॥ २ ॥
साधोर्विजयसिंहस्य जैसवालान्वयस्य च ।
सुतेन पृथ्वीराजेन ग्रन्थोऽयमनुमोदितः ॥ ३ ॥

इति श्री यशोधरचरित्रे दयासुदराभिधाने महाकाव्ये साधु श्री कुशराजकारापिते कायस्थ श्री पद्मना-
भविरचिते अमयर्कचप्रभृति सर्वेषां स्वर्गगमनो नाम नवमः सर्गः ॥

प्रशस्ति—

जातः श्री वीरसिंहः सकजरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमलयशो व्याप्तदिक्चक्रवालः ।
दानैर्मानैर्विवेकै न भवति समता येन साकं नृपाणा ।
केषामेषा करीणां प्रभवति धिषणां वर्णने तद्गुणानां ॥ १ ॥
ईश्वरचूडारत्नं विनिहत करघातवृत्तसंहातः ।
चद्र इव दुग्ध सिंधोस्तस्मादुद्धरणभूपशुचीयते तिमिरं ॥ २ ॥
यस्य हि नृपते यशसा सहसाशुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन् ।

श्रोत्राणां लेखकानां बहुविधमलधियां द्रव्यलिख्यापकानां ।
तद्वत्प्रज्ञापराणां विविधबहुमतैर्भोत्रकानां तथैव ॥ ११ ॥
कायस्थपक्षनाभेन युधपादाब्जरेणुना ।
कृतिरेषा विजयतां स्थेय दाचंद्रतारकं ॥ १२ ॥

४१. यशोधर चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सरुलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७४ साहज १२×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर । ग्रन्थ पूर्ण है । लेकिन दीमक लग जाने से फट गया है । उक्त चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ है ।

प्रशस्ति—

संवत् १६३० वर्षे आपाठ सुदी २ सोमवासरे श्री मूलसंघे सारग्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुन्दकुन्दाचार्यः । तदन्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रः । तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रः । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री घमचन्द्रः । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति । तदाम्नाये खडेलव ल पाटणी गोत्रे संगही दूलहा भार्या दूलहदे । तयो पुत्र सं० हारा द्वितय पुत्र सं० ठकुरसी तत् भाया लखणा । तयो पुत्र सं० ईसर भार्या ईसरदे तयोः पुत्र सं० रूपसी देवमी सं० सेवा भार्या साहिबदे तयोः पुत्र मनसिंह सं० गुणदत्त भार्या गोपादे तयोः पुत्र सं० गेगा सं० प्रमत् सं० रेखा सं० ठकुर सी भार्या लखणा शा. च यशोधर चरित्र ब्रह्मारायणजोग्य दद्यात् ।

४२. योगचिंतामणि ।

रचयिता श्री हर्षकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६०. साहज १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर । विषय-वैद्यक । ग्रन्थ का दूसरा नाम वैद्यक सार संग्रह भी है ।

मंगलाचरण—

यत्र त्रिंशत्सगयांति तेजांसि च तर्मांसि च ।
महीयस्तदहं वदे चिदानंदमयं महं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

न रोगाणां क्रमः कोऽपि निदाननिरूपणं ।
केवलं बालबोधाय योगाः केऽपि निरूपिताः ॥
स्तरीश्वरप्रव.स शिरावतंस,
श्री चन्द्रकीर्तिगुरुपादयुगप्रसादात् ।
गभीरचारुतरुवैद्यकशास्त्रस रं,
श्री हर्षकीर्तित्ररपाठक उद्धारः ॥ २ ॥

सिन्धुः शशास्त्राणि हर्षकीर्त्यादिसुरिभिः ।

किं विदुः क्रिया तामै तद् .स्य विद्यमाणवान् ॥ ३ ।

× × × × ×

नशा ज ननासिह वाञ्छितार्थान् चिंतामणि पूरयंतु समर्थः ।

तथैव सप्तपञ्चभूरियोगान् श्री योगचिंतामणि रापिपत्ति ॥ ४ ॥

श्रीमन्नागपुरीय तपोगन्ध्रीय श्री हर्षकीर्त्तिसूरि सकलित श्री योगचिंतामणौ वैद्यकसारसंग्रहे
सप्तमको सिधनाध्यायः ।

४३. राजवार्त्तिक ।

रचयिता श्री गङ्गाश्लोकदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५५४, साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति म ४०-४३ अक्षर । प्रति सुन्दर है ।

संवत् १५८२ वर्षे आपाढबुदि १३ श्री मूलसधे नगाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुंदा-
चार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मानन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचदेवास्तद्दाम्नाये खंडेलवालान्वये वाकलीवालगोत्रे चपावतीवास्तव्ये रावश्रीराचन्द्रराज्ये
सघभाधुरंधर सघपति स० तीकौ तद्भायां पूनी तयोः पुत्रौ सा० चाया द्वितीय तालह । सा० चाया भार्या
गूजरि तत्पुत्र रामा द्वितीय होला । सं० तालह भार्या नौलादे तयोः पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहकौ चतुर्विध-
दानवितरणकृत्पट्टौ जिनपूजापुरंदरौ स० लाल् द्वितीय स० वाल् भार्या ललतादे । स० वाल् भार्या बहूसिरि
एतेषा मध्ये इव शाश्व कर्मक्षरान्मत्त लिखाप्य भक्त्या ब्रह्मालालाय दत्त ।

४४. वरांगचरित्र ।

रचयिता परवादिदितिपंचानन भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२, साइज
११×४ इञ्च । सम्पूर्ण पत्र संख्या १३८३, लिपि संवत् १५६५.

सगलाचरण—

जिनस्य मद्मानमयैः षडर्षणे जगत्समस्त प्रतिविद्यता गत ।

स यस्य समारविमोहितःत्मन पुनातु चेतासि सता निरंतरं ॥ १ ॥

पान्तिम पत्र तथा प्रशास्त्रि—

रचयित श्री मूलसधे सुविद्वितगणे श्री बलात्कारसङ्घे,

श्रीभागस्यादिगच्छे सकलगुणनिधिर्द्धर्मानाभिधानः ।

आसीद्भट्टारकोऽसौ सुचरितमकरोद्धीवरागस्यराज्ञो,

भध्यध्रेयासि तन्त्रद्भुवि चरितमिदं वत्ततामाकृतारं ॥ १ ॥

प्रमाणमस्य काव्यस्य श्लोका ज्ञेया विशारदैः ।

अनुष्टुप् संख्यया सर्व्वे गुणो भाग्नीदुसम्मिताः ॥ २ ॥

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पष्ठी दिवसे शनैश्चरवारे उत्तरानक्षत्रे रावश्री मालदे राव्य-
प्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसौप्रतापे सांख्यौर्णामनगरे श्री शांतिनाथजिनचेंत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाढार्य षी धर्मचन्द्रदेवा
स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा० चौखा तद्भार्या वीरणि तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम सा चेला
द्वितीया सा० चेमा । सा० चेला भार्ये द्वे प्रथम हररवृ, द्वितीय नाल्ही तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा श्रीपाल द्वितीय
सा० पोल्हण तृतीय सा० भांकू । सा० श्रीपाल भार्या सूयट तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सा जिनदास द्वितीय सा०
क्रमभदास । सा० पोल्हण तद्भार्या होली । सा० भांकू भार्या टोमा तयोः पुत्र चिरंजी नानिग । सा० चेमा
भार्या रोहिणी तयोः पुत्र सा० डाल् तद्भार्या डल्सिरि एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदर चतुर्विध दानव्रतरण
कल्पवृत्त सद्गुरुपदेशनिर्वाहक सा० श्रीपालेन इत्ं शारत्रं लिखाय उत्तमभात्राय दत्त ।

प्रति नं० ५, पत्र संख्या ६०, साइज १२x५ इञ्च । प्रति प्राचीन है । लिपि संवत् १६६०.

प्रशस्त—

संवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ मुदी १४ तिथौ श्रुगवासरे श्री राजमहलनगरे महाराजाधिराजराजा श्री
मनसिहजी राव्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलपत्रे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये
भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक
श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कामलोवालगोत्रे याचकजनसंदोह-
कल्पवृत्त श्रावकाचारचरणनिरतचित्तसाह सोढा तद्भार्या सीलतोयतरंगिणी विनयवगोश्रवरी सोहिलादे तयो
पुत्राश्चत्वार । प्रथम पुत्र धर्मधुराधरणधीर साह श्री छाजू तद्भार्या दानशीलगुणभूषणा भूपितगात्रा न्मना
छायलदे तयो पुत्रौ द्वौ । राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापादनकर मुकुलिकृत शत्रुमुख कुमुदाकर स्वजसनिशाकर
आल्हादित कुवल्यदानगुण अल्पांकृतकल्पपादपश्री पंचपरमैष्टिचित्तनपवित्रितचित्तसकलगुणीजन-
विश्रामस्थान प्रथम साह जेहा तद्भार्या जेहलदे तयोः पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र देवा तद्भार्या देवलदे
द्वितीय पुत्र साह ईसर तृतीया पुत्र कृता चतुर्थ पुत्र भगवान । द्वितीय पुत्र क्रमसौ तद्भार्या करणादे तयोः
पुत्र साह नेमा तद्भार्या नेमलदे तयोः पुत्रास्त्रयः । प्रथमपुत्र दानगुणश्रेयांसु सकलजनानंद कारक स्ववचन
प्रतिपालनसमर्थ सर्व्वोपकारक साह हरपा तद्भार्या स्वपतिछंदानुगामिनी शीलालंकृतगात्राः साध्वी हरपदे
द्वितीय पुत्र साह वेणा तद्भार्या बहुरंगदे तृतीय पुत्र फलह । पुत्र साह खेम तद्भार्या खेमलदे तयोः पुत्राः
द्वे प्रथमपुत्र साह जेसा द्वितीय इय तृतीय पुत्र साह धर्मा तद्भार्या धारादे तयोः पुत्र बंरु द्वितीय पुत्र
राटमल तस्य भार्या रयणादे तृ० पुत्र दुर्गा तस्य भार्या दुर्गमदे चतुर्थ पुत्र साह टीला तस्य भार्या टीलमदे

तपो पुत्र साह अगलाम तस्य भार्या हमीरदे तपो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र साह काशु वृतीय पुत्र बल्गाण तस्य भार्या करुणादे एतेषां मध्ये साह हरपा तस्य भार्या हरपभदे लिख.५५ शास्त्ररंगपरित्र जेठजिणवरजात प्रयोतनार्थं भार्या श्री शुभचन्द्राय दत्त ।

प्रति नं० ३, पत्र सख्या ७३, साहज १३x५ इच्छ । लिपि संवत् १८७३

सवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ शुभवाभरे श्रीमत् ग्वालोरमुत्सललसकर महाराजि दौलतराजसिःया राज्यप्रवर्तमाने आ आदिनाथचैत्यालये धर्मलसन्मानसचतुस्र युते वाद्यगीत मंगल प्रवर्द्धित नित्योत्सवे श्रीमूलराधे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुाचार्यान्वये अंबावती सुपट्टे मालभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सहस्ररश्मिसन्निभ भट्टारक श्री श्री चोमेन्द्रकीर्तिजित्वाभवोमाना पट्टलंकारललापमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्ति तदम्नाये खंडेलवालान्वये टोग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदाराजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्राभ्रयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचंदजी मायपुत्रः फतेचंदजी तस्य पुत्री द्वौ ज्येष्ठ पुत्र रामलालजी लघु पुत्र केवलारामजी तस्य पितृत्व वशांद्रौ सहस्ररश्मि सदृश धर्मभारपुरधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पति कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचंद्र रेतेषां मध्ये ज्ञानावरणीयमार्गच्यार्थं नरांगपरित्र प्रथ चटापत ।

४५. बद्धमानपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भ.पा संस्कृत । पत्र सख्या ८०, साहज ११x५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ५२-५६ अक्षर । प्रति नवीन तथा सुन्दर है । लिपि सवत् १८०४.

संगलापारण्य—

जिनेशे विश्वनाथाय छनतगुणसिद्धये ।

धर्मचक्रवृते मूर्धना श्री वीरश्यामिने नमः ॥ १ ॥

प्रान्तिम पद्य—

जल्पितेन बहूना किमाश्रयेद्वीरनार्थं इह यो मया स्तुतः ।

मे ददातु कृपया श्रमोदभुतान्, मुक्तये निजगुणान् स्वशर्मणे ॥ १ ॥

त्रिसहस्राधिकापञ्चत्रिंशत्सोऽः भवन्ति वै ।

यत्नेन गुणिताः सर्वे चरित्रत्यास्य सन्मते ॥ २ ॥

प्रति श्री भट्टारक धी सकल कीर्तिविरचिते श्री बद्धमानपुराणे श्रेणिकाभयकुमारभवावली भगवन्नि-
वाणनामं क्रोनविशतिमोऽधिकारः ।

संवत् १८०४ वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ वृहस्पतिवासरे श्री सवाईजयपुरनगरे महाराजाधिपति राजा श्री प्रतापसिद्धराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री महेंद्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिदेवास्तदात्मनाये गंगनाल-
गोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साहजी श्री मूलकचंदजी तद्भार्या शीलतोय-
तरंगिणी विनयवागेश्वरी मल्लकदे तयोः पुत्र धर्मधुरधर चतुर्विधदानेषु सदा वितरणसमर्थ साहजी श्री
दोलतरामजी तद्भार्या दानशीलगुणभूषण भूपितगात्रा नाम्ना दोलतादे तयोः पुत्रास्त्रयः । प्रथम पुत्र साह
सभाराम सभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकरमुकलितशत्रुमुख कुमुदाकर स्वजसनिशाकर अह्निदितकुवलयदानगुण-
अल्पं कृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठीचित्तन पत्रित्रितचित्त सकलगुनीजनविश्रामस्थान साह श्री हाथीराम
तद्भार्या शीलदान गुणदेव विनयभक्तपूजाभूपितवपुषा स्वपतिद्वंद्वानुगामिनी नाम छाजी द्वितीय पुत्र
नाम साहिसाहिवराम तद्भार्या साहिवदे तयोः पुत्र नाम साह सहजराम तद्भार्या नाम सहतादे एतेषां
मध्ये स्वकुलाकाशप्रकाशनचंद्रसज्जनजनचकोरचक्षु श्री सर्वज्ञवदनोद्गतस्वद्वामुधापान स वृद्धितानादि-
कालीन मिथ्यात्वमहागरल साह श्री हाथीराम तेनेदं पट्टचत्वारिंशत्तगुणविराजमान श्री वद्धमानपुराणं
लिखाप्य परवादीभक्तुंभस्थलविदारनैकमृगेंद्र स्वचनचातुरी निरस्कृतमिथ्यात्वादयः तस्य पंडितजी श्री
चोखचंदजी तत् शिष्य पं० कृष्णदासाय दत्त कर्मक्षयनिमित्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साहज ११।।४।। इच्छ । लिपि संवत् १६६८. प्रति पूर्ण तथा सुंदर है ।

संवत् १६६८ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां रविसारे श्रीमद्भागव महादेशे श्री सागपत्तने
श्री मूलसंघे आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवा
स्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री
गुणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री सकलचन्द्रदेवोपदेशात् हुंघळ
जातीय वजीयाण गोत्रे पासडोत साह जीत्रा भार्या जोमादे सुत साह नाका भार्या चाई श्री तइनायके तथा
इदं शास्त्र स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयाय सत्पात्राय पं० श्री सकलचंद्राय तदोक्षिता चाई हीरा लिखाप्य दत्तं ।

४६. श्रावकाचार सार ।

रचयिता श्री पद्मनन्दि मुनि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साहज १२।।४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
१३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५२ अक्षर । रचना संवत् १५८० लिपि संवत् १५६४.

मंगलाचरण—

स्वमंवेदनसुवृक्षं महिमानमनस्वरं ।

परमात्मानमाद्यतं विमुक्तं चिन्मयं नमः ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति श्रावकाचारसारोद्घारे श्री पद्मनन्दिमुनि विरचिते द्वादशव्रतवर्णनं नाम तृतीयः परिच्छेदः ।

प्रशस्ति—

गस्य तीर्थकरस्यैव गच्छिसाशुनर्नातिगः ।

रत्ननीर्त्तिर्यतिस्तुत्यः स नेरुषामशोर्पात्रित ॥ १ ॥

श्रद्धाकारस्फारी भवद्वर्षामतवेवातविबुधो,

एतद्भवात्श्रेणी क्षपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।

अधीती जैरेन्द्रे जति रजाननाप्रतिनिधिः,

प्रगाचद्र साद्रोदयशमिततापव्यतिकरः ॥ २ ॥

सदाप्रतिपुरदः प्रशामद्वगगाकुः स्फुरत्परमपरूपः स्थितिरशोपशास्त्रार्थवित् ।

यशोभरसनोदारी कृतसनस्तविश्वभरः परोपकृततत्परो जयति पद्मनन्दीश्वरः ॥

श्रीमत्प्रभेदु प्रभुपादमेव हे वाकिचेताऽग्रसरत्प्रभावः ।

रान्ध्रनवाचारमुदारमेत गोपद्मनन्दी रचगांचकार ॥

शालीरुच्युभुले विततांतरिक्षे, कुचंनरनाधवसरो जविकाशलक्ष्मीः ॥

एतन्निपुणकुगुदन्नजभूरिर्नाति, गोकर्णैर्लिखदियापलसत्प्रभावः ॥ ४ ॥

शुधि सूचकारसार पुण्यवना येन निर्म्ममे कर्म ।

श्रीम इव सोमदेवो गोकर्णैस्सोभवत् पुत्र ।

सती मत्तल्लिका तस्य यशस्तुसुमवल्लिका पत्नी,

श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥

त्रिशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलक्ष्मीजिनेन्द्रयोः ।

नया उवा भवन् सप्तगभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥

चासाधरहरिर्गजा प्रहादः शुद्धधीश्रमहाराजः ।

भवराजो रत्न स्य. स तनयाख्यश्चेत्प्रसीसप्त ॥ ७ ॥

यामाधरस्याद्भुतभाग्यराशेमिपात्तयोर्वेशमनि कल्पवृक्षः ।

अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो त्रितीयाचेतोऽभिमतार्थसाथः ॥ ८ ॥

वासाधरेण सुधिया गांभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाविः ।

कथमन्यथा स बडवाढलनसूत्रस्थितोद्वलति ॥ १० ॥

× × × × ×

द्वितीयोप्यद्वितीयो भूद्धैर्यांशयोदिभिर्गुणैः ।

पुत्र श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिधः सुवोः ॥ १० ॥

गुणैः सदास्मप्रतिपन्नभूतैः सगीकरोत्येप विचेरुचक्षु ।

इतीव शिष्यैः हरिराजसाधु दर्पैरवालोकि न शीलसिधुः ॥ ११ ॥

संप्राप्य रत्ननृतीयैकपात्रं रत्नं सुतं मंहनमुर्वरायाः ।
 श्री सोमदेवः स्वकुटुंबभारनिर्वाहचितारहितो बभूव ॥ १२ ॥
 दृष्टं शिष्टजनैः सपत्नकमलैः कुत्रापिलीनं जवा-
 दधिप्रोद्धतनीलकंठनिवहै नृत्तं प्रमोदोद्गमान् ।
 तृष्णाधूलिकणोत्फरैर्विगलितं स्थाने मुनीन्द्रः स्थितं,
 वृष्टि दानमयीं वितन्वति सरां रत्नाकरांभोधरे ॥ १३ ॥
 सांतो नान्यां पत्न्यां जिनराजध्यानकृत्सहरिराजः ।
 पुत्रं मनः सुरवाख्य धर्मादुत्पादयाम स ॥ १४ ॥
 × × × × ×
 संघभारधरोर्धरः साधुर्वासाधरः सुधीः ।
 सिद्धये श्रावकाचारमचीकरदमुंमुदा ॥ १५ ॥
 यावत्सागरमेखला वसुमती यावत्सुवर्णाचलः,
 स्वर्णारी कुल संकु गमितं ।
 वितास्क दपितो लोकप्रकाशोद्यतौ,
 तावन्नदतु पुत्रपौत्रसहिता वासाधारः श्रावकः ॥

संवत् १५६४ वर्षे वैशाख बुदी ७ तिथौ सोमवासरे श्रीमेवातदेशे वहादुरपुर नगरे श्री हुमायूँ पातिसाहि मुगलराज्य प्रवर्त्तमाने श्री काप्यासघे माथुरान्वये पुष्करगणे ।

४७ श्रीपालचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेभिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११३. साइज ६×३ इञ्च । रचना संवत् १५८५. लिपि सवत् १७१४. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संगलाचरण—

क्तवा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितकर्म ।
 श्रीपालचरितं वक्ष्य सिद्धचकार्चनोत्तमं ॥ १ ॥

अन्तिमपद्य तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
 श्रीभट्टारकपद्मनन्दिमुनयो देवेन्द्रकीर्त्तिततः ।
 विद्यानन्दिगुरुस्ततो गुणनिधिः पट्टे तदीये सुधीः,
 श्री भट्टारकमङ्गिभूपणगुरु सद्बोधसिधुर्महात् ॥ १ ॥

तन् दिग्गो शुभप्रतराजितमर्तः श्रीसिद्धनन्दीगुरुः,
 गद्य-स्तनयमंदिनोर्निनितरां भव्यौघवनिस्तारकः ।
 तेषा पादग्यो न सुभाङ्गुपः श्री नेमिदत्तायते,
 नन्दो अदनविद्वमेतगुचित श्रीपादज संक्रियात् ॥ २ ॥
 नमोत्तोलन-प्रसन्नमणिः म अरुअरीशुनः
 श्री अद्वारकमहिन्परागुरोः पादाब्जमंवारतः ।
 जीय दद मंदिद्वत् सुयती मज नवाम्निर्मलः
 सूरि श्री धृतमागराविद्यतिन लेया परः सन्मतिः ॥ ३ ॥

त्याते मालवदेशत्ये पूर्वाशासनारे नरे
 श्री सदात्रिजनागारे सिद्धं शास्त्रमिदृशुभं ॥ ४ ॥
 सवत् न्याछ नहरत्रे च प्रचाशीति सद्युत्तरे ।
 थावाडशुन्ता पचन्यां संपूर्णं रत्नवासरे ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धचक्रप्रतिपाद्य प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री महिभूपराशिष्याचाय श्री
 मिठनन्दि ब्रह्म श्री शान्तिनास्तानुमोदिने ब्रह्म नेनिदत्तचिरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्र निर्वाणगमनोनाम नवमोधिहारः
 सप्तमः ।

श्रीमदप्रोतान्वये यो गोत्रेगोयलमहितः ।
 स श्री रामादासान्वयो तत्तनूजो गुणामणी ॥ १ ॥
 सुरापगादितार्थेषु स्नानेषु यः सशान्तः ।
 सः श्रीमान् ज्ञेयममोभूत ज्ञमाङ्गिगुणसागरः ॥ २ ॥
 हरेरर्चा गुरोभक्तिः ज्ञानतत्परमानसः ।
 नृशानां हृद्यिद्रात्तो सौधीयया सुखावह ॥ ३ ॥
 महागुणपनीरन्या सुचरित्रापतिव्रता ।
 ज्ञेयश्री नाम तस्यामीदृभार्या लावन्यसुन्दरी ॥ ४ ॥
 तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमा ।
 निजवृत्तेषु ये लीनाः भूर्पैः सन्मानिताः सदा ॥ ५ ॥
 ज्येष्ठोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
 निजाचारेषु यो लीनो सः श्रीकेशवनाममाङ् ॥ ६ ॥
 मृशंगी फोमल पीमानमे कण्ठान्विता ।

दानेन कल्पवाल्ली घातद्रामाराजमत्यापि ॥ ७ ॥
 तयोः पुत्रव्यसुदेवः गुणघ्नो गुणमागः ।
 तद्भार्या गुणप्रामा नाम्ना परमलदेवती ॥ ८ ॥
 शीलवर्तिः तपः स्नेहद्वैकुल्येद्योतिदोषिका ।
 विल्लुवामः द्वितीयः स्यात् भक्तिस्वरः ॥ ९ ॥
 तत् भामात् रमात्याख्यः शीला द्विगुणमंडिताः ।
 तयोः पुत्रो बभूवासौ श्रीमच्च हूरनामभाक् ॥ १० ॥
 कुंजांगणी महांगीणैः पयः पार्यैश्च वर्द्धितं ।
 तृतीयस्तु महाविद्यो गुणघ्नो गुणभूषणः ॥ ११ ॥
 श्रीमन्मोहनदासाख्यो विनयाद्रिगुणलंकृतः ।
 तद्रामा गुणाधामश्च सुंदरी शुभलक्षणः ॥ १२ ॥
 तयो सुनुः बभूवासौ देवीदास गुणाधिकः ।
 तद् भार्या च भवेत्सोऽथी नाम्ना भोगमती मता ॥ १३ ॥
 तयोः पुत्रो संसृत्पन्नो वाललोलाविराजितो ॥
 प्रथमः सुत आनदी द्वितीयः हेमराज भाक् ।
 शुभपुण्यफलपुत्राः पुण्यात् किं किं न जायते ॥
 चक्रो महोत्सवं रम्यं जगज्जनमनः प्रियं ।
 सत्यं मरुत्संप्राप्तं किञ्च कुर्वन्ति साधवः ॥

एतेषां मध्ये शीलतोयतरंगिनी दानगुणचेलना कल्पवल्ली वनूरभृती इदं पुस्तक श्रीपालनाम चरितं
 संपूर्णं ॥ संवत् १७१४ वर्षे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे पार्वणी द्वितियादि वसे भृगुवासरे श्रीमत्काष्ठासंघे माधुर
 गच्छे आचार्ये श्री श्री श्री १०८ केसवसेनजी तत्पट्टे भट्टाएक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी आचार्ये श्री १०८ ययाकीर्ति जी
 ब्रह्म पं श्री पद्मसागरजी ब्र. श्री दयासागरजी ब्र. करयाणसागरसिद्धं पुस्तकं लिखितं ।

४८. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०८ साद्वज ६।४४ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मं ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १७६६

मंगलाचरण—

श्री वदं मानमानंदं नौमि नामा गुणाकरं ।
 विशुद्धध्यानदीप्त विद्वत्कर्मसमुच्चयं ॥ १ ॥

जन्मिण पाठ तदा प्रशस्त—

जयतु जित त्रिपक्षां मूलसंघः सुप्रज्ञो
 ह्यतु तिमिर भारभारती गच्छ वारः
 नयतु सुगतिस्वार्ता शासनं शुद्धयर्गं
 जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दोमुनीन्द्रः ॥ १ ॥

पुरारणाव्ययं विद्वांवरत्वं विद्वांसयन् मुक्तिविवावरत्वं ।
 विभातु वीरः नकलाद्यकीर्त्तिः कृताय केनोतो सरुलाद्यकीर्त्तिः ॥ २ ॥
 भुवन कीर्त्तियति जयतापनी. भुवनपूरित कीर्त्तिचयः सदा ।
 भवनविव जिनागमररणो, भवन वा मुद्रवातभरः परः ॥ ३ ॥
 तत्पद्मोदय पर्वने रविर्भूद् भव्यांद्भुजं भासयन्,
 सन्नेत्रास्त्रहर तमो विघटयज्ञानाकरैर् भासुरः ।

भव्यान्तगतत्र विग्रहमत श्री ज्ञानभूष. सदा,
 चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वद्धेमानोदयः ॥ ४ ॥

जयति विजयकीर्त्तिः पुण्यमूर्त्तिः सुकीर्त्तिः—
 जयतु च अतिराजो भूमिपैः स्पृष्टवाद्ः ।
 नयनक्लिनिहिमाशु जनिभूत्स्यपद्मे,
 त्रिविध पर विवादिस्माधरे वज्रपात्तः ॥ ५ ॥

तत्तच्छिष्येण शुभेदुना शुभमतः श्री ज्ञान भावेन वै,
 पूत पुण्यपुराण मालुपभवं ससारविध्वंसकं ।
 नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहत्रशनो जैनेमते केचल,
 नाहंकारवशात्कवित्प्रमदतः श्री पद्मनाभेहितं ॥ ६ ॥

इदं चरित्र पठतः शिवं वें श्रोतुश्चपद्मांश्वरवत्प्रवित्र ।
 भविष्युत्समारमुत्वं नृ देवं समुज्य सम्यक्त्प्रफलप्रदीपं ॥ ७ ॥
 चन्द्राकडेमगिरिमागरभूषमानं,

गगानत्रीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।
 तिष्ठन्ति यावद्भितो वरमर्त्यसेवा,
 तिष्ठंतु कोविद मनोद्युजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

मंत्रन् १७३६ वर्षे कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा शनिवातरे लिपिकृत विदरावति नगरे प० विद्यादारीसेन ।
 प्रति न० २. पत्र सप्त्या ६६. साङ्ग १०५१॥ इत्य । लिपि संवत् १७३०.

संवत् १७३० माघ सुदी ४ वृहस्पति वासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवारतत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा स्तच्छिष्य मुनि जयकीर्ति स्तच्छिष्य माघनंदिने वर्णिना लिखितं ।

४६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत (गद्य) पत्र संख्या ८०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५८२.

मंगलाचरण—

श्रीवद्धमानमानस्य जिनदेवं जगत्प्रभुं ।

वक्ष्येऽहं कौमुदी नृणां सम्यक्त्वगुणहेतवे ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति कौमुदी कथा समप्ता ।

प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुन सुदी १४ शुभदिने श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंदाभ्याये श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकजिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचन्द्रदेवास्तदाभ्याये चपावतीनामनगरे महारावश्रीरामचन्द्रराज्ये खडेलवालांन्वये साहगोत्रे संघभारधुरंधर सा० काविल भाष्या कावलदे । तस्य पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० गूजर भाष्या प्रथम लाछि दुतीया सरो । प्रथमपुत्रनिजकुलगगनद्योतनदिवाकरान् व्रतनीमरत्नत्रयरनाकरान् कप्लावली प्रसरंतं-मूलखंडणान् देवशुक्रशास्त्रभगतउज्जयत गरितीर्थाद्योपज्ञितागण्यपुरयान्, जिनचरखकमलप्रधूतप्रभरित-गद्योदकपवित्रतांगान् जिननाथकथितश्रागमध्यातमरमकरदचचरीकान् पंथिकसुजनजनकलापकल्पनापूरणकल्प-वृत्तान् सम्यक्त्वादिगुणरत्नमालाविभूषितवचकंठस्थलान् एतान् साह नेमा भाष्या द्वौ प्रथमभाष्या नारंगदे द्वितीय लाठी तस्य पुत्र चिरंजीवि सा० रत्नपाल संघभारधुरंधर स० गूजर तस्य द्वितीय पुत्र सा० लालू तस्य भाष्या दमयंती तृतीय पुत्र सा० कमा तस्य भाष्या करणादे तस्य पुत्र चारि प्रथम उदा सा० माघउ, सा० साधठ, चन्द्रसन एतान् इदं श स्त्रं कौमुदीं लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मवृचाय दत्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज १०×४ इञ्च । प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संवत् १५६० वर्षे माहचुदी १३ सोमे श्री पद्युरदुर्गे हाडान्वये रावश्री अपयराजदेव कंवरनरवद् राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमत् अचलगच्छे पंडित मिश्र, पं० लाभमेर गणीनां श्रीकौमुदी प्रथं । श्री चोसवंशे साह-श्रीवत्त विद्यहयशस्त्री गोइद तत्पुत्रकुलमध्ये श्रेष्ठयशस्त्री राव्यमान्य साहश्रीवंतं साह सीहा । साह श्रीवंत-कील्हा तत्पुत्र चिरंजीवि साह पारस चिरंजीवि साह चपा सकुटम्बेन इदं पुस्तकं कौमुदीप्रथ लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं दत्तं ।

प्रति नं० ३, पत्र संख्या ३३, नाइज १३×११। इत्य । प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है । लिपि संवत् १६२५, संवत् १६२५ वर्षे गते १७६० प्रवर्तमाने वृत्तिगायेन मांगशीपशुकेलपत्ते अष्टम्यां दिवसे श्री दुभमेन्दुर्षे श्री चन्द्रसिंहस्ये आत्मगतमाङ्कं श्री गुणताभंसहोपाचार्यैः स्वंवाचार्यै लिखापितोसौ वच्यमानो दिन-नदनात् ।

५०. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकर सूरी भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५, साइज ११।४। इत्य । रचना संवत् १५०४ लिपि संवत् १६११.

संगताचरण—

तस्मै नित्य चिदानन्द म्बरूपायाहते नमः ।
यदागमरसास्वद तत्त्वं विज्ञायते नरः ॥ १ ॥
दुर्गाद्यै जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करानृणां ।
स भूयाद्भविना भूत्यैनामिजन्मा जिनेश्वरः ॥ २ ॥

प्रन्तिग—

पूर्वोपिभि र्वा रचितो क्रय्यमम्रेऽपि काश्ये सुमांगितेश्च ।
श्लोकै र्मेधा सा ग्रथिता प्रमोदास्त्रोद्भवाशोढुमितैत्रवर्षे ॥ १ ॥
इति चैत्रगच्छोद्यैः श्री गुणोकरसूरभिः ।
चक्रो श्लोकै नवारम्यो कथो सस्यवर्षेकौमुदी ॥ २ ॥
पुष्कटतौ स्थिरौ आबद्योवर्षे ध्रुव मंडलः ।
वाच्यमाना वुषे स्ताश्लोयोत्तमस्यवत्त्र कौमुदी ॥ ३ ॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता ।

संवत् १६११ वर्षे भाद्रवा सुदी ४ दिने मेढता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तंतु शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिपावर्त सम्यक्त्व कौमुदी आत्मर्थे ।

५१. सारम्यत चन्द्रिका मटीक ।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६, साइज ६।४ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्त्या तत्र प्रति पंक्ति मे ४०-४२ अक्षर । लिपि संवत् १७४६.

संगताचरण—

नमोऽस्तु सर्व्वकल्याणपद्मज्ञानभास्वते ।
जगत्रितमताथाय पराय परमात्मने ।

प्रशस्ति—

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकौटिकाख्ये गणो,
 श्रीमच्छांद्रकुञ्जे घटोद्भववृहद्गच्छे गरीमान्विते ।
 श्रीमन्नागपुरीयकाहयत् या प्राप्तावदाते धूना,
 स्फुञ्ज द्भूरि गुणान्विता गणधरश्रेणि सदा राजते ॥ १ ॥

वर्षे वेदमुनीन्द्रशीं कर ११७४ मिते श्री देवसुरिप्रभुः,
 जज्ञेऽभूत्तदनु प्रसिद्धमहिमा पद्मप्रभुः सूरिरात्रुः
 तत्पट्टे प्रथितप्रसन्न शशश्रुत् सूरिसनादिनःसूरीन्द्रा—

स्तदनंतरं गुणसमुद्राहावभूषु बुधाः ॥ २ ॥

तत्पट्टे ज्यैशेखंराख्यसुगुरुः श्री वज्रसेनस्ततः,
 तत्पट्टे गुरुर्हर्मपूर्वतिलकः शुद्धः किं गद्योर्तिकः ।

तत्पट्टे प्रभूरत्नशेखरगुरुः सूरीश्वराणां वरः,
 तत्पट्टे बुधिपूर्णचन्द्रसदृशः श्रीपूर्णचन्द्रप्रमुखा ॥ ३ ॥
 तत्पट्टे जनि हेमदस सुगुरुः सर्व्वघ्नं जामघशः ।

आचार्या अपिरत्नसागरवरास्तत्पट्टपद्मोयिमा ।

श्रीमान् हेमसमुद्रसूरिरभवच्छ्री हेमरत्नस्ततः
 तत्पट्टे प्रभूसोमरत्नगुरुवः सूरीश्वराः सद्गुणाः ॥ ४ ॥

तत्पट्टोदय शैलहेलिरमल श्री जैसवालान्ययेऽ—
 लंकारः कलिकालदपदमनः श्री राजरत्नप्रभुः ।

तत्पट्टे जितविश्ववादिनिवहागच्छांधपः संप्रतिः,
 सूरी श्री प्रभुचन्द्रकीर्ति गुरुवो गांभीर्यधैर्यश्रयाः ॥ ५ ॥

तैरियं पद्मचन्द्राहोपाध्य याभ्यर्थनाकृता ।

शुभा सुबोधिकानाम्नी श्रीसारस्वतदीपिका ॥ ६ ॥

श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीन्द्रपादांभोजमधुव्रतः ।

हर्षकीर्तिसूरिरिमाम दशकेऽलिखत् ॥ ७ ॥

अज्ञानध्वांतविध्वंसविधानेदीपिकानिका ।

दीपिकेयं विजयतां वाच्यमाना बुधैश्चिरं ॥ ८ ॥

स्वल्पस्य सिद्धस्य सुबोधकस्य स रस्वतव्याकरणस्य टीका ।

सुबोधिकाख्यां रचयांचकार सूरीश्वर श्री प्रभु चन्द्रकीर्तिः ॥ ९ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपोगच्छाधिराज भट्टारक श्री चन्द्रकीर्तिसूरि विरचिता श्री सारः

स्य दीपिका संपूर्णाः ॥

५२ निदान्तगार मन्त्र ।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३. साइज १२x५ इञ्च । त्रिपि संवत् १८०३. त्रिपि स्थान जयपुर । प्रति जीख शं र्ण हो चुमी है ।

प्रारम्भ—

शुश्रूष्य स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मजयात्मकं ।
त्रिभिः प्राप्तपरंघाम वन्दे निध्वस्तकल्पप्र ॥ १ ॥

शक्ति—

नीदीरमेवास्य गुणानिमो जातः सुशिष्यो गुणिनां द्विरोष्यः ।
द्विज्यन्तनीयोऽवनि चारुचित्तः सदृष्टिचित्तोऽत्र नरेन्द्रसेनः ॥ १ ॥
गुण्येनोदयमेनाऽजयसेना संवश्रुवुरतिवर्थाः ।
तेषां गी गुणसेनः सूरिर्जातः कलाभूरिः ॥ २ ॥
अतितुःक्षणानिरुद्वर्त्तिनिदातयोगे,
नष्टे जिनेह शिव पत्म्नि यो वभूव ।
आचार्यं नाम विगतोऽत्र नरेन्द्रसेन—
न्येनेदमागमप्रचो विशदं निवद्धं ॥ ३ ॥

ज्ञात सिद्धांतसारसप्रथे आचार्यश्रीनरेन्द्रसेन विरचिते द्व दशमः परिच्छेदः समाप्तः ।

५३ सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता श्री सोमप्रभसूर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १२x५ इञ्च । पद्य संख्या ६६. त्रिपि संवत् १८८६

प्रारम्भ—

मिदूरप्रमङ्गलपकराशिरः क्रोडे रुपायाटवी,
दात्र विनिचयः प्रयोष दिवम प्रारंभमूर्वादयः ।
मुक्तितीहुषङ्गंशुक्रमरसः श्रेयस्तरोपल्लवः,
प्रोद्गासः क्रमयोर्नैषद्युतिमरः पार्श्वप्रभोः पातु वः ॥

शक्ति—

मोमप्रभाचायममासायघापूर्सां तमः पंक्रमपाकरोति ।
वन्ध्यमुपिभन मुपदेशलेदो निरान्य माने निशमेतिनाशं ॥ १ ॥

अभपदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि,
 द्युमणिविजयसिंहाचार्यपादारविंदे ।
 मधुकरसमतां य सतां यस्तेन सोमप्रभेण,
 व्यरचि मुनिपररु सूक्तमुक्तावलीय ॥ २ ॥

इति सोमप्रभसूरि विरचितं सिंदूरप्रकराख्यं सुभाषित शास्त्रं शतकं ।

संवत् १८८६ भादवा सुदी २ वृहस्पतिवासरे मालपुरानगरे भट्टारकजी श्री १०८ देवेंद्रकीर्त्तिजी तस्य
 शिष्य पं० मेहरचंद्र स्वहस्तेन लिखितं ।

५४. सुदर्शनचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७५ साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
 ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । प्रति नवीन है ।

मंगलाचरण—

नत्वा पंचगुरून् भक्त्या पंचमी गुरुनायकान् ।
 सुदर्शनमुनेश्चारु चरित्रं रचयाम्यहं ॥ १ ॥
 येषां स्मरमात्रेण सर्वे विघ्ना घना यथा ।
 वायुना प्रलय यान्ति तान् स्तुवे परमेष्ठिनः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री शारदासार जिनेंद्रवक्रान् समुद्भवासारजनैक चक्षुः ।
 कृत्वा क्षमामत्र कवित्वलोरो मातेव बालस्य सुखं करोतु ॥ १ ॥
 श्री मूजसधेवरभारतीये गच्छे बलात्कारगणोत्तम्ये ।
 श्री कुन्दकुंदाख्य मुनेंद्रवंशे जातः प्रभाचन्द्रमहामुनीन्द्रः ॥ २ ॥
 पट्टे तदोये मुनि पद्मनन्दी भट्टारको भव्य सरोजभानुः ।
 जातो जगन्नयहितो गुण रत्नसिंधुः, कुर्यात् सतां सारसुखं यतीशः ॥ ३ ॥
 तत्पट्टेद्याकर भास्करोऽत्र देवेंद्रकीर्त्तिमुनिचक्रवर्त्ति ।
 तत्पादपङ्केज सुभक्तियुक्तो विद्यादन्दी चरितं चकार ॥ ४ ॥
 तत्पट्टे जनि मल्लिभूषणगुरु चारित्रचूडामणिः,
 संसारांबुधि तारणैकचतुररिचितामणिः प्राणिनां ।
 सूरी श्री श्रुतसागरो गुणनिधिः श्रीसिहनन्दीगुरुः,
 सर्वे ते यतिसत्तमाः शुभतरा कुर्वन्तु वो मंगलं ॥ ५ ॥

शुक्लानुपदेशेन सञ्चरित्रमिदं शुभं ।
नेमिःसो वनी भद्रेना भावयामाश शम्भवं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनभन्कारसहायप्रदर्शके प्रज्ञा श्री नेमिचन्द्रविरचिते सुदर्शनमहासुनि
मोजलक्ष्मी संप्राप्ति व्याख्यानो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ इति सुदर्शन चरित्रं संपूर्णं ॥

५५. स्वामीनार्त्तिकेयः सुप्रेता चटीक ।

मूलार्त्ती स्वामी कर्त्तिकेय । टीकाकार आचार्य शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत्
१६०१ तिथि संवत् १७२१ प्रारम्भ क ७३ पृष्ठ नहा है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसप्तैजनि नंदिसवः, वरावतात्कारणः पसिद्धः ।
श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिकर्यः, त्रिभातिभभूपणभूपितांग ॥ १ ॥
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनदी, ततोऽभवच्छ्रीमकलादिकीर्त्तिः ।
तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः श्रीज्ञानभूपोचरवित्तिभूय ॥ २ ॥
तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टवारी शुभचंद्रदेवः ।
तेनेयसाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तेः ॥ ३ ॥
सूरिप्रोशुभचन्द्रेण वाटिपर्वतवज्रिणा ।
त्रिविधेनाऽनुप्रेक्षाजगृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥
श्रीमत् विक्रमभूगतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,

माघे मासिदशात्रवहिर्माहते ख्याते दशम्यां तिथौ ।

श्रीमच्छ्रीमहीनार सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरो,

श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र देवविहिता टीका सदा नन्दतु ॥ ५ ॥

वर्णा श्रीश्रीमच्छन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।

शुभचन्द्र-गुणे त्रामिन कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥

तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैवेद्येन गणेशिना ।

कर्त्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥

तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।

साश्रीकृतीसार्धेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥

लक्ष्मीचन्द्रगुरु न्दामीशिष्यभूतस्यसुधीयशा ।

वृत्तिर्विन्तरिततेन श्री शुभेन्दुप्रसादतः ॥ ९ ॥

५६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री खेता । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज ६।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७६३.

प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमानमानम्य त्रैलोक्यनभो मणिं ।
बुवेऽहं कौमुदीं नृणां सम्यक्त्वस्थितिहेतवे ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

हे ताराधिपतिप्रकाशविमलस्वांतप्रकाशात्मनां,
ब्रह्मज्ञानविदां महोपशमिनां दिग्वाससां योगिनां ।
चारित्र्येण जिनोदिते नहि पुनर्विभ्राजितानां भुक्ति,
शिष्येणात्मविशुद्धये विरचिता पुण्या कथा कौमुदी ।
गणभृन्मुखशीतांशु प्रभवातत्त्वकौमुदी ।
भूयादुपासकानां हि कथा संबोधलब्धये ॥ २ ॥
वेदुष्यदृष्टये नैव कवित्वयशासे न च ।
श्लोकै व्यंरचि किन्वेपा धर्मार्थं कौमुदी परं ॥ ३ ॥

इति श्री कौमुदी कथायां पंडिता खेता विरचितायां अष्टमी कथा समाप्ता । इति कौमुदी ग्रन्थ संपूर्ण ।

संवत् १७६३ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां दिने लिपिकृतं परमपूज्यजी श्री ५ उत्तम
जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री राघव जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री सोहाजी तत् शिष्यभ्रमरजी श्री चेतारामजी
तत्पट्टधारी पूज्य श्री लच्छीरामजी तदंतेवासी शिष्य केसर ऋषिणा लिपी कृत फलकनगरे ।

५७. हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२२. साइज ११।।×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ परं ष
पक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-४० अक्षर । लिपि संवत् १६८०.

मगलाचरण—

सबोधसिंधुचन्द्राय सुव्रताय जिनेशने ।
सुव्रताय नमो नित्यं धर्मशाम्भार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

जैनैद्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेन्द्रकीर्तिर्यातनायकनैष्टिकात्मा ।
तत्तच्छिष्यसयमधरेण चरित्रमेतत्, सृष्टं समीरण सुतस्य महर्द्धिकस्य ॥ १ ॥
यः पठेच्चरितमेतदुत्तम पाठयत्यपि परान् शिष्यान् ।
यः श्रणोति खलु भावयेच्चयः सोऽश्नुते सुखमनुत्तरं दिवि ॥

विशदशीलस्वर्धु नीसिलातलैकराजहंसोत्सवायकीडनः प्रियः,
 स्वमतसिधुवद्धं नप्रकृष्टयामिनी न पोन्तेजसोद्भू त प्रभामितः ।
 सुरेन्द्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनचनंगमदनैकपंडितः कलाधर
 स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥
 गोलशृंगारवशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चित्,
 भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत् ।
 तेनोच्चैरेष ग्रंथ कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरैः,
 श्री विद्यानंदिदेशात्सुकृतविचित्रशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धथै ॥

इदं श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।
 रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं ॥
 बन्धुर्धो लभते भृपं धनुयुतो वृद्धि च निःस्वाधनं,
 पुत्रार्थो सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत् ।
 मोक्षार्थो वरमोक्षम श्रमभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,
 ह्येतत् शैलमुनीन्द्रराजचरितं सर्वार्थसिद्धिप्रदं ॥
 पठकः पाठकश्चैव वक्ता श्रोता च भावकः ।
 चिरं नद्यादयं ग्रंथस्तेन साद्धे युगाविधि ॥
 प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमिति बुधैः ।
 श्लोकानामिह संतव्यं हनूमकचरिते शुभे ॥

इति श्री हनूचरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः ॥

संवत् १६८० वर्षे मार्गसिंहर सुदी पचमी दीतवार पुस्तक लिखापितं जैसी श्रीपति ।

३८. हरिवंशपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सफलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२३. साङ्ग १२।।५। इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४६-५० अक्षर । प्रति लिपि संवत् १८०३. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है ।

मयलाचरण—

सिद्धं संपूर्णं भव्याथ सिद्धेः कारणमुत्तमं ।

प्रशास्त्रदर्शनमानचारित्रप्रतिपादनं ॥ १ ॥

सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशर ।

मणमामि नहावीरं लोकत्रितयमगल ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री वर्द्धमानेन जिनेश्वरेण त्रैलोक्य वंद्येन यदुक्तमादौ ।
 ततः परं गौतमसङ्गकेन गणेश्वरेण प्रथितं जनानां ॥ १ ॥
 ततः क्रमाद्धी जिनसेनाम्नाचार्येण जैनागमकोविदेन ।
 सत्काव्यकैतिसदने पृथिव्यां नीतं प्रसिद्धं चरितं हृदेश्च ॥ २ ॥
 श्री कुन्दकुन्दान्त्रय भूपणोऽथ वभूव विद्वान् किल पद्मानन्दी ।
 मुनीश्वरो वादि गजेन्द्रसिंहः प्रतापवान् भूवलये प्रसिद्धः ॥ ३ ॥
 तत्पट्टपंकजविकासभास्वान् वभूव निर्ग्रथवरः प्रतापी ।
 महाकवित्वादि कलाप्रवीणः तपोनिधिः श्री सकलादिकीर्तिः ॥ ४ ॥
 पट्टे तदीये गुणवान् मनीषी क्षमानिधानो भुवनादिकीर्तिः ।
 जीयाच्चिरं भव्यसमूहवन्द्यो नाना यतिव्रातनिपेक्षणीवः ॥ ५ ॥
 जगति भुवनकीर्तिभू तले ख्यातकीर्तिः,
 अतजलनिधिवेत्तानंगमानप्रभेत्ता ।
 विमलगुणनिवासच्छिन्नसंसारपाशः,
 स जयति जिनराजः साधुराजी समाजः ॥ ६ ॥
 सद्ब्रह्मचारी गुरुपूर्वकोऽस्य भ्राता गुणहोऽस्ति विशुद्धचित्तः ।
 जिनस्य दासो जिनदासनामा कामारिजेता विदितो धरित्र्यां ॥ ७ ॥
 श्री नेमिनाथस्य चरित्रमेतद्,
 अनेन नीत्वा रविपेणसूरेः ।
 समुद्धृतं श्रान्यसुखप्रबोध-
 हेतोश्चिरं नन्दतु भूमिपोठे ॥ ८ ॥
 श्रीमज्जिनेश्वरपदांबुजचंचरीक-
 स्तच्छात्रसद्गुरुपु भक्तिविधानदत्तः ।
 सार्थाभिधोऽसौ जिनदासनामा,
 दयानिवासौ भुवि राजतेऽत्र ॥ ९ ॥
 न ख्याति पूजाद्यभिमानलोभाद्ग्रन्थः कृतोऽयं प्रतिबोधहेतौ ।
 निजान्ययोः किंतु हिताय चापि परपेकारांश्च जिनागमोक्तः ॥ १० ॥
 जिनप्रसादादिदमेवयाचे,
 दुःखक्षयं शाश्वतसौख्यहेतोः ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६७. साइज १२।।५।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रतिपंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण स्वगुरुभगिनी वाइ गौतमश्रिया लेखयित्वा व्र० नरसिंहस्य पठनार्थ इदं शास्त्रं दत्त ।

संवत् १५५५ वर्षे माप्रसिंह त्रिदि १३ स्वौ मुनि श्री संघर्षदिना ग्रंथोऽयं ब्रह्म गुणसागराय दत्तः ।

संवत् १६४५ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे श्रीमालपुरे राजाधिराज श्री भगवंतदास जुगराज्य श्री नरसिंह राडेय प्रवर्तमाने श्री धार्दिनाथ चत्यालये श्री मूलसंघे नद्यन्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा स्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये कासलीवालगोत्र सा० सोढा तद्भार्या कल्ही तत्पुत्रा चत्वार प्र० सा० छाजू द्वि० सा० करमसी तृतीय भर्षसी चतुर्थ सा० ठीला । प्रथम सा० छाजू भार्या नापु तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० जेणा भार्या जेणादे तत्पुत्र चत्वारः । प्रथम देवा द्वि० इसर तृतीय कुंता चतुर्थ भगवान । द्वितीय कर्मसी भार्या करमाइ तत्पुत्र चत्वार प्रथम सा० सांगा भार्या सिंगारदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम कला द्वि० माला । द्वि० सा० गंगा तद्भार्या गौरादे तृ० सा० नेमा तद्भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० हरिषा तद्भार्या हरषमदे द्वि० सा० वेणा तद्भार्या बहुरंगदे । चतुर्थ सा० खेमा तद्भार्या खेमलदे तत्पुत्र चि० सावलदास । तृतीय सा० धर्मली तद्भार्या नाल्ही तत्पुत्र सा० वीरु तद्भार्या विरादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० राहमल द्वि० चि० इंगर । चतुर्थ सा० टीला तद्भार्या दामु तत्पुत्र सा० हेमा तद्भार्या हेमलेद तत्पुत्र चि० जगमाल एतेषां भव्ये सा० हेमा आचार्य सिहनन्दये घटापित ।

५६. हरिवंशपुराण ।

रचयिता आचार्य जिन्सेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२०. साइज ११।५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । ग्रन्थ पूर्ण है । रचना काल-शक संवत् ७०५. लिपि संवत् १६४०.

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनं ।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनं ॥ १ ॥
शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नमः श्री बद्धमानाय बद्धमानाजनशिने ॥ २ ॥

अनिमि पोठे तत्रा प्रशस्ति—

तनस्त्रिलोक. प्रनिवपमादरात् प्रमिद्धदीपालिककयात्र भारते ।
समुद्यतः पंचशतं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणकिभूतिभक्तिभक्ति ॥ ११ ॥
त्रयः क्रमात्कंदर्लिनो जिनात्परे द्विपष्टिवर्षान्तरं भविनोऽभवेत् ।
ततः परे पंचसप्तपूर्विकेऽस्तपोधना वपशतान्तरं गताः ॥ १२ ॥
त्रयशीतके वर्षशते तु संयुक्देशैव गीता दशपृष्टिरेणः शते ।
द्वे च विशेषभृतोपि पच ते शते च साष्टदशरु चतुःसुनिः ॥ ३ ॥
गुरु सुभद्रो जय भद्रतामा परो युशो वाहुरनुततरस्ततः ।
महाहलोहार्य गुरुश्च ये दधुः प्रसिद्धमाचरमहागमत्र ते ॥ ४ ॥
महागो धृत्विनयधरश्रतामृपश्रति गुप्त रदाधि तदधत् ।
मुनीश्वरोन्य शिवगुप्त सप्तको गुणोः स्वमहद्वलिरप्यधात्पदं ॥ ५ ॥
समदराजोऽपि च मित्रवीरनिगुरु तथान्यो वलदेव मित्रको ।
विद्युदमानाय त्रिरस्त सयुतः श्रियान्वितः सिंहवल्लरचवीरवित् ॥ ६ ॥
सपद्मसेनो गुणपद्मखडभृत् गुणामणीव्य भ्रपदादिहस्तकः ।
स न गहस्तोजित ददनामभूरसत्तदिपेणः प्रभुदायसेनकः ॥ ७ ॥
तपोधन श्रीधरमेननामक. सुभ्रमंसेनोऽपि च सिंहसेनकः ।
सुनन्दिपेणेश्वरसेनकोप्रभु सुनन्दिपेणाभयसेन नामको ॥ ८ ॥
सं सिद्धसेनोऽभयभीमसेनो गुरुपरो तो जिनशक्तिपेणको ।
श्रखंड पटखंडे खलदितस्थितिः समस्तसिद्धांतप्रधत्तयार्थः ॥ ९ ॥
दंधार कर्मप्रकृतिश्रुतिच यो जिताक्षवृत्तिजयसेनसद्गुरुः ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेपराद्धातसमुद्रपारगः ॥ १० ॥
तदीयशिष्यो सितसेनसद्गुरुः पवित्रपुत्राटगणाग्रणो गुणी ।
जिनेन्द्र मच्छाशत्रवस्मलात्मना त रोभृता वर्ष शताधिज विना ॥ ११ ॥
सुशास्त्रवेनेन वेदान्यत मुना वदान्यमुख्येन भुविप्रकाशिता ।
तदग्रजो धम्मसहोदरः समी समग्रधीद्धर्म इवान्तिविग्रहः ॥ १२ ॥
तपोमयो काति भशेपद्विभु यः क्षिपन्वभौ कीर्त्तितकीर्त्तिपेणमाः ।
तदग्रशिष्येण शिवाप्रसौख्यभागारिष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥
स्वशाक्तभाजा जिनसेन सूरिणा धिय लपयोक्ता हरिवंशपद्धतिः ।
यदत्र किंचद्रचित प्रमादितः परस्यव्याहृतदीर्घदूषितं ॥ १४ ॥
तदप्रमादास्तु पुराण कोविदाः सृजंतु जतुस्थित शक्तिवेदिनः ।
प्रशस्तवशो हरिवंशपर्वत. कथ मे मति क्वालपतरात्पशक्तिका ॥ १५ ॥

अनेन पुण्यप्रभवस्तु क्षेत्रे जिनैन्द्रवंशस्तवनन वाञ्छितः ।
 न काव्यवर्धव्यसननिवधतो न कीर्त्तिसनानिमहामनीषया ॥ १६ ॥
 न काव्यगर्वेण नचान्यवीक्ष्या जिनस्य भवत्येव कृतकृतिमया ।
 जिनाश्चतुर्विंशतिरत्रकीर्त्तिताः सुकीर्त्तयो द्वादश चक्रवर्त्तिनः ॥ १७ ॥
 नत्रत्रिधासीरिहरिप्रतिद्विपक्षिपेष्टिरित्ये पुरुषाः पुगाणगाः ।
 अवांतरेनेक शतानि पार्थिवा महाचराः व्योमचराश्च भूरिशाः ॥ १८ ॥
 क्षितौ चतुर्वर्गफलोपभोगिनः पुगाण मुख्येत्रयशश्चिनस्तुताः ।
 अगण्यपुण्य हरिवंशकीर्त्तिना धंदत्र गण्यं गुण्यं संचितं मया ॥ १९ ॥
 फलादमुप्यास्तु मनुष्यलोकजा भवतु भव्या जिनशासनस्थिताः ।
 जिनस्य नेमेश्वरितं चंगचरं प्रसिद्धं जीवादि पदार्थभसिने ॥ २० ॥
 प्रवाच्यंतां चाचकमुख्यं प्रिज्जनैः सभागतेः श्रोत्रपुटैः प्रपीयतां ।
 जिनैर्द्रनामग्रहणं भवत्यलं प्रहादिपीडा परमस्यकारणं ॥ २१ ॥
 प्रवाच्यंमानं दुरितस्य दारणं सतां समस्तं चरितं किमुच्यते ।
 कुर्वन्तु व्याख्यानमनन्यचेतसः परोपकराय स्वमुक्तिहेतवे ॥ २२ ॥
 सुमंगलं मंगलकारिणामिदं निमित्तमप्युत्तमार्थिनां सतां ।
 महोपमत्रै शरणं सुशांतकृत् सुशाकुनशास्त्रमिदं जिनाश्रयं ॥ २३ ॥
 प्रशामनाशासनदेवताश्चया जिनाश्चतुर्विंशतिमाश्रिताः सदा ।
 हिताः सतामप्रतिवक्यान्त्रिताः प्रयाचिताः सन्निहिता भवंतुताः । २४ ॥
 गृहितचक्राप्रतिचक्रदेवता तथोज्जयंतालयसिंहवाहिनी ।
 शिवाय यस्मिन्नंह सन्निधीयते क्व तत्र त्रिंताः प्रभवन्ति शासने ॥ २५ ॥
 ग्रहोरंगाभूतपिशाचंराक्षसा हितप्रवृत्तौ जिनविघ्नकारिणः ।
 जिनेशानां शासनदेवतागणा प्रभाव शंकर्याथ समश्रयति ते ॥ २६ ॥
 प्रकाममाकाञ्छत कामसिद्धयः प्रसिद्ध चर्मार्थं विमोक्षलब्धयः ।
 भवन्ति तेषां स्फुट मल्प यत्नतः पठति भक्त्या हरिवंश मत्र ये ॥ २७ ॥
 नित्राय मात्सर्यमवार्थं वीर्ययाधियासुधैर्योजितया जिनादराः ।
 अनायेवर्या सहिता सपर्यया पुराणमार्याः प्रथयंतु विष्टपे ॥ २८ ॥
 किमर्थंवा प्रार्थनयायतस्ततः स्वभावतो विश्वभरक्षमाविदेः ।
 पयोधरोन्मुक्त मिवाभ्र भूधरा विधाय मूर्ध्नि प्रथयंति भूतले ॥ २९ ॥
 सुष्टुमुत्सृष्ट सुदातशब्दकै नैर्ध पुराणं चपुराणं वारिसन ।
 महाभ्रकूल जनिता शरत्कुलै अतुःसमुद्रान्त मिदं प्रतन्यते ॥ ३० ॥

संवत् १६१६ वर्षे आश्विनमासे शुक्लपक्षे प्रतिपत्तिथौ शुक्रवासरे शतभिलानक्षत्रे धृतिनामयोगे
 आवैरिमहादुर्गे श्रीनेमिनाथचैत्ये लये श्रीराजाधिराजभारमलराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बला-
 त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवा.....
 .. मुना ललितकीर्त्तिस्तदम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे सा० लाहुड तद्भार्या हेमी तत्पुत्रौ
 द्वौ प्रथम सा० सोढा द्वि० सा० जसपाल । सा० सोढा भार्या खेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० पीथा द्वि० सा०
 परवत । सा० पीथा भार्या पिसिर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० योगा तद्भार्या युगसिरो द्वितीय सा० बोहिव
 तद्भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चि० धीनड । सा० परवत भार्या पौसिरी । सा० जसपाल भार्ये द्वे प्रथम जसमादे
 द्वितीय लक्ष्मी तत्पुत्र सा० धरमा तद्भार्या धारादे एतेषां मध्ये सा० सोढा भार्या खेमी पोडशकारण-
 द्रतोद्यापनार्थं इदं शास्त्रं मंडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तये घटापितं ।

संवत्सरे वाखवसुमुनीदुमिते १७=५ पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ सोमवासरे फिलायनगरे
 श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये गीतवादिन्नप्रवर्द्धितनित्योत्सवे चतुःसघशोभिते कल्लाहावंशोद्भवप्रतापग्नविध्यापित
 शङ्खमंडलशरणागतवज्रपजरकल्पनिजदानसत्पितावनीपकलोकरात्पिमहाराजि श्रीकुशलसिंहजी राज्ये प्रव-
 र्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्त्तिदेवा
 स्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रदिनमाणं निबंधसद्योगद्यविद्याधरीपरीरंभसंतर्जित मूर्खि-
 प्रतापवलाः निजक्षमासलिलनिद्धूतपापपंकः भट्टारकभट्टारकश्रीदेवेंद्रकीर्त्ति स्तदम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी
 गोत्रे साहजी श्रीरेखराज तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह गिरधरदास तत्पुत्रौ द्वौ । साह बिहारीदास तत्पुत्र सा०
 सुखराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० बालचंद सा० जादुंदास । तत्पुत्र चि० चैनराम गिरधरदास द्वितीयपुत्र सा० कृष्ण-
 दास तत्पुत्र सा० धनराज तत्पुत्रौ द्वौ चि० भूधरदास चि० मनोरामरेपराज । द्वितीय पुत्र सा० नरहरदास
 तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र सा० पाताम्बरदास तत्पुत्र त्रिसनदास तत्पुत्र सा० सदाराम तत्पुत्रौ द्वौ सा०
 नाथूराम । नरहरदास द्वितीय पुत्र सा० कल्याणदास तत्पुत्र रूपचद तत्पुत्राः पंच । सा० किशोरदास
 सा० श्रीचंद सा० सोनपाल सा० कंवरपाल सा० कुसलराम । सा० नरहरदासस्य तृतीया पुत्र गंगारामः
 तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० गोरधनदास तत्पुत्रास्त्रयः चि० मोजीराम चि० मयाराम । सा० गंगाराम द्वितीय
 पुत्र साह भेलीदास तत्पुत्र चि० टेरुचद तत्पुत्रौ द्वौ चि० नाहरराम चि० जयचद सा० गंगाराम तृतीयपुत्र
 सा० चतुर्भुज । नरहरदास चतुर्थपुत्र श्रीमज्जनराजचरणकमलसमवलोकनपत्परः साहजी श्री हरीकेशजी
 तद्भार्या हीरादे तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र साह दयाराम द्वितीयपुत्र सा० उदैराम तद्भार्या उत्तमेद द्वि०
 लाडी तृतीय गुजरि तत्पुत्रौ द्वौ साह रत्नचंद तद्भार्या रातसुखदे तत्पुत्र चि० सेवाराम । सा० उदैराम
 द्वितीय पुत्र अनूपचद तद्भार्या अनोपदे । साह हरीकेश तृतीय पुत्र साह रामजीदास तद्भार्या रायबदे
 तत्पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चिरंजीव अजबराम तद्भार्या अजायबदे । साह रामजीदास द्वितीय पुत्र चि० मनसाराम
 तद्भार्या मनसुखदे । सा० हरीकेश चतुर्थपुत्र सा० दीपचद तद्भार्या दाडिमदे एतेषां मध्ये चि० श्री
 मनसारामेन स्वहस्तेन लिपिकृतः ।

अपभ्रंश और प्राकृत भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां

१. अमरसेन चरित्र ।

रचयिता श्री माणिक्यकराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६६. साइज १०॥ × ४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में लगभग ३२-३५ अक्षर । लिपि संवत् १५७७. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

कृति के प्रारंभ में कवि ने आश्रयदाता का परिचय इस प्रकार दिया है:—

घत्ता

ए सयलवित्तिथंकर कुवहोसहिधरं, ते सहपणविवि पुहमिवर ।
 पुणु अरुहहवाणी तिजयपहाणी, वियमणिधारिविकुगइहर ॥ १ ॥
 पुणु गीयसु गवाहरु रामरणाणि, जे अखिउ सम्मइ जिगाहवाणि ।
 पुणु जेणपयत्थं भासियइं, तत्रउवहितरणपोयगासुहाइं ।
 पुणु तासु अणुवकमिसुणियपहाणु, गियचेयणत्थतंम्मउ सुजाणु ।
 हुयवहुमदत्वह सुइणियाणु , जिहंदुद्धारि गिज्जिउ पंचवाणु ।
 विसणाणाकलालयपारुपत्त , उद्धरियमउवजेसमविसत्त ।
 सतइयताह मुणियागच्छणाहु , गयरायदोससंजइयसाहु ।
 जे ईरियगंत्थहकहपवीण , गियज्जमाणे परमप्पयहलीणु ।
 तवतेयणियत्तणु कियउरवीणु , सिरिखेमकित्ति पट्टिहिपवीणु ।
 सिरिहेमकित्ति जिहयउधामु , तहु पट्टिचिकुम रविसेणुणामु ।
 गिगंथु दयालउ जइ वरिवरिट्टु, जि कहिउ जिगागमभेउ सुट्टु ।
 तहु पट्टिणिविदुउ वुहपहाणु , सिरिहेगचंदुमयतिमिरभाणु ।
 तं पट्टिधुरंधरु वयपवीणु , वरपोमणंदि जोतवहंरवोणु ।
 तं पणविवि गियगुरलीलखाणि , गिगंथु दयालउ अमियवाणि ।
 पुणु पतणमिकह अवणाहिंराम , आयणाहु जासइत्थराम ।

घत्ता

गोयमएवंजाकहिप, सेणियस्ससुह दायणि ।

- जावुहयणाचिंतामणिय, धम्मरसहुतरंणिणि ॥ २ ॥

महिचीडिपढाणउ गुणवरिट्टु	सुरह्विमणविभउजगाइसुट्टु ।
वरतिगिणासालमंडिउपचित्तु	शां इह पंडिउ सुरपारपत्तु ।
रुहियासुविणामे चणिवइट्टु	अरियणजगाह हियसल्लुकट्टु ।
जहिं सहहिंशिरतर जणणिकेय	पंडुरसुवराणधयसुहसमे ... ।
मट्टालसतोरणजत्यहम्म,	मणसुहसंदायण शां सुकम्म ।
चउहट्टयचच्चरदामजत्थ	वणिवर ववहरहिचिजहिं पयत्थ ।
मगगागणकोलाहलसमत्थ	जहिजणणिवसहिं संपुराण अत्थ ।
जहिं आचणम्मिथियविहभंड	कसवट्टिहिं वसियहिं भम्मखंड ।
जहिं विसहिं महायणसुद्धवोह	शिच्चंचियपूयादाणासोह ।
जहिं वियरहिंवरचउ वणालोय	पुराणपयासियदिव्वभोय ।
चवहारवार सपुराणसव्व	जहिंसत्तवसणामयहणीभन्व ।
सोहगणिलयजिणाधम्मसील	जहिं माणाशिामाया महग्घलील ।
जहिं चोरचाडकुसुमालदुट्ट	दुज्जणसखुहखलपिसुणधिट्टु ।
गविहीमहिंमहिंदुहियहीणा	पेम्माणुरत्तसव्वजिपवीणा ।
जहिं रेहहिहयपयदल्लिजभग्गु	त वीजरंगरगियधरग्गु ।

घत्ता

सुहलच्छिजसायक शां रयणायर,	वुहयणजुउगांइंदउरु ।
मत्थत्यहिमोहिउ जणमणमोहिउ,	शां वरणायरइएहुगुरु ।
तहिं साहिंमिन्करुमामिसालु	णियपइपालइ अरियणभयाल्लु ।
त रज्जिवसइ वणिवरपद्दण	दुत्थियजगापोसण गुणणिहाण ।
जो अडरवालु कुलरुमलभाण	सियलकुवणयहुविसेयभाण ।
मिच्छत्तवसणवासणविरत्तु	जिणसासणिगंधहपायभत्तु ।
चउवरियणामचीमासतोसु	जो वंसहमडण सुयणपोसु ।
त भामिणि गुणगणसीलखाणि	माल्हाहीणामे महुरवाणि ।
तं गान्णुणिन्वमगुणणिवानु	चउधरिय करमचट्टु अरुहदासु ।
जिणधम्मोवरेज्जवद्धगाहु	णिवहियइइट्टु पुरयणहयाहु ।
जिणचरणोत्तणविजोपचित्तु	आयमरसरत्तउजासुचित्तु ।
उद्धरिउ चउट्टिहसंधंभाम	आयरिउविसावयचरिउचारु ।
चउदाणवतु शां गयहत्थि	वियरेडणिचजोघम्मपंथि ।

सम्भत्तरयत्तलंरियमरीरु कयायथलुव्वशिकपुधीरु ।
 मुह्निपरियत्तकडव विगाहिहंसु जिगावरमहमज्जे लद्धसंसु ।
 तं भ भिगिगि डिउचेंदहीभियाच्चि जिगासुयगुरुभत्तिय सीजसुच्छि ।
 तं जायउ गादगु मीलखागि चउमहत्तागामे श्रमियचायि ।
 धयाकया कंचगागंपुरागामंतु पंडियहं विपंडियगुगामहंतु ।

घत्ता

दुहिगगादुहगाम. वुहकुलसामगु जिगासासगारहधुरधवलु ।
 विजालच्छ्रीधरु स्वंगायरु अहशिासुकियविहउद्धरणु ॥४॥
 तं पगाइया पगाइया चद्धदंह गामे खेमाही पियसगेह ।
 सुरभिधुगडसड चधविलील परिवारहु पोसगासुद्धसीज ।
 गाररयागाहगांउपत्तिवामि जा वीगाा इव कलथंठिवाणि ।
 सोहरगस्वचेंनगियायदिट्ट सिरि गमहुसीयाजिहवरिट्ट ।
 तहिउ वीरउ वगगाारयगाचारि गां गांत चउन्कूसुखधारि ।
 तं मज्झिपडपुवियसियसुवत्तु लकखगा लखं किउव सगाचत्तु ।
 अतुरियसाहसु महंसकगंहु चाग्गाकगणु संपहहिगेहु ।
 धीरें तिरिगंभारें सायरु गां धरणीधरु गा रविसिसिखुरु ।
 गां सुरतरु पडपोमगुमुहहरु गां जिगाधम्मपयडुथिउवसुवरु ।
 जि गियाजसिपूरियदागिमहिं जोगिचसुहपालउ सुयगासुहि ।
 दिउराजुगामु चउधरिय सुहिं जिगाधम्मधुरंधरुधम्मणिहिं ।
 विगगाागकुमलु वीयउसुपुत्तु जो मुगाइजियोसरधम्मसुत्तु ।
 सुपचीणारायवावारकज्जि गंभीरुजसायरु चहुगुणज्जि ।
 म्माक्क चउधरिय विसुद्धभाड जे गिावमगुरंजइविहिहभाइ ।
 अग्गावि तीयउ रिसिदेवभत्तु गिहभारधुरंधरु कमलवत्तु ।
 चुगनतागामें चउधरियउत्तु जो करइ गिाच्चउवयारुत्तु ।
 पुगु चउथउ गांदगु कुलपयासु अवगमिय सयलविज्जाविलासु ।
 जिगासमयामयरसत्तित्तिचिन् हुट्टागामें चउधरिय उत्तु ।

घत्ता

ए चउभाइय जिगामडराइय दिउराजुगामु गारुवउसुमई ।
 शागाासुहविलमइ कइयगापोसड गियाकुलकमलज्जुपुहई ॥

श्रान्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

गाँदउ जिगावरसासगासारउ	जिगावाणीविक्रमगविचारउ ।
गाँदउ बुहयणासमयपरिद्विय	गाँदउ सज्जगाजेविसविद्विय ।
गाँदउ गारवडपयग्रखतउ	गायमगुन्नोयह दरिस्ततउ ।
संतिवियभउ पुद्विवियभउ	तुद्विवियभउ दुरिउगिसुभउ ।
मेगिउगिगाउ गारयगिगावासहु	जिगाधम्मविपयडउ भववासहु ।
जि मच्छरु मोहविपरिहरियउ	सुहयजेमगिजे गिय मगुधरियउ
हेमचट्टु आयरिउ वरिद्वउ	तहु सीसु वितवतेयगरिद्वउ ।
पोमगाधर गाँदउ मुगिावरु	देवगाँदि तहु मीसु महीवरु ।
एयारह पडिमउ धारतउ	गयरोसमयमोहहगातउ ।
सुहज्जाएँ उवसमुभावतउ	गाँदउ उभलोलु समव्रतउ ।
तहं पासजिणैदहगिहर वगणा	वेपडियगियवसमिह न्गायवगणा ।
गरुवउ जसमलु गुगागगणिहागु	वीयउ लहु वंधउ भव्यजागु ।
सिरि सतिदास गंयत्यजागु	चव्यट्ट सिरि पारसुविगयमागु ।
गाँदउ पुगु द्विवराउ जसाहिउ	पुत्तकजत्तपउ विमाहिउ ।

धृता

रोहियासिपुरिवामि	सयलुन्नोउमहगाँदउ ।
पासजिगाहुपयमरय	गागाथोत्तद्विवद्विउ ।
पुगु गामावलि भगाउ विमारी	दायहु केरी वगणाविसारी
अइरवालु मुपमिद्व विभास्मिउ	सिचंल गौत्तउ सुपगासमासिउ ।
वृद्धागिावि अदिहाणं भेगिाउ	जे गियतेण कुलु सनातिाउ ।
करमचन्दु चउवरिय गुगाावरु	दिवचुदही भज्जहि विमणंहरु ।
तम्म तगूरुड तिगिणविजाया	गा पडवट्टा तिगिणसमाया ।
पटमउ सत्यअन्थरमभावगु	महगाचट्टुगाउद्वयउधरगु ।
तहवणियापेमाहीमारी	पुत्तचउज्जिनुवसगाारी ।
अग्गिमुचाएँमेयमिउ	उज्जन्नमचग्गिओ विजयसिउ ।
अमुवरुपहरनियद्विविरत्तउ	जं असवुवडयागाउ उत्तउ ।
दिउराजुजिगामहदिमद्वउ	गौगााहीनियरमगुविभद्वउ ।
तहउग्गिपियिसुत्ताहजाहन्नाट	उपगाडेवेमुपरिउमलाउ ।
पडिज्जारउणियकुनहंविदीउ	हरियसुगाासु गुगागगाविदीउ ।

घत्ता

तहुभज्जा गुणद्धिमणुज्जा मेरुहाहीपभसिज्जण ।

गवरिगंगणउवहिसुया तहुकसउप्पमदिज्जण ॥ १२ ॥

पुव्वहि अभयदाणु असुदिगिणुं तह सुव अभयचंदु सुगिसिणुं ।

अवरु विगुणारयणहि रयणायकं देवराजसुउ मयलत्तिवायकं ।

रतणपालु गामेपभणुज्जण तहुभूराहीलज्जावि गिज्जण ।

देवराय पुणु वीयवभायव भूमिगामे जगविवशायव ।

तहचोवाहीभजकहिज्जण तोतयहुंसाहेजोद्धुज्जण ।

पढमउ गायराउ तहु कामिणी सूवटहीणामे जणाराविणी ।

वीयउगोल्हवि अवरुपयासिउ भूमि तीयउ पुत्त पयासिउ ।

चाश्रोणामे जणविकत्तोयउ मइणसुंउ चुगणायिथभासउ ।

डुंगरही तहु भामिणिमारो खेनिभिघ गादणजुयहारो ।

सिरियपालु पुणु रायमल्लु पुणु कुवरपालु भासिउ जडिल्लु ।

महगाअवरु चरत्थउ गादणु छुमल्लुवि जोधमु मंदणु ।

फेराही अगणमणुहाउ दरगहमल्लुवि गादणु गहमारउ ।

घत्ता

करमचंद पुणु पत्तु वीयउजोजुविभणुं ।

साहाहियपियउत्त गुरपयरत्त विणुणुणुं ॥ १३ ॥

तहो अतहोअंगो भवतिगिणु जाय विसुसुयपवणंजउअज्जुगोय ।

पहिलारउ रावण तस्सणारि रामाहीजाया अहि वियारि ।

तहुसरीरिसुवचारिउवणणा पुहइमल्लुविपढमुसुवणणा ।

तस्स भज्जवहुणोहालंकिय कुलिचंदही जायावहुवसंक्रिय ।

कित्तिसिधु तहुकुत्तिखउपराणुं गगिर गिरुणवकचणवणणु ।

पुणु जसचंदुव चंदु भणुज्जण लूयाहीपिययगअणुरज्जण ।

तह वितणंधउलक्खणालंकिय मदासिध जो पावहसंक्रिय ।

अवरुवि वीणकंठुवीणावरु पोमाही तहु कामिणीमणुहारु ।

गारसिधुवि तउ सुउविगरिदुउ लच्छिपिल्लुणुपियगहइदुउ ।

पुणु लाडणु रुवेमयरदुउ तहुवोचोकंताविजसदुउ ।

पुणु जोजावीयउ पुत्तुसारु गियरुवजित्तउ जेणमारु ।

दोदाहीकामिणी अगुरजइ ज सुहिमरशौ सगिगमिज्जइ ।
 जोजाअवरु वि रादगुसागउ लखमगुयामें पंडिय हारउ ।
 मझाहीकामिणी तहु रादगु हीरुयामें जगामगाणंदगु ।

घत्ता

अवरु वि रादगुतीयउ, ताल्हूयामें भसिउ ।
 वाल्हवाही मगाहारु वेसुयताहंसमासिउ ।
 पढमउ पोमकंतिदासूसुहो इच्छाही भामिणी दिरणउसुहो ।
 मद्दासुवि तहु पुत्तपियाउउ पुणु दिवदासु वीरमगाहारउ ।
 माधारयाही भज्जमगाओहरु घणमलु रादगु तहुपुणुसुहयरु ।
 जगमलही कामिणी तहुसारी चायमल्लु सुयपोसणायारी ।
 इय दिवराजहं वंसुपयासिउ काराविउ सत्तुजि रससारउ ।
 कोहमोक्षमय माणावियारउ ज अत्रखरुणा किंपि विणणासिउ ।
 गुपसाए विविरुद्ध उभासिउ त मरसइ महु खमउभडारी ।
 वीरजियाहो मुह गिगगयसारी ।
 हेम पोमआयरियवससि वभज्जुणगुणागणियागिहीसैं ।
 मइकमवट्टियवरुणावंगेण्णिणु कववसुवराहु लीहविदेप्पिणु ।
 मत्त अत्थ सोहगुणिविनेविणु अत्यविरुद्धकिट्टिकट्टेविणु ।
 सोहिउ एहु विमणुगाएविणु होउ चिराउ सुकव्वुरसायणु ।
 विरुमरायहु ववगयकालइ लेगुमुणीविसरअंकालइ ।
 धरणि अकमहुचइभविमामें सणिवारे सुयपचामिद्विउस ।
 कित्तियणरकत्तेमुहजोय हउ पुणणउसुविमुत्तहजोय ।

घत्ता

हो वीरजिगंमर जगपरमेसर एत्तिउ लहुमहुद्विज्जइ ।
 जहिं कोकुगामाणु आवायाजाणु सासयपउमहुद्विज्जइ ।

उम महागय मिरि अमरमेगा चरिण चउवग्ग मुकहकहामयरसेयासभरिए स्तिरि पंडिय भणि माणि-
 अत्रिरेडग साधु महगासु चउवग्ग देवराज गामंकिए मिरि अमरसेया..... .. गमणवराणं गाम
 मत्तमउमपग्गिउंयेय मम्मत्ता ।

प्रतिनिधि कार की प्रशस्ति-संग्रह मन्वत्तरंगऽम्भिन श्री नृपतिः विक्रमादित्यगतावद्ः सवत् १५७७

कार्तिक वदि ४ रवि दिने कुरु जंगलदेशे श्री सुवर्गापथसुभस्थाने श्री काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणाकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवास्तत्पट्टे अप्पोनकान्वये गोडनगोत्रे सुवर्गापथिवास्तव्य जिनपूजापुरंदर कृतवान् साधु ब्रह्म तस्य भार्या सीलतोयतरगिणी साध्वी करमचदही तयोः चहुप्रकारदान दाइक साधु वाहु तेन इदं अमरमेन शान्त्रं लिखापितं ज्ञानावरणीयकर्मदायार्थं ।

२. आचारांग सटीक

टीकाकार श्री शीलांकाचायं । भाषा प्राकृत सम्भृत । पत्र संख्या १४३. साइज १२×४ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पांक्त्यां तथा प्रति में ८०—८४ अक्षर । विषय आचार धर्म का वर्णन ।
लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०४ वर्षे मागशीर्षे वदि ३ मृगसोमामृतसिद्धियोगे श्री कुंभमेरुमहादुर्गाधराजशिरोमणौ श्री वृहद्धोखरतरगच्छे श्री श्री श्री जिनकुशलसूरिपट्टानुक्रमे श्री जिनराजसूरिपट्टपूर्वाचलमार्त्तण्डमंडलावतारहार श्री पूज्यगज्य श्री जिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्री जिनचंद्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिन-हर्षसूरिपट्टमौलिमदनश्री जिनशासनशृ गार कालकाल श्री गौतमावतार श्री जिनचंद्रसूरिपट्टावतंश सांमत-विजयमान श्री पूज्य श्री श्री जिन शीलसूरिविजयराज्ये आ० श्रीविवेकरत्नसूरिपुंगवानां शिष्य श्री जयकीर्ति-महोपाध्यायानां शिष्य श्री हर्षकुञ्जगोपाध्याय पं० रत्नशेखरगणि वा ज्ञानकुञ्जरगणि पं० हरिकुञ्जरगणि पं० सत्य-सुंदरगणयादय स्तेषां शिष्याः पं० परमपूज्य श्री नयसमुद्रगणीनां शिष्येण वा गुणलाभगणिना निजपुस्तके स्वशिष्यचरणोदय मुनिसाहाय्याल्लिवितेयं वृत्ति ।

३. आत्मसंदाध काव्य ।

रचयिता कवि रङ्गधू । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या ३२. साइज ६३×४ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २८—३६ अक्षर । विषय—अध्यात्म ।

मंगलाचरण—

जयमगलगारु वीरुभट्टारु भुवणसरणु केवलणयणु ।
लोगोत्तमु गोत्तमु संजयसोत्तमु आराहमि तहं जिणवयणु ॥

अन्तिम पाठ

सम्भत्तु बलेणाणु गुलहे विचरेविचरणु ।
साहिज्जड मोक्खु भविहि भवन्हु दुहहरणु ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १५३४ वर्षे श्रावण सुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंधे कुंदकुंदाचायोम्नाये भट्टारक श्री सिहकीर्त्त

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्ति देवांतर्य शिष्यमंडलाचार्य श्री सिंहानन्दि इद्र आत्मसवोधग्रन्थं लिख्यत कमं शयनिमित्तं । प्रति न० २ । पत्र सख्या ४०. साइज ६३×४३ इञ्च । लिपि सवत् १६०७ ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवन् १६०७ वर्षे अषाढ वृद्धि = शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहराज्ये, रावणशाश्वनाथ चैत्यालये श्री मूलनथे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवान्पट्टे भट्टारक श्री धर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवाइसपूरि श्रावण, गोधा गोत्रे नंगही भीष अर्जुन । सजनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु. पूरु, राड । भतिजा बहुहु जिणदास श्रावण. चाइसपूर निर्मित्यर्थं घटापितः ।

४. आदि पुराण ।

रचयिता महात्रि पुण्ड्रन्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या २१८ । साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पाक्त्या तथा प्रति पाक्ति मे ५०-५६ अक्षर । लिपि सवत् १६६२ । विषय—पुराण ।

मगनाचरण—

सिद्धि ब्रह्मणरंजयु परमणिरंजयु भुवणकमलसरणसरु ।
पखावत्रि विग्वत्रियासयु गिरुवमसासयु रिसहणाहु परमेसरु ।

श्रान्तिम पाठ—

गडभरंहु त्रि मोक्खत्रि शुद्धमंई त्रिविहकम्मवधंहि चुओ ।
फणित्तेयोरकिन्नरपवरंनर पुफ्फत्तं गणंसंथओ ॥

इय महापुराणेति षट्ठिमहापुरिमगुणालंकारे महाकइपुफ्फत्तं त्रिरइए महाभव्यभरहाणुसुणए महाक्खे मगणहररिसहनहभरह णिव्वाणगमण नाम सत्तमीममोपरिच्छेड सन्मत्तो ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवन् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये सा नरसिंह तद्भाया चाड द्वितीया भाड । नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्र-भक्त सा० नरभति भार्या ठडुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द्र । गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोलू भार्या चदणी । तृतीय पुत्र सा० दिडचन्द्र । चतुर्थ पुत्र सा० दुल्ल । सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० तालू भार्या जिणो । तत्पुत्रो द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण नट्टभाया शीवो तत्पुत्र सा० त्रिमल्ल । तील्हा द्वितीय पुत्र सा० भोला तद्भाया शीवो तत्पुत्र सा० जोचा । सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भाया उलो । सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा० तिहुग नट्टभाया जीवो तत्पुत्र सा० उडा सा० नरसिंह पंचमपुत्र तेजू भार्या सोभी । सा० नरसिंह षष्ठम पुत्र सा० वस्तु भार्या कुमरो । सा० नीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० द्वाजू सा० पन्डो । सा० मोषर तृतीय पुत्र सा० लोलू तद्भाया जल्पही तत्पुत्रो द्वौ प्रथम पुत्र सा० दूडा द्वितीय गूजर

भार्या दोदाही । एतेषां मध्ये साह गुणियां पंचमी उद्धरणधीर दीवानदीपक परोपकारकः साह गुणिया तत्पुत्र नरपति केन इदमादिपुराणग्रंथं आत्मकर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं ।

उक्त प्रशस्ति को काटकर निम्न प्रशस्ति फिर से जोड़ी गयी है ।

प्रशस्ति—

श्रीमंतं जिनं नत्वा केवलज्ञानलोचनं ।

लिखामि प्रशस्तिकेय वशसिद्धिप्रदायक ॥ १ ॥

त्रिनवत्यधिके वर्षे मासे श्रावणपंजिके ।

सवतेपोडशाख्याते पंचम्या भौमवासरे । २ ॥

सवत् १६६३ वर्षे श्रावण सुद ५ भौमवासरे नगरे चोमद्रुर्गाख्ये

साहिजिहा दिलीपतेः राज्यं सचक्रोत्सिहे धम्मपूर्व कुर्वति ॥ ३ ॥

कुन्दकुन्दान्वये श्रीमान् वलात्कारगणे शुभे ।

श्रीमूलसंघे भूद्धीमान् मुनिराजप्रभेदुकः ॥ ४ ॥

तत्पट्टे मुनियोः धोरः चंद्रकोत्याभिधोयतिः ।

तत्पट्टे शक्रकोत्याख्या भूपसेवितपकजः ॥ ५ ॥

तत्पट्टे राजते श्राशो नरेशो मुनियोः वशी ।

रुपान्जितदेवेशो भट्टारक गणधिपः ॥ ६ ॥

तदाभनाये च विख्याते श्री खडेलवालान्वये ।

लुहाड्यागोत्रे बुद्धिमान् संघेशो विष्णुनामकः ॥ ७ ॥

तद्वशो रत्नसो नाम प्रियत्रिर्वलवान्वभो ।

तत्पुत्राः पट्ट च विज्ञेया हठशद्याः सघधारकाः ॥ ८ ॥

इदं च गढमल्लश्च पद्मसी च जटुस्तथा ।

पचमः साहिमल्लाख्यः चल्ल नामा च पष्टमः ॥ ९ ॥

इन्द्रः प्रतापदे भार्या द्वितीया च सुजाणदे ।

तेषां पुत्रा च विख्याता पदार्था नान्नाश्रिता ॥ १० ॥

पेमराजो गूजरश्च हेमराजेन्द्रराजको ।

दयाजयापैकल्याणमनो राजांतना भुव ॥ ११ ॥

पेमराजः धारमदेपु धारदे प्रभुपरः ।

रेजे सुमतिदासस्य सुमतादे प्रभोः पिता ॥ १२ ॥

गौतदे गूजरी जज्ञे चंद्रभाणतयोः सुतः ।

वृतीयो हेमराजाख्यो लाडी हमारदेधव ॥ १३ ॥

तत्पुत्रो भुविजज्ञाने नाथू काल् च धीधनौ ।
 लाडी धर्वेद्र गड्याख्यो धणराजपितावर्धौ ॥ १४ ॥
 पचमोऽभयराजाह्वो भाया दुरगादे पतिः ।
 चूहड कुमलाभस्यो तत्पुत्रौ च वभुवतुः ॥ १५ ॥
 अर्जो राजो राडसिंहपिताऽजाडघदेप्रभु ।
 धीनड पिता अखेराजः प्रियाऽहीकारदेधवः ॥ १६ ॥
 छातर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः ।
 कल्याणाहवोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥
 तभ्य प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मन सौख्यदे ।
 जिनवेश्म कृत येन सूप्रदुर्गे मनोरम ॥ १८ ॥
 द्वितीयो गडमल्लाख्य स्त्रिभार्येस्त्रिपुत्रकः ।
 दयालऋषभाह् सुंदरेश्च विराजते ॥ १९ ॥
 तृतीय पद्मसी नामा ड्यागदे पारदे पतिः ।
 टोहरस्यपतिरजे जगरुपपितामहः ॥ २० ॥
 तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भवृकः परः ।
 पचम माहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधीः ॥ २१ ॥
 बल्हू विराजते पष्टः भर्ता बहुरगदे स्त्रियः ।
 मत्रीशः पैमराजस्यः उग्रसिंहमहीपतेः ॥ २२ ॥
 सधेश पैमराजस्य चोग्रसिंह महीपतेः ।
 मत्रीशस्य वर्धो क्राता सुवारदे च नामतः ॥ २३ ॥
 मीतेव गमराजस्य पाटो कुंनोव सुंदारी ।
 दानत कल्याणवल्लीव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥
 तेनेद्रं शाभ्रं लिखाप्य नरेशाय मुनये च वत् ।
 कर्मक्षयार्थं वै चिर नदतुः भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० २, पत्र मस्या २७१, माइज ११×५ इच्छ । प्रति मे तीन प्रतियों के पत्र मिलाये गये हैं ।
 लिपि मसन १५६४ ।

लिपिगार की प्रशस्ति —

सवन् १५६४ वर्षे श्रावण सुदो ३ मंगलवारं राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसधे
 बलात्कारगणे मरम्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र-
 देवास्मन् शिष्यमटलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २५७. साइज १०x४^३ इञ्च । प्रति प्राचीन है । पृष्ठों के बीच २ में खाली जगह छूटी हुई है ।

संवत् १४६१ वर्षे भाद्रवा सुदी ६ बुधवासरे अद्य श्री महयोगिनीपुरं समसूराजावली विगजमानां सुरत्राणा श्री महम्मूद साह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये बलात्कारगणे श्री सरस्वतीगच्छे मूलसंघे भट्टारक श्री रत्नक।तिदेवास्तत्पट्टे श्री गयराजगुरु भंडलाचार्य वादीन्द्र त्रैविद्यापरमपूजार्चनीय भट्टारक श्री प्रभा-
चन्द्रदेवाः तत्पट्टे तपोधन श्री अभयकीर्तिदेवाः । अजिका वाई केमसिरी तस्याः अजिका अध्यात्मशास्त्ररसिरसिका भेदाभेदरत्नत्रयश्राराधकरुचरित्रपवित्रा भव्यजनप्रबोधका दीनदुःखसतापनिवर्त्तिका चतुरासीजीवदयापर आत्म-
हम्यपरिपूर्णा अजिका धर्मसिरि महिलवालान्वये परमगुणसंपूर्णा जीवदयातत्पर कुलमंडगोपा-
कारक धर्मकार्यविषयतत्परा सा० जोल्हा तस्य भ्राता भार्या सहोदरान् । सा० सूडा तस्य भ्राता गुणोपकारक सा मालहा सा० थिरदेवा । सां जोल्हा तस्य भार्या अनेकदानविषयान्तरा गुणसंपूर्णा जैनधर्मविषयतत्परा गुणप्रियंवदा हरो तस्य प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० मतना भ्राता परोपकारको सा० वालिराज तस्य भ्राता जोषदयापरी सा पदम भ्राता अनेकगुणसंपूर्णा विद्याविषय तत्परा सा नूहा एतः जैनधर्मो ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या २१८. साइज ११x४^३ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है प्रतिलिपि संग्रह नहीं देखा है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमहाम्निवप्रभाचन्द्रदेवः तैर्निज-
निजमताखर्वगवर्षवैतारुदसर्वचार्याकादिपरवादि मदांधसिधुर्गसिंहायमानै विहिताचार्यपदस्थापनाय सकल भव्य-
चेतश्चमत्कारि मर्वजीवोपकारिचारुचरित्रचारि यथोक्तनगनमुद्राधारी समस्तचिद्वज्जलमनोहारि श्रीमन्निप्रथ्याचार्यवर्व निःशेषमिथ्यात्वतमस्कांड खडनोच्चंडचंडिमप्रकांडमार्त्तंडमंडलायमान खंडेलवालविशदवंशे श्रीमन्नायकगोत्रे
स० भोजा भार्या भीवणि तत्पुत्रा म० लोहट द्वितीय पुत्र स० गोरा । लोहट भार्या धर्मिणी । तत्पुत्रा खेमा, द्वितीय पुत्र दूदा तृतीय पुत्र सेवा । गोरा भार्या के ल एतेषां मध्ये संघपति लोहटाख्येन निजज्ञानावर्णीय कर्म-
कार्यार्थे इदं पुष्पदंतकविकृत आदिपुगण शास्त्रं दत्तम् ।

संवत् १६६४ वर्षे कार्तिक सुदी ६ शुक्रवारे पूर्वाषाढनक्षत्रे तत्तत्कवारत्के श्री आदिनाथ चैत्याजये महाराजा श्री जगन्नाथजी राज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति-
रत्नाश्रये खंडेलवालान्वये काला गोत्रे साह नान् तद्भार्या नाइकेह तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह चेला तद्भार्या लाडमदे तत्पुत्र चिरंजीव कल्याण द्वितीय चिरंजीव मनरुप तृतीय साह मोहन तद्भार्या महिमादे एतेषां मध्ये साह श्री नान् तद्भार्या नायकदे इदं शास्त्रं अष्टाहिका व्रतोद्यापनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तयेदत्तं ।

भावमित्तमित्ताइयवीरे । जमदुङ्गा वि सुदृ गभीरे ॥
 धम्मदाणा वीरिं घवते । जुज्जवीरणाणाहे सते ।
 मीमध्रराणा तिविट्टे ॥ अरुहवयणु आपणियाउं इट्ट ।
 पुणु सयभु पुरिसोत्तिम गामे । पुरिमपुंडरीयं जयकामे ।
 पुरिमदत्तणामेया कुणा ले । गोधिं देणा गाद गोवल्ले ।
 उगमेणा महमेणा हियत्थे । शिञ्चलमोणमेहि पुणु पत्थे ।
 एवं रायपरिवाडिए गासुणाउं । धम्मु महामुणाणाहहिपिसुणाउ ।
 मेणायाउ धम्मसा आरहं । पच्छिल्लउ वज्जियभवभारहं ॥
 ताह वि पच्छिए वहुवरणाडियए । भरहे काराविपु पद्धडियए ।
 पढेवि सुणेवि आयणाणावि शिम्मले । पयडिज मम्मइए इय महियले ॥
 कम्मक्खयका णु गणादिट्टउ । एवं महापुराणु मड मिट्टउ ।
 एत्थु जिग्गिमणि उणाहिउ । बुद्धिविदुग्गे जं मड माहिउ ॥
 त महु खमउ तिलोय ते मारी । अरुहंगय सुअ देवि भडारी ।
 चउवीस वि महु कल्लसुखयंकर । देतु समाहि वोहि तित्थेकर ॥

घत्ता

दुह् द्विदउ गंदउ मुअणायले गारुवमु करणारसायणु । आयणायउ मणउ ताम जणु, जाम चंदु तारायणु ॥
 विरसउ मेहजालु वसुहागहि । महि पिञ्जउ बहुवराणपयागहि ।
 गंदणु सामणु धीरजिणेसहो । मेणाउ शिगउ गायणिवासंहो ॥
 लगउ गहवगारंभहो सुगवइ । गंदउ पयसुहु गंदउ गारवइ ।
 गंदउ देसु सुद्धिक्खु विर्यमउ । जणुमिच्छत्तु दुचित्त शिसुमउ ॥
 पडिवराणयपरिपाल्लणसुगहो । होउ संति भरहहो गिरिधीरहो ।
 होउ संति गुणाहिंमहल्लहो । तासु जि पुत्तहो सिरिदेवल्लहो ।
 एउ महापुराणु गयणुउज्जले । जं पापडियउ सधरधरायले ॥
 चउ विरदाणुज्जयकयचित्तहो । भरहं परमसवभवसुमित्तहो ।
 भोगल्लहो जयजमवित्थिरहो । होउ सति गिरु गारुवमचरियहो ।
 होउ मंति गाराणवहो गुणावतहो । कुल बलवेच्छेत्तु सामत्थमहत्तहो ।
 शिञ्चमेव पालिय जिगार्धम्मह । होउ संति सोहणु गुण धम्महं ।
 होउ सति सतहो दगइयहो । होउ सतिसुअणहो संतइयहो ।

जिगाययतामशाविचक्रियगच्छहं । होउ संति गामिसहं भव्वहं ॥

यत्ता

एय दिव्वहो कञ्चहा तगाउ फल्लु, ल्हु जिगायाहु पयच्छह ।
 निरि मरहहो अरुहहो जदि गमणु, पुफ्फयतु तदि गच्छह ॥
 मिद्धिविज्जाविगिमसाहाद्वयं । सुद्धापनीनराणमभुण ॥
 निज्जसामधयाणोपम्मच्चित्तं । मच्चजीवणिसंकारणमित्तं ॥
 मच्चमन्निज परिवद्धियमांसे । कंसवपुत्तं कामवगोत्तं ॥
 वमन्तमामडजणियविज्जा म । सुणणपत्राण देवदलणिवाम्भं ॥
 वज्जसन्तपात्रपहणपरिभत्तं । गणवरेणा शियुत्तकलत्तं ॥
 गायवाधीनलायकयरासो । जग्घं वग्घककणपरिहाणां ॥
 धोरे धृत्तीवृत्तिसंघं । द्रुक्खिक्खय दुज्जाससुग्गण ।
 महिमयतायज्जकरपंगुरां । मणिय पेडियप डय मरुणो ॥
 मल्लवन्देहपुग्घरे नियमंतं । मरो अरहंनयस्सु मांपत्तं ।
 भरहमाउज्ज गायणालपं । कच्चवधपयणियजाणपुणं ।
 कोणामवच्छरे आमाटण । दहमहं दिव्वहं चंद मडरुहड ।

यत्ता

निरि जिगायहो भग्घहो वहु गुणाहो कइक्खलतिकणं भासिद्धं ।
 सुपहाणु पुगणु तिमिद्धिद्धिं मि पुग्घिद्धं चरिउ ममाभिउ ॥

इम म्हापुराणे निमिद्धिमहापुग्घिमगुणाककारे महाकइपुप्पयतविरइए महाभच्चभरहाणुमणियाए महाकव्वं वीग्गाह गिउवाणामसा भाविनिमिद्धिपुग्घिम वगणांणं गाम दिउत्तारसय मधीसमत्तो ।

मचंमंरंस्मिन श्री विक्रमादित्यगनाध्याः मंत्रेण १३६१ वषे ज्येष्ठ बुदि ६ गुरुवामरे अवेह श्री योगिनीपुरे ममसुगजायनि शिरोमुकुटमणिकयवचिन नखरग्मौ सुरत्राया श्री म्ममदुमाहि नाम्नि मही विभ्रति स्मिन् स्मिन राज्ये योगिनीपुरस्थिता अध्रानकान्त्रय नभः शशांक मा० महिपाल पुत्रे जिन्नचरणाकमज्जचंचरीकेः मा ग्नेन फेरा मादा मशागजा तृषा एतैः सा० ग्नेन पुत्र गल्हा आजा एतौमा० फेरा पुत्र वीथा हेमराज एतैः धर्म कर्मणि मद्देगमर्षरं ज्ञानावगर्गायकर्मजयाय भव्यजनानां पटनाय उत्तरपुगणा पुस्तकं लिखापितं । लिखित गौगान्त्रय कायन्त्रय पटिन गंथये पुत्र चाहट गजदेवेत्त ।

६. उपदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगण्ण । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १८ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४५-५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । जीर्ण अवस्था में है ।

मंगलाचरणा—

नमिऊणा जिणावरिदं	इदनरिदचिणातल्लोथ गुरु ।
उवएसमालसिणामो	वुच्छामि ' गुरुचएसेण ॥ १ ॥
जगच्छामणिभूओ	उसभोवीरातिलोथ सिरि तिजउ ।
एगोलागाइव्वोए	गोचरकू ' तिहुयणास्स ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

इय धम्मदासगण्णणा	जिणावयणुवएकज्जमालाए ।
मालुव्वविविहकुसुमा	कहियाउ सुसीसवग्गस्स ॥ १ ॥
सुत्तिकरी बुद्धिकरी	कल्लाणाकरी सुमगलकरीय ।
होउ कहगस्सपरिसाए	लहय णिव्वाणाफलदाई- ॥ २ ॥
इत्थ समप्पइ णामो माला	उपएस मगरणंपगयं ।
गाहाणं सव्वगां	पंचसयाचेवचालीसा ॥ ३ ॥
जावइ लवणासमुद्धो	जावइ । नरकत्तमंडिउ मेहा ।
तावइ रईयामाला	जयंयिमिच्चरधावराहो । ॥ ४ ॥
अकखरमात्राहीणं	जंभियपडियं धपायामाणेण ।
तं खमहु मद्यमव्वं	जिणावयणाविणागोर्थावणी ॥ ५ ॥

इति उपदेशमाला प्रकरणं समाप्तं ।

७. उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य श्री वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५-४० अक्षर ।

मंगलाचरणा—

सुरवइतिरीडमणिकिरणावारिधाराहिसित्तपयकमलं ।
वरसयलविमलकेवल पयासियासे सतच्चत्थं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

उव्वसयापयणासुत्ताराणि एयस्स गथं परिमाणं ।
वसुणादि णाणिवद्धं वत्थरियव्वं वियदेहिं ॥ १ ॥

संवत् १६२३ वर्षे पोष वृत्ति २ शुक्लवासे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचंपावतीमध्ये महाराजाधिराज श्री भगमलकृष्णवाहा राज्ञे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंडकुटाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्द-
देवा स्तप्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तप्टे भट्टारक श्री जिणचंद्रदेवा स्तप्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्त-
प्टे भट्टारक श्री शिष्यमंडलाचार्य श्री ललित कर्तिस्तगन्नाये खंडेकवाकान्वये अजमेरा गोत्रे
नामा चापा तद् भार्या सोना तन् पुत्रौ द्वौ प्रथमत्र सवभारधुरंधर जिनगुजापुरंदर साह जाटा द्वितीय साह दासा ।
मा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू मा० खेता भार्या खेतलदे ।
तत्पुत्र ० चि० नेला गोगरुसाह । चैत्र्य भार्या चांद्रादे तत्पुत्र धर्मदास । साह दासा भार्या दौडदे तत्पुत्र चि०
पदारव भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथप्रिया दुत्तिय पुत्र बरहथ भार्या सरदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापि
जीत गाम्निनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी । अजिका श्री मुक्ति वृत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या २६ । सांइज १०३×४१ इञ्च ।

संवत् १६१२ वर्षे भाद्रपदमासे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीनयोगे तत्तकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज
श्री रामचन्द्रगज्यप्रवत्तेनाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंडकुटा-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवान्त्ये भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा । तत्प्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवा स्तप्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तन शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवा तन् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवा
नदात्राये खण्डेकवाकान्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीजा तत्पुत्रान्त्रयः प्रथम सा० गोइद द्वितीय
मा० रामा तृतीय मा० गोकुल । मा० गोइद भार्या सोढी तत्पुत्राश्चत्वारः । प्रथम सा० पासा दु० सा० आसा
दु० सा० आसा चतुर्थ सा० पचाइण । मा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रान्त्रयः । प्रथम सा० कवग भार्या
स्वकर्णी द्वि० विगेह दु० चिरंजी हरा । सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या शिवादे
द्वि० वाहा तृतीय सा० आसा भार्या सुनागदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृंगारदे । द्वि० चि० हेमा ।
चतुर्थ मा० पचाइण भार्या पोलीर तत्पुत्रौ द्वौ । प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड । द्वि० सा० भार्या चांई
तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० बोडिय । द्वि० सा० वाला मा० बोडिय भार्या बालइदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम माह सुरत्राण
द्वि० माह माधु । सुरत्राण भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरत्राणदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल
द्वि० मा० सागु भार्या नाडिवदे । द्वि० मा० वाला भार्या बहुरंगदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० नारंग द्वि० माधो ।
तृतीय मा० गोकुल भार्ये द्वे प्रथम उरी द्वि० नोलाडे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुंभा द्वि० सहमा । प्रथम सा०
कुंभा भार्या कुंभनदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चित्राण द्वि० चि० पडमा । द्वि० सा० सहमल भार्या मिगारदे एतेषां
मध्ये माह बोडिय भार्या बालइदे इदं शास्त्रं कल्याणकत्रनउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय वृत्तं ।

८. करकण्डवृत्ति ।

रचयिता श्री मुनि कन्कासर । भाषा अपभ्रंश । पत्र मत्या ६२ । सांइज १०×४ इञ्च । पदेक
शुद्ध पर ११ पक्तियां तथा प्रति पत्ति ने ४०-४६ अक्षर । प्रति न्यष्ट तत्रा सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्ड
का जीवन ।

प्रारम्भिक पाठ—

मयाभारविद्यासहो सिवपुरवासहो

परमपयलीशाहो विलयविहीशाहो

पावतिमिगहरदिगायहो ।

सगमिचरगासिरि जिगावगहो ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

धत्ता

शियारूउ लहेविणु सो शियाइं

सव्वत्थमिद्धिसंपतुरवणे,

चिरुदियवरं सुप्पराणाएणा,

चइरायइं हुयइं दियं वरेणा,

बुह मंगल एवहो सीसएणा

आसइयगायरि संपत्ताएणा,

अत्तइ तर्हि मइ चरिउ एहु,

मइं सत्थविहीणाइं भयिउं किंपिं,

परकज्जकरणा उज्जुय मणाहं,

करजोडिवि मग्गिउ इउ करतु,

फेडे वि ककमशिवधगाइं ।

कणायामरमुशिवरवयहलइ ॥

चंदारिसिगोत्ते विमल एणा ।

सुपसिद्धयाभकणायामरेणा ।

उप्पाइय ज्ञाणमहातोसएणा ।

जिगाचरणासरोरुह भत्तएणा ।

धर पयडिउ भवियणा विगाउणेहु ।

सोहेविणु पयडउ विवुहु तपि ।

अप्पाणाउं पयडिउ सज्जणाहं ।

महुदीशाहो ते सयलुवि खमंतु ।

धत्ता

जो पढइ सुयाइं मणे चित्तवइ

सो गारु भुवणाहो मेडयाउ

जो गात्रजोव्वणादिवमर्हि चडियउ

कणायवरणा अइमणारहगतउ

धन्ममाहातरुसिचियअप्पणा

जो अरिशाहगाइ दुस्सहलीलइ

चंधवइट्टमित्तजणारोहणु

दीणाणाहहो जो दुहभंजणु

जो वोल्लतउ शिवसहखोहई

जो गुरु संगरे अइसय धीरउ

जो चामीयरकंकणावरिसणु

जोजिणापाय सरोयहंमहुयरु

जो कमिणिहिं मणाम्मिणाम्मुच्चइ

जयावए पवडइ ! उ चरिउ ।

लहइ सकित्तणु गुणाभरिउ ॥

अमर विभाणाहो ण सुरूपडियउ ।

जसुविजवालु णागहिउ रत्तउ ।

जो विजवालहो णां मुहदप्पणा ।

जसुमणुरंजिउ कुजरकीलइं ।

शिवभूवालहो जो मणा मोहणु ।

करणाणारिंदहो आसयरजणु ।

जो वत्रहारइ यारवइमोहइ ।

जो जण पयहुणा कायर हीरउ ।

जो वंदीयणा सहलउ करिसणु ।

जो सव्वगु विणायाणह मुदरु, ।

जोजणा सीलतरंगिणि वुलइ ।

१० कर्मकाण्ड मटीक ।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचन्द्रोचार्य । टीकाकार श्री सुमतिकीर्तिसूरि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या २५ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५४ अक्षर । विषय-सिद्धान्त । लिपि संवत् १६२२ ।

ग्रन्थ समाप्ति—

इति श्री सिद्धांतज्ञानचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्रविरचिते कर्मकाण्डस्य टीका समाप्ता ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगज्यात् संवत् १६२२ वर्षे भाद्रपद सुदी १५ दिने 'आगरा-न मनगरं पानिमाह श्री मुद्गल अक्षरजलाक्षदीन राज्ये श्रीमत्काण्डसंघे माथुरगच्छे पुष्करान्वये भट्टारक श्री मनयकीर्तिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्रीवादीभकुंभस्थलविदारणैकसिंह श्रीगुणभद्रदेवास्तपट्टे भट्टारकश्रीसर्व्वगुणगरिष्ठ भानुकीर्तिदेवास्तदास्नाये अमोतकान्वये चांसलगोत्रे साधु श्री गिणा तद्भार्या खिमाई तत्पुत्रश्चत्वारः । प्रथम पुत्र चाऊ ताय भार्ये द्वे प्रथम भार्या तत्पुत्र चिरजीव रिखभदास । द्वितीय भार्या मांड्यादे । साह ग्यान द्वितीय पुत्र राऊ तृतीय पुत्र पदार्थ चतुर्थं पुत्र देऊ एतेषां मध्ये साधु श्री रिखभदासेन पुष्पांजलित्रतोद्याप-नार्थ एनद् ग्रंथं लिखापित ।

११ क्रियाकलाप ।

रचयिता अज्ञान भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ८६ साइज ६॥×३॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । मूल पाठ प्राकृत में है । संस्कृत में उसकी टीका है । ग्रन्थ ३६ दंडकों में विभक्त है । विषय-क्रियाकाण्ड ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवासरे श्री योगिनीपुरे सुरत्राण श्रीमन्महंसदसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने काण्डासंघे त्रयोदशविधवादित्रभट्टारकनयसेन तस्य शिष्यः भट्टारक दुर्लभसेनः तस्याध्ययनाय पुरतः मित्र प्रतिक्र . वृत्ते लिखपायित्वा दरवार चैत्यालयसमीपस्थित अमोतकान्वय परमश्रावक सागिया इति पूर्वपुरुषसंज्ञकन पाटणा-वास्तव्य सा० पाणा भार्या हलो अनयो पुत्रौ दिडप सा० वृना नामानो । सा० वृना भार्या वीसो अनयोः पुत्रेण दरवारचैत्यालये पंचम्युद्यापनाय सकलसंघमाकार्य देवशास्त्रगुण्यामहामहं विधाय संघपूजाचस्त्राहारादिभिः वृता शास्त्रदानप्रस्तावे पंचपुस्तकानिदत्तानि सा० ह्याञ्च तस्य भार्या माल्हो प्रियतमेन..... ऽपुत्रेण भीमनारना पंचम्युद्यापनेकृतं देवगुरुणां प्रसादात् शतायुभूयात् पंडित गंधर्वपुत्रेण चाहडदेवेन लिखितमिति शुभां ।

१२ क्रियाकलाप स्तुति ।

रचयिता आचार्य समन्त भद्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या २०७ । साइज १०॥×४॥ इञ्च

प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३३-३६ अक्षर । टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र । प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है ।

मघत १५७७ वर्षे देशाश्व बुदी ४ शुक्रवासरं भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-
देवाभ्यत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाभ्यत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये त्वटकाहपुरे राव श्री राव
नरवन्देवराज्ये वधेरवालान्वये कोटवागोत्रे मा० गणा तद भार्या बालू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू
भार्या मालवत्रनमयमगुणादिभ्युक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह बौद्धि माह खेता नामानस्त्रयः । भोलू भार्या मदना
बौद्धि भार्या राजी प्रथमा न्यामंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा, लाखा, । लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र
वधराम । जीणा भार्या डेड तत्पुत्र नरमिह । खेता भार्या करमैती गैतैः शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय मुनि माघत
दिन वत्त ।

१३ चन्द्रप्रभवचरित्र ।

रचयिता महारवि यशःकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२० । साइज १०x४ ॥ डब्ब । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३०-३४ अक्षर । विषय-चरित्र ।

मगलाचरणा-

नमिऊगा विमलनेवत्तच्छ्री मव्वंगदियाणापरिरंभं ।

लोयालोयपयासि च्चदपमामियं सिन्मा ॥ १ ॥

तिक्कालवधरभार्या पंचवि परमेद्विष ति मुद्धीहं ।

तह नमिऊगा भयिम्म च्चदपह मामिगो चरिय ॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति-

धत्ता

इय मयलवि मुग्गवड

पचमकल्ल गातो सुग्ग

जे सुदधु असुद्धउ गथचारु

न जिगावागां समउ मव्वु

जे परममर जाणाहि अपारु

मुगाजंगुपेणिय मेत्तिवि कमाउ

मुज्जग्गमहं उमत्तगामु

मिद्धउ तहो गासंगु भव्ववधु

नहं मुउ जिद्धउ वहं वुभव्वु

तहं तहं ज्ञायउ म्मिरिउमग्गिहं

जियासथुइ परभत्तिभेयभरसत्ता ।

यिहागाहो करिवि ठाणिसपत्ता ॥

ज सारु असारउ बहुपयाक ।

महं कविगहिंलहो विजमउ अगव्वु ।

ते मोहवि मोहवि कुणाहुं सारु ।

सोहनु मुग्गि व डहं मुहपमाउ ।

तहिं छ्छासुउहउ दीयागामु ।

जियाधम्मं भाणि ज दिग्गु खधु ।

जि धम्मकजि विवकल्लिउ च्चव्वु ।

कत्तिकालं करिदहं हगागासीहु ।

तहो सुउ सजायउ सिद्धपालु, जिगापुज्जदाणु गुणागारमालु ।
तहो उवरोहे इह कियउ गंधु, हउंण मुग्गणि किं पिविसत्थ गंधु ।

घत्ता

जा चेद विवायर सव्वविसायर जा कुल पव्वय भू वलउ ।
ता एहु पव्वउ हियइं चहुउ सरसइं देविहिं मुहिं तिलउ ।

इय सिरिचंदप्पह महाकइजसकित्तिविरइए महाभव्वसिद्धपालमवणाभूमणो चंदप्पह सामि सिव्वाणा-
गमणो णाम एयागहमो सधी पण्ण्डित्तो सम्मतो ।

संवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ पञ्चव्ययौ मध्ये प्रमाथिनाम संवत्सरे दक्षणाथने भामनौ वपरितौ
महामांगल्य श्रावणागामे शुक्लपक्षे दशम्यातिथौ शनिवारे घटी ८ परतपे का ११ दशम्यातिथौ मूलनक्षत्रे घटी ३६
विकुंभनामयोगे घटी ६ परतप्रीत्यनामयोगे मध्याह्न वेलायां वंदावतीस्थानात् हाडाचौहायान्वये राव श्री सूर्यमल
तत्पुत्र रावश्री सुगभीतागा गज्यप्रवर्तते जवंदीये मरुवतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तद्गच्छे तदाम्नाये
तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक
श्री प्रभाचन्द्रदेवा तन् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये जीवदयाजनपालणा साह श्री
चोहीथा न्याती गंगवाल साह चोहिथ भार्या डोडी तयोपुत्र प्रथम जिनदास भार्या नेकी द्वितीय भार्या लाडी
तृतीय भार्या गुजरी । द्वितीय साह भेला भार्या लहीकन तयोः पुत्रः प्रथम वरा द्वितीय भोज्या । गंगपाल साह
चोहिथ तस्य गृहे भार्या गेडी तयोः पुत्रः साह जिनदाम भार्या गुजरी तयोः पुत्र प्रथम नानीगा भार्या नारगडे
द्वितीय जालप कर्मचार्याः जिलापिते बहु गुजरी ।

प्रति नं० २ । पुत्र मख्या ११७ । साइज १०x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति
मे ३२-३६-अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

संवत् १५८३ वर्षे आषाढ सुदी ३ बुधवासरे पुष्य नक्षत्रे गंगा श्री संग्रामराज्ये चपावतीनगरे रावश्री
रामचंद्रप्रतापे श्री मूलसंघे न्यामिनेये बलात्कारगणे मरुवतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि-
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत्
शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदुपदेशात् खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सा० काधिल भार्या कवलदे तत्पुत्रा
सा० गुजर द्वितीय सा० राधा तृतीय सा० चान्ना । साह राधा भार्या खणादे तत्पुत्रा चत्वारः प्रथम साह
रामदास तद्भार्या रावणादे द्वि० साह श्री भार्या इरिपमद्रे तत्पुत्रौ द्वौ सा० पासा भार्या पाटमदे द्वितीय गुजरि
तत्पुत्र हरराज सा० आभा भार्या छहकारदे । तृतीय साह दासा तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रौ प्रथम भवसी
तद्भार्या भावलदे तत्पुत्रौ नानू फाडू । द्वितीय अर्मसी तद्भार्या धार्गदे । तृतीय सा० घाटम तद्भार्या घाटमदे
तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० देवसी तद्भार्या देवलदे ।

१४ जन्मस्वामि चरित्र ।

रचयिता श्री वीर । भाषा छपभ्रम । पत्र संख्या ७६ । माहल ११×४॥ इच्छ प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३६-३६ अक्षर । ६२ वां पृष्ठ नहीं है । रचना संवत् १०७६ लिपि संवत् १५१६ । विषय—अग्निम केवली श्री जन्म स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन ।

मगनीचरणा—

विजयतु वीरचरणागि चंपि मन्दिरमि थरहरिए ।

रुनसु छलतनो ए सुतरगि जगंत विदु छंकारा ॥ १ ॥

ग्रन्थ ममाग्नि

इय जन्मस्वामिचारिए मिगारवीरे महाकव्ये महाकडदेवयत्तसुय वीर विरइय चारहअणुपेहाड भावणाए विन्चुवास्स मन्वद मिडिगमग नाम पयारममोमंधी परिछेउ मम्मतो ।

प्रशस्ति—

वीरन्नातामयचउरुके

गिडाराणा उववराणे

विरुक्रमशिवकालाउ

माहम्मि सुद्वपक्खे

मुगियं ध्यायरियपर

धहुलत्थपमथपय

इत्थंविडिगेमेहवरापट्टणे

तेयावि गहाइइसा

वहुगयकज्जवम्मत्थ

वीरम्म चरियकरणे

जम्म कयदेवयत्तो

मुहमीलमुद्ववमो

जम्मय पसगावयगा

साहल्ल लपगा ऋ

जाया जत्तम गिगिट्ठा

लीणावड निवहेया

पटमकज्जत गरुडो

त्रिगायगुगमगिगिहागो

मो जयउरुयवीरो,

पाहागामरं भवगा

मत्तरिजुत्त जिगंधवीरस्स ।

विक्कमकालम्स उप्पत्ती ॥ १ ॥

इहात्तरदममए सु वरिसाणा ।

दमस्सी दिवसम्मी मत्तम्मि ॥ २ ॥

पाराण वीरेणा वीरशिविडुं ।

पवरमिणा चरिय मुद्धरियं ॥ ३ ॥

वद्धभाराजिया पहिमा ।

वीरणा पयट्टिया पवरा ॥ ४ ॥

कामगोदेहाविहत्तममयस्स ।

इक्को संवदमरो जगो ॥ ५ ॥

जगाणोमच्चरियलद्धमाहप्पो ।

जायाणां सिगिसंतुआभगिया ॥ ६ ॥

लहुगो सुमइममहोयरात्तिगिया ।

जसइगामेत्तिविखाया ॥ ७ ॥

जियाचइ पोमावड पुणाचीया ।

पच्छिमभज्जा जयादेवी ॥ ८ ॥

स्वत्ताणा कयत्तविडविपारो हो ।

तणाउ तह गोमिचदोनि ॥ ९ ॥

वीरजिगंधस्स करिय जेया ।

पियन्हे सेगा मेहवणे ॥ १० ॥

अह जयउ जसगिावासो जसगाउ पंडित्ति विकत्वार ।
वीरजिगाालयसरिसं चरियमि गां कारिय जेण ॥ ११ ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

मन्ये वयं पुण्यपुरीच भाति सांडु डुगोति प्रकटी चभूव ।
प्रोत्तुं गतन्मंडनचैत्यगोदाः सोपानवदृश्यति नाकलोके ॥ १ ॥
पुरस्सरा रामजलत्रकूपा हर्म्याणि तत्रास्ति अतीवरम्याः ।
दृश्यंति लोकार्धनपुण्यभाजा ददाति दानस्य विशालशाला ॥ २ ॥
श्रीविक्रमाकर्केन गते शताब्दे पडक पंचक सुमागशीर्षे ।
त्रयोदशीया तिथि सर्वशुद्धा श्री जन्तु स्वामीति च पुस्तकोऽयं ॥ ३ ॥

१५. जिनदत्त चरित्र ।

रचयिता पंडित लालू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १५७ । साइज १०x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना सवत् १२७५ लिपि संवत् १६११ ।

मगजाचरण—

सप्यसरकजहंसहो हियकजहंसहो—
कलहंसहो नेयंसवहा ।
भगामि भुअगाकजहंसहो रयकजहंसहो—
गावेवि जिगाहो जिगायत्ताकहा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जिगायत्तचरिति धम्मत्यकाममोक्खवराणाणु भावसुपवित्ति सगुयात्तिरिसाहुलसुवलक्खणा विरइए
भव्वसिरि सिरिहरस्सयांमिक्किए जिगायत्तजइवरस्स सग्गिगमणां गांम एयारहमो परिच्छेत्त सम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

इह होंतउ आसिविसालवुद्धि—
पुज्जिय जिगावरु तिरयणा विसुद्धि ।
जायसहो वंसउ वयरणासिधु गुणागुवा मलमाणिककसिधु ।
जायव गारणाहहो कोसवालु जसरसमुद्धिय दिचक्कवालु ।
जसवालु तासु सुउ मइपगालु लाहडु लडहउ लहक्खवालु ।
जया जाणिय जिगामइ दुवइतासु ताह गय सत्तापमुक्कतासु ।
पढमउ अल्लहणु सुहि सरयसूरु, परिवारगारहपरमासपूरु ॥

पचयणत्रयसामय पाशापोद्दु,	अवमयमहामहदलियदुद्दु ।
जियागहवराचचा प्यसामयत्तु,	अहियाणियगिहि जविरणायवित्त ।
मेच्छराछत्तछेयराछइल्लु	गंभोरपरमणिमयमइल्लु ।
जियापरिभावगावच्छल्लमल्लु	सम्मरा हरसामजमहल्लु ॥
किहिल्लवेल्लिगिल्लुद्वरगिल्लु,	भायरसुवल्लवखणणेह गिल्लु ।
परिवारभारवद्वग्गाधीरु,	जियागन्धवारिपावणासरीरु ॥
पविहियतियालवेदयाविसुद्धि,	सुवमत्थभावभावगाअमुद्ध ।
बहुसेवयणारसिग्घट्टपाय,	वंदीगाहदीगाहदियाचाय ॥
भोयगिहियपोसियसूरिवंदु,	सउलामरवहकयचंदुवदु ।

घत्ता

तहो सोहगाहो रसालहो भोयपराजहो—
 कलकगिहच्छसहोयर ।
 च्छहविमहामड सोहगारिचवल सोहण—
 गुणारोहगाविहियायर ॥ १ ॥

गाहुल्लु साहुल्लु सोहगामइल्लु, तह रयणु मयणु संतणु जिच्छइल्लु ।
 च्छहमहिभायर अल्लगाहोभत्त, च्छहमविहो माणासत्तचित्त ।
 च्छहमवितहो पयपयरुहदुरेह, च्छहमयणोवयवामदेह ।
 साहु लहु सुपियपिययममणुज्ज, गामे जयताकयणिल्लयकज्ज ।
 ताह जिगादणु लक्खणु सजक्खु, लक्खया लक्खिल्ल सयदल्लदल्लक्खु ।
 विल्लियविल्लामरत्तगल्लियगच्च, ते तिहुअणु गरि गिावसंत्तिसच्च ।
 सो तिहुयणुगिरिभग्गव जनेया, धित्तउ वलेया मिच्छहि वेणा ।
 लक्खणु सच्चाउसमाणुसार, विच्छोयच विहिया जियायरार ।
 सोइत्थ तत्थहिडत्तु पत्त, पुरे विल्लरासि लक्खणु सुपत्त ।
 जोत्तयाहो समउ सो करइ पणाउ, विग्दा गादणु सम्माणवणाउ ।
 दिगिा दिगिा त अइसय बुच्छिजंतु, तहि जिसणेहु गिाभरुमहंतु ।
 असराजवारिपोसियसरीरु, भवप पवुट्टए मेहुणोरु ।
 तइ गाहाउ गिाभरु तुसारु, जं एयारहमए मासिफारु ।
 जं जिट्टइ गिट्टरु तवइ सूरु, खर कर पयंडवंहडपूरु ।
 चिरु वट्टइ भोकइ चित्त त जि, सुवयाहो सुवणेसहु णेहुजंजि ।

घत्ता

जह अहिगावधयादंसगतो तावविहसगतो चढ कवचगहुल्लियइ ।
 सिरिहरु सिरिसाहागउ रयपरिहागउ लक्खणा गेह्वरसुह्लियइ ॥२॥
 गात्रेक्क दिगाम्मि महागुभाउ, आभत्थिविज्जल्लहोधत्थपाउ ।
 पभण्णुउ भो वधव अइपचित्, विरइव्वउ जिगायत्तहो चरित् ।
 तहो वयणे मइ विरइउ सवोज्ज, वणिगायाहो ववसायउ मगोज्ज ।
 पद्धडिया वंधे प्रायडत्थु, अड्ढि जाण्णज्जसु सुप्पसत्थु ।
 सयलइ पद्धेडियइ एइहंति, सत्तरिणात्रडु दसयडुणिया संति ।
 एयइ गथइ सहसइ वयारि, परिमाणु मुण्णिहु अक्खर वियारि ।
 हउ मुक्खु गारक्खरु खन्तियलज्ज, गा वि याणाभिहे याहेउकज्ज ।
 पय वंधणि वधुणा मुगाम्मिक्किपि, मइ विरइउ संपइ चरिउ तंपि ।
 परजिगा गाहडो भत्तीरुएया, अवियल्लचलककजाजाःएया ।
 इहु जइविच्छंदवइ हीणतोवि, महु मुक्खहु दोसु मगहउ कोवि ।
 कर्मउ लिविपयडिवि रोइ जोउ, अम्भत्थितुसिमइ णिहिलुजोउ ।
 पवयणा गुणागरु अउ गलियपाउ, चउवरायासघु जगि बुद्धिजाउ ।
 अहिवंदउ जिगायाहह पयाइ, सासर सरणि संपय गयाइ ।
 जिगा समइ अगव्वह भन्वयाह, दुक्खक्खउ होउजि सन्वयाह ।
 धिय धम्महो कल्लिमलणासणासु, कल्लाणु हं उ जिगा सासणासु ।
 परिधविय चराचर जियहदेहु, असगल वारि बुद्धउ सुमेहु ।
 गिांसेस सेस सपत्ति होउ, गिास्वहउ सुहु अणु हवउ लोउ ।
 परि पसरउ मंगलुमोयपूरु, धरि धरि वज्जउ आयांद तूरु ।
 गडुह्लिय मयाडुवइणाविट्टु, गारुचउ गिाह्लिय दुहायाकंदु ।
 चिरु अहिगांदउ विरदा तण्णउ, सिरिहरु सिरि विसइणि गव्वभूउ ।
 कुम गिरि गिरि वइ गहचंदसूर सुरसरि सिरि सायरवारिपूर ।
 जिगाधम्म पयट्टइ धरणिजाम, परिवज्जउ सरि हरवसुंताव ।
 इण्हं चरित्तु जो कोवि भव्वु, परिपढइ पढावइ गलिय गव्वु ।
 जो जिहइ लिहावइ परसु मृगाइ, संभावइ, दावइ, कहइ सुणाइ ।
 जो दंइ दिवावइ मुण्णिवराह, जह तह सम्मइ पंडियपराह ।
 सो चक्क वट्टिपउ अइकरिवि, पालिवि सक्कत्तणि लन्धि धरिवि ।

श्रृगुहृ जिवि संमारिय मुहाड, सञ्चड दिञ्चड पयलिय दुहाड ।
उञ्चहि अहिन मुह रम पयासि, पत्यड गत्यड गिाञ्चुड गिावासि ।

घत्ता

वाग्दमय सन्नय पचोयत्तंगं, विम्बस कानि विहत्ताड ।
पढम पाक्किर गवि वारडञ्चड्ढि महागड, पृसमालें मम्मत्तड ॥ ३ ॥
जो भुवगाामरगा स्वमसगासाभिगिा, सामि मालसुविमाल ।
मिगिहृरहोतेमहंता श्ररहंतादि तु कुल्लाग ॥ १ ॥
जे मुपसिड सुददिरिडि था बुद्धिञ्चणुद्वारा ।
धर वीरधम्मघत्थाने विट्ठासद्धिनहोदितु ॥ २ ॥
जमरममेडकोंवडदंढउद्धडकंडउपंडया ।
गिाञ्चड गुगाऊरडातिमूरिदितुम्मसुहं ॥ ३ ॥
गिाम्मारमारमंमारसायंगंनगणतागगातरंढा ।
ते तम्म सहियमोहाचोहर्डीदितुउज्झाया ॥ ४ ॥
गाहृदुदुदुमयकट्टभट्टायातिट्टगंठिगिाट्टवगा ।
गिाट्टापट्टिद्वियंगा ते साट्टु दितु भगलथं ॥ ५ ॥
उद्धर्मिदियरुम्महियसम्ममामयमयगिाग्गाहृरिगाराउसिवसग्गादावतु ।
मंसागडडगिाविडविडवियडतोटासपावड ।
मम्महंसगागागिागिा मम्मच्चरियविसालु ।
नगंयगात्तड सिरिहरहो अहिरकरउड चिरुक्कालु ॥ ६ ॥
इति पडित जालु धिरचित जिनदत्ताशाखं समाप्तं ।

मयन १६११ चैत्र बुद्धि ११ सोमवागरे श्रवणानक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्नगडमहादुर्गे श्री नेमीश्वर
चेत्यालये राज श्री भागमल राज्य प्रवर्तमाने श्रीमूलसंधे चलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंदाभाये श्री कुन्दकुन्दा-
चायान्वयेशिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाभाये खंडेलवालान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत
शिष्य ब्रह्म वेगो इव शास्त्रं भीतीनाय पठवार्य दत्तं ।

१६. धनकुमारचरित्र ।

रचिता श्री पं० रठयु । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५१. साइज ६।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
८ पंक्तियां नया प्रत्येक पंक्ति में २८-३२ अक्षर । प्रति अक्षर ६ । लिपि संवत् १६३६, ग्रन्थ कत्ता ने प्रारम्भ
श्रीर अन्न दोनो म्यान पर प्रशस्ति लिपी है ।

मंगलाचरण—

पणविवि सिरिवीरहो णाणसीररहो कमजुउ धणकुमारचरिउ ।
अक्खामि सुपासधउ गुणगणरिद्धउ धम्मरसायणरसभरिउ ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

× × × × ×
तहं सुधम्मपमुहाइ जईसर, पणाविवि भत्तिएवय भारधर ।
ताहं अणुक्कमि सूरि पहाणउ, सहसर्कित्त तववयगुणाट्ठाणउ ।
नास पट्टिणि रुद्धगुणाभायण, जो भाविउ मणियाणारसायण ।
सिरि गुणकित्ति विवुहचित्तमणि, पणाविवि तिरयण सुद्धिए वहुगुणि

घत्ता

इय त्रिणमुणिवरविट्ठु माइविमग्गवयकाएं ।
पुणु पयडमि जिणसथु गुरगुणकित्ति पसाएं ॥ १ ॥
अणहिदिणिजणगुणसुविसालें, विहसि विजंपिउ बुद्धि विसालें ।
भोसइत्थ रयणरयणायर, मित्थामयतमणाणदिवायर ।
इधू पंडिय सुणिणिम्मत्थर, तुहयण जणमण रंजण कोत्थर ।
जहं पइं पास जिणंदह केरउ, चरिउ रइउ वहुसुखजणेरउ ।
पुणु वलहइ पुराणु सुहंकरु, रोमि जिणद चरिउ विरयउ वरु ।
माट्टलसाहु णिमिनें सुन्दरु, जह पयं वहमाण भासिउ वरु ।
तहिं भिरि धणकुमार पुण्णहफलु, महुवयणंपयडहिपणुगयमलु ।
ता गुरु भणियालावसु रोप्पिणु, रयधू वहु जंपइ पणवेप्पिणु ।

घत्ता

तुम्हहं आएसैं कवु विसेसैं करमिण संसउ धरमि मणि ।
परकारण वट्टइ चित्तिपवट्टइ सोयोरुणकुत्रिणियमिजिणि ॥ २ ॥
तं सुणि विभणइ गुणकित्त एम, भो पंडिय तुहणउं मुणहिं केम ।
गोवागिरि णियडपएसि धम्म, पुरुपाल संडुणोमैणमणु ।
इक्खाइ वंसि तहिं चिरुवणेंदु, अगणिय जायापणवियजिणेंदु ।
जसुवालु जसायरु गुणमहतु, करमू पटवारि जणि महंतु ।
तहु णंदणु णिरुत्तमगुणणिवसु, अहणिसु जो अरुचइ जिणवरासु ।
चउविहसघविणयाणुरत्तु, सिरि पुनउ साहु सघम्मिबत्तु ।

तद् भवजा सील गुणस्य त्वाणि, मन्त्रहियणाइ तिथयत्राणि ।
 तिहुवण सिरि मुणियण पयत्रिणीय, सिरि हरसिरिजिमराहवहु नीय ।
 एयह सजणिया चारिपुत्त, लक्खण लक्खंकय विणयजुत्त ।
 शियकृत्तमयकृ पुणु पडसु ताह, मुत्तणुजमाहु पयडउ जणाह ।
 वीयउ पुणु कुहयणजणनिव सु, सिरि सुले णामे जसपयासु ।
 तडयउ रांदणु मयणावये रु, सिरि कामराजु णामेण साहु ।
 चउअउ रांदणु आमणियावासु, आसलु णामे सो कुल पयासु ।
 एयहि जो पदसउ गुणगरिट्ट, सिगि मुत्तणुणामे साहु सिद्धु ।

घत्ता

आरउणपुगवरे सुहलत्थीघरे, तहि पहुवइरिणिकंदणु ।
 तोमर कुलमंडणु अरिसिरिखंडणु, सिरि गणस विवणांदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

रांदउ जिणसामणु विरियविणायुणु सुहमयसासणु गुणभंगिउ ।
 अउ सत्थसमिषउ वणणहिमुषउ रांदउ महियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥
 रांदउ महिउड णापपवीणु, रांदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।
 रांदउ सुधंसु निवमोखयारि, रांदहु जइवरवैयभारधारि ।
 इक्खायवसमडणसंयकु, मिरि पुणुणपालसुउ विंगयसकु ।
 रांदउ मुत्तणु णामेण माहु, शिउरादिवल्लहु वीहवाहु ।
 महुहोउजउ विमलसमाहिबोहि, जाहुगगड गमणहु पाहणारोहि ।
 शियकाले वरसउ मेहमाल, गिहगिहि ससुहु मगत वमाल ।
 उहु अथसमिद्धउ चरिउ णहु, परिपुणेणकरि-विसवेयगेहु ।
 पडिणुणससापेउ पात्रणासु, मुत्तणुहुहाथवर्चाडयपयासु ।
 तेण जिणिय मीमिचंडाविऊण, पुणु पेडिन पुज्जिउ पेणमिऊण ॥
 लेहाविविउहुपुंथेयजितेण, महोविधारिउ पुणुउ सुवेण ।

घत्ता

गुणगुणिहु पसापं पयडियगण सिद्धेउ कवर सायणु ।
 सोवाउ जंतउ अय सयंतउ, वट्टउ सुहमयभायणु ॥ ४ ॥

जिगगुणगणराएं वज्जियमाणं,
तद्दु वंसपसिद्ध उ सुहजिणरिद्ध उ,
धणकणजणपुण्ण उ सुहणिवासु,
तहि वणिवरु जिणपयचंचरो उ,
करमू पटवारि उ गुणगरिट्ट ,
तद्दु भज्जकारुवा रुव सार,
तुं नदणाह णवणं णवपयत्थ,
उद्धरणु पदमु उद्धरियदीणु,
तीय उ खम्ह उ खमगुण महंतु.
मलमुक्क मल्लि पचम उवुत्त ,
रयणत्तय भत्त उ रयणु माहु,
अट्टम उ विरराजु गुणोहट्टाणु,
एयह जिमज्जि चउथ उ जिवुत्त ,

चरिउर्राविउ एहुवरु ।
पयडामि जणमणसुक्खकरु ॥ ६ ॥
पुरुपालिसंडु अरिचिद्वियतासु ।
भवममणहु जा मुणि'णन्त्र भोउ ।
सो यंसुणाइं मु ण ढाण इट्ट ।
..... : ।
गेवद्धनाइ मणि मुणियसत्थ ।
माधारणु सावयधम्मिलीणु ।
तुर य उ पुण्ण उ पुण्णमहतु ।
जो परिणणाइं अथासुपवित्त ।
हरिसुत्ति हरु पुणु दीहवाहु ।
घृषालि नवम उ उज्जिय पाणाणु ।
सिरि पुण्णपालु मुणिमणिय सुत्त ।

धत्ता

तद्दु पढमी भामिण कुजगिह सामिण,
वीई पुणु मणसिरि णं पीयडसिरि,
णदण वयारि तद्दु विणयवंत,
ताह जिगुरुमनंतणिअभुल्लु,
तद्दु भ आचउ विहपत्त भत्त,
वीयउ णंदणु सूजेसुवणि;
तद्दु तिरिण पुत्तकुल भवणदीव,
अमरेदिउं लाडमखुं,
तीयउ णंदणु पुणु कामराउ,
चंउत्थउसुउं आमलु विगयपाउ,

तिहुवण सिरि णांमे भाणया ।
अहपवित्ति रुवहु भाणया ॥ २ ॥
ण एंतउउक्कजिजणिसहत्त ।
सिरिभुल्लणु णामां सोजि अतुल्लु ।
णिउर दे न मागिह महत्त ।
तद्दु भज्जमहासिरि रोह खाणि ।
णरयण इह वणणीय कामदिउ ।
णरयणत्तउं जायउ पयखु ।
कल्लाण सिरि भज्जासराउ ।
परिवारु पद्दु णदउ सराउ ।

धत्ता

एयहं संव्वहं पुणु पयडियं वेहुगुणु णंदउ भुल्लणु गुणभरिउ ।
धंणयत्तकुमारहु संयफलेमारहु कारिवे उवडहु चरिउ ।

इय सिरिधणकुमारचंरिणं कंयसुअभावणं फलेण विण्णुरिए सिरिपंडियंरइधू विरडिए सिरि पुत्रपाल
मुत्त साधु श्री भुल्लणु णामकिय भवेत्रीवाणमिणियं, धंणकुमारणिव्वाणं गमणवणणो णाम चउथी संघो
परिच्छेउं सम्मत्तो । इति श्री धंणकुमार चरितं समाप्त । मुनि श्री भारमेत्तं लिखत्तं ।

मयन् १६३६ वर्षे फाल्गुन मसे शुक्लपक्षे मतांश्यां तिथौ अक्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि
 मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी विराजमाने मारुवाह देशे श्री मेदनीपुस्वरे अज्ञानातमरदिनकर विधुरिजिन-
 जरणमज्जानानन्द नृवर लक्ष्मणवत्तने राज श्री पातिमाह श्री अक्कस्वर जलालदीमहंमदराज्ये । पायंदासहं-
 मद्रयानराज्ये श्री मूनसधे नंघाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण
 भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे मिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकाशनमर्त्ताण्ड भट्टारक श्री
 शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोवहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभकुंभविदारणैक
 देशरा भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रवा स्तन् द्वितीय शिष्य दुद्धरपचमहाव्रतधारणैकप्रचंड श्रीमत् मडलाचायं श्री
 रत्नरु मि तन् शिष्य पचाचारचरणचतुगन् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारंगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमन्
 मुयनधीति तस्य शिष्य मडलाचाय श्री धर्मकार्त्ति भव्यकुमुदविकाराणैक निशाकर द्वितीय शिष्य
 मडलाचाय श्री वराज्ञक मिः तस्य शिष्य दुद्धरपचमहाव्रतधारणैक प्रचंड श्रीमत् मडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र
 नदाम्नाये मडलजालवगे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह फाल्हा भ र्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह
 सोहल द्वितीय पुत्र साह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्रः सीलव्रतावगाह
 परिवारान् श्रीमन् मुद्रशनायतार साह श्री लंणा तस्य भार्या लूणादे तस्य पुत्र साह श्रीवतं भार्या सुहलालदे
 नस्य पुत्र द्वितीय साह चि० वीडा द्वितीयपुत्र चिरजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री
 लंणाजेन पुण्यार्थेन पुनर्जं ति प आर्गायित वाई श्री करामाई केन घटापिन ।

१७. धर्मपरीक्षा ।

रचायना प० हरियेण । भया अपभ्रंश । पत्र मरुया प्प. साडज ११x५ डब्ब । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १० पन्थिया तथा प्रात पन्थि मे ३०-३५ अक्षर । विषय-धार्मिक । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।
 धाराःभ्रं प ट—

निदि पुरविहिं ऋतु, सुद्धे तणु मणवयणें ।
 मत्तण जिणु पणवेत्ति, चित्तिव बुहहरिसेणे ॥ १ ॥
 मणुण जग्मि बुद्धिण कि म्जिड, मणहरजाड ऋवुणरइज्जड ।
 न करंत अविद्याणिय आरिम, होसुलइहि भडरणि गय पोरिस ।
 चडसुह ऋवु विरचणि नयसुवि, पुप्फयंतु अण्णणु णिसुंभिवि ।
 तिरिणविजोय जेण त मीमड, चउसुड सुहधियतावसरासइ ।
 ते एवं विहहउ जहमाणउ, तह च्छंदालकार विहीणउ ।
 ऋवुणरतुनेमणविलज्जामि, तह विसेस पियज्जणकिह रंजामि ।
 नो वि जिणुड धम्मअणुणायड, उहामिणिमिदसेणसुपसाइ ।
 ऋमि मडं निगल्लिण्णित्तज्जलु, अणुहरेइ णिकवसु सुत्ताहलु ।

घत्ता

जा जय रामे आसि, विरहय गाहपवधि ।
साहसिं धम्मपरिकलं, सापद्धहियां वधि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग तथा प्रशस्ति —

घत्ता

मिद्धमेणपयवधि दक्किउ शिंदहि हरिसेणु एवता ।
तहिंथियतेखगसहय कयधम्माय कविह सुहई पावंता ।
इय मेवाहं देसि जणसकुलं, सिरिउं जंपुर निंगेयं वकं डकुलिं ।
१
अवकंदि कुंभदारणहरि, जाउ कुत्ताहि कुसलुणामेहरि ।
तासु पुत्त परणाहि म्हायक, गुणगणणिहि कुलगयणदिवायक ।
गोवद्धणु णामे उप्पणउ, जो सम्मत्तरयणसपुणणउं ।
२
तहो गोवद्धेणोमु पिंयधेणवडं, जो जिणवरे सुणिं वर पिंयगुणवड ।
ताहं जणिउं हरिसेणु णामे सुउं, जो से जाउ विवुह कंठ विंसुउं ।
विरि चित्तउ डुवणवि अचलउरहो, गउणियकज्जे जिणहर पउरेहो ।
तहि छंदालकारपमाहिय, धम्मपरिकलएहतें साहिय ।
जेमज्जमथमणुय आयणणहि, ते मिद्धत्तभाउ अंधगंसेणहि ।
३
ते सम्मत्त जेणमलु खिज्जः केवलणायु णायु उप्पजड ।

घत्ता

तहो पुण केवलमाणहो सेयपमाणहो, जीवपएमहिं सुहंदिउ ।
४
वाहाहिउ अणतउ अइसयवंतउं, मोक्खुसोक्खु फलु पयडिउ ।
५
विद्धम शिणवप रपत्तियकात्तड, ववगयंवरिससउसचउतालइ ।
इय उप्पणु भविजण सहयक, डभरहियधम्मामयसायक ।

१ कुलीहि २ गुणवड ३ तेण ४ वाहारहिउ ५ परिवत्ति ६ गोवधं वरिससउसचउतालइ ७

ते एतद्दु जे भक्तियभावहि,^१ तेरादहु जे लहहि लहाव'ह ।
 ते एिय परदुह दूरि लुढावाहि,^२ जो पुणु केविहु पढहि पढावा'ह ।
 ताण शिरंतर सोक्खः सुहडहि,^३ एयहु अत्युकेबिजे पयडहि ।
 जे एियुणोविपरिक्खहि भक्तिए,^४ ते हुं जहि एिम्मज मइ सतिए ।
 सयल पाणि वगहो दुहुहिल्लउ,^५ सोसमिहिए महिसोहिल्लउ ।
 परहिय करणि निहडिय अहहो,^६ होउ निराणुणु चउविह संबहो ।
 पयडिय पहुपयावआरिवारिं,^७ रांदउ भूवइ सहो परिवारिं ।
 धम्मपत्तरोएणादुहहारें,^८ रांदहु पयवहु अइवचहारें ।

घत्ता

^९
 संखदुसहसुसयाहिउ संदरसयाहिउ, डउकहरयणु अगव्वहं ।
 जाहरिमैणधराघर चवहि गयणुधर, तामजणउं सुहु भव्वहं ॥
 इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिहियाए बुह हरिसेण कयाए एयारसमो संधि परिच्छेद सम्मतो ।

१. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री महाकवि पुण्ड्रित । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७०. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पाँक्त्या तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३७ अक्षर । लिपि सन्नत् १६१२.

मंगलाचरण—

पण्णेषिणु भावें पंचगुरु, कलिमलवल्लिउ गुणसरिउ ।
 आहासमि सुयपंचमिहिं फलु, एयकुमारचारुचरिउ ॥ ध्रुवुक ॥

महाकवि ने पारम्भ मे अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

घत्ता

सिन्धुकरायकरयलि एिहियां, असिजलवाहिएणु दुग्गयरे ।
 घवल्लहरसिहरहयभेहउले, पविउल मएणुवेहएयरे ॥ १ ॥

१ दागहि २ हरे ३ जे छुं ४ आरिवारें ५ संत्ता दुसहसुसोहिउ इय कयरयणु अगव्वह । जो हरिसेण धराप्परउ यदिरायणिवर तामजणुहु सुहु भव्वहं ।

मुद्धार्ईकेसवभट्टपुत्तः,	कासवरिसिगोत्ति त्रिसालचित्त ।
एणएणहु मंदिरि एणवसतु सतु,	अहिमाणमेरु गुणगणमहतु ।
पात्थउ महिपणवियसोसएण,	विणएण महोवाहसीसएण ।
दूरुजिअयदुक्कियमोहणेण,	गुणधम्मं अवरु वि सोहणेण ।
भो पुप्फयंत पहिअणपणय.	मुद्धार्ई केसवभट्टतणय ।
तुहं वाएसरिदेवीणकेउ,	तुहं अम्हहं पुएणणिवघहेउ ।
तुहं भव्वजीवपंकरुहभाणु,	पइंधणु मणिमणिएउ तिएणसमाणु ।
गुणवंतभत्त तुहु विणयगम्मु,	उब्भायपयासाहि परमघम्मु ।

घत्ता

ओल्लिगिउ भावें दिणि जि दिणे,	णियमयपंकय थिरु थविउ ।
कइ कव्वपिसल्लउ जसधवल्लु,	सिसुजुयलेण पविण्णाविउ ॥ २ ॥
भणु भणु सिरिपंचमि फल्लु गहीरु,	आयएणमि णायकुमारवीरु ।
ता वल्लहरायमहंतएण,	कल्लिअलसिय दुरियकथंतएण ।
कुंडिल्ल गोत्तर हससहरेण,	दालिदकंदकंदलहरेण ।
वरसच्चरयणारयणायरेण,	लच्छीपोमिणिमणिससहरेण ।
पसरंत कित्ति बहुकुलहरेण,	विच्छ्रेण सरासइबंधवेण ।
बहुदीणलोयपूरियधणेण.	मई पसरपरिज्जयपरवलेण ।
णियपइवइएणचित्तियफलेण,	छणइंदविअसणिएणमुहेण ।
कुंदव्व भरहादियतरुहेण,
एणणेण पउत्त महाणुभाव,	भो कुसुमदसणहयवसणताव ।
करिकव्वु मणोहरु मुयहि तट्टुं,	जिएणधम्मकज्जिमाहोहि मंडु ।
आपएणमिहउ भणु शिम्मलाईं,	सियपंचमि उव वासहु फलाइ ।
एणणेण पवोल्लिउ एम जाम,	णाइल्लइ सीलाईं एम ताम ।

घत्ता

कइ भाणउ समंजसु जसविमल्लु, एणणु जि अणणु ए घरसिरिहे ।
तहुं केरउ णामु महग्घयरु, देविहि गायउ सुरगिरिहि ।
नं तुहुं मि च्छावहि णिययकन्वि, दिहि होउ एणिए आसएणभन्वि ।
बुद्धीए एणणु सुरगुरु ए भति, पर एणणु एव वइरिय जिणंति ।

पर गणेशु ग वारुणु गुरु विमिदु ।
 गनेउ सचवे जैणियतुद्वि, पर गणेशु ग वरुगिहि देउ पुद्वि ।
 धन्मेण जु हिद्विलु धन्मत्तु, पर गणेशु प्रवासदुहिण चत्तु ।
 चाणण करणु जणदिएणचाउ, पर गणेशु न वंधुदु देउ घाउ ।
 कतीए मणोहरे छणससेउ, पर गणेशु गउ दी उ कलकु ।
 गहयात्त मंहिसु सुद्वधरिउ, पर गणेशु ग किडेवाहउ धरिउ ।
 सुधरुत्त मरे भणति जोउ, पर गणेशु पुरिसु पत्थरु ग होइ ।
 मायण व गहीरे वयाथरेदि, पर गणेशु ग मथिउ सुत्थरेह ।

घत्ता

चो वणिएउ वणिएउं वरुउहि, भावे णियमणि भावहि ।
 नहु गणेशु केउ गामु तुहु, सुनलिय छवि चडावहि ॥ ४ ॥
 णिचचेनत्तणु केमालु चणु, णिचचारिणपेज्जादेहाउं चणु ।
 न्हाणविज्जणु वनाधावणु, रु लउ णोरसु पवत्तु भौयणु ॥
 धरिणामयणु रउरससकोयणु, दूमहउ समपयमुद्विषणु ।
 पिसुणाकासणु ताहणु वधणु, चडयायवहतकंपवणुइ ॥
 धराहरजल प्रागमवणु, सिमिरोसाकणुहरंमरु वेयइ ।
 द्विमपहणुं विद्वतणु तेयउं, उद्वउ सोसियगरसभेयइ ॥
 वणतदणिएमणु मिहि सिउव तणुं, गुहगय मीमोयरसहउं सणुं ।
 कठोळंविथिभिमहरचणुणु, सीहावगवजीहाउल्लुणु ॥
 ज्ञोत्तघोरवोगाणिल्लुणुणु, सवरगयगहयकंडयकंडुयणुं ।
 पत्र माइदुम्भ्याह सहेप्पिणु, रणिएवसंप्पणु भिक्खवरांप्पिणु ।
 सत्तु पि मित्तु वि मरिसु गणोप्पिणु, मिउं मुं जेप्पणु णिद्रांजणोप्पिणु ।
 भो र्मुयं चिचउ सुमरेप्पिणु, मणुजगभगुरत्तु भावप्पिणु ।
 सुम्भञ्जारु मणि आउंरंप्पिणु, मोहमहारि रउं मिउल्लेप्पिणु ॥
 रुमनसायराय त डेप्पिणु, उद्वरुमद्वगठि मिल्लेप्पिणु ।
 उत्तायान तिगुत्तिहि गुत्तउ, चउंहु मि तेहि रिमिहि संजुत्तउ ॥

घत्ता

म्भिव अणुं अणुं हुउ, पत्तउ मोक्खुं अणुं गविंयारेउ ।
 पुफयतसुरणुमिथपहु, पसिंधउं णारुं कुमंरु भदरिउ ॥

इय गायकुमारुचारुचरिण एरण्णामकिण महा ऋषुफयतविरडण महा ऋषे सिगिणायकुमार-
वालमहावाल छेयाभेयमोकवगमणं गाम एवमो सधी परिच्छेउ समत्तो ।

श्वस्ति संवत् १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ शनिवारे श्री आदिनाथचत्यालये तत्तकगढमहादुर्गे महा-
गजाधिराज राउश्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याप्राये धलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री
कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तरगृहे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री
ललितकीर्त्तिदेवास्तदास्नाये खंडेलवालान्त्रये स.घटा गोत्रे सा० धीढा तद्भार्या धिजयश्री तत्पुत्राः पचः ।
प्र० सा० सोढा द्वि० सा० गाल्हाट्ट, सा० रतन, चतुर्थे सा० माल्हा । सा० सोढा भार्या भोली तत्पुत्र चत्वारः ।
प्र० सा० चाड्ड, द्वि० सा० खीन्ना, तृ० सा० हूलह, चतुर्थे सा० देवा, प० सा० पूना । माह चाड्ड भार्या
मदना । सा० दूहल भार्या करमा तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोपा, द्वि० सा० थेलहा, तृ० सा० श्रीपाल ।
सा० पोपा भार्या पोस्तिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० माह सुरत्राण द्वितीय चि० पचाड्डण । सुरत्राण भार्या सुहागदे ।
सा० थेलहा भार्ये द्वे प्रथम सरस्वति, द्वितीय लाढा तत्पुत्रौ द्वौ, प्र० हूंगरसा तद्भार्या नाथा, द्वितीय भेला ।
सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्रथम सरुपदे द्वितीय लहुडी तत्पुत्र सा० रुपा । सा० देवी भार्ये द्वे । प्र० मोभा द्वितीय
सरुपदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्र० सा० सरवण भार्या होली तत्पुत्र हेमा सा० टीहा भार्या चद्रा । सा० ईसर भार्ये
द्वे प्रथम ईसरदे द्वि० चारु । सा० रतन भार्या सारमा तत्पुत्र स्त्रयः प्र० सा० छीतर भार्या छायलदे तत्पुत्र
चि० कौजू । सा० चौहथ भार्या चतुरगदे । तृ० सा० गणा भार्या राणाद । भेला भार्या भावलदे । सा० माल्हा
भार्या द्वे । नाल्हा द्वि० मेहा तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० टेहू द्वितीय सा० नोता । सः० टेहू भार्यास्त्रयः प्रथम
तहुणश्री द्वितीय सुहागदे तृतीय गृजीर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० पदमसी भार्ये द्वे प्रथम पतायदे द्वितीय
पाटमदे तत्पुत्र चिरंजी रामशाम । स० नोता भार्ये द्वे द्वितीय कोडमदे तत्पुत्र चि० आखा भार्या
अहकारदे द्वितीय सागा एतेषां मध्ये सा० टेहू मा० नोता इदं शाश्वतं नागकुमार पंचमी लिखाय पंचमी व्रत
उद्योतनार्थं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिये दत्तं ।

१६. नागकुमार चरित्र ।

रचायता श्री पं० माणिकरराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२४. साइज १०x११। इच्छ । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । प्रति प्राचीन तथा सुन्दर है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ
नहीं हैं । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी अपना विस्तृत परिचय दिया है । भाषा बहुत सरल और मधुर है ।

प्रारम्भिक कवि परिचय—

तहि जिणवरमंदिरु धवलु भव्यु ।
तहि गिणवमड पंडिय सहवणि ।
इकखकुत्रंसमहियलिवरिडु ।

सिरिआडणाह जिणविबु दिव्वु ॥
मिरि जडसवाल कुल कमल तरणि ॥
बुह सृराणादणु सुह मरिडु ॥

दुक्खदल्लिह दहिव्खुं व णिरसउ ।
 घरि घरि मंगलु गीउ पदरिसउ ।
 घरि घरि लोउ सुहेहें रंजउ ।
 जिणवरिदसुयगुरपयअंचणु ।
 पुत्तकलत्तसुयणपइ पालउ ।
 एण्डउ एहु गत्थुं ता महियलि ।
 संघह चिरु दुकिउ विहु एण्तउ ।
 लेस मुणीस विहर अंशाले ।
 फागुण चदिण प'ख समि वालें ।
 णिरि पिरथी चंदुपसायं सुदरु ।
 सज्जणतोयह विणउ करेप्पणु ।
 विरयउ एहु चरित्त सुवुद्धिए ।
 ता महु दोसु भवु मगहउ कोइं ।
 मज्जु खमंतु ववुहसव्वाचित्तम ।
 मइ जलेण ज भायमि साहिउ ।
 कइयण जण तिलोयहु सारी ।
 अइरो सेंसो हि जहु गथु वरि ।
 एण्णउ कामिणि होउ सुमंगलु ।
 माणिककराज वज्जिय मएण ।
 टोडरमल्लहत्थें दिण्णु सत्थु ।
 दाणेसेयं सहकरण्णु तपि ।
 पुणु समाणिउ वहु उत्थवेण ।
 अंगुलियहि मुल्लिय णिय करेहि ।
 पुज्जिउ आहरणहि पुणु पुणु तुरंतु ।
 गउ णिय घरिपंडिउ गंथि तेण ।
 तहि मुणिवर विदाहि सुत्थ गंथु ।
 वित्थारिउ अत्थु वियारि तेण ।

कालि कालि धाराहलु वरिसउ ॥
 घरि घरि णारि उरहंसें एण्णउ ।
 घरि घरि सखुसुमदलु वज्जउ ।
 चउविहसंघहदाणहपोसणु ।
 एण्डउ टोडरमल्लु दयालउ ।
 ज्ञा वहि मेरु चंदु रविणहयलि ।
 भवियण लोयह पाढि जंतउ ।
 विक्कमरायहववगयकाले ।
 पणारहसइगुणासियउर वालें ।
 एणमो सुहणक्खित्तु सुहवाले ।
 हुउ परिपुण्णु कवु रसमदिरु ।
 पिसुणवयणकहमेणभरेप्पिणु ।
 जइयहु अत्थमत्तहीणउ हुए ।
 विणवेइ मणिक्कु कई इम ।
 अण्णुवि अमुण्णते हीणाहउ ।
 त जि खमउ सुय देवि भडार ।
 वुहयणरोसुण करहु महु उप्परि ।
 विसमउ गर्माण वज्जउ मदलु ।
 गुरुपण वल्ले पडिएण ।
 तं पुण्णु करेप्पिणु एहु गंथुं ।
 णिय सिरह चडावउ तेण गथु ।
 पडिउ चर पट्टहि थविऊतेण ।
 चर वत्थइ कएण कु'दलेहिं ।
 हरिरोवि वि सज्जिउ विणयं विरुत्त ॥
 जिण गेहि णियउ वहु उत्थवेण ।
 दिण्णउ गुर हत्थें सिवह पंथु ।
 भव्यवणह सुह गइ दावणेण ।

घत्ता

पुणु टोडरमल्लहं णिवसरि पुण्णहं,
 जिणि गिहि मुणि संघहं तववयवंतहं,

लिहियइ गंथ वहुसुत्थणिरु
 णाणदाणु तं दिण्णुवरु ॥

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृगतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १५६२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां
 तियो भौसत्रामरे श्री गालय शुभस्थाने श्री पातसाहि ह्रमायु राज्यप्रसिद्धमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर-
 गणे श्री भट्टारक श्री मनयकीर्त्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि श्रीमन्कर्त्तिदेवान् तदा-
 स्नाये मुनि श्री धर्मभूपणदेवान् तदास्नाये ब्रह्मचारि मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पण्णा एतत्
 इन्द्राक्षुशे श्री गोत्रे भट्टारगे श्री जयमवाल वशास्नाये श्री पचदशलाक्षणीकन्नतपालकान् पचमी उद्धरण
 घोर साधुग्रन्थवसे तस्य भार्या शीलतोयतरिणी त्रिनय चागेश्वरी तस्य नाम सुनखो । तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ
 पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासु— ।

२०. पद्मपुराण ।

रचयिता श्री प० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६०. साइज १०।।५४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १३ पक्तिया तथा पति पक्त मे ५०-५४ अक्षर । विषय—पुराण । प्रति जीर्ण अवस्था में है । लिपि
 सवत् १५५१ ग्रन्थ का दूमरा नाम बलभद्र पुराण भी है ।

मंगलाचरण —

परणयविद्वंसणु मुणिसुव्वयजिणु,
 निरि रामहु केरउ सुअव ज्ञेयउ,

परणवि वि बहुगुणगण भरिउ ।
 मह लकखण पयडमि चरिउ ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

निरिआइणाहु भव्वयणइहु,
 पुणु समिपहु धम्मामयसवतु,
 तदि संति वि जीवदयावहाणु,
 पुणु ब्रह्माणु चर भल्लुदेउ,
 पुणु ताह वाणिज्जाए विचित्ति,
 पुणु उवभूति गणहकू एवेवि,
 पुणु ताह अणुकरमि देवमेणु,
 पुणु विमलमेणु तह धम्ममेणु,
 तह सहसर्कत्ति आयमवहाणु,
 गच्छह नाइकू सिहि गुण मुणिएहु,

परणवेणिएणु लोयत्तयवग्गिहु ।
 भव्वयणहु भवतएहासमतु ।
 जि भासिउ महियलि विमज्जाणु ।
 सो सव्वह जीवहं वेरउ सेउ ।
 लोयत्तमगामिणु वएणादत्ति ।
 सो धम्मु वि जवूमामि तेव ।
 इदियभुयंगणिएहलणवेणु ।
 निरि भावसेणु गय भावरेणु ।
 तह पट्टिणि मन्नउ गुणनिहाणु ।
 महत्थपयासणु विगवतट्टु ।

घत्ता

तहु पट्टि जइयकू गिएहचर ईमकू,
 तहु मिस्सु पहाणुउ तववयठाणाउ,

जसर्कत्ति वि मुणिएयणतिलउ ।
 खेमचट्टु आयमणिलउ ॥ १ ॥

गोव्वगिरि णामें गढु पहाणु,
अइउच्चु धवलु णं हिमं गरिंदु,
तहिं डुंगरेंदु णामेण राउ,
तु वर वर वसह जो दिण्णिंदु,
तहो पट्टवरणि ण रुवलत्थि,
तहु पुत्तु कित्तिसिंधु जि गुणिल्लु,
पियपायभत्तु पचक्खमारु,
तहु रज्जिवणीसरु शुद्ध चित्तु,
जसु चित्तु सुपत्तहं दाणिरत्तु,
काणामरण अहिणिसहि णीणु,
आयमपुराणपढणहसम्मथु,
जो आइरवालवंसह मंयकु,
चादू साहु एदणु पवीणु,
जिणसासणि भत्त कसायखीणु,

णं विहिण्णिण्णिम्मउ रयणठाणु ।
जहि जम्मु समिच्छइ मणिसुरेंदु ।
अरिगणसिरिणि संदिन्नधाउ ।
जिं पवत्तहं मिच्छइ खण्णउ कंदु ।
णामें चादा देई सुयित्थ ।
जो राइ णीइ वनसणइ छल्लु ।
पज्जुणवमहियलि कुमरुमारु ।
संचायउ जेण जिणधम्मवित्तु ।
जिण्णणाहपूयजोण्णवभत्तु ।
काउसगेंतणु कियउ खीणु ।
णियमणुयजंम्मु जि कियउ कयथु ।
त्रिहु पक्खसुद्ध सो णेयवंकु ।
णियजण्णहिल्लोपयविणयलोणु ।
हरसीहु साहु उद्धरय दीणु ।

घत्ता

तहु भज्जा गुणगणसज्जा,
मुण्णिदाणपियंकर वयणियमायर,
वीई तिय वील्हाही गुणग,
जेठिहि एंदणु सिरिक मरमसीहु,
मुणिसहणिवसह जसु पढमल'ह,
तहु भज्जा जौणाही पवीण,
तहु वहिणीणंतमई पहाण,
चउविहदाणे पोसियसुपत्त,
लुहु ईहि पुत्त रुवें सुताग,
जिणचरणकमलणमीयसरीरु,
अरणहि वासरि चित्तियउ तेण,

द्योचंदही णामें भणिया ।
णं पवित्तिरु बहुत्तणिया ॥ २ ॥
अइसीलविशुद्धजिणाइ गग ।
गिहभारधुरंधरु चाहुदीहु ।
जाचयजण्णापूरियसमीह ।
गुरुदेव सथयपयभत्तिलीणु ।
महसीललीणगिहलद्धमाण ।
अहणिसु जिणवरपयकमलभत्त ।
णामेण णणो णेहें सुसार ।
वयभरण्णत्राहरणभीरु भीरु ।
हरसीहण म ईच्छियसिवेण ।

घत्ता

किं किज्जइ वित्तं विहियममत्तं,
किं तेण जिणोए पयडयिराय,

जेण एदीणु भरिज्जइ ।
वयभरु जिणधरिज्जइ ॥

एतन्मन्त्रं पावित्र्यं करणीत एम
 वित्तिवच दसणु गणु इष्ट,
 धम्मु जि दहलकखणलोयसाह,
 विणु धम्मे जीव ग सुखि थार्ह,
 इह चिंतवि पुणु गृह साहु तत्थ,
 बहु विणए पुणु विणएतु तेण,
 भो रइधू पडिव गुणणिहाण,
 सिरिपालह वम्ह आयरियसीस,
 सोढल णिमिन्ति रोमिहि पुराणु,
 तइ रामचरिन् विमहु भणोहि,
 मुहु साणुराउ कहमिन्जेण,
 मुहु णामु लिहहि चंदहु विमाणि,

भवदहिणिवडणुणो होइजेम ।
 चरणु वि पुणु लोयन्तय वरिह ।
 सेविवच एवु भवणुसांरु ।
 ति विणु करचडिच विसयलु जाइ ।
 अच्छइ पिडिच जिणुगेहि तत्थ ।
 कर आरोपेणु णियंसरेण ।
 पोमावइ वरवसह पह ण ।
 महुवयणु सुणहि भावुह गरीस ।
 विरयउ जहपइ जणु विहियमाणु ।
 लकखण समेउ इचमाणु मुणोहि ।
 विणुनिमज्जु अवहारि तेण ।
 इय वयणु सुद्ध णियन्तिठणु ।

धत्ता

इय णिनुणिविइ' ऋपियसवणइ,
 हो हो कि वुतउ एहु अजुत्तउ,

पडियण ताउत्तउ ।
 हउ'गह कम्मे गुत्तउ ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

भवह गुणुणंदउ कियसु कम्मु,
 राउनि णंदउ सुह पयसमाणु,
 णदउ पुणु हरसीहसाहु एत्थु,
 सह अ गिमतु जसु फुरइ चित्ति,
 सिरि रामु चरित्तु विजेणएहु,
 तहु णंदणु णामे करमसीहु,
 सो पुणु णंदउ जिणुचलणभत्तु,
 मिरि योमावइ परवालवंसु,

अरु णंदउ जिणुवर भणुणउ धम्मु ।
 णदउ गौवगिरि अचलठाणु ।
 जि भाविउ चेरणु गुणु पयत्थु ।
 कलिकालधरियजिजाणि सत्ति ।
 क राविउ सव्वहं जणिय रोहु ।
 मिच्छतमहाउयदलणसीहु ।
 जो रायमहार्याणि साणु पुत्त ।
 णदउ हरसी संधवी जससु ।

धत्ता

वालोहमहरणसिह चिरुणदउ इह,
 मोहिकक सम्माणउ कलगुणजाणउ,
 रइधू कइतोयउविधरा ।
 णदउ सहियल्लि सोविधरा ।

इय चलहइ पुराणे बुद्धयणविदेहि लद्धसम्माणे सिरि पडिय रइधू त्रिरइय पाइयवचेण अथ विहिसडिए

प्रियछंदाणुग मिनी वधू जटो तयो पुत्र दुइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुन्दरी । साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकरी जिनप्रतिष्ठाकरण इंद्रस्वरवतारान् भूपति नभा शृंगारहार चंद्रमा इव द्योतकारी त्रिवेकसुंदर साधुमनोहर तस्य भा मणा प्रियछंदाणुगमिणी भार्या नर्गोना तयो पुत्र चतुर्भुज तस्य भार्या भागर्जती एतेषा मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विंशदान-शायक नाह अगस्मद् तेनेदं शास्त्र वज्रभद्रपुराण लिखापित । लिखाय करि वाई जिंदो नैदत्तं पठनाथं । लिखतं पाहे के- । शुभ भवतु ।

२१. पामेष्टि प्रकाशमार ।

अथभ्रश । पत्र सख्या १८८. स. डज ६।४४ डज्ज । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३३ ३६ अक्षर । प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है । विषय धर्म । प्रति प्राचीन है ।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

धत्ता

गयमासयठ राड सिद्धपडाण्ड,
इय परापरमिद्धिहि केवलदिद्धिहि,

कम्मरहिय गुणअद्धजुवा ।
रयणत्तयलहिकम्मचुवा ॥

अन्तिस पाठ तथा प्रशक्ति—

धत्ता

इय सिद्धिमरुवड सिधमुइद्वुवड,
सुयणाणणिरिन्निव्वि,
इय परमिद्धि पच्चजगमरडं ।
तड गुणयवड जिणव्ववाणी ।
गणहरदेवपमुइमुणिययइ ॥
इडग्गुह जे सुव्वरवगडं ।
तडं पहिनिवतिजयजहज्जयड ॥
तड अरु भग्गमुणिविद्ध ।
तड गुणपूययहि जे भव्वड ।
जे तडि धुत्त पडाहि तयक लडं ।
ते तड खाम जयहि एग्गाइं ।
दो हि अमरएण मुक्खविरायड ।

णिसुणि वि जेणच्छउ करहे ।
सुमणिहरि वि धम्म अहिंसाते वरहे ॥ १ ॥
भवियह जे भव्वदुत्तरतारइं ॥
जा तयलोयपवित्तपहाणी ॥
पयडहि ते चहुरिद्धिबिरायइं ॥
मुणियिणो तड गुणगणइणि सगइं ॥
सुरएणअक्कहि ते सुपसत्थड ॥
पुज्जणिल्ल ते तिहुयण चंदइ ॥
पूयइं ते हि ण रामरमव्वइं ॥
तड धुड करिं अमरअसरालइं ॥
जे तड धम्मचित्त अणुरायडं ॥
जे तड धम्म पसंमहिं चिचइं ॥

पावहिं ते कमउत्तमगुत्तई ।
कयणुमोयसुरालयपत्तई ।

जे तह णामु सुणहिं मरणंतई ॥

.....

घत्ता

जह सयलतियालई, घम्मुधरालई. एरसुरकरहिं महंतई ।

जे भावणभावहिं ते सुइ पावहिं, सासयकालअणंतई ॥ २ ॥

एहउ जहतयलोयपहुत्तणु ।

तह अम्हारि सकहसुकयत्तणु ॥

अपपुद्धि अमुणियवरगंथई ।

आयमपमुहअणावम्अत्थई ॥

तक्कळ्ळंदलंकारावहोणउ ।

ण विवायरणु मुणमि अपनीणउ ॥

अक्खरमत्तययत्थहवज्जिउ ।

त जि कन्तु वुहयणहअउज्जिउ ॥

पुव्वसूरि जं कियसु कयत्तई ।

तह जसपसरियभुवणमहंतई ॥

जिणकमगोयमसामिणमंसिय ।

घम्मापरियसुगुणसुपससिय ।

जवूसामितकेवल्लिजुत्तई ।

विण्हु दत्त पयु ॥

x x x x x x x

२८८ के पृष्ठ का अंश—

घत्ता

दहपणमयतेवणगयवासई पुण.

विक्कमणिवसंवच्छरहे ।

तह सावणमासहु गुरपचमिसहुं,

गथु पुण्णु तयसहसतहैं ॥

भालवदेसदुगासे डवचलु ।

वट्टइ साहिगयासु महाचलु ॥

साहिणसीरुणामतह णदणु ।

रायधम्म अणुरावउ वहुगुणु ॥

पुज्जराजुव णिमति पहाणई ।

इसरदासु गयदइ अ णइ ॥

पत्थाहरणदेसु बहुपावइ ।

अर्हाणिस धम्महुभावणभावइ ।

तह जे रटणयसुपसिद्धई ।

जिणवेइहरमुणिसुपबुद्धई ।

रोमीखरजिणहरणिवसंतई ।

विरयउ एहु गथु हरि सत्तई ।

जइ सिंघु तह संघवइ पसत्थई ।

संकरु णे मदासु वुहत्तई ।

तह गथत्थ भेउ परियाणिउं ।

एउ पसत्थु गथु सुहु माणणउ ।

अवर सघवइं मणियअणुराइय ।

गथ अत्थ सुणिय भावणभावइ ॥

तेहि लिहाड एण्णगथड । इय हरिवसपमुहसुपसत्थइं ।
 विरडय पढमत्तमहि विरथारिय । वम्मपरिक्खपमुहमणहारिय ।
 पढहि भव्वजह पडिय लोडयइं । सातहोइ सुणि अत्थमणोयइं ।

घत्ता

पुरणयरणरेसह गोमह देसह—

सुण्णगणसावयलोयमहे ।

धणुक्खु मण्णमारइं धम्मद्वारइं

करहि सांत परमिद्विपहो ॥

इय पर्गमिद्विपर्यामसारे अरुहादिगुणोहि वरुणणालकारो अप्पसुद सुदर्कत्ति जहासत्ति महाक्खु
 विरयतो एणम सप्तमो परिच्छेउ संसत्तो इति पर्मेष्टप्रकाशसार प्रथ समाप्तः ।

२१. पाण्डवपुराण ।

रचयिता मुनि श्री यश क्रीत्ति । भ पा अपभ्र श । पत्र सख्या ३४७. माइज १०॥४४॥ इच्छ । प्रत्येक
 पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८ । ४२ अक्षर । लिपि संवत् १६३६ रचना सवत् ।
 प्रारम्भिक भाग—

वोयसु सरधयरद्वहो गयधयरद्वहो सिरिलालमु सोरद्वहो ।

पणवेवि रुहाम जिण्णद्वहो गुयवतविद्वहो कह पढवधयरद्वहो ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे दो दृष्टे प्रगति—

x x x x x x x

मरिमरवण उववणगिरि त्रिमालु,
 तहि निवसह जालपु साहु भइतु,
 मरिमरवण ल वसह पहाणु,
 तहो एदणु वाल्हागयपमाउ,
 आवण्णिणु हित्तमग्वालु दिट्ठु,
 धेनाही तहो विरयणाम सिद्ध,
 तहो एदणु एदणु हेमराउ,
 सुरतानममारखतणुडरउजे,

गंभीरपरिहउत्तगसालु ।
 एणुज्जी भज्जालं किउ अगव्णु ।
 जो सपहं वच्छलु विगयमाणु ।
 नवगावणयरे सो सह जिआउ ।
 तेणवी सम्माणुउ किउ विद्विदु ।
 गुरुदेवभत्तपरियणहं इहं ।
 जिणधम्मो वरि जसु शिच्छमाउ ।
 मनित्तयो थिउ पियभारकउजे ।

घत्ता

जे अरहंतु देउ मण्णिभाविउ, जसु पहुत्ते जो वि ण ताविउ ।

जेण कर्गावित्त जिणचेयालउ, पुण्णहेउ चिररयपकवालय ॥ १ ॥

धयतोरणकलसहि अलण्ड,
परतियवधउ परउवयारिउ,
संघधुरधरु पयडु मुण्णिजइर.
सत्तवमण जें धुरे वज्जिय,
मत्तगुणहं दायारहं जुज्जउ,
पणए पणग्गुणें मउं भोजउ,
विण्णयंदाणु देइ जो पत्तह,
तासु भज्जु गुणरयणवसुंधरि,
त्तवें चेलणदेवपहाणिय,
अमियसरसवयणहिं सच्चिद्धिठिय,
उवरि काडल्लुसीलजें धारिउ,
धम्मसवणकुडलजें धारिउ,
जिण्णगेहम्मिगमण्णोउरसरु,
जिण्णवरमतसरणु कचुउ चरि.
एअहं आहरणह जा सोहिय,
तासु पुद्दु पल्लहणु जाणउज्जइ,
वीयउ सरगु त्रि पयभत्तउ.

जसु गुरुत्तिहरिजणु वि संक्रिय ।
जेणि सन्वु जणु धम्महपेरिउ ।
सावधम्मोण्णचमणु रजइ ।
सीलसयणवित्तिवि आवज्जिय ।
नवविहट्टाणांविहिए णउचत्तउ ।
रयणत्तयभावणअणुरंजिउ ।
जिणु तिरालु पुज्जइ समचित्तहं ।
गव्वाणाम खेयगय जियसुरमरि ।
जिणवरभक्तिहें णं इंदणिय ।
णउ तं वोल्लराय अंणुरजिय ।
रयणत्तइ हारें मणु पेरिउ ।
जिणमुदमुहिय संचा रय ।
तहो चंदणकंकरणसोहिए करु ।
जिण्णवरमहवणु तिलउ किउ णियसिरि ।
भारु मुखोअ कचणहि तमोहिय ।
चाए तत्रकुरयणणहि थुण्णज्जइ ।
कउल तइअणदुवमण चत्तउ ।

घत्ता

पल्लहणणदणु गुणणिलउ, मोल्लहणमायपियग्गमणुरंजणु ।

वोल्हा साहुहें अवरु सुउ, लक्खाणामु जणमण अणदणु ॥ २ ॥

दिउराजहीयभज्जहिं ममेउ,
णंदणु डूंगरु तह उधरणवखु,
एक्कहिं दिण्णि चित्तउ हेमराउ,
णिसुण्णिज्जइ चिरपुरंणह चरित्त,
ता होइ मज्झ जम्मूअ सलग्गु,
इव चित्तिवि जिणमदिग्गिहे पत्तु,
सोउं इच्छमि पडवचरित्त,
विवरोउ संवुजणु वज्जरेइ,

कील-ह हुउसंताणजोउ ।
हसराउ तइउ सुउ मलचक्खु ।
जिणधम्महीणु दिणु अणुलुजाइ ।
हरिनेमिनाहपडवंह वित्त ।
जासइ चिर संचिउ पाउ मिग्गु ।
जसुण्णिपणविवि आक्खउ सचित्त ।
पयडहिं मामिय ज जेम वित्त ।
णारयावणि दुक्खहो णउ डरेइ ।

त स्त्रियुष्मिन्नि जग्निं युष्मिन्निरिदु
पंडव चरित्त अङ्गुष्मिन्नि जग्निं,
त तद्गो वचणं गुणगणमहंतु,
सज्जनदुष्मिन्नि परिहरेवि

चंगड पुच्छिउ चुरयणहं चंदु ।
तुव उवरोहें हव कहमि तइवि ।
पांरभिउ सद्वयह फुरंतु ।
एियणियसहाचरत्ते विदोवि ।

वृत्ता

मज्जणु व सहावु अकुडिलभावु,
परदास पयासिरु अवगुण भागिरु,

ससिमेहु व उवचारमड ।
दुष्मिणुसाधु व कुडिलगड ।

अन्तिम भग—

पढमडि वीरनिणुडे अक्खउ.
सोहम्मं पुणु जंघुसामें.
एणिमित्त अवराजिय एणहें
एमपरंपराडं अणुननाउ.
मुणुसंक्खेवसुत्तु अवहारउ,
पढहि ग छंदो सुमणोहरु,
करेवि पुणु भव्वहं वक्खाणिउं,
जं हीणाहीउ किंरिउसाडिउं,
जो इहु चरिउ वि पढड पढावड.
जो पुणु मद्देड ममभावें,
जो अ यरउत्ति सुद्धि करेपिणु.
जो पुणु गय चित्तु गणुणेमड,
एउ पुरणु भविचह आमामड.
वडरिउ मित्तणु दांसाराड,
पियन्ना पुत्तियउ त पुणु,
एउ ममगनु घरु सपावड,
लाह सुत्तियउ लाह सुत्ताडवि,
माणुणाहमयन्पयट्टि,

पढड गोयमेण एउ रक्खिउ ।
विणुक्खुमारें एिगयणामें ।
गोवद्धणेण सुमद्धसहावें ।
अ यरियाहं मुहाउ अवगउ ।
मुणुजमक्खित्तिमहिहिं वित्थारिउ,
भवियणुणमणुसवणुसुहंकरु ।
दिदुमिउत्तु मोहु अवमाणुणं ।
तं सुयदेवि खमउ अवराहउं ।
वक्खाणेपिणु भविणुणदावडं ।
सो मुच्चड पुव्वकियपावें ।
मो सिउ लहडक्खमड्धिदेपिणु ।
सगु मोक्खु सोसिगुलहेसड ।
अ युत्तिद्धि जसुराद्धि पयासड ।
रव्वजत्थियउ विरव्वु संपावड ।
रव्वभट्टु पुणु रव्वु चउगुणु ।
गउ परणुसु मगनु घरु आवड ।
देव देहिवरु मच्छरु भुंवि ।
मिद्धा भावत्थणुद्धें तुट्टिहि ।

वृत्ता

आवटं मव्वडें जाहि मउ मंपड मुहवरि पडसहि ।
पट्टवचरिउ सुत्ताहं विवाहविलामडं विज्जमहि ॥

अवह वि सिउ कल्लांगु पयासेइ,
 संसारो वहितरि विसलीलइ,
 एउ चोगुं पविसुं सिद्धकखरु,
 सुंसमोहय चित्तिहे मो भविइ,
 म वयणसंबोहणहो 'णामते,
 णउ कथित्ति तिहि धणलीहे,
 छेदुं तक्कलकखणुणउ जाणुउ;
 णदउ मासणं सम्मइणाहे,
 णदउ एरंउं पयंपालंतउ,
 णदउ मुण्णिगणुं तउ पालंतउ,
 दाणु पूयत्रयांधिपोलतउ,
 काल विणयणिचचपरिसेकउ,
 वज्जउ मगलु गज्जउ मगलु,
 णदउ वील्ह पुत्तु गुणवतउ,
 अत्थावहुद्धु बुद्धाहसो हव्वउ,
 विक्कमराय हो वेवगयकालए,
 कत्तिथंसिथे अट्टम बुहवोसरे,
 णहु भोहिचन्दुं मूरु तारे यणुं,
 जाता णदउ कालंलु हरंतउ,

पुअकयइ दुरियाण्णिण्णासइ ।
 आरदुहवे धिमुंत्तिं संहु कीलइ ।
 पु० पुरं गुं पुरिमावेणुं उ चिंरुं ।
 णउ सदेहुं सी जि सुहु पावेइ ।
 एउ गंधुं ऋउ णिम्मलचित्ते ।
 णउ कासुवार वदिय मोहे ।
 कम्मखयणिमित्तु वक्खाणुउ ।
 णदउ म वयणुं कयउछोहे ।
 णदउ दयधम्मं वरिसंह उउ ।
 दुविहुधम्मं भवियणह कहतउ ।
 णदंणुं सात्रय गणुरयचत्तउ ।
 कोसांविधणं कणुं दे तिन थक्कउ ।
 णचवउ णारायणु रहसैकलु ।
 हेमराउ भिय पुत्त सइत्तउ ।
 धम्मत्थे आलसुणउ किन्नउ ।
 माहिसायरगंह रेस अ कालेइ ।
 हुंउ पारपुण्णं पढमणवोसरे ।
 सुरगारि उवाहितंउ सुंहुभायणु ।
 भवियजणहि विथारिउ जंतउ ।

धत्ता

इय चउविहसंघह विहणियावग्घहं णिण्णासियभवजरमरणु ।।
 जय कित्तिपयासणु अखलियसासणु, पर्यडउ सति सयंभुजिणु ।।

इय पांडुपुराणे सयलं जणमणसंणसुंहर्यरे सिरि गुणकित्ति संसंमुण्णिजमेकित्ति विरइथं
 पाधु वील्हा पुत्त हेमराजणामकिणं रोमिणाहजुधिहरेभीमाजुण्णिण्णाणंमणं णकुलमहेदेधमंवेहंसिद्धि
 मंलहदपंचमसगमणपयासणो णाम चउतीसमो मगो समत्तो । इति पांडवपुराणं समाप्तं ।

संवत् १६३६ वर्षे भाद्रवा सुदी १ प्रतिपत्तिथौ आदित्यवारे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे श्रीमूलसधे नद्याम्नाये
 लोत्कारगणे सरवतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारके श्रीपद्मनन्दीदेवास्तपट्टे भट्टारके श्रीजिनचन्द्रदेवा
 तत्पट्टे भट्टारके श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्ये मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्ये पं० श्री लालतकीर्तिदेवा-
 तत् शिष्ये पं० श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तस्याम्नाये खडेलवालांन्वये श्री नैमिनाथचैत्यालये निवाइ वास्तव्ये राइ श्री

हाग . द्वि० नैतादे । तत्पुत्री द्वौ प्रथम चिन्तीव छीनर द्वि० चि० छ लू । माह हेम भार्या हेमासि तत्पुत्रा-
 श्रवणः प्रथम फलद्व भार्या फूलमदे । माह डाल् भार्या दाहोदेव । तृतीय नाथु भार्या नाथकदे तत्पुत्री द्वौ
 प्रथम चि० हट द्वि० चि० रुपा । चतुर्थ माह चाचा भार्या चौसि तत्पुत्राश्रवणः प्रथम साह नेमा द्वि० नेमा
 कृतीच साह पचायण । माह नेमा भार्या निमासि तत्पुत्री द्वौ प्रथम माह नानु द्वि० वाला । नानु भार्या
 नैगादे माह नेमा भार्या नेमलदे तत्पुत्र सोकल नृ० माह पचायण भार्या पाटमदे पतेपां मध्ये साह लेजाना
 मध्ये येन इदं शास्त्रं पादत्रपुराणनामानं महलाचार्यं श्री ललितकीर्त्तये घटापितं दशलक्षगुणनोचोतनाथ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४५५. साहज १०५१॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति
 में ३० । ३०. अक्षर । प्रति पृष्ठं तथा प्राचीन है ।

संवत् १६०२ वर्षे माघमे कृष्णपक्षे चतुर्दशीतिथौ दावददूवाशुभस्थाने प्रोहितशार्केश्वरप्रतापे
 श्री मूलमंथे नयान्नाये वलान्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा-
 स्तरद्रे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवान्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्त-
 नाशय्यमहलाचार्यं श्री धमचन्द्रदेवान्तग्यान्नाये वीजावरगन्धर्वे अत्रमेरा माहरोठ्यागोत्रे माह सक्तु भार्या नाऊ
 तत्पुत्राश्रवणः प्रथम साह धरणि द्वि० माह धर्ममी माह कमसी चतुर्थ साह आसा । साह चरणि भार्या
 हरसु तत्पुत्री द्वौ प्रथम साह वील्हा, द्वि० संवभारधुरंश्वर जिणपूजापुरंदर साह कील्हा, प्रथम भार्या पूग द्वि०
 भार्या त्राडी । माह हट भार्या चत्वार प्रथम शीता द्वि० लश्री तृतीय तोल्ही, चतुर्थे मोल्ही पुत्र चत्वारः
 माह बोहिथ, रामादाम, महेश, दामोदर, पतेपां मध्ये सा० कीलाख्येन इदं पाण्डवपुराणाख्यं शास्त्रं लिखाय्य
 महलाचार्यं श्री धमचन्द्राशय्यकमलकीर्त्तये दत्तप ।

२२. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्रीपद्मकीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४०५ साहज ११५५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १० पंक्तियां तथा प्रति पं.क्त में ३२ । ३६ अक्षर । प्रति शुद्ध है ।

संगता चरण -

चरणीम वि जिणवरमामिय मिवसुहर्गामिय पणविव अणुदिणु भावें ।
 पुणु कहसुवणुपयासहो पर्याहमपासहो जणहमन्मिसमायें ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशान्त -

मुपासद्ध, महासुणिणियमवरु.	धिउसंगुमधु दह मिहयवरु ।
तहि चंदसणुणुमेगुणिमि,	धयमंजसाणुयमड जानुकिमि ।
तसु र्म सु महामड गियमवारि,	गायवत्त गुणावरु वंभयारि !

१ नगहो मन्मिसमायें २ गडकिमि ३ तहो

मिभिर्भाहवमेणु महाणुभाह,
तसु पुत्रसिण्णोहि पञ्चमकित्त,
ते जिण्णवेरसासण भाविण्ण,
गा खमयदोमविज्जिण्ण,
त्तकडत्त विज्जणेसुकडत्तदोड,
जड अग्निहि चुक्किवि किंपि कुत्त,

जिण्णमेणुसीसु पुणु त सु जांड ।
उप्पणु सीसु जणु जासुचित्ति ।
कड विग्गय जिण्णंशाहोमंण ।
अक्खरपथजोडियत्तज्जिण्ण ।
जड सुरणहि भावडंथु लोड ।
खमयच्चउ सुयणहि त्तिण्णत्ते ।

घत्ता

रिसिगुरुदेवसाए ऋडिठ अमेसुविचरिउ मड ।
पञ्चमकित्तिसुण्णसुण्णपु गवहो देउ जिण्णेसरु त्रिमलमड ॥

इति पार्श्वनाथचरित्तं समाप्त ।

जयत्रिविद्धं एयं णियाणवध जिण्णिदतुहसमंण ।
तह त्रितहयचलणकित्तिणं जउ पोमकित्तिस्स ॥ १ ॥
इय पामपुराण भामयापुहन्नीजिण्णालयादुट्ट ।
एवहि जीवियमरणे हरिसत्रिसाउणपउमस्स ॥ २ ॥
सावयकुलोमिज्जन्मो जिण्ण चरणोरोहरणं कड कडत्तं च ।
एय ड त्तिण्णजिण्णवरभवे भवे होतु पउमस्स ॥ ३ ॥
एयसयड वाणुऊवा वत्तियमासे अमावसीदिक्खसे ।
लिहियं पासपुराण कडणा इह पउम णामेण ॥ ४ ॥

संवत् १६११ वर्षे अषाढ वृदि ६ दिने शुक्रवासरे आल्हाणपुराथाने श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मुरुसंघे नयाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तद्वृद्धे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तद्वृद्धे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तद्वृद्धे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तर्त्तुशिष्ये वसुधराचाये श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये स्वडेलवालान्त्रये चौधरो गोत्रे साह गोगा तद्भार्या गारवंदे तत्पुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज । साह भादा भार्या भावलदे तयोः पुत्र चिरंजीव वृचः तद्भार्या बहुरंगदे । सा० महाराज तद्भार्या मैणा तयो पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान न्यपवृत्त साह घेत्ता भार्या हरपसदे तयो पुत्रा द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राणे द्वि० भीमसी एतेषां मध्ये साह महाराज तनेदंपार्श्वनाथचरित्र पौडगकारणत्रतोयापनार्थं वसुधराचर्यं श्री वसंचन्द्राय दत्तं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८ संवत् १०४४ इश्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां नैथा प्रति पंक्ति

१ वसुधराचर्यादय २ णाम पउमस्स

मे ४१x४४ अक्षर । इसमे १८ वीं संधि मे प्रथम प्रति से एक कडवक कम है ।

सवत १४६४ वर्षे भादवसुदी २ शनीदिने श्री काष्ठासंधे माथुरान्धे पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे श्री सहसकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्री नेमीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री गुणकीर्त्तिदेवा । श्री मदनचन्द्रदेवेन लिखितं पुस्तकं ज्ञान वरणक्षयाथे पठनार्थं च । इदं पाश्वनाथग्रंथं पठितं रूपचन्द्रेण छुडायितं ५० सांतू पासि ।

२३. पाश्वनाथचरित्र ।

रचियता महेशकवि-श्रीधर । भाषा अष्टभ्रंश । पत्र संख्या ६६. माडज १०x४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३५x४० अक्षर । लिपि सवत १५७७. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

मंगलाचरण—

पुरिग्रभुअणानहो प्रावपणासहो णिरुवमगुणमण्णिगणभण्डि ।
तो हयभत्र गामहो पणवेविपामहो पुणु पयुडमि तासु जि चरउ ॥

अन्तमपाठ तथा प्रशान्ति—

x	x	x	x	x	x	x
त्रिकक्रमणरिद सुपसिद्धकालि					दिल्ली पट्टणि धणकणविसानि ।	
सणवासी एअरःसण्हि,					पुण्वि द्विए-त्रिमहपरिगणदि ।	
क्रमणट्टमीहि आगहणमार्सि,					रविवागसमाणिउ । समिरभासि ।	
सिारपासणाहु णिम्मलु,चारत्त,					मयलामलगुण रयणाह,दत्तु ।	
पणवीमसयड गयडहो पमाणु,					जाणिज्जहि पणवीसहि रुमाणु ।	

धत्ता

जा चन्ददिवायर महिहरस यर ता बुहयणहि पढिज्जउ ।
भविचाहि भाविज्जउ गुणिहि थुण्णज्जउ. वरल्लेहयहि लिहिज्जउ ॥

इय मिरिपामचरित्तं इय बुहसिरिहरेहरेणगुणभ रय अणुमण्णिगणमण्णुज्जं णट्टलनामेणभवेण
पुण्वभवंकखहणो पासजिण्णिदंभ च रु निठरणो जिणपियरद्विखग। णो वारहमो संधां पारसम्मतो ।"

आसीदत्र-पुरा प्रसन्न-दनां कयाख्याप्रदत्तश्रुतः ।
सुश्रूपादगुणैरलंकृतमना देवे गुरो भक्तिकः ।
सर्वज्ञक्रमकंजयुगमत्तरतो न्यायान्वतो नित्यसो ।
जेजाख्यो विवचन्द्रोचिरमलम्फूर्ज्जघसो भू पतः ॥ १ ॥

यस्यागजो जनि सुधीरहराघवाख्यो ज्ञायानमंदमतिरुज्जितसर्वदोषः
 अप्रोतकान्वयनभोगणपाटवर्णैर्दु श्रीमाननेत्रगुणरजितचारुचेतः ॥ २ ॥
 ततोभवत्सोढलनामधेय. सुतो द्वितीया द्विपत मजेयः ।
 धर्मार्थं मृतयेविदग्धो त्तिनाधिपप्रोक्तवृषेन मुग्धः ॥ ३ ॥
 पश्चाद्भूव शशिमडलभ समानः ख्यतः क्षितियश्वरजनादपिलब्धमानः ।
 सदशनामृतरसायनप नपुष्टः श्री नट्टलः शुभमनाक्षपितारिदुष्ट ॥ ४ ॥
 तेन दमुक्तमधिया प्रविचिन्त्या चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसाग्भुतं ।
 श्री पार्श्वनायचरित दुरितपनोदि म क्षायकारितमितेनमुदं व्यलोखि ॥ ५ ॥

अहो जयशङ्करं लु चित्त करेवि.
 रवाणकरु पर्यापि मन्मु सुखेहु,
 इत्थि पसिद्ध उ हिल्लिह इक्क,
 मम कर्वाम तुम्हह तसु गुणाइ,
 ससंकसुहाम्मार्कात्तहे धामु,
 मणोहर माणि शिरेजणकामु,
 जियेसग्पायसरोयट्टरेहु,
 सयागुरुभत्त गिरिदुवधीरु,
 अट्टुत्तणु सज्जणमुक्खपयासु,
 असेसहंसजणमज्जि मणुज्ज,
 महामत्तवत्तह भावइ तेम,
 मवंसणह गणभामणसूरु,
 सुहोह पयासणु धम्मयमुत्त,
 दयालयवट्टण जीवणवाहु,
 पिपया अइत्तल्लहवालिहेणाहु.

भिसि सि सप सुभमंतुधरेवि ।
 कुभावइं सव्वइं हों तह रोहु ।
 गुरुत्तमु ण अवइण्णं सक्कु ।
 सुरासुररायमणोहरणइं ।
 सुरायले कण्णगाइयणासु ।
 महामहिमालउ लोयहं वासु ।
 विसुद्धमणोगइ त्तइ सुरेहु ।
 सुह सुह ओजल्लहव्वगहीरु ।
 विद्याणियमागहलोयपयासु ।
 एरिइ चित्तपर्यासय चोज्जु ।
 मरोयणराहं रसायणु जेम ।
 सवधव वग्गमणिच्छियपूरु ।
 विद्याणियजिणवर आयमसुत्तु ।
 खल्लाणणचन्दपयामणराहु ।

धत्ता

यहुगुणगणजुत्तहा जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनट्टलहो ।
 मो पर्यहि णहगणु रमियवरगणु, लघइ सिरिहरहयखलहो ।
 पंचाणुत्तयधरणुससयत्त सुअणह सुहकारणु ।
 जिणमयपहसचरणु विममविसयासावारणु ॥
 मूढभाणपरिहरणु मोहमहिहरणिहारणु ।

पार्विल्लिगिहलणु असममल्लङ्ग उमारणु ॥
 ।वच्छल्लविहाणपविहाणपवित्थरणु जिणमुणपयपुज्जाकरणु ।
 अहि एवउ एट्टलसाहुचिरु, विवुहयणह मणधणहरणु ॥ १ ॥
 दाणवतुतकिद तिधरियतिरयणतकिमेणित्त ।
 मववतुतकिमयणु तिजयतावणु रउ माणित्त ॥
 यदगदोरुलकि .लनि गरुयलहरिदि हयसुखहु ।
 अशिरयरु तकिमेरुवपचय रहियत्तकिनहु ॥
 गउदतिनसेणित्त नउमयणु, ए जलहिमेरुपुणुननहु ।
 सिारवतु माहु लेजातणत्तं, जगिनट्टलु सुपासिद्धुहु ॥ २ ॥
 अगवगकानिगगउहकरल्लरुणादहं ।
 चाडिदिविहपंचालसिधुखममालवलादहं ॥
 जट्टभोट्टणोवालट्टकुकु कण मरहट्टहें ।
 भायाणयहरियाणमगहगुज्जर भोगट्टह ॥
 इय एवमाडदेसेसु गिरु, जो जाणियड नरिदिहि ।
 सो नट्टणुसाहु न एणियड कह सिरिहरकःत्रिदिहि ॥ ३ ॥
 दहल्लखणु जणभाणियधम्मु धुरधारु वियक्खणु ।
 लक्खणु उवलकिवयमरुक परचिन्वल खणु ।
 सुद्धिमज्जाणवुहयाणवणीउ स।मल्लिरियउ ॥
 क हलोहमयाहिमाणभयमयपररोहयत्त ।
 गुरूदेवपियगपियभाक्कयरु अथग्वात्तकुल्लमिरितिलत्त ।
 गण्टत्त मिरिनट्टणु माहुचिरु, कड सिरिहरगुणगणुनिलत्त ॥ ४ ॥
 गदिरघोसु नवजलहकूवसुरसेलुवधीग्ग ।
 मल्लभररहियत्तनहयलुव्वजल्लिगिहिवगिदीरत्त ॥
 चित्तिययरु चिंतामणिव्व तरणिवत्तेडल्लह ।
 माणियणमणहररडवरुव्व भव यणपियत्तजत्त ॥
 गंडीउवगुणगणमदियत्त पारनिम्महिय अक्खणु ।
 जो धोवणिययत्तं न केउणभणु, एट्टलुसाहुसलक्खणु ॥

इति श्री पार्वनाथचरित्रं परिसमाप्त ।

संवत् १५७७ वर्षे आपाठ सुदी ३ श्री मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा-
 ध्यायान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्

शिष्य मुनि धर्मचन्द्रभक्तदासनाथ खण्डेनवालान्त्रये पहाड्यागोत्रे साह उधा तद्भार्या लाडा तत्पुत्र साह फ० ह
द्वि० ग्जर । फलहू भाया सफलादे साह ग्जर भार्या गुण सर्गी तत्पुत्र पंचाङ्ग इव शास्त्र न गपुर मध्य
लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्र य दत्त ।

२४, पंचाम्तिकायप्राभृत ।

मूलकर्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या
१४८. साइज ६।५४ इञ्च प्रति पृष्ठी तथा सुन्दर है । विषय-सिद्धात ।

लेखक पशरित-

सन् १६३७ वर्षे अषाढ बुदि १४ दिवसे शनिवारमरे मगिसर नक्षत्रे श्री मूलसधे नद्याम्नाये
वनाकारगणे मरस्वतीगन्धे श्री कुन्दकुन्दाचार्योन्वेये- भट्टारके श्री प्रभाचन्द्रदेवास्त् शिष्यमडलाचार्य श्री
धर्मचन्द्रदेवागत शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवागत शिष्यमडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तद म्नाये
खण्डेनवालान्त्रये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पाठमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम जिनपूनापुरंदर सभार-
धुरधर चतुर्विध दानवितरणाल्पवृक्ष सा० श्री नूना तद्भार्या नुनसिरि-तयोः पुत्रा अस्वाः प्रथम सा० वीरु
नद्भार्या ल्हाकन, द्वितीय जिणदाम तद्भार्ये द्वेः प्रथम मरुपदे- द्वि० लहुडा । तृतीय सा० चिमला तद्भार्या
वहरंगदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः-पुत्र त्रि० दुर्गा । द्वि० सा० डीहा
तद्भार्या हिहिमिरि; तृतीय चि० किसनदास चतुर्थे सा० चौड्य तद्भार्ये द्वे प्रथम चादणदे द्वि० लहुडा तथा
पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० कांजू द्वि० चि० दशरथ । द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम सा०
जाट तद्भार्या जौणादे, द्वि० सा० नेता तद्भार्या जेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० क्वरु तद्भार्या
कौतिगदे एतेषा मध्ये सा० जिणदाम तद्भार्या स्वरूपदे इव शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्र य दत्त ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता महाकावि श्री सिंह सिद्ध । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७५. साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति ३२x३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । पत्रो का रंग बदल गया है ।
अक्षर मोटे हैं ।

मगलाचरण ।

समदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलयिस्मकलंरुहो ।
घुड करमि समत्तिए, अडाणरुभत्तिए हारकुलगयणससकहो ॥

अन्तिम पाठ-

इय पञ्जुणरुहाए, पयडियधम्मसकामसोवखाए बुहरल्हणसुव कडसीह विरडयाए पञ्जुण
संयु भाणु अणिरुद्धाणव्याणगमन णाम पणारहमो मधी पारिच्छेउ सम्मत्तो ।

भारम्भ मे दी हुई प्रशस्ति—

१	हयदुरियरिणं,	तःलोयदण ।
	भवभयहरण,	गिण्डिजयकरण ।
	सुहफलकुरुह,	चंदिचि अरुहं ।
	पुण्य सत्थमई,	फगहमगई
	वरवणपया,	२
	पयपाणसुहा,	मणिधरिणि सया ।
३	सर्वंगिणिया,	तोसिय त्रिचुहा ।
	पुत्राहरणा	चहुभंगिणिया ।
	सुयधरयणी,	सुत्रिसुद्धमणा ।
	कडयणजणणी,	४
	मेहाजणणी,	त दुविहृदणणी ।
	घरपुरपवरे,	सुहसयकरणी ।
	गिउ त्रिउसमहे,	गामे णयरे ।
	सरसइसुसरा,	सुयफाणवहे ।
	इमवज्जरड,	महु हो उवरा ।
	इयचोरभए,	५
	पहराद्धिदिए,	फुडु सिद्धरुड ।
		गिासभारि विगए ।
		चिततु हिए ।

घत्ता

जा सुतउ अचछड तातहि पचछड णारिडककमणहारिणिया ।

सियवत्थणियत्थिय कंजयहत्थिय अकलसुत्तसुयधात्रिणिया ॥ १ ॥

सा चवेड सित्रिणति तक्खणे,	क इ सिद्धचित्तप्रहि णियमणे ।
त्त सुणेवि कवि सिद्ध जपिए,	म इ मञ्जुणरू हिय कपए ।
कव्व बुद्धि चित्तु लज्जिउ,	तक्कछद लक्कखण विवडिजउ ।
णावि नमासु ण विहित्त कारउ,	साधिसुत्तागथहं असारउ ।
कव्वु कोइ ण कयावि, हित्तउ,	महु णिघट्टेणावि ण सिद्धउ ।

२गय २ घरेवि ३ सग्ग ४ दुविहृदणणी ५ल्लुडु ।

तेषु विहिण्णि विततु अञ्जमि,
अ धुहोवि एवण्णद्विपिञ्चरो,
त सुणोवि जाजययमहासुई,

यत्ता

आलसु संनिल्लहिं हियउ म मेल्लहि,
इउ मुणिवरवसे कदांमिसेसे,
१
ता मत्तधारिदेव मुण्णिपुगसु,
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ,
तासु सीसु तत्रतेयद्विवायरु,
तत्रत्तहरि क्कंकोलियपरमउ,
जासु भुवण्णी दूर तरु वक्किवि,
अमयचन्दु णामेण भडारउ,
सगिसरणांङ्गण वणसंङ्गणउ,
वंभण्णवाडउ णामे पट्टणु,
जो भुंजइ अरिण्णरखयकालहो,
जासु भिच्चु दुव्वण्णमणसल्लणु,
तहिं सपत्त मुण्णीसरु जावहि,

खुञ्जु होवि तालहलु वंछमि ।
गेय सुण्णि वहिरोवि इच्छरो ।
णिसुण्णि सिद्ध जंपह सरासई ।

मच्छु वयणु एउ दिदुकरहि ।
वत्तु किपि त तुहु करहि ॥ २ ॥
णं पच्चवत्तु धम्मु उव्वससु दसु ।
जो खमदमजमणियमसमिद्धउ ।
वयतवणियमसील रयणायरु ।
वरवायरणपत्तरपसरियपउ ।
न ठिउ पच्चण्णु मयणु आंसक्किवि ।
सो विहरंतु पत्तु वुहत्तारउ ।
मठविहारजिणभवरणवण्णउ ।
अरिण्णरणाइसेणदत्तवट्टणु ।
रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो ।
त्वात्तउ गुहिलपुन गहि मुल्लणु ।
भव्वत्तोउ आणंदिउतावहिं ।

यत्ता

णियगुणअपससेवि मुण्णिहि णमंसवि, जो लोएहि अट्टुगुंच्छियउ ।
णयविण्णयममिद्धं पुणु कदांसद्धे, सो जइवरु आउच्छियउ ॥ ३ ॥

×

×

×

×

×

इय देवय णंङ्गण अविण्णय जणमणणयणाणदणु ।
वुड्ढयणजणपयपत्तय द्ढपपउ भण्णइं सिद्धु परमपपउ ॥

अन्निस प्रशस्ति—

कृत कर्मपट्टजस्य शास्त्रं शास्त्र सुधीमता ।
मिहेन मिहभूतेन पापमामजभंजनम्-॥ १ ॥
नामभ्य नाम्यं कमनीयवृत्तेः वृत्तं कृतं कीर्तिमता कवीनां ।

^१ भव्येन सिंहेन कवित्वभाजी, लाभाय तस्याश्च सदैव कीर्त्ति ॥ २ ॥

^२ सव्वण्ह सव्वरदसी भववणदहणो, सव्वमारस्स मारो ।

सव्वयाणं भववयाणं समणमगहो सव्वलायाण सामी ॥ ३ ॥

सव्वेसु वत्थुरुवं, पयदणकुसलो सव्वणाणा व लोई ।

^३ सव्वेहिं भूययाणं करूण विरयणो सव्वयाल जयो सो ॥ ४ ॥

जं देवं देवदेव अइसय सहिदं अगंदाराणिहंतं ।

सुद्ध सिद्धोहरत्थं कलिमलरहिदं भाव भावाणु मुक्कं ॥

^४ णाणायारं अणतं वसुगणगणिणं असहीणं मुणिच्चं ।

अम्हाण त अणिद पविमलसुहिद देउ ससारपारं ॥ ५ ॥

जाहं मोहाणु वंध सररूहणिलए कि तवत्थं अणत्थ ।

^५ संतं देहत्थपारं विवुहविरमण खिज्ज देदीयमाणं ॥

^६ वाए सोए पवित्त विजयदु भुवणो कव्ववित्तं विचित्तं ।

दिज्जं त ज अणंत विरयाद सुइरं णाणलाहं विदित्तं ॥ ६ ॥

घत्ता

जं इह हीणादिउ कइमि साहिउ,

अमुणिय सत्थपरंपरईं ।

तं खमउ भडारी विहुवणसारी

वाए सरिसच्छायरईं ॥ ७ ॥

^८ जा णिरूसत्तहंगि जिणवयणविणिग्गय दुहविणासणी ।

होउ पसणण मञ्जु सा तुहयरि इयरणकुमइ णासणी ॥ ८ ॥

परवाइयवायाहरू अच्छम्मु,

सुअकेवलि जो पच्चक्खु धम्मु ।

सो जपउ महामुणि अमियचन्दु,

जो भव्वणिवह कइरवहिं चन्दु ॥

मलधारि उव पयपोमभसलु,

जगम सरसइ सच्छत्थ कुसलु ।

तह पयरउ णिरू उण्णइ मयाणु,

गुज्जरकुलणह उज्जोय भाणु ॥

जो उहय पवरवाणीविलासु,

एवं विह विउसहो रल्हणासु ।

तहो पणोइणि जिणमइ सुहयसील,

सम्मत वाउ णं धम्मलील ।

कइ सीहु ताहिं गव्वभत्तरम्मि,

^{१२} सभत्तिउ कम्मलु जह सुरसरमि ॥

१ सधेन २ सव्वदशी ३ सव्वेति ४ गणित प्रसदेहयार ५ सीए ७ सव्वापरईं ८ चिरू ९ भंगि १० कहरिहिष

११ उण्णायमाणु १२ जि णररूहसरम्मि ।

जण वच्छलु मञ्जराजाणि हरिसु,
 उप्पणु सङ्घोयरु तासु अवरु,
 साहारणु लहु वउ तासु जाउ,
 तडा अणुवउ मह एउवि सु सारु,
 जावच्छहि चत्तारि सुभाय,
 एक्कहि दिणि गुरुणा भणिउ वच्छ,
 भोवाल । सरासड गुणसमीह,
 चउविह पुमत्थर सोहभरिउ,
 कड सिद्धहो विरयतहो विणासु,
 महु वयण करेहि किं तुव गुणेण,

सुडं सत्थविविह वड्ढाय सारसु ।
 णामेण सुहकरु गुणहं पवरु ॥
 धम्माणरत्तु अड दिव्वभाउ ।
 सविणोउ विणंसेरु कुसुमसारु ॥
 पग-उवयारिय जणजणियराय ।
 णिसुणहि च्छप्यय कडरायदच्छ ॥
 किं अविणोवड दिणगमहिं मीह ।
 णिव्वार्हाह एउ पज्जुयण चरिउ ॥
 सप्पणउ कम्म वसेण तासु ।
 संतेण कूच छाथा समेण ॥

वृत्ति

किं तेण पट्टवड बहुधणई, जं विहडियहण उद्धरई ।
 कव्वेण तेण किं कडयणेण, जं गण्डल्लहं मणुहरइ ॥
 गुरुणो पुणो पउत्त पविचयपु पुत्त माधर्गाचत्ते ।
 गुणिया गुण लहे णिणु जइ लोओ दूसण थवड ॥
 को चारड सविसेस खुहो खुहत्तणं प वियरंतो ।
 सुवणो छुडु मग्गत्थो अमुणं तोणियसहावच ॥
 सभवड बहुयविग्घ मणुयाण समय मग्गलग्गाणं ।
 मा होहि कज्जसिद्धलो विरयहि कव्वं वर तोवि ॥
 सुड अमुह ए वियाणावि चिन्तां धीरेवि तेजए वयणा ।
 परक्कज पक्कज विहवत जेहि उद्धरिय ॥
 अमियमडडगुरुणं आएस लहेवि कत्ति इय कव्व ।
 णियमडगा णिम्मावय यदउ मसिद्धिणामणी जाम ॥
 को लेत्तपड मत्थम्मे दुज्जणं पिअ सुहयर ।
 गुयण सुद्ध सहाव करमउ लिरए वि पत्थामि ॥
 जं किंपि हीण अहियं विउसा सोहत्तु त पि डड कव्वे ।
 विट्टत्तणेण रडय समंतु मव्वेवि सुह गुरुणो ॥

१ सुद्धंतु २ अणुवउ ३ उवयरइ ।

अथ सचत्सरोऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५८७ वर्षे मार्गशुद्ध ५ सूर्यवासरे कुरुजांगलदेसे श्री सुलतान वन्वरसाहिबजयराज्यप्रवत्तमाने श्री सहारणपुर महादुर्गे निजद्विद्विद्धप्रहस्तत स्वर्गे तत्र श्री सर्वज्ञ विहारो जिनोपदिष्टतत्त्वकथाकथनसारे श्री काष्ठासंघे माथुर न्वये उभयभाषाप्रवीण-तपोनिधि श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेकरुलाकमलिनोविकासनैकादणभणिः भट्टारक श्री देवसेनदेवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधानचरित्रचूडाभणि भट्टारक श्री त्रिमलमति विमलदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यानिधान यमनियमस्वाध्यायध्याननिरतः भट्टारक श्री घम्भसेनदेवस्तत्पट्टे छत्तीसगुणनिलय पंचमहाव्रतधरणधौरेयान् भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे काममातंते सृगेन्द्रान् भट्टारक श्री सहस्त्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्त अध्यात्म भावसद्मान् निहतछद्मान् भट्टारकहोनदीनउद्धरणसमर्थान् कलितानेकशास्त्रार्थान् भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा स्तत्पट्टे सयमविवेकनिलयान् विदुषकुलतिलकान् भट्टारकलघु भ्राता तथा श्री यशकीर्तिदेवास्तत्पट्टे वाचा शीतलान् भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादीभक्तुंभस्थलविदारशैकपंचमुखन् लब्धानेकसुखान् त्रयोदश-विधचारित्राचरित्रनिर्जितकरण भट्टारकश्री गुणभद्रसूरिदेवः एतेषा आचार्यान्नाये अप्रोतक न्यये भूषणे गगगोत्रे जाल्हयहाडिये कलसौरैवालविहटवास्तव्य तथा मणि उद्योतकारीपदसमाश्रितशीलगांगेव परोपकारी साधु लाघा तस्य भार्या शीलशालिनी गुणमालिनी साध्वी साहणही । तस्य पुत्र २ प्रथम पुत्र पचमी उद्धरण धीरू सप्तक्षेत्रकृतनितविभवभारान् साधू मल्लू तस्य भार्या शीतलवचनश्रवणसमर्थ मुनिगणअहारदान दाइकी साध्वी करमचन्दही तस्य पुत्र विज्ञानकलासंयुक्तान् मातृपितृपदभक्तान् साह वसावणु तस्य भार्या साध्वी धन्ने हो पुत्र २ । प्रथम पुत्र साधु गढमलु, द्वितीय कटारू, साधु लाघा द्वितीय पुत्र जिनप्रतिष्ठाजिनमहोत्सव करणकारणभर्ते स्वरावभारान् देवल्लोकातः चौधरी वलिया तस्य भार्या पुण्यपावनी साध्वीमायरही तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र जिनशासनप्रभावकान् जिनपूजा श्रयनादिकरणकारण भर्तेश्वरावतारान् आश्रितजन कल्प पादान्, पंचाइटसभाश्रगारहारान् चौधरी भेजू तस्य भार्या शीलतोयतरगिणी विनयवागेश्वरी साध्वी कामेही । तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र मदा सदाचारविचारसारपाहगतान् साधु रावणु तस्य भार्या साध्वी इच्छाही द्वितीय पुत्र साधु तेजू । चिरंजीवि उगरदासु तृतीय पुत्र । चतुर्थ पुत्र चि० वेगराग । साधु वलिया द्वितीय पुत्र सुजनजनमनरंजन निजसरोवरमडल कुमदिनीविकासनैकमणि उद्योतकान् चतुर्विधदानचित्रण श्री यांसावतारान् भूपतिसभाश्रगारहारान् चौधरी आसू तस्य भार्या रुपेण निर्जितकामकामनी गृहभारधरा-धारकी जिणचरणकमलसंसेवन चचरोवन कारणी दानशीलप्रियवदा साधू जिणदासही तस्य पुत्र विज्ञानकला सयुक्तम चिरंजीवि कालदासु भार्या मोलडही । साधु वालिया तृतीय पुत्र रत्नक्तकु डिडीरे पिंडपाण्डुरजसः पुण्डरीकखंडमंडितत्राहाडभांडमाण्डयान् निखिलगुणालंकृतशरीरान् सः चौधरी चूहडु । तस्य वनिता शीलतोयतरगिणी विनयवागेश्वरी साध्वीरणमलही इदं प्रद्युम्नचरित्रं वाई तोलही उपदेशेन साधू चौधरी आसू तस्य भार्या साध्वी जिणदासही लिखापित ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४३ इश्च प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३०-३४ अक्षर । प्रति प्राचीनः है अक्षरों का रंग धलमिल होने लग गया है ।

संवत् १७६७ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसंधे नंदात्राये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदात्राये अजमेर वास्तव्ये गुडेलवानान्वये अजमेरा गोत्रे सा भालाण तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन तृतीय साह ईमर । साह पट्टिराज भार्या पत्तिसिरी तत्पुत्र साह घणराज साह सुरजिन भार्या दानशीलवंती सुनगती । साह घणराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषा मध्ये साह सुरजन भार्या पतिवृता विगुणयुक्ता सुनगत इव शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्र लिखाप्य दशलाक्षणिक व्रतोद्यापनार्थं अजिका विनयश्रीवै दत्तं ।

प्रति न० ३. पत्र संख्या ६५. साहज ११।।५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति म ५०x५४ अक्षर । प्रति प्राचीन हे तथा पूर्ण हे ।

संवत्सरे १७१८ वर्षे शाके १३८३ पद्मवदमध्ये सवंधारिनाम्नि सवत्सरे उत्तरायने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे ६ पट्टम्या तयो शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धिनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री नंदात्राहपत्तने सुरत्राण अलावर्दान राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकोत्तिदेवास्तत् शिष्य मुनि नेत्रान्दिदेवा । तत् शिष्य ब्रह्म गाल्हा खण्डेल वाला-वये साह राऊ तद् भार्या साध्वी रावश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्मसी धर्मसी । साह छाजू तद् भार्या साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषा मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थं पुत्रपौत्रसल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इव प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाप्य ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्तं ।

२६. ब्राह्मवलिचरित्र ।

रचयिता महाकवि धनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २७२. साहज ६।।५३।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया और प्रति पक्ति मे ३३x३८ अक्षर । रचना संवत् १४५४ लिपि संवत् १५८६ ।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिमहणाह जिणपयजुयलु पणविधि रासियकलिमलु ।
पुणु पढमकामए वडो चरिउ, आहासमिक यमंगलु ॥

प्रारम्भ में दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदंसमज्जिण्णयवट्टणु,
धोमल्लएउ राउ पयपालउ,
तहि पुरवाडवसजायामल,
पुणु हुटराय मैट्टि जिणभत्तउ,

धसड चिउलु । पल्हण पुके पट्टणु ।
कुवलयमडलु सथलु व मालउ ।
अगणियपुडवपुरिसणिमलकुल ।
भोवईं गामे वयगुणजुत्तउ ।

सुहृद उ तहो रांदणु जायउ,
 तहो सुउ हुउ धरणालु धरायले,
 एतहिं तहि जिण तित्थणमंतउ,
 सिरिपहचन्दु महागणिपावणु,
 ण वाएसरि सरिरयणायरु,
 दिट्ठु गणीसें पयपणवंतउ,
 सुणिया दिट्ठउ हत्थु विणोए,
 मं नुदेमि नुहकयमच्छयकरु,
 सूरि वयणु सुणि मणु आंणदिउ,
 पटिए सत्थगुरु पुरउ अणालस,

गुरु सज्जणहं भुञ्जिण विक्खायउ ।
 परमपय पयपंकपरउ अत्ति ।
 महि भमंतु पत्तणपुरे पत्तउ ।
 बहु सीसाह सीहि उणविरावणु ।
 सुमयकणयसुपरिक्ख णणायरु ।
 चुट्टु धणवालु विवुह जणभत्तउ ।
 हो सिवियक्खणु मक्खुपसाएं ।
 महु सुह णिग्गउ घोसहिं अक्खरु ।
 विणए चरणजु अलुमहं वंदिउ ।
 हुअजससिद्धि सुकइ आणावस ।

घत्ता

पट्टणे खंभायव्वे, धारणयरि देवगिरि ।
 मिच्छामयविहुणतु गणि पत्तउ जोडणिपुरि ॥१॥

तहि भव्वहिं सुमोच्छउ वि हियउ,
 महमंदसाहि मणुरंजियउ,
 गुरु आयसें महं किउ गमणु,
 पुणु दिट्ठउ चन्दवाडु णयरु,
 णं णाय कणयकसवट्टपउ,
 उत्तंगु धवल सिरिकयकलसु,
 महंगंपिय लोपउ जिणभवणु,
 सिरि अरुहविंनु पुणु वंदियउ,
 हो क्रियोहेंसिं विणं गयइं,
 भो भो परमपय तुहुं सरणु,

सिरिरयणकिन्तिपट्टेणि हियउ ।
 विज्जहिं वाइय मउ भंजियउ ।
 सूरिपुरि वंदिउ रोमिजिणु ।
 णररयणायरु णं मयररु ।
 णं पुहइ रमणि सिरि सेहरउ ।
 तहिं जिणहरु णं वासहरजसु ।
 बहु समणालउणं समसरणु ।
 अप्पाणउं गरहिउ णंदियउ ।
 विहडंगइ किंसु हिं सगयइं ।
 महु णासउ जम्मजरामरणु ।

घत्ता

पुणु सुणिवरचरणणमसियइं, अच्छमि जा तहि एकक्खणु ।
 ता पत्तउ सिरिसंघाहिवइ, दिट्ठउ वासद्धरु सुअणु ॥ २ ॥
 आयववंस पण्णहिउडुपहु,
 तहो रांदणु भोकणु संजायउ,
 आसि पुरिसु सुपासद्धउ जसहरु ।
 संभरिराय मंति विक्खायउ ।

ततो मुउ सोमएउ सोमाएणु,
 तहो पेमरारिभञ्ज विक्रवाड्य,
 एयहि मत्त पुत्त सजाया,
 पढमु ताहृदय वल्ली सुरतरु,
 जो दिवहाडिय चाउ पसिद्धउ,
 पुणु वीयउ परवारि सहोयरु,
 तइवउ सुउ पल्हाउ सलक्खणु,
 पुणु तुरियउ महाराउ विमुद्धउ,
 पंचमु भामराउ मोहायरु,
 मत्तमु सयल वधुजण वल्लहु,
 एयहिं सत्तहिं सुण्हिं पसाहिउ,
 जो पढमउ रांणु वासाहरु,
 पेक्खे विणु सारग एरिदे,
 रञ्जधुराधरु शिअमाणजाणिवि.
 अपि विदेसु कोसुवणु परियणु.

कुणयगडदविदपंचायणु ।
 पिययमसीलगुणेहि विराइय ।
 रांजिणगिरए तव्व विक्रवाया ।
 सघाहिउ णामे वासद्धरु ।
 राट्टभजु शिवमतसामिद्धउ ।
 विणयकिउ हरिराउ मणोहरु ।
 मजायउ आणादिय सज्जणु ।
 गुणमडिय तणु हुउ जसलुद्धउ ।
 छट्टउ तणउ णाम रयणायरु ।
 सतणु णाम जाउ अइ दुल्लहु ।
 सोमएउ ण एयहिं जिणहिउ ।
 सयलकलाभउ ण छणससहैरु ॥
 वाहुवाणकुल कइरवचन्दे ।
 मात्तपयम्मिठावउ सम्माणिवि ।
 भुजइ रञ्जु सोक्खु शिच्चलमणु ।

धत्ता

सो सुअणु गुणायरु बुहविहियायरु, दुत्थियजणायवरुयतरु ।

जिणपयपकयमहुयरु सिरिवासद्धरु, जा अच्चइ तहिं दुरिय हरु ॥ ३ ॥

ता पेक्खिअवि पडिय धणावालें,
 भो सम्मत्त रयणरयणायर,
 विणयगुणालकिय शिम्मज्जर,
 करि वि पडट्ट भञ्जणु रजिउ,
 धणउं तुह गुरुभात्तिकयायर,
 जिणवरपायपउरहमहुयर,
 दुस्समहालपहाउगुरुक्कउ,
 दृज्जणपउरुलोउ अरुयायरु,
 असहाउहो जगिणोविणमएणुइं,
 धम्महीणु जणु जहिं जहिं गच्छइं,
 ते कज्जे धम्मायरु विज्जइं.
 इय धम्महो पहाउ उर बुट्टउ,

विहसि वि भणिउ, बुद्धिविसालें ।
 वासद्धरु हरिरायसहोयरु ।
 पडियजणमण रजणकोद्धरु ।
 जे तित्थयरगोत्त आविज्जउ ।
 मइसुरकिंति तरणिणि सायर ।
 सयल जोव रक्खणसुदयायर ।
 जिणवरधम्ममणिगजणुवंकउ ।
 विरलउ सज्जणु गुणिविहियायरु ।
 धम्मपहावे लव्वभउ उएणइ ।
 तहिं तहिं सम्मुह को विण पच्छइ ।
 धम्महीणु ण कयाविहविज्जइ ।
 शिसुणिवि वामाधर सतुट्टउ ।

अंतरवेद्मन्निभ धणरिद्धउ,
 वीरखाण्डिउप्पत्ति पवित्तउ,
 सूरसेणु णवइ तहो णंदणु,
 तहो पइवयपियपाणपियारो,
 दसदसारतहिं णंदणजाया,
 सायरविजउ पढमुउ विणीयउ,
 तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु,
 विजउणामु पंचमु सुह वद्धणु,
 सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु,
 सुउ अहिचंदुणवमु पुणु जाणहु,
 एयह लहुअ कौत्तिमहीवर,
 समुदविजउ सूरी पुरि थाप्पउ,
 तहो सुउ रोहिणेउ अग्गिंजणु,
 तहो संताण कोडिकुल लक्खइ,
 पुणु संभरि णरिंदु महिभुंजिय,
 आसवंमु चहुवाणु पुइइपहु,
 पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि,
 साहुणाम गोक्खुमंती तहु,
 हुउ संभरि णरिंदु महिवालउ,
 सोमदेउ तहो मांति मणोहरु,

तहिं काविट्टविसउ सुपसिद्धउ ।
 सूरीपुरु जणपरिपालतउ ।
 अंधयवट्टिराउ रिउमहणु ।
 णाम इइहा देवि भडारी ।
 वीरवत्तिंतहु अणविकखाया ।
 पुणअक्खोहुणाम हुउ वीयउ ।
 पुणु हिमवंतु तुंरिउ जणदुल्लहु ।
 छट्टउ अचलुरिद्ध संक्रदणु ।
 पुणु अट्टमउ तणुभउ पूरणु ।
 दहमउ सुउ वसुएउपमाणहु ।
 लावणं णिज्जिय अमरद्धर,
 चदवाहु वसुदेवहो अप्पिउ
 देवइणंदणु अणु जणद्धणु ।
 सजाया केवलि पच्चक्खइ ।
 जायववं सुवभव ते रजिय ।
 तहु मंतिउ जदुवणिउ जसरहु ।
 आसाउरि सुरिपय पकय अलि ।
 जिणवरचरणं भोरुह महुलिहु ।
 वरुहदेउ णाम पयपालउ ।
 सयलकला लंकिउ णं ससहरु ।

घत्ता

पुणु सारंगु णरिंदु अभयचन्दु तहो णंदणु ।
 तहोसुउ हुउ जयचंदु रामचंदु णामें पुणु ॥ १ ॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ,
 णियपहुरज्ज भाराददकंवरु,
 एकुजि परमप्पउ जो भवइ,
 जो तिकाल रयणत्तउ अंचइ,
 जो परमेट्टि पच आराइइ,

वासाहरुमंतिउ णीसकिउ ।
 विवुइविदतरु पोमणक्खठ ।
 वे ववहार सुद्धणयभावइ ।
 च णिउयरुइ कहवि ण मुच्चइ ।
 जो पंचगमतमहि साहइ ।

गिणु को वि जड खागहि सिचड,
उच्छु को पिजड सत्ये अखडड,
दुज्जण सुअण महावे तगरु,
अर्हातिट्टु दुज्जणु माविहडडं,
जह गो सीरु अररिमल व रे.
जह रामउ पडु वत्थु गिणारिक्कउ,
अहसो दोसु लेउ जो पेछु,

तो विणुमो कहु वत्तणु मुं चड ।
तो विणुसोमहु रत्तणु छडड ।
सूरु तवड ससहरु सायरकरु ।
जे हो तें सज्जणगुण पयडड ।
रात्रिए तुंगए दिणु सुसुमउ कतारे ।
तह रल सगें सु अणु पररिक्कउ ।
गिण्वारणतणु महु अरि कहि अच्छड ।

वत्ता

गुरू लहुअण सविअरय, सवणदिहियर विमलपह ।
वर पयत्य अरथगलिय, पुण लछिणसु कड कह ॥ ७ ॥

५७ नम पाठ—

चउविहसघतमुद्धरणु, वयणामय गीणिय विअसु ।
पहचन्दु मुकवु धणाहिवहा वासद्धराचयरतु जसु ॥

एय निरिअ हुवालिदेवचरिए सुहडएव तणय वुद्धणवाल विरइए सिरि वासद्धरणामकिए वाहुवलि-
अव गिण्वारण गमणो गाम अट्ट रवमो परिच्छेउ समत्तो ।

दिग्नाथोडारदारस्तुनविततयशो मडनस्याभयं ।
राउय लक्ष्मीनिनाप्य गुणमणिनिधये रामचन्द्राय वत्सा ॥
मारगजोशिपात्तार्पितर्मावत्रपदश्रोपतेन्याससिधो ।
व्याजावासाधरस्यग्धिरमकृतगुरू स्वर्गतोभ्येत्य पुण्यात् ॥ १ ॥
यावत्वाग मेखलात्रमुमती यावत्सुवर्णाचलः,
अवर्णागीकुचसक्तः अममित यावच्चतस्वाचित ।
सूयाचन्द्रमनौ च यावदभितो लोकप्रकाशोद्यतो,
तावन्नदनु पुत्रगौत्रसहितो वामाधरः शुद्धधीः ॥ २ ॥

५७ नम—

सिरिरोमिणहजिणपयजुयलु भक्तिए णविचि जागुत्तमु ।
तच्च सुवभवमिषा हेवहो भामम किपि कुलकम्भु ॥
जवृडीविभरहाधामतरि,
गिरिसरिसीमारामणिरतरि ।

सिरि वज्रसूरि गणिगुणगिहाणु,
 महसेण महमइ विउसमहिउ,
 रविसेणै पउमचरित्त वुत्त
 मुणि जडिअल जडत्तणिवारणत्थु,
 दिणयरसेणै कंदप्पचरिउ,
 जिणपासचरिउ अइसयवसे ण,
 अमियाराहण विरइय विचित्त,
 चदप्पह चरिउ मणोहिरामु,
 धणयत्तचरिउ चडवगसारु,
 मुणि सीहणादि सहत्थवासु,
 णवयारणेहु णरदैववुत्त,
 सिरिसिद्धसेण पत्रयणत्रिणोउ,
 गाविट्टु कइ टसणकुमारु,
 जयधवल सिद्धगुणमुण्णं भेउ,
 वर पउमचरिउ किउ सुकइ सेठि,

विरइउ महछहंसणपमाणु ।
 घणणाय सुजोयण चरिउ कहिउ ।
 जिणसेणै हरिवंसु वि पवित्तु ।
 णवरग चरिउ खंडणु पयत्थु ।
 वित्थरिउ माहिहि णवरसहं भरिउ ।
 विरइउ मुणि पुगव पउमसेण ।
 गणि अवंसेण भवदोसचत्त ।
 मुणि विट्ठुसेण किउ घम्मु धामु ।
 अवरेहिं विहिउ णाणापयारु ।
 अणुपेहा कइ सप्पणामु ।
 कइ अणगविहिउ वीरहोचरित्त ।
 जिणसेणै विरइउ आरिसेउ ।
 वह रयण सुमुदहो लद्धयारु ।
 सुयसालिहत्थ कइजीव देउ ।
 इय अन्नर जाय धरवलय वीढ ।

वृत्ता

चउमुहुं दोणु सयंभुकइ, पुष्पयंतु पुणु वीरु भणु ।
 ते णाणदुमणिउज्जोयकर, हउ दीवोवमुहाणु गुणु ॥ ६ ॥

त णिसुणिवि वासाहरु जंपड,
 जड मयकु किरणहिं धवलइ भुवि,
 जइ खयरउ गयणे गमु सज्जइ
 जड कप्पयरु अमियफलकप्पइ,
 नसु जे त्तिल मइ पसरु पवट्टइ,
 इय विमुण्णिंवा संघादिव वुत्तउ,
 तुम्ह भत्ति भारेण दायवर,
 पर दुज्जण भइं मणुथिउ कायरु,
 कुडिल्लु गमणु परछिइ णिहालउ,
 अह १ह गामिउ परदुह दरिसउ,
 गयरसु जडवाईव दुरामउ,

किं तुहं वुहचित्ताल्लु सपइ ।
 तोखज्जोउ ण छडइ णियछवि ।
 तोसिहंठि कि णियरुमु वज्जइ ।
 तो किं तरु लज्जइ णिय सपइ ।
 सो तेत्तिउ धरणिय ले पयट्टइ ।
 कइणाधणवालेण पउत्तउ ।
 विरयाम कामचरिउ गुणसायर ।
 खलहु ण छुट्टइ गयणिणि सायरु ।
 णयणायणु दुज्जोहु विसालउ ।
 णिट्ठु रू पिसुणु भुअंगम सेरिसउ ।
 दोसायरु रक्खसु वपलासउ ।

जो मिद्धत्त पंच अवगण्डं,
जो सत्तंगु रज्जु सुणि हालड,
दायारहु गुणसहरत्तड,
अट्टमूलगुणपालणतपरु,
अट्टसिद्धगुणगणसंभरण्डं,
णवविहपुणपत्तदाणायरु,
णवरमचरित सुण्डं वरकाण्डं,
एयारह अंगडं मणि डड्डं,
चारहसावय वय परिपालड,
चउदह कुलपक्खमु उवएसड,
चउदह मगण वित्थरु जोवड,

छक्कम्महि जो दिणिदिणिगम्मडं ।
सत्तनच्च सहहड रसालड ।
सत्तवसणे जो कहिनि णरत्तड ।
सहसणअट्टंगणयणधरु ।
अट्टदण्व पुज्जइ जिणवरण्डं ।
णवपयत्थ सुपरिक्खणणायरु ।
दहलक्खणधम्महि रड मण्डं ।
एयारह पहिमाउ णियड्डं ।
तेरहविहचरित्त सुणिहालड ।
चउदहविह पुण्वहि मणु वासड ।
चउदह पुरि सतण उज्जोवड ।

घत्ता

तहो वधउ रयणमीहु भणित्त, मजायमेरु सुपसिद्धउ ।
जिणविपड्डु रएवि पुणु, जिणवरगोत्तु णिवद्धउ ॥ २ ॥

चासद्धर पिययम वे घरिणित्त,
वे पक्खुज्जल पर ण मरालिय,
पोमकिय कुलसरणं पोमिण,
पडवय सोल सलिल मदाडिण,
उदयसिरी होमाविणयजुय,
उअरसिपि सुययण समुहभव,
पडमपुत्तु जसपालु गुणंगड,
हुउ जयपालु वियक्खणुवीयड,
तुरियड चउपालु सिरिमडरु,
छट्टउ पुणपालु पुणायरु,
अट्टमु रुवएउ रुवट्टउ,
भाइय भत्तिज्जय संजुत्तड,
जं हउं पत्थिउ पसमियगव्वे,
सिरि वाहुवत्ति चरित्त जं जाणित्तं,

परियण पोसण ण कुरु धरणित्त ।
सीलतरुहि ण वेत्थिल रसालिय ।
सुयणसिहहणिय णं जलहर भुण ।
तुत्थिय जण जणं णव सुहदाडिण ।
चउविह सघहो कप्पणहीडिय ।
संजायाकुलहरणं शुभव ।
रुवेण पक्खक्ख अणगड ।
पुणु रउपालु पसिद्धउ तीयड ।
पंचसु सुउं विहराज सुहंयरु ।
सत्तमु वाहडु णाम गुणायरु ।
एयडि अट्टसु अहि चिरु घहउ ।
णउउ वासाधरु गुण जुत्तड ।
चासाहरसघाहिवभव्वे ।
लक्खणअट्टुत्तकुणवियाणित्तं ।

वृत्त ।

लक्ष्मणमत्ता कुंदगणहीणहिउ ज भण्डिउ मई ।

त खमउ सयलु अवररहु वाएसरि सिवहंसगई ॥ ३ ॥

विक्रम एरिद अंकय समए,
पंचास वरिस त्रजअहियगणि,
साईणक्खत्ते परिद्वियइ,
सांसवासरे रासिमयकतुजे,
चउवगसहिउ एवरसभरिउ,
गुज्जरपुर वाडवसतिलउ,
तहो मणहर छाया गेहिणिया,
तहो उवरि जाउ बहुविणयजुई,
तहो विणिया तणुभव विउलगुण,
थरुअरुइ भम्भु जा माहवलय,
कणयदि जाम वसुहा अचलु,
जो पठउ पठावइ गुण भरिउ,
सताणसिद्धि विखरइतहो,
वाहुवलि सामिगुरुण संभरणु,

चउदहसयसवच्छरहं गए ।
वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि ।
वरसिद्धि जोगणामे विअइ ।
गोलगो मुत्ति सुक्केसवले ।
वाहुवलिदेव सिद्धउ चरिउ ।
सिरि सुहहु सेठि गुण गणणिलउ ।
[सुहडाएवी णामे भणिया ।
घणवालु विउसु णामेण हुई ।
सतोसुतहयहारउपुण ।
सायरजलु जा सुरसरिभिलिए ।
वासर होछट्टुच ताम कुलु ।
जो लिहइ लिहावइ वर चरिउ ।
मणवच्छिउ पूरइ सयलु सुहो ।
महुणासउ जम्म जराभरणु ।

वृत्त ।

जो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ ।

सो रिद्धिविद्धि संपय लहिवि, पछइ सिवपउ पावइ ॥ ४ ॥

अ मत्प्रभाचन्द्रपदप्रसादाद्वाप्त बुद्ध्या धनपालदक्षः ।

श्रीसाधु वासाधरनामधेयं स्वकाव्यसौधेयकलसीकरोति ।

इति वाहुवलि चरित्रं समाप्तं । शुभं भूयात् । सवत् १५८६ वर्षे वैशाखे सुदि ७ दिने बुधवासरे श्री मूलसधे वलाकारणै सरस्वतीगच्छे-नद्याम्नाये श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री-पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा श्री रतनश्रीतिशिष्येण अक्षरतनेन लिखापितम् ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. साइज १०x४। इच्छ । प्रारंभ के १३७. पृष्ठ नहीं है । शेष के पृष्ठ

शुद्ध और सुन्दर है ।

लोकक प्रशस्ति—

सवत् १५८४ वर्षे अश्विनवदि ६ बुधवामरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुंदकुदा-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदा-
म्नाये व्याघ्रेरत्नालान्वये ठोला गोत्रे सा नाथू भार्या सुनखत तत्पुत्राः सा, सहजा सा, रेडा सा, राणा सा,
साधौ, साधो भार्या त्रिपुरु, तयोः पुत्राः, सागुठा ऊदा, वीरसिंह, तेजा, राजा; डीडा भार्या मदना तयोः पुत्राः
पारस ऊदा भार्या अमरी वीरसिंह भार्या राजा एतेषां मध्ये सा, साधौ इद पुराणं लिखाप्य ब्र. रत्नाय स्तदन्तं ।

२७. भविष्यदत्तचरित्र ।

रचयिता कविवर घनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १६७. साइज १०×४। इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ
पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३३ । ३७ अक्षर ।

प्रागम्भिक पाठ—

जिणसासणसारु, णिद्धुअ पावकलकमलु ।

समत्त विसेसु णिसुणहु सुयपंचमिय फलु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

धक्कहवणिवंसे, मोए-सुरहो, समुभवहो ।

धणसिरिदेवितुएण निरइउ सरसइ संभवेण ॥ १ ॥

अहो लोयहो सुवपचमिनिहाणु,

दूरयरपणसिय पावरेणु,

फलु देइ जहिछिउ मल्लोइ,

इह जा सा, चुच्चइ भुवण संति,

णारणारिहो विग्घइ अवहरेइ,

णिव्वाहइ जोणियसिनि भरेयो,

सववास करइ जो सत्त सट्ठि

जइ भज्जइ अंतरि विग्घु होइ

इउजंतं चितिय सुहणिहाणु ॥

इह जा सा चुच्चइ कामवेणु ॥

चितामणि चुच्चइ तेण लोइ ॥

अहमोक्खहो सुह सोवाण पति ।

जो ज मग्गइ तहो तंजि देइ ।

सो पुण्णवंतु किं वित्थेरण ।

उज्जमणंतहो सुह तुडि पुट्ठि ।

तहो सहहाणे फलु तंजि तोइ ।

घत्ता

अहो कि बहु वायावित्थरेण एककवि चित्त महंतरेण ।

१ णिद्धुव २ सुव ३ समुभवेण ४ दुक्खइ ५ सहहाणि ।

अणुमोएं ताहें तिहुं संपणगुणंतरेण ॥

अरि उरि अडरावड दीहरद्धि
उज्जमिय ताए चिरु सजुएणां,
तहि किचिसेएण एामुज्जयाई,
तहो फलेण ताड तिणिएणविजणाडं.
पहिलड धणयत्तहो धणयदित्ति,
दिल्लड भवि पंऊय सिरि सरुव,
तियलिगुहणेवि विणिएणिसुतेय,
नइयएभविमत्त वि कणय तेउ,
चोत्यएभवि सुवपचमि फलेण,

धणयत्तहो गेहिणिए धणयत्तच्छि ।
भाविण धणमित्तं तहि सुएण ।
अणुमोडय वज्जो अरसुआएं ।
चउयड भविसिउलोगहो गयाई ।
उयरड विणिएणिवि धणमित्तु कित्ति ।
सुउ भविसयत्तु भविमाएरुव ।
पहचून रयण चूनाई देव ।
हुउ इडमई तेहें जि वि माणे देउ ।
णिदहु, कम्मु भाणायणलेण ।

यत्ता

णिसुएत पडतह परिचितंतहं अप्पाहिया ।

धणवालें तेण, पचमि पंचपयार किया ॥

उप धनपालकृतं पंचमी भविष्यत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति -

संवत् १५६५ माघमासे शुक्लपक्षे तियाँ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेषा राजाधिराज वल्लवाह
करमचद मोजावाड मव्ये लिख्यतं रामवास । श्री मूलसंधे नद्यान्नाये बलात्कर रगणे सरस्वती गच्छे श्री कुडकुडा
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तस्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तरट्टे भट्टारक श्री जनचन्द्रदेवास्तस्पट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेव स्तदान्नाये खंडेलवालालान्वये पटणा गोत्रे
सागानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केळ पुत्रास्त्रयः प्रथम साह सक्षण भार्या लाडो तयोः पुत्रा सह डाल
भार्या उट्टी तयोः पुत्रो राखो द्वितीय रामनाम । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय टेह भार्या टिहुसिर ।
द्वितीय साह हीग भार्या लपरु तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम दुग द्वितीय पवत तृतीय गोना डुगर भार्या धरमा
पुत्रो ही म० मा० चाचा द्वि० चोरान पखत भार्या पूना तयोः पुत्रो द्वो प्रथम सोडा द्वि० छजू । गोना भार्या
गगा तयोः पुत्र माधव । तृतीय मा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इदं शास्त्र लिखाप्य ज्ञानपालाय ब्रह्म
कोल्हाय वत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १४ । माडज १० x ४। इच्छ । प्रत्येत पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति
पक्षि में ३६।२० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

६ निगिद्वम ।

लेखक प्रशङ्गित—

संवत् १५८६ वर्षे मार्गशिरामे कृष्णपक्षे दशमे वृहस्पतिवासरे । अजमेरमह गढवास्तव्ये राव श्री जगमलराजप्रवर्त्तमाने श्री मृमसंधे नद्याम्नाये बल त्कारण्ये सरस्वतोगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभा-
चन्द्रदेवास्तत् शिष्यमहलाचार्यं श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये गोधा गं त्रे संघभाणधुरधर म० पारस तद्भार्या पौमिणि तयो पुत्राः प्र म जिनपूजा पुरंदर सं० फाल्हा द्वि० सा० स धृ तृतीय जिनापूजापुरंदर म० हामा चतुर्थ सं० काल्हा भार्या फल्हासिर्.....

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४०. साङ्ग ११×५ इञ्च । प्रति प्राचीन तथा जीण है । लिपि सं० १५८०.

लेखक प्रशास्ति—

संवत् १५८२ वर्षे श्रावणसुदी ११ रविवासरे कुरुजांगलदेशे श्रीपालवशुभस्थाने श्री डविराहिसाहि-
राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काण्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे उत्तमभाषाप्रवीणतपोनिधिः श्री माहवमनदेवास्तत्पट्टे
मिद्धांतजलमसुद्रः भट्टारक श्री उद्वरमेनदेवास्तत्पट्टे विवेककलाकमलिनीविकासनैकटिरनमणिः भट्टारक श्री देवसेन-
देवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधान भट्टारक श्री विमलमनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्ममनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
भावसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री महस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे लंकार श्री यशः
कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे दयात्रिचूडामणि भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादीभक्तुंभस्थलविदारणैकत्रैसिर् भट्टारक
श्री गुणभद्रसूरितस्य शिष्य चरित्रचूडामणिमहलाचार्यं मुनिक्षेमकीर्त्तिस्तदाम्नाये अंग्रोटकान्वये गर्गगोत्रे
वपेदेवास्तव्य पंचमीउद्वरणधीरश्रावकाचारदत्त माधुछाजू तद्भार्या साध्वी तस्य पुत्रास्त्रयः । प्रथमपुत्र साधु धी
द्वितीय पुत्र साधु पाल्हा, तृतीय पुत्र साधु लाडसु तद्भार्या साध्वीकल्हो तस्य पुत्र स्त्रयः प्रथमपुत्र साधुगोल्हे
तद्भार्या साध्वी धारी तस्य पुत्र चारि प्रथमपुत्र देवगुरुशास्त्रभक्त शास्त्रदानदायरु मावु पचाडण । साधु
गोल्हे द्वितीय पुत्र साधु रगामलु । तृतीय पुत्र साधु राज । चतुर्थ पुत्र साधु भोजराजु । साधु लाडम दुर्तिय पुत्र
पहितगुणविराजमान पहित हरियालु तद्भार्या शीलतोयतरगिणी विनयवागेश्वरी साध्वासरो । तस्य पुत्राः
त्रयः प्रथम पुत्र साधु जीवदु दुर्तियपुत्र साधु देई सुदा । तृतीय पुत्र साधु माणिकचदु । साधु लाडम तृतीय
पुत्रसाधु सिधराजु । तद्भार्या साध्वी सुनपा । पंचमी उद्वरणधीर साधुगोल्हे सुतु साधु पचाडण तेन इदं श्रुत-
पंचमीभविष्यदत्तशास्त्रं लिखापितं । पंचमीउद्वरणधीर श्रावकाचारदत्त चतुर्विधदानकल्पवृत्त साधु जगमल
उपकारेण ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११५. साङ्ग ११।।×४।। इञ्च । प्रति सुन्दर है । लिपि संवत् १५४० ।

लेखक प्रशास्ति—

संवत् १५४० वर्षे आसोज सुदी १२ शनिवासरे धनिष्ठा नक्षत्रे लिखितं हेमा । शुभं भवतु । श्री

मृत्तमंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री
 सुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरुपदेशात् मुनि श्री रत्नकीर्ति पठानार्थ खडेलवालजातीय साः
 लाना भार्या ललतादे सुत साह वीरम भार्या वील्हणदे भातृ परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रवन्नराजेन ज्ञान-
 चरणाकर्मजनार्थ तेत्वायित्ना वत् ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचयता ५० श्लोक । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११॥५५ इअ । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १० पक्तियां तथा तथा प्रति पंक्ति मे ३०×३७ अक्षर । रचना संवत् १२३०

मंगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइ सिवसुहकरणइ पणविवि णिम्मलगुणभरिउ ।
 आहात्तामि पविमल्लु सुअपंचमिफल्लु भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ मे दो हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणायर द्विपण,
 म हुरकुल गयण तमीहरेण,
 णारायण देह समुम्भवेण,
 मिरिवासुएव गुरुभायरेण,
 णीसेमवलक्खणालयएण,
 विणएण भसिउं जोडेवि पणी,
 इह दुलहु द्दोड जीवहं णरत्त,
 जड क्खन्न लहइ दड्ढेहो वसेण,
 तां विलउ जाइ गग्भेवि तेम,
 अइलहइ जम्मु ता बहु विहेहिं.

जिणधम्मकरण चक्कंठि एण ।
 विवुइयण सुयण मणवणहरेण ।
 मणवयणकायणिदियभवेण ।
 भवजलणिहि णिवडणकायरेण ।
 मडवर सुपट्टा णामालएण ।
 भसिए कइसिरिहरु मन्वप्पाणि ।
 णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।
 चउगइ भमंतु जिउ सहसरेण ।
 वायाहउ णहे मरयन्नु जेम ।
 रोयहिं पीहिज्जड दुहगिहेहिं ।

वत्ता

जड णिहय मायरि अय तामोयरि अन्नहरेड णियमणि अणिसु ।
 पयणण विहीणउ जायड वीणउं ता सो णवि जीवेइ सिसु ॥ २ ॥

हउं आयड मायड महमडपमंडं,
 क्खयइव वरल्लाए सयावि,
 जड एवहिं विरयमि णोवयारु,

सडं परिपालिउ मंधरगइए ।
 दुल्लहु रयणु व पुणएण पावि ।
 उण्णाडिय सिवसउ इलयवारु ।

ता कि भणु कह मइ जायएण,
एउ जाणिवि सुललिय पयहिं सत्थु.
महु तणिय माय णामेण जुत्तु,
व्रणिवइ भाविससयत्तहो चरित्त,
महुपुरउ समक्खहिं वपतेम,
तं णिसुणेविणु कइणा पउत्त,
जइ सुज्झ समच्छिउ णउ करेमि,
ता कि आयइ महु बुद्धे याइ,

जम्मण मह पीडा कारणेण ।
विरयहिं बुहयण मणहरु पसत्थु ।
पायडिय जिणेसर भाणय सुत्तु ।
पंचमि उववासहो फलु पावत्तु ।
पुव्वायरियहिं भासीयउ जेम ।
भो सुप्पट पइं वज्जरिउ जुत्त ।
हउं अज्जु कहव णिरु पंहहरेमि ।
कीरइ विउत्ताएं ससुद्धियाइ ।

घत्ता

कि बहुणा पुणु भणिएं लइ सुणु सावहाणु विरएवि मणु ।

भो सुप्पट महामइ जाणिय मबगइ ण गणमि हउ मणे पिसुणयणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एरणह विक्कम इच्चकाले,
वारहसय तरिसहिं परि णएहि,
फग्गुणामासम्म वलक्खपक्खे,
रविचारि समाणुउ एउ सत्थु,
भासिउ भविससयत्तहो च रेत्तु,
इह साहु पुरा सुपसिद्धु आसि,
जिणपायपऊरुह जुयदुरेहु,
वज्जल्लवयण विरयण छइल्लु,
ववहारभारपवइयणवंधु,
तहो तणिय धरिणि सियणाम हूअ,
तहें हाले णाम तरणुउ जाउ,
णिंदिय असार ससारु साहु,

पवहंतए सुहयारए विसाले ।
दुग्गुणिय पणरह वच्छर जु एहिं ।
दसमिहि दिणे तिमिरुक्ककरविवक्खे ।
जिह मइं परियाणुउ सुप्प सत्थु ।
पचमि उववासहो फलु पावत्तु ।
महियलु णामें गुणरयणरासि ।
अइ मंथरगइ णिज्जयसुरेहु ।
दिढयरकुसगतिक्खणमइल्लु ।
पियवयणहिं सम्माणिय सुबंधु ।
विणयाइं गुणामल रयणभूअ ।
सम्मत्त विहसण कलिय काउ ।
सुहि सुहयरु लोहव धरिणि णाहु ।

घत्ता

तहुं सुउ संजायउ जगि विक्खायउ साहु देवचन्दुकुवुवाणि ।

जिण धम्मासत्तउ गुरुयणभत्तउ णिम्मलपर गुणरयणखणि ॥ १ ॥

माहुर कुल णहयलज्जणससंकु,
बुहणियर दाणविहिं करणधुत्तु,

जिण भासिय धम्मे विमुक्कसंकु ।
णयमागणिरउ वज्जिय अजुत्तु ।

तहो माढी णामे वरिणि जाय,
कोयल इय सुहयर ललियवाणि,
तहो गन्धे समुपण्णर रवण्णु,
पडमउ परिखाणिय णाय मग्गु,
वीयउ णारायणु णयणित्तु,
णिम्मलयर जसलच्छो णिहणु,
मइवत्तु सत्तु पाविण्य पसंसु,
करुणातउ किरियावतु साहु.
तह रूप्यणि णामे जाय भवज,

णावइ लच्छी सयमेव आय ।
पविरइय कच्च जाणे वि जाणि ।
साहारणु सुउ णवकणयवण्णु ।
जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु ।
मणे परिखाणिय जिणभणिय सुत्तु ।
माहुगयणहयलसेय भाणु ।
जिणवर कह कय कण्णावत्तुसु ।
सुद्धासउ मयरहकव अगाहु ।
सिरिहरहो सिरिवजाणियसकज्ज ।

घत्ता

सउज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविसलसीलालंकरिया ।

वधवहं पियारी धीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया ॥ २ ॥

तहो पढसु सुउ पट्टणामे,
माणवरूउ लण्णिय लोयहो,
वीयउ वासुएउ सजायउ,
तज्जउ पुणु जसएउ पवुच्चउ,
लोहइ तुरिउ समासहि पियरहि,
पचसु लक्खण कलिउ सलक्खयणु,
पंचवि णं मणसिय हो सिलीसुह,
पंचवि मय मयगण पंचाणण,
ताहं मज्जे जो सुण्णु भायरु,
जिणपय पुज्जकरण उच्छुल्लउ,
जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ,

हुउ णं अप्पउ दरसउ कामे ।
धम्मपह वें माणिय भोयहो ।
वासुएउ जिह तिह विक्खायउ ।
जो णीमेसह वधुहु रुच्चइ ।
आवज्जिय णिम्मलगुण णियरहि ।
कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु ।
पंचवि वंधयण विरइयसुह ।
पंचवि पिसुण जणोइ भयाणण ।
वर वद्धतला णंदिय णहयरु ।
परियाणिय सत्थत्थर सुल्लउ ।
लीलागइ जिय पीडल पिल्लउ ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरु तिमिरतमीहरु णियजणणी णामंक्रियउ ।

अन्धत्येवि सिरिहरु कइगुणसिरिहरु पंचमि सत्थुकराविउ ॥ ३ ॥

सुण्णट तण्येय जाणणि जासुहमइ,
धम्मपसत्तु हें मज्जसामहो,
होउ मनाहि चोहि रयहारिणी,

तियरण विणिवारंय कुसमयरइ ।
गुरुयण भत्तहें रूप्पियि णामहो ।
अट्टम महि लच्छी सुहकारिणी ।

सुप्पट साहुहं वसु कम्मखउ,
मज्झुएउ एउ अण्णु समीहमि,
एणंदउ संघु चउत्तिवहु सुंदरु,
विलउ जंतु घणपहलुव दुज्जण,
एयहो मत्थहो संख पसाहिय,
जामं जउण अमरसरं सुरालय,
विजयायलं गरि ता स रसायर,
ताम मुण्हिदहिं एहु पढिज्जउ,
सुन्दरयरभायरहं विराइउ,
णियजणणीए समाणउं सुन्दरु,

होउ तहय अवरुवि दुक्खक्खउ ।
भवजलण्हि हि णिवडण णिरु वीहमि ।
णियजसपूण्हि गिरिवर कंदरु ।
विचरु एणंदंतु महोयले मज्जण ।
१५३०
पंचदहजिसयफुडुनीसाहिय ।
कुल्लगिरि तारा भयणघरायात्त ।
तिसर किरण दिणणयरय णायर ।
भवियणु लोउ सयलु नोहिज्जउ ।
कामकोहमच्छर अवराइउ ।
पुज्जाविहि त्रिभविय पुरुदरु ।

घत्ता

सम्मत्ता लंकिउ धम्मअसकिउ दाणविहाण विसत्तउ ।

सुप्पट्ट अहिणइउ जिणपयवदउ तत्रसरिहर मुण्हिभत्तउ ॥ ४ ॥

इय सिरिभविसयत्तचरिउ विवुहांसरिसुकइसिरिहर विरइए साहु णारायणभज्जा रूपिणणामकिए भविसयत्तणियाएण गमण भवतर कित्तणो णाम छट्टोपरिछेउ सम्मतो ।

२८. मदनपराजय ।

रचयिता ५० हरिदेव । भाषा प्राकृत । पृष्ठ सख्या २३. साइज १०x४। इच्छ । प्रत्येकपृष्ठ पर १२ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०x३५ अक्षर । प्रारम्भ के आठ पृष्ठ नहीं हैं ।

अन्तिम पाठ—

X

X

X

X

X

विसहसेणु मुण्हिवरु अच्छेसइ,
इय भणोत्रि गउ मोक्खहो जिणवरु,
अमुण्णतहं क्कहिं साहिउ,
जिणवरिद पयपंकयभंसलिं,
मयणपराजए ण विरइय कइ,

त चारित्त नयरु रक्खे सइ ।
विसहसेणु पालइ संजमभरु ।
मुण्हिवर तं खमतु ऊणाहिउ ।
नरविज्जाहर गणहरकुसलिं ।
हरएत्रिरंति विवुहयणसह ।

घत्ता

गुणदोसपयाउ अक्खिउ भाउ महुल्लेण विरइय कइ ।

५. वयस्यपियारी हरिमज्जोरी नंदरु चउविहसघई ॥

इय मयस्यगत्रयचरिण हरिएत्रड द्विरडए मयस्यपायपराजय नामेहुं उवजउ परिच्छेउ सम्मतो ।

लेखन प्रशान्ति—

नवन १७७६ वर्षे कार्तिक मूढी १३ श्री मूलसंघे ब्रह्मास्कारगणे मरस्वती गच्छे नंधाम्नाये कुटुंबुता-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवाभरसदृभट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विनचन्द्रदेवास्तरे ट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाभरान्नाये खंडेलवालान्वये गगनाल गोत्रे सा डाघर तस्य भार्या माल्ही तयोः पुत्रा
नयः ना दूदा मा भोल्ह मा हुंगर । ना दूदा भार्या चाहू तयोः पुत्रौ सा० रामल्ले द्विनोय मा० चोखा साह
रगुसत माया जिगुसो । सा चोखा भाया उवा । सा दूदाएयेन लिखापितं कम्मं च्यानिमित्तं ।

२६. मृगांकलोखाचरित्र ।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदाम । भाषा अश्रंश । पत्र सख्या ७४. साइज १०॥ x ५ इच्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर १६ पंक्त्या तथा प्रति पक्ति मे ३२x३६ अक्षर । प्रति स्पष्ट है । मगलाचरण करने के पहिले लिपिकार
ने भट्टारक माहेन्द्रमन को समस्कार किया है । बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये हैं । रचना
नवन एव लिपि संवत् १७०० ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है ।

प्रशान्ति पाठ—

पर्यात्रि विजयारीं शोणगहीं तिहुयणवडरिसगइजई ।

शिल्लवमविसअर्थ मीनपमत्य भणमिह्हाससिलेहसई ॥

अन्दिन पाठ तथा प्रशान्ति—

बोहा

ममिलेहा शिवजत सम वारड संमनसु माह ।

उम्मणमगण जलजला शण सुयणुं भवतार ॥१॥

हरिनगि तेषु शिवपुर गयड, मोवागि सागर चन्द्र ।

ममिलेहा मुरग्रु मई तजि तिय तणु अनिलिहु ॥२॥

कहि शरभड गिरजण पद, पावसि मुदर सोड ।

कत्रि लु भगौतीदाम कहि पुणु भव भमणुं ए होई ॥३॥

धीरु उटा समार महि मोलि मरहि सव काज ।

उह भवि परभाव लुह लहई आमि भणहि मुखिराज ॥४॥

कट्टामवसु माहुरगच्छए,

जिणवागो पुवंग मयाधरु,

पुफ्करगणि गिम्मल वयसच्छए ।

अवडएणउ खावड जणिगणहक ।

भान्वयत्तमत्तद्वद् श्याणदिवान्तरु,
 तासु मीम गुणचष्ट जसोद्वियत्,
 चउनिष्टमंघ मदाधुर धारणु,
 भम्भरिसु सभगुण्ण ममन्वत्,
 श्यामि सयल ससि सत्थगालालत्,
 भम्भामिय वरि सण्णसु पगोदरो,
 वर जस पमर पमाद्विय मद्वियलु,
 ३ दूरत्त महिधाल जागिज्जत्,
 तासु मीमि यत्त चरिउ पयामिउ,
 मलि पदाउ अपाण्ण जम किन्तण्ण,
 लिहत्त लिहाउत्त आद्विण्णत्त गगो,
 अगुण्णत्ते शिरु जुत्त अजुत्तत्,
 तं रामकरत्त मत्तद्वियया,
 मील चरित्त विचित्त पियारत्त,
 होण्ण अद्विउ किरवण्ण पियारण्ण,

रिमि जसोकित्ति गुण्ण तवमायण्ण ।
 परवोद्विय भयज्जुहमि गाद्वियत् ।
 दुसद्वनयण्ण सुत्त निधारण्ण ।
 गुण्णमसिपट्टि सीसु संभूवत् ।
 जिण्ण द्रिमावत्त सट्टसु मगलत्त ।
 तासु पट्ट मत्त भार धुगघरो ।
 श्यायम महत्तव पराज्जिय णद्वियलु ।
 माद्विद्वन्नेण्ण त्रिहाण्णो गिज्जत् ।
 भगवत्तद्वामे श्याण्णत्त भासत् ।
 सगिल्लेहा चरित्त सरत्तण्ण ।
 मो सुग्गरपत्त लद्वत्त मण्णोदरो ।
 लत्तत्तण्ण व्णत्तु होण्ण जं वुत्तत् ।
 इत्तं अद्विद्व गग्गिद्व सुसेविया ।
 पण्ण वुत्तसोद्वि फरत्तुं गुण्ण सार ।
 ठाण्ण ठद्विज्जत्त परत्त वयारण्ण ।

घत्ता

सगवत्तमय संवदतीतदां, विक्कमराए महत्तण्ण ।
 अगद्वण्ण मिय पंचमा मोमदिणे, पुण्ण ठियत्त अविच्यण्ण ॥

दोहा

चरिउ मत्तंत्त लोद्विचिक्क श्णद्वण्ण, जाग मग्गिण रवि ससि दरो ।
 मंगलयारु हवत्त जग्गि मे इण्ण, भम्भयसग्गहिद्व करो ॥

घत्ता

रत्तत्त कोटि दिमन्ने, जिण्णहरि वर वीर वत्तुमाण्णस्स ।
 तत्तवचिउ वग्गधारो, जोई दासो विवभयारीत्त ॥
 भागवत्त महुरीत्ता वत्तित्तव्वर वत्तित्तमाद्वणाविण्ण ।
 गिच्चुत्तसु गंगारामो तत्तथठिउ जिण्णहरसु महत्ततो ॥

दोहा

सगिल्लेहा सुग्गवधुजे अद्विउ कद्वियण्णोअसि ।

एदहु बुहयण जे सुयसायर
एदउ जो सो लिहइ लिहावइ
एदउ मो यारउ सपनीणउ,
एदउ सिरिहरि सिधु संवाहिउ,
जसु सताणि कई सु अमच्छरु,
जेण चरिउ मेहेसर केरउ,

सत्थ अत्थ पवियारण णायर ।
एदउ जो सो पढइ पढावइ ।
विज्जाकव्वरमायणलाणउ ।
देवराज सुउ पवरगुणाहिउ ।
रइधू सजापउ गुण कोच्छेरु ।
विरयउ बुहमण सुक्खजरोर ।

घत्ता

जं मइ हीणाहिउ किं पि विखाहिउ, तं बुहं सुय सोहंतु णिरु ।
कुपयं फेडेपिणु भव्णु ठवेपिणु, महिवित्थारहु सत्थचिरु ॥ १ ॥

जयजद्धससु,
अहुणा भणेमि
इह अइरवालि,
एडिलहि गोत्ति,
देदाहि दाणु,
तहु सुउ णिरुत्तु
तहु अंगजाउ,
पडत्तु पवित्तु,
तणुहु वितासु
सइ पुण्णपालु.
चाहडिय पत्ति,
तहि गन्धिजाय,
चदक्कतेय,
छा जागग्घि,
तहु सुउ अवाहु,

दयारवंसु ।
वायडु कुणेमि ।
अण्णइ गुणालि ।
पयडियंसु जुत्ति ।
हुउ चिरुपहाणु ।
महिया पवित्तु ।
जायउ अपाउ ।
त्रिण घम्मत्तित्तु ।
कुलहर पयासु ।
णामे गुणालु ।
तहु सील थत्ति ।
सुयविण्णभाय ।
वडिडय विवेय ।
बुहयणमण्णिण्ड ।
नाथू जि साहु ।

घत्ता

णाथू माहहु सुयविण्णव ललिय भुया, भाभणु वीधा णामहुय ।
ते एदहु भूयन्ति णाण्णसियकलि. धणकणपुत्त पडत्तजुया ॥ २ ॥

पुण्णपाल माहहु सुउ वीयउ,

परउवयार त्रिहाण विणीयउ ।

देवसत्त्वगुरुभक्तिकथायक,
 वील्हाही पिय यम तहु सारी,
 ताहि तखुम्भउ बुहमणरंजणु,
 जिणु समचाणु भक्ति अणु रायउ,
 तहु भज्जा धणसिग्गि गुणवती.
 णदण चारि ताहि उरि जाया,
 चारि दाण ण पायड भूयलि.
 ताह पढमु गुणमाणरयणायरु,
 रतणपाल ही तासु जि भामिणि,
 च्छरणाहि दाणु हुउ णदणु.
 तहु पह जिणि जिजिणिउ मयको.
 सुरतरु णं दुत्थियजणपोसणु
 मपणपालही तासु जि भज्जा,
 सोणपालु ताहि णदणु णदउ,

पजणसाहु णामें णियमायरु ।
 सीलाहरण विहूसणधारी ।
 जाचय जण दालिह विहंजणु ।
 खेऊमाहु णाम त्रिकखायड ।
 चन्दहु रोहिणी त्रिपहवती ।
 चरिपाण ण जीव सहाय ।
 चारि वि दिग्गय णं जस णिम्मलि ।
 सहसराजु कुलकमल दिवायरु ।
 णियभत्तारचित्त अणुगामिणि ।
 परिचणजण चित्तह आणदणु ।
 वीयउ पहराजे गय सका ।
 परउवयारसारसुपयासणु ।
 दाणपूजाविहि करणमणोच्चा ।
 णिच्च जिणिदसूरपिय वंदउ ।

घत्ता

पुण सुउ तहु तीयउ अउव विणीयउ जिणसासणरहधुरधणु ।
 णपतिरंयणोवमु पालियकुलम्भु दुत्थिय जणदुहभरहरणु ॥

रइपति भामिणि,
 कोढे णामा,
 सुउ खेमंकरु,
 तुरिउ वि पुत्तो,
 साहु हु भामिउ,
 विज्जामदरु,
 बुह चूडामणि,
 होल् पायडु,
 तासु वलत्ता,
 भणिय सरासड.
 मसि व फलालउ.
 उहु परिचण धुउ,

कुलगिहसामिणि ।
 पूरियकामा ।
 सुक्खरिवक्खरु ।
 गुणगणजुत्तो ।
 पवरजसासिउ ।
 वंसहु चदिरु ।
 णिम्मच्छरु गुणि ।
 सयलक्लापड्ड ।
 सररुहवत्ता ।
 विणउं पयासड ।
 चणपालु हुउ ।

एदउ सुक्खे,	मयलु पयक्खे ।
जा ससिडिणयरू	जा म घराधरू ।
जा दिवि ईदी,	जा म अहिंदो ।
ता खेम म्खो,	एदउ दक्खो ।
मज्झु सहाई,	गुण अणुगई ।
जासु णिमित्तो,	येहा सत्तो ।
विरडउ कव्वो।	इहु भइ भव्वो ।

घत्ता

तं सुडरू पड्ढवउ एहु महि पाढि जंतउ बुहयणहि ।

सिरि मेहेसर गणहर चरिउ णिव्वरू पूरिउ वहु गुणहि ।।

इय मेहेसरचरिण आडपुराणस्स अणुसरिए सिरिपंडियरडधू विरडण सिरि महाभव्व खेममीहसाहु
णामंकिए गिसहेसर णिव्वानगमण भरहचक्राहिवड मेहेसरणिव्वानगमणो वणणं अणोविसगमणं
णामतेरहमोसंधीपरिछेउ मम्मत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६१६ वर्षे माघ वृदि ११ बुधवारे कुरुजांगल-
देश श्री रुहितगगढदुर्गे पातिसाहि हकवरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासधे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभापा
प्रवीण तपोनिर्माः भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे सरस्वतीश्रगारहार
तेरहविधिचारित्रचूडामणि गुणभद्रसूरिदेवास्तत्पट्टे अनेकतर्कव्याकरणखंडमाहि यनाटकलहरांतरगान्
अनेकआगमाध्यात्मरसखतारविराजामानान् परमपूज्य भट्टारक श्री भानकीर्त्तिसूरयः—।

प्रति न० २, पत्र संख्या १७३, साइज ६।।x४ इच्छ । प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं है । शेष पत्र सुन्दर
और स्पष्ट है । लिपि संवत् १५६६ ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ वृदि ५ भौम दिने उत्तरापाढ
नक्षत्रे श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवाः
तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादाकुंभविदारणैरुकेसरी भट्टारक श्री गुणभद्रदेवाः तेषाम्नाये अप्रोत-
कान्वये ।

३१. यशोधरचरित्र ।

रचयिता महाकावि पृष्पदत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६५, साइज ११।।x४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ
पर १० पक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६ । ४० अक्षर । प्र त प्राचीन तथा शुद्ध है ।

प्रारम्भिक पाठ—

निहृत्प्रणामिकृतहो अइमयवतहो चरहतहो हयवम्महहो ।
पण्वेवि परमेष्ठिहो पविमनदिष्टिहो चरणजुअल एणमयमहहो ॥

जं, डेलगोत्तणहदिणयरसु,
एणराहो नंदि रिणवमंतु मनु,
चिंतड इह धणणारीकह प,
अइ यम्मणवन्दी का वि कर्हाम.
पचनु पचसु पंचसु महीसु,
धुउ पचसु वमम विरा सु नाड,
गल विअवर पढमिल्लु देउ.
एहदेउ मारिगयादि राउ.

वहइणदिधरमहयरासु ।
अहिमणमेरु अइ पुफ्यतु ।
पज्जुत्तउ कयहुविक्रयपहाए ।
कहिआड जाइ सिवसोक्खु लहमि ।
उपज्जउ धम्मु दया महीसु ।
अप्विअखड पुणु पुणु वि होइ ।
इअ धम्मवाइ मियवमहकेउ ।
आणणिय चउ सुरवर णिकाउ ।

धृत्ता

अन्तिम पाठ—

यत्त सुद्धेणं जणु यणडाणे, पइ पोमिउ तुहु खत्तधरु ।
तवचरणायिहाणेणं अन्नणायणं, तुहु परमापउ परमपरु ।

दिउ उअरहे जन्म कइमउ एउ संवेतर ।

नदा भववहु णामु पायडमि पयडउ यर ॥ २६ ॥

चिरु पट्टण छगे साहु साहु, नदी सुउ देवा गुणवंतु साहु ।

ततो तणुरुहु वीमलु णाम ताहु, वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु ॥

सोयानु सुण्णणुणुणुणुणुणुणु, इअकडय चितड चित्त ताहु ।

हा पडिअठअरु अइपुत्त, अवारियवन्तहपरममित्त ॥

नउ पुफ्यति जमहरचरित्त, किउ सुद्धु महलकवणविचित्तु ।

पेमादि नंदि राउलु कउलु अउलु, अमहरविवाहु नइ जणियचोउलु ॥

ययकह भवमणभयनराइ, महु वधिउ करहि णिरंतराड ।

ता साहु सम हिउ कियउ चउलु राउलुविवाहु भवमण भउवु ॥

वन्नणणिउं पुगउ हवेइ जाम, सलुद्धउ वीमलु साहु ताम ।

जोडाणपुरवानि णिवसतु मिट्टु, माहुदि वरे सुत्थियणहु धुट्टु ॥

पणसट्टि महिय तेरहसयाई, णिवविकरुम सवद्धर गयाड ।

१ यह मूल ग्रन्थ का पाठ नहीं है । अन्य रचना के अर्थात् जोडा हुआ है ।

वइमाहपहिल्लइ पक्खि वीय, रचिवारि सर्मास्थिउ मिहमतीय ॥
 विह्वल्लुवधि कइ कियउ जं जि, पद्धहियवांधि मइ रइउ तं जि ।
 गवन्ने कएहयणदणेण, आयइ भवाइं किय थिरमणेण ॥
 महु दोसु ए दिज्जइ पुन्नि कइउ, कइ वच्छराइं त सुत्तु लइउ ।

वृत्ता

जो जीवदयावरुं शिण्णहरणकरु, वंभयारि हयं-जर-मरणु ।
 सो माण शिण्णसुंभेणु धम्मशिरंजणु, पुण्णयंतु जिण्णुं महु सरणु ॥

पात्राणि सुभणि मुद्धवभाण,
 कासवगोत्तं केववपुत्तं,

उत्तरपण्णो मामलवण्णो ।
 जिण्णपयभत्तं धम्मासत्तं ।

वयसजुत्तं,
 वियल्लियसंकि,
 पहंसियत्तुंदि,
 रजियवुइसइ,
 जो आमण्णइं,
 लिहइ लिहावइ,
 जो मण्ण भावइ,
 बहुणिय वण्णय,
 जण वयणीरसि,
 कइण्णदायरि,
 पडिय क्वालइं,
 वहुण्णकालइं,
 पत्ररागरिं,
 सुण्णिह चेलिं,
 महुं उवयारिउ,
 गुण भत्तिल्लउ,
 होउ चिराउसु,
 तिप्पइ मेइणि,

उत्तमसत्तं ।
 अहिमारोकिं ।
 कइण्णं खंहे ।
 कयलसहरकय ।
 चंगडमण्णइं ।
 पढइ पढावइ ।
 सो एणु पावइ ।
 सासयसपय ।
 दुरीयमलीमास ।
 दूसाहिदुहपरि ।
 शारककालइं ।
 अइल्लुककालइं ।
 सरसाहारिं ।
 चरत्तवोत्तिं ।
 पुण्णिण पेरिउ ।
 शण्णु महल्लउ ।
 वरिसउ पाउसु ।
 धण्णकण्णदाइणि ।

१ यहाँ से मूलग्रन्थकार की प्रति का पाठ प्रारम्भ-होता है ।

वितसउ गोमिणि,
 धुम्भउ मदलु,
 सति विद्यभउ,
 धम्मच्छाहें,
 सुहु सुंदउ पय,
 जय जय जिणवर,
 विमलसु केवलु,
 महु उप्पज्जउ,
 मइं अमुणातिं,
 जं हीणादिउ,

एच्चउ कामिणि ।
 पसरउ मंगलु ।
 दुक्खणि सुंभउ ।
 सहु एरण्हें ।
 जय परमप्पय ।
 जय भवमयहर
 एणु ममुज्जलु ।
 एत्तिउ दिज्जउ ।
 कवु करंति ।
 काइं मि साहिउ ।

घत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, णिहयसयल सदेहदुह ।
 महु खमउ भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवणयरुह ॥

इय जमहरमहारायचरिए महामहएणणएणहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमरि
 देवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अणोविसगागमणं एणम वउत्थो परिछेउ सम्मतो ।

सवत् १६१२ वर्षे आभोज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे शुक्रवारे अश्लेखानक्षत्रे तक्षकगढमहोदुर्ये
 मज्जारजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने अ आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंधे नंघाम्नाये बलात्कारगणे
 मरुवतीगच्छं श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक
 श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्ये श्रीधमंचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्ये
 श्रीललितकीर्तिदेवास्तदाग्नाये रण्डेलवालान्वये छावडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः
 प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना । प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि०
 दूलह भार्या दूलइदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० श्रीपाल । प्रथम सा० पोय
 भार्या पंसरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण । प्र० सा० सुरत्राण भार्या सुरत्राणदे ।
 द्वि० सा० येभारहाये द्वं प्रथम थेल्हाश्री द्वितीय कौतगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डूंगरसी द्वि० चि० भेला, तृतीय
 सा० तोल्हा । प्र० सा० डूगर भार्या दाड्यौदे । तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ
 द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास । तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम द्योसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र०
 सा० सरवण द्वि० सा० ईसर । प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर
 भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या वाली एतेपा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इद यशोधरचरित्रं लिखाय
 सोलहमारण्यत्रतोद्यापनार्थं मडलाचार्य श्रीललितकीर्त्तये दत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ८६. साइज १०x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६ । ३२ अक्षर ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७५ वर्षे मार्गसिर सुदी ४ शुक्रवारेऽपुण्यनक्षत्रेऽश्रीमूलसंधे नक्षाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सघभारधुरघर सघइ वीढा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र सं० तेजा तस्य भार्या लोचमदे तत्पुत्र दूलह । द्वितीय पुत्र श्रीपाल । साह दूलइ तस्य भार्या दूलहदे तत्पुत्र चोखा द्वितीय आखा । चोखा भार्या चादरोद । साह श्रीपाल तस्य भार्या सरसति तत्पुत्र होला द्वितीय लाला तृतीय पुत्र बाला एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं यशोधरचरित्रं वाई पावती लिखायितं कम्मक्षय नामत्तं श्री प्रभाचन्द्र योग्य दातव्यं ।

प्रति नं० ३ । पृष्ठ संख्या ७३. साइज ११x४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३२ । ३६ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

संवत् १६१० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पष्ट्यातिथौ सोमवारे स्वाति नक्षत्रेत्तच्छकगढमहादुर्गे श्री आदिनाथचेत्यालये पातिसाह श्रीसलेमसाहाज्यप्रवर्त्तमाने रावश्रीरामचन्द्र प्रतापे श्री मूलसंधे नद्यम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्ये श्री धर्मकीर्ति-देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा लोहर तद्भार्या शीला तत्पुत्राश्चतयः प्रथम सा० गोइदं द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० मोकल । सा० गोइदं भार्या सोठी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० पासा द्वितीय सा० आसा तृतीय सा० आल्हा चतुर्थं सा० पचाइण । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० नेमा, द्वि० चि० खेमा । सा० आल्हा भार्ये द्वे प्रथमा नौजू द्वितीया सुहागदे तत्पुत्राश्चतयः प्रथम मीहातत् भार्या सफलादे द्वितीय चि० हेमा तृतीय चि० धोनह । सा० पचाइण भार्या गूजर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० वरदास द्वि चि० गणा । द्वि० सा० दामा तद् भार्या चांदो तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम वोहिथ द्वितीय सा० बाला । सा० वोहिथ भार्या बालादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सुरत्राण द्वि० सा० साधू । सा० सुरत्राण भार्ये सुरत्राणदे द्वि० सोभागदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सारंग द्वि० चि० मोधव तृत य सा० मोकल भार्ये द्वे प्रथम भार्या मुक्तादे द्वि० लाडी तत्पुत्र सा० कुंभा तद्भार्या कौत्तिगदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० त्राणा द्वि० चि० पदमसी एतेषां मध्ये इदं शास्त्र श्री ललित-कीर्त्तये घटायितं ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या ६४ साइज १०x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३० । ३४ अक्षर । प्रति शुद्ध और सुन्दर है ।

मन्वत १५०० वर्षे आमोज्ज सुवी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री यथानामनगरे तत्पार्श्वे निकराव द
 शुभस्थाने सुलितान माहि इन्द्राहिमराज्यप्रवक्तमाने श्री मूलसधे वल त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्डकुन्दाचा-
 चान्वये भट्टारक श्रीपद्मानन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
 प्रथाचलदिनमाग पट्टर्तारिऋचूडामाणि वादिमदद्विपनिह विवुधवादिमददलनवादिदकंदकुहाल सकलजीव
 षडुधप्रतिपौषण भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य तर्कक व्यकरणकुंडोलंकारसाहित्यसिद्धांतज्योतिषवै दक
 नगीत शास्त्रारगन जिनकर्मिण सुदृग मधनतत्र चषपदाधे पट्टद्वयपचारित्काय अध्यात्मप्रथसमुद्रमध्यमहारल-
 न्दानिर्गन्धार मीतज्ञानवागर संपूर्णसादशप्रतिमापारपालक श्री प्रभाचन्द्र गुरुश्यामिचरणस्मरणेण ह्यपित-
 ित्तदेशप्रति तिसत्रीभूत ब्रह्म नीडा तदाम्नाये लंडेलवालात्रने परमभावक सा-क्रिता तस्य भार्या मीता तयोः
 पुत्राभ्यः । प्रथम मा० देवृ तस्य भार्या राणी । द्वितीय पुत्र मा० नरसिंधु भार्या पामणिः तृतीयः पुत्र सा
 धर्मनी भार्या राणा देवृ पुत्र सा दोदू तस्य भार्या मन्त्री तपोत्पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र सा. धरमू भार्या देवल ।
 द्वितीय पुत्र सा० दाना तस्य भार्या सुहो । तृतीय साह । चतुर्थ पुत्र गजपालु एतेषां मध्ये साह दोदू इत्
 यशोधरशास्त्र लिखाण्य र्मसंलयनिसित्तं ब्रह्मवीटाय वत्त ।

३० रत्नदरपट्ट शास्त्र ।

रत्नदर श्री पतिताचार्य भिषट । भाषा अषष्टांश । पत्र संख्या १४५. साहज ११×४५। इच्छ । प्रत्येक
 पृष्ठ पर ११ पात्र्या तदा प्रति पत्त मे ४० । ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी है । अन्तिमापुष्प
 नरी है । रचना वर्ष ११०० गिपि संवत् १६४०।

मगलाचरण—

सो जयत इयस्मि जगणे, पढमो पढमं पयामिउ जेण ।
 कुण्डमु पटंताणु दिग कालवणा धम्मो ॥ १ ॥
 सो जयत मतिणाणो, विग्यसहमाइ णाम सिस्सेण ।
 जम्माउठथिउण, पावलड ईदिया सिद्धी ॥ २ ॥
 जयत म्पिरीरडो, धम्मलंको अक्खव शिरवारणो ।
 गिग्गमनछेजलजोएहा उज्जाउय मयल भुवण यत्तो ॥ ३ ॥
 म्पिद्धिद्धि जयवुद्धि, तुद्धि पुद्धि पीयकर ।
 म्पिद्ध सस्व जयतु, चव्वीसयि तित्यकर ॥ ४ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने आचार्यों का उभ प्रकार स्मरण किया है—

पणवेपिणु जिणवयगुग्गयाहे, विमलई पयाई सुयदेवयाहे ।
 १ अणवणो ।

दसणकहरयणु करडणामु,
एककेव रूपहाणु महामडल्ल,
हरिणदि मुणिदु ममंतभद्,
मुणिवड कुलभूसणु पायपुज,
वरसेणु महामड वीरसेणु,
गुणभदरुणं कुर उच्छमल्लु,
चउमुहु चउमुहु वपासदभाइ,
तह पुफयतु णिमुक्कदासु,
मिरिहरिसिंकाभियां माडैसां,
हीणोहिं मेइ संपये आरिसिंहे,
तेह विहु जिणिये पयमेत्तिआए,

आहाममि कवु मणोहिरसु ।
इत्थत्थि अण्येयकई छइल्ल ।
अकलकुएउ परमयविमद् ।
तह विज्जाणदि अणतविज्जु ।
जिणसेणु कुरोहि विहंगु सेणु ।
सिरिसोमएउ परसमयमल्लु ।
कडराय सयंभु मयंसु णाड ।
व'एणउज्ज किं सुयएवकोसु ।
अवरं वि को गणीं कडसंकारि ।
किं कीरडं तेहि अंभोहिरि सेहि ।
लं कं कं मे किं वि णिये सत्तिव एं ।

अन्तिम पाठ--

सम्पत्तसोलसजमतेवेणं छिण्णविणारिणिगु असुहं ।
मग्गु गेयउ सिरं चेटुरवि, लं ववि जत्थ महेते सुहं ॥

इय मिरिचन्दमुणिये हेए पयोडियंको उहलसए सोदणभ व'वत्तए परिओसियवुहेचित्तए । दसणकह रय-
॥ ऋडए मिद्धत्तपओहितेरेहेए कोहोडे केमायेविहंडए सत्थम्मिमहोणुणंसंडए मयेणगेडे तुरय रुहाणय उदिदो-
दयरायादाणपव्वयणीं मेग्गोमैणं णाम एकेवोसिमो सवि परिच्छेउ ससत्तो ।

प्रशास्त्र--

परमारद्धतमहत्त गुणउणुणं ।
देसीगणु पहाणु गुणगणुहक ।
तत्र पहाव त्रिभाविच वासउ ।
भव्वमणो णालिणाणदिशोरु ।
तासु सासु पण्डय चूहामणि ।
पोलतमिये सुह पायसरोरुहु ।
वरजस पसर पछाहिय म्हाियल्लु ।
चउविहसघमहाधुरधारणु ।
धम्मुवरिसि रुवे जसरुवउ ।
तासुवि परवाइय मय भंजणु ।

कुदाकु दाडरियहो अणुणुं ॥
अवडणुणउं एा ड मडं मणःरु ।
धम्मज्जाणवि णिहय पावामउ ॥
सिरि कत्तिनिसुवित्तिसुणीसरु ॥
सिरिगंगेय पसुहं पउरावाण ॥
मुणियउदुलिया मय गयण सुडारुहु ॥
णिप्रमहत्तपरिणिज्जियणयल्लु ॥
दुसहकाम सेरघोर णावारणु ॥
सिरिसुय कत्तिणासुसंभूयउ ॥
णाणावुहयणणिर वीरजणु ॥

१ सिरिचन्दकाम २ अणुणुं ।

चाण्डालोद्दरयणायणायण ।
 इदिय च नल मय्य पचाडिउ ।
 मि रचदुनल उमु सजायउ ।

चाउरंग गण वछल्लायरु ॥
 चउरुसाय सोरग मिगाहिउ ॥
 एामे महमर्कित्त विक्ख यउ ॥

घत्ता

ततो देवकृत्ति पुरु सीसु हउ, कीयउ अहो वासिणि मुण्णि ।
 नारिदु उउयकृत्ति वि तहासुद्धउ वि पचमउ भणि ॥

जो चरणवमलत्रायसपुराणु ।
 आउरिय महगुणगणामिदु ।
 ततो सोर इउमुणि पचमासु ।
 मउजएण मशामागिउरराणि ।
 निरिचदुणाम मोदण गुणीसु ।
 तेणेउ अणेयउरियवासु ।
 किर उउ विदिय रयणोहवासु ।
 ना पउउ नहाउउ एय चित्तु ।
 प्रायएणउ मएणउ जो पमत्थु ।
 जिपउ ए कमायदि उ वि गहि ।
 ततो दुनिकय उमु असेसु जाड ।
 एउएणउ चरणजुय भत्तएण ।
 न हाउ वि लउएण छदहीणु ।

एणयत्तु इ बहु सायमसमाणु ॥
 वछल्लमहोवाह जय पसिदु ॥
 दूरुक्किय दुम्मइ गुणएणवासु ॥
 वयसालालकिउ दिउववाणि ॥
 सजायउ पांडउ पढम सीसु ॥
 उंमणरुह रयणकरंडु णासु ॥
 ललियरक्खरु सुयणमणोहिरासु ।
 मउं लिहउ लिहावउ जो णिरुत्तु ॥
 परिभावउ अहिणिसु एउ सत्थु ॥
 तो लियइ ए सो पासिदिएहिं ॥
 सो लहउ मोक्ख सुक्खुवभावइ ॥
 अमुण्णंते कत्थु करंत एण ॥
 मइं वुत्तु इत्थ अह अहिउ हीणु ॥

घत्ता

तां एगउ मउदु मह जणएणमिय, सुयदेनय अएणाणमइ ।
 जगपुउजगिउउ मिउरिचउमउ, तहय भहारी विउस सह ॥ १ ॥
 गयारउ ते नीमा वासमयाविउमस्त एउवउणो ।
 जइय गयादु तइया समणियं सुंउरं एय ॥ २ ॥
 कएणएणरिउओ रउजमुठि सिरिमिउरिवालपुरम्मि ।
 वुठामि चदे एउ किर एउउ कवु जयम्मि ॥
 जयउ जिणवण जयउ जिणवणु, जिणवयणुवि जयउ जइ ।
 जयउ माउ सतउ मुहकर पणवंतओ भववयण कुएउ जयहो सासुहपरंपर ।

दाणपुञ्जद्वयधम्मरय सच्चसउच्चपचित्त ।
 भव्व जयंतु सया सुयण बहु गुण परद्वियचित्त ॥ ३ ॥
 जयउ णरवड णायणयणेत्त पय पालउ धम्मरउ ।
 सयणवधु परिवारम'हयउ णिण्णासियत्रिण्णु जणु ॥
 जेण णियय णिय कम्मि णिद्वियउ, पिच्चउ मेड्ढाणसड्ढवउ वरिसउ देउ सयावि ।
 कित्तिधम्मु णरवड जयउ जसु ग्वडणु ण कयावि ॥ ४ ॥
 जाम मेड्ढाणि जाम महणडउ, कुलपव्वय जाम तहिं ।
 जाम दीवगय सख णरवड, पायालु आयासलु ।
 जाम मग्गु सुरणियरु सुरवड, जा तारायणु चटुरवि जा जिण धम्मु पसत्थु ।
 त म जणउ सुहु भव्वयणि, जयउ एहु जड सत्थु ॥ ५ ॥
 जो सव्वण्हु तिलोयवड सिद्धसाहु वभंडु ।
 ताम जणउ सुहु भव्वयणि दंसण कह रयणकरडु ॥

इति पंडित श्रीचंद्रविरचिते रत्नकरंडनाम शास्त्रं समाप्तं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५६. साङ्ग १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पं क्त में ४०×४४ अक्षर । प्रति पूर्ण हैं ।

संवत् १५८२ वर्षे शाके १४४७ प्रवत्तेमाने द्वितीयायां तिथौ गुरुवारे घटी ५४ पुष्यनक्षत्रे घटी ४६ हयंणनामजोग घटी ३ घटियालीपुरात् श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारणो सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदात्मन ये खडेलवालान्त्रये साह गोत्रे चतुर्विधदानपूजासमुद्यतान् परोपकार निरतान् प्रस्वस्तचित्तानुमन्यक्त्वप्रतिपालकान् श्री मर्वहोक्तधर्मान् रंजितचेतसान् कुटुंबसाधारकान् रत्नभूपालं कृतदिविदेहान् आहारशास्त्रदानसर्मान् व्रतान् साह अवण तस्य भार्या साङ्गति तस्य पुत्र साह सक्करु तस्य भार्या सुहृदादे तस्य पुत्र साह गवण भार्या पवयणी तस्य पुत्र साह थल्लु भार्या लक्ष्मी पुत्र चेला द्वि० साह जालय भार्या जवणादे । तृतीय साह ईसर भार्या ईसरदे चतुर्थ पुत्र साह अर्जुन एतान् वाई भोली इत्तं शास्त्रं मुनिहेमकीर्तिये दत्तं ।

३३. वट्टमान चरित्र ।

रचयिता भी जयमित्रइल । भाषा अपभ्रंश, पत्र संख्या ५१ । साङ्ग १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । लिपि संवत् १६८७ ।

प्रारम्भिक पाठ—

पगवेवि अण्णिदहो चरमजिण्णिदहो वीरहो कसेण्णायणिवहो ।
सोणायहो रणिरहु कुवलयचंदहो, णिसुणहो भवेथहो पेत्ररकेहो ।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जग्द्वेवोहिद्वेव तिलोकर,
णिरुद्धमफण्णरसोयणुं धरण्णोचं,
सोणंदउ जो णियमण्णिभावंड,
सोणंदउ जो लिहउ लिहोविंड,
जो पयत्थु पयडेड सुभवे-ह,
णंदउ देवरामण्णदंणुधर,
एहु चरित्त जेण वित्थारिउ,
होउ सति णिसेमह भवेवहं,
वरिसउ सयल पुहमि चरंवेरंहे,
धरि धरि भगलु होउ सउगाउ,
होउ सति चउविहजिण्णसवह,
णंदउ मासणु वीर जिण्णोसहो,
मदंर सिहार होउ ज सुळउ,
होउ मयल पूरत मणोरह,
अमियेविहउ सहएवहण्णंदणुं,
विण्णवेड सम्मय दय किज्जउ,
अण्हसाहु माह सुमहु णंदणुं,
होहु चिराउ सणियकुकुत्तमहण,
होउ सति मयलहं परिवारह,
पउमण्णंदि सुण्णिण्णहं गण्णिदहो,
ज हीण्णहिउ कच्चु रसदड,
त सुयण्णाय देवि जगसारी,

वंडदमाण्णजिण्ण भवेवसुहकर ।
कच्चु रयणुं कुंडल भउ पुण्णउ ।
वीरे चरित्तं विमलुं आलवइ ।
रसे रसेइ जो पेढइ पढावइ ।
माणसद्वहणु करेइ सुकव्वह ।
होलिवम्मु कण्णणुवउ णयकर ।
लेहावाव सुण्णियण्णउवयारिउ ।
जिण्णपयंभत्तहं वियलियगव्वहं ।
मेहजालु पावसवसु धोरहं ।
दिण्णि दि ण धण्णघण्णह संपुण्णउ ।
देम चास णरण्णह दुलघह ।
णिण्णउ सेण्णिउ णरण्णि वासहो ।
धरि धरि दुदुहि सच्चु अंतुळउ ।
परंमाण्णदु पेढदडे उइ सह ।
जेणि जेणमित्तं वि दुरियण्ण कदणुं ।
सोसय सुहु णिधिसु मेहुदिज्जउ ।
सज्जण जेणमण्णेणयण्णिदणुं ।
मण्णण्णजण्णेदुहरोरिविहण्ण ।
भत्तिय वड्डउ गुरुवय धोरह ।
चेरणी संरण्ण गुरु केइ हरि ईवेहु ।
पउ विरडउ सम्मई अविथदई ।
महु अणवगहु खमउ भडारी ।

घत्ता

दयधम्म पवत्तणु विमलुं सुक्खिणुं णिसुण्णंतहो जिण्ण डेवहो ।

१ मण्णइ २ आथरण्णं ३ पयडे ४ घण्णघण्णइ ।

जं होइ सुधरणउ हउमणिमरणउ, त सुहु जगिहरि इंदहो ॥

इय सिरि धड्डभाणकवे पंयडिय चउवगगरमभवे सेणियअभयचरित्ते विरइय जयमित्तं
हल्लसुकुहत्तो भवियणजणमणहरणो, सर्घहि वेहोलिवम्मकणहरणो सम्मईजिण णिण्वाण गंमणो णाम
पयारहमो सधि पण्डित्तं सम्मत्तो ।

संवत् १६२७ वर्षे अषाढ सुदी ५ श्री मूलसंघे तंवाग्नाये वनात्पारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-
कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रस्तत्पट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रस्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवस्तदाग्नाये
खडेलवालान्वये पांड्या गोत्रे साह पीथा तस्य भार्या पिडासरी तस्य पुत्र साह चाचा तस्य भार्या चंडसिरी
तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र वाला तस्य भार्या बलालदे तस्य पुत्र लोठा इत्यादि । साह चाचा द्वितीय पुत्र स .
माधव तस्य भार्या माणिकदे । तस्य तृतीय पुत्र मा. नेता तस्य भार्या नारंगदे । मा. पीथा तस्य द्वितीये पुत्र
साह वमा तस्य भार्या कण्णदे इत्यादि । साह पीथा तस्य तृतीय पुत्र साह रतनपाल तस्य भार्या यणादे
तस्य त्रयः पुत्राः प्रथम पुत्र साह गोदा तस्य भार्या कोडमदे तस्य पुत्र ५ प्रथम पुत्र ईसर तस्य भार्या अह-
कारदे तस्य पुत्र भोजराज । साह गीदा द्वि० पुत्र णोता तस्य भार्या नयणादे । तृतीय पुत्र गठमल चतुथ
साह कल्याणमल पंचम पुत्र चिर कान्हड । साह रतनपाल तस्य द्वि० पुत्र साह धामा तस्य भार्या साधो
घारादे द्वि० भार्या लाडी तयो पुत्र चि० श्रीपाल द्वि० पुत्र पासा इत्यादि । साह रतनपाल तस्य तृत्त य पुत्र
मा० तेजातस्य भार्या तेजलदे द्वि० भार्या त्रिभुवनदे तस्य पुत्र चि० सांगा इत्यादि । साह पीथा तस्य चतुर्थ
पुत्र साह वाजू तस्य भार्या लक्ष्मी तया पुत्र चि० नानू द्वि० पुत्र चि० हेमराज इत्यादि । साह पीथ तस्य पंचम
पुत्र साह बाजू तस्य भार्या बहुरंगदे द्वि० भार्या माध्वी लालि तस्य पुत्र स ह वीजू तस्य प्रथम भार्या छीतरदे
द्वि० भार्या लध्वी साध्वी स्वरूपदे इत्यादि । साह पीथा तस्य षष्ठम पुत्र साह दासा तस्य भार्या द'डमदे
तयोः पुत्राः सप्त प्रथम पुत्र साह पदारथ तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र महेश तस्य भार्या महम दे तस्य द्वि०
पुत्र साह हीरा तस्य भार्या हरपेमदे तस्य पुत्र तोल्ह तस्य भार्या तुल्हासिरि तस्य म ह दासा
तस्य तृतीय पुत्र साह आत्रा तस्य भार्या श्रीबेसिरि तस्य पुत्र चि० सांगा तस्य भार्या सिगारदे द्वि० पुत्र
कान्हा साह दासा तस्य चतुर्थ पुत्र साह खीवा तस्य भार्या बिर्वासरी, माह दासा पंचम
पुत्र स ह कुंभा तस्य भार्या कुंभसिरि । सार दासा तस्य षष्ठम पुत्र माह टेह भार्या टिहसिरि तस्य पुत्र
... .. । साह दासा तस्य सप्तम पुत्र साह दुरगा तस्य भार्या दुर्गादे इत्यादि एतेषां मध्ये साह
वाजू तस्य भाय बहुरंगदे तस्य पुत्र निजमुजोपाजितवित्तेन आहाराभयभेपजशास्त्रदानवितरणात्तद्वारेण साह
लानू तेनेदं श्रेणिकचरित्र निजज्ञानावरणीय कर्मक्षय नमित्तं लिखाप्य ब्रह्म सोम य धर्तापतं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५४. साहज १२x४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पाक्त्यां तथा प्रति पाक्त म
४२x४६ अक्षर । प्रति पृष्णे तथा प्राचीन हे ।

सन्त १५१३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बुधस्पतिवारि श्री मूलसधे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्य मडलाचार्य श्री वर्मचन्द्रदेवास्तदाग्नाये खडेलवालान्वये अजमेग गोत्रे
साह नाथ तस्य भार्या तोला तत्पुत्र तिहुण तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस । धाना भार्या नेमी तत्पुत्र
रुचमन, हेमराज, बाल्द, भरथा, श्रीवत । तथा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या कग्मा, द्वि. भार्या
गंगी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखाय नेमी आर्यका विनयमिरी जोग्यदत्त ।

प्रति न० ३ पत्र संख्या ६२ साइज ११×४॥ इञ्ज । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे
२५×४० अक्षर । प्रति नदीन द्वे तथा पूर्ण द्वे ।

सन्त १६३१ वर्षे माहसुदि ११ शुक्रवारि श्री मूलसधे नंदाग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री
कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रस्तत्पट्टे शिष्य मडलाचार्य श्री वर्मचन्द्रस्तत्पट्टे शिष्य
मडलाचार्य श्री लालतकीर्तिस्तदाग्नाये खडेलवालान्वये रांका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र वृत्तय
साह खेम तस्य पुत्र घाटमल्ल द्वि० पुत्र साह वील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेल्हा भार्या तिहुणश्री तस्य
पुत्र नानग । वृत्तीय पुत्र साह खेना तस्य भार्ये द्वे० प्रथम महरखु द्वि० मानं तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र
नान् द्वि० पुत्र हीरा वृत्तीय पुत्र विहरा चतुर्थ पुत्र पाला । हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल । पाला
भार्या प्रतापद तत्पुत्रा पुत्र द्वौ प्रथम हेमराज वतीक नेमदास । एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं घटापित साह हीग
दशनाक्षरीः अतर्कनित्य मुनिश्रीरत्नानि ? मालपुरा मध्ये साह धान, चपा, हेमा, हीरा, के देहुरा (मंदिर)
श्री भगवान्वास राज्यं ।

प्रति न० ४ पत्र संख्या २६ साइज १०×४ इञ्ज । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में
३५×४० अक्षर । प्रति सुन्दर और स्पष्ट द्वे ।

सन्त १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाङ्गणपुरवरे आदिनाथचैत्यालये पेरोज-
नान राट्ये श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्य मुनि जयनंदि तत्पट्टे शिष्य ब्रह्म अचल
निमित्त कर्मचार्य द्रव्य वीगाय वत्त ।

३३. वर्द्धमान कथा ।

रचयिता श्री नरमन । मापा अपभ्रश । पत्र संख्या १७ साइज १०॥५ इञ्ज । प्रत्येक पृष्ठ पर
३२ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३०×३० अक्षर । लिपि सुन्दर द्वे । प्रति प्राचीन द्वे ।

मगलाचरणा—

तत्रमिभिसारहो णिजियमारहो पणविनि अम्मइ जिणवरहो ।

वयजिणरगतिहेफलु अक्खमि शिम्मलु भवसयसंचयदुइहरहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय जिणरत्ति विहाणु पर्यासउ,
जं हीणाहिउ काडमि वुत्तउ,
एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ,
जो गरु रारि एहु मणिभावइ,

जइ जिणसासणो गणहर भासिउ ।
तं वुहयण महु खमहु गिरुत्तउ ।
पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
पुण्णंहु अहिउ पुण्णफलु पावइ ।

धत्ता

सिरि एरसेणहो सामिउ सिवपुरगामिउ वड्ढमाणुत्तित्थंकरु ।
जइ मगिउदेइ करुणुकरेइ, देउ सुवोहिउ लाहु परमेसरु ।

इय सिरिवड्ढमाणकहापुर एो सिंघादिभवभाववण्णायो जिणराइविहाणफलसंपत्ती सिरिणरसेण
त्रिरइए सुभववयण्णमित्तो णाम वढमा परिच्छेउ सम्भत्तो ।

३४. पट् कर्मोपदेश रत्नमाला ।

रचयिताः श्री. महाकवि. अमरकौत्ति । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १०४ साइज १०।।५ इञ्च ।
प्रत्येक पृष्ठ पर दस पंक्तियां तथा प्र'त पांत् में ३५×४० अक्षर । अपभ्रंश भाषा का बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है ।
कर्म सिद्धांत का सविस्तृत वर्णन किया गया है । रचना सन् १२७४ लिपि सन् १५६६ ।

मंगलाचरण—

परमप्यभावणु सुहगुणपावणु, गिहणिय जम्मजरामरणु ।
सामयसिरिसुन्दरु पयणपुंरदरु, रिसहु णविवि तिह्वणसरणु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

छक्कम्मिहिं सावउ जाणिज्जइ,
छक्कम्मिहिं सम्भत्तु वि सुज्जइ,
छक्कम्मिहिं जिणधम्मु सुणिज्जइ,
छक्कम्मिहिं ववसणु ण दुक्कइ,
छक्कम्मिहिं दुक्कम्मइ तुह्मिहिं,

छक्कम्मिहिं दिणदुरिउ विलिज्जइ ।
छक्कम्मिहिं घरकम्मि ण मुज्जइ ॥
छक्कम्मिहिं एरजम्मु गणिज्जइ ।
छक्कम्मिहिं रिद्धिहिं णवि चुक्कइ ॥
छक्कम्मिहिं पमायअ हट्मिहिं ।

१ पणय २ सुद्धइ ३ कम्म ४ पमाइउपट्टइ ।

घत्ता

एतदु गिरु ता महि सत्थु इहु, अमरकीर्तिगणि विहिउ पयत्ते ।

जा महि महिमारुयमेरुगारि एहयलु, अंवपमाए गिमित्ते ॥

इय छक्कम्मोवएसे महाकइसिरिअमरकीर्तिविरइए महा कवे महाभव्व अंवपमाएणु मणिएए तनदाए-
फल वएणणो एाम चउदइमो संधी सम्मत्तो ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३ साइन ६×५॥ इच्छ । प्रति की स्थात अच्छी नहीं है ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरे नृपविक्रमादित्यराज्ये सवत् १५६२ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनिवासरे पतिसाहि हुमायु
राज्यप्रवर्तमाने सिहनदस्थाने ग० श्री विनयसुन्दर शिष्य मुनि धर्मसुन्दरेण पुस्तकं लिखित ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७५ साइन १०×५ इच्छ । ५४ से ६४ तक के पृष्ठ नहीं है । साधारणतः
ग्रन्थ की हालत अच्छी है ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ नृपविक्रमादित्य सवत् १५५८ वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अश्लेखा नक्षत्रे गोपाचल-
महादुर्गे महाराजाधिराज श्री मानमिहराज्ये प्रवर्तमाने श्री काण्ठासधे नंदिगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री
सोमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म काला इद पट्कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाम्य
आत्मपठनार्थे ।

सवत् १५५३ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसधे श्रीमत्रैविद्यभट्टारक श्री पद्म चन्द्रदेवास्त-
त्पट्टालकार गुज्जरलाडमालवकलिंगमहाराष्ट्रकर्णाटअंगवंगमगध .. ।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या ६५ साइन ११×४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में
४०×४४ अक्षर है । प्रति प्राचीन, शुद्ध तथा सुन्दर है ।

प्रशस्ति—

संवत्सरेस्मिन् १४७६ वर्षे अषाढ सुदी ५ बुधदिने श्री गोपाचलदुर्गे राजा श्री वीरभद्रदेव राज्ध
प्रवर्तमाने गढोत्परे श्री नेमिनाथ चैत्यालये श्री काण्ठासधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री भावहन
देवास्तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री प्रतिष्ठाचार्य श्री गुणकीर्तिदेवा तथा श्री विशालकीर्तिदेवा राम
कीर्तिदेवाः खेमचन्द्रदेवाः । श्री गुणकीर्तिदेवनां शिष्याः श्री यशःकीर्तिदेवा कुमारकीर्तिदेवा हरिभूषण देवाः
धर्म श्री संजम श्री शील श्री चारित्र श्री धर्ममतिविषज श्री सुमति एतेषामाम्नाये अप्रोतकान्वये चनुमुख

जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवाला-
न्वये ।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या ४४ साइज ११×४॥ इच्छ ।

संवत् १५६४ वर्षे महासुदी २ वृधवारे भ्रवणनक्षत्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंदा-
म्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारके श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारके श्री प्रभाचन्द्रदेवस्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेल
वालान्वये चंपावतीनगरे राठौडवंशे रायश्रीवीरभधराज्ये बाबलीवालनगोत्रे सं० तीर्करी भार्या पुनी । प्रथम
पुत्र माह चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र साह होला भयो हुलसिरि । द्वि० पुत्र सं० लालू भार्या नीलादे ।
प्रथम पुत्र सं० लालू भार्या ललितादे द्वि० भार्या रूपा । द्वि० पुत्र सं० बालू भार्या वेलासिरि द्वि० भार्या
बहुरंगदे पुत्र नथमल इदं शास्त्रं लिखापितं ।

३६. श्रावकाचार ।

रचयिता श्री लक्ष्मीचन्द्र । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या २० साइज ६×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८×४२ अक्षर । विषय अक्षर धर्म ।

मंगलाचरण—

एषकोरपिण्डु पंचगुरुं दूरदलियदुहकम्सु ।

संखेवै पयडरकरहि अक्खमिसावयधामु ॥

अन्तिम पाठ—

दंसणु णाणु चरित्तं तत्तरिसि गुरुं जिणवकूदेउ ।

वोहि समाहिणं सहं मरणु भवे भवे दिज्जउ एष ॥

सबच्छरेचंद्रन्युग्मेधस्त्रिंशुमिति फाल्गुणमासे कृष्णार्ध्या पक्षे पंचम्यां तिथौ रचिवासेरे सवाहै जयपुरे
महाराजाधिराज श्री सवाई मोधवसिंहजी प्रवर्तमाने राज्ये ऋषभदेव चैत्यालये भाह श्री जोधराजपाटोदी
कारापिते श्री मूलसंघे नंदांम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री नरेंद्रकीर्तिस्तत्
शिष्य ब्रह्म श्री अमरचन्द्रतत् शिष्यः पंडितः श्री जयमल्ल तत् शिष्य पंडित श्री मनोहरदास तत् शिष्य पं०
श्री छोतरमलस्तत् शिष्यास्त्रयः प्रथम ह रानदः द्वि० ब्रह्म टेकचन्द्रास्त्रुतीयश्चतुर्भुज । हीरानंदस्य शिष्यौ
द्वौ प्रथम चोखचन्द्र द्वि० ऋषभदास । चोखचन्द्रस्य त्रयः शिष्याः प्रथम सुखराम द्वि० कृसनदासस्त्रुतीय
नानिगदासः । सुखरामस्य चत्वारि शिष्याः प्रथम कल्याणदासे द्वि० कैसरीसिंह तृतीय भोहनदास चतुर्थ नेभिदास
एतेषां मध्ये विनयवतः सुशिष्यस्य कैसरीसिंहकंधे पठेनार्थं लिखितं नैणसागर संवत् १८२१ मिति
फाल्गुन बुदी

३७. श्रीगाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० नरसेन । भाषा अंग्रेज । पृष्ठ संख्या २६ साइज १२x७ ॥ डब्ल । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४x४२ अक्षर । प्रात प्राचीन है ।

संगजाचरण—

मिद्वचक्रविहिरिद्विय गुणहममिद्वय पणवेल्पिणु सिद्धमुणीसरहो ।
 पुणु अकस्मि एण्मनु भदियहमगलु सिद्धमहापुरसामियहो ॥

अन्तिम पठ तथा पशस्त्रि—

धत्ता

इय रव्जु करतउ पुणु त्रि विरत्तउ देविसयलु एण्यपुन हो ।
 नसारणो सक्कल पुणु दिक्कित्त मतिपुणेहियजुत्तहो ॥

पुहवीपालुहु रव्जु समप्पिउ,
 मयणासुं दरिपमुहते उर,
 सयल विसंजइ यउ मनायउ,
 महासुक्क सुरइहुव बोप्पिणु,
 अंगरकवज्जिं उहिं वउ भायउ,
 सयल वि एण्णरवउ समदण्णु,
 गउ सिरिपाल परमं गउवाणुहो,
 अवरु वि नरत्तारिउजु ज्जेमउ.
 सण्णि मुरादिव सुहु सु जेसइ,
 वत्तिय धामादहिं फणुग्गमासहिं,
 उहु भंत्ति हि निण्णपूयउरें मदि,
 जिण्णट्ठ अत्तिमाट्ठं उदेमइ,
 दरिद्विरउज पुणु मोक्खु लहे मदि,

अप्पउगाय महाव्वउ थप्पिउ ।
 हरडोरउत्तारिय षोउर ।
 दुवहिं तत्रयरणेहि विरायउ ।
 गइय देव तियलिगुह णोप्पिणु ।
 ताइ तहिं देवत्तणुसुहु पाविउ ।
 वांउ वीरु तवयरणु चरेप्पिणु ।
 मिद्वचक्रफलु भवियहु जाणु हो ।
 एव माइ सो फलु पावेसइ ।
 सुक्खण्ह सिट्ट कील करेसइ ।
 ते ण्णंदीसर वीउ गवेमहि ।
 मिद्व चक्रफलु सुहु सु जेसइ ।
 पुणु महियाल चक्रवइ हवेसहिं ।
 ।

धत्ता

सिद्धचक्र, विहिरि रउयमउं, गारसेण भण्णइ शियसत्तिए ।
 भवियण्ण उण्णआणदयरे, उण्णिव जिण्णेमर भत्तिए ॥

इय मिद्वचक्रकहाए महारायमिन्दिपालमयणासु दरिदेविचरिए पंडितसिरिणरसेण विरइए इह

लोकपालसुहृदकाण्डे श्रीपालमहाराजयोगे द्वितीय सर्षि ।

सवत् १५१० वर्षे चैत्र शुद्धी ११ भासे रावरपत्तने राजाधिराज श्री हूगरसिंहदेवराज्यप्रवृत्तमान श्री मृत्तसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनान्ददेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः खडेलवालान्वये सरस्वती गोत्रे माह काल्हा तद् भार्या साध्वी राना तयोः पुत्राः माह बीमा मधोलाल एतेषां मध्ये साह माधौ भार्या साध्वी महाश्रीसफलादे निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं श्रीपालचरित्रं स्वहस्तेन लिखाय महासिरि वत्तं । ज्योतिषा भ्यागदास स्वपुत्र ज्योति-श्री बाल लिपितं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४८ माहज ११×४॥ इच्छ । -प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३०×३४ अक्षर । प्रति पूर्ण तथा स्पष्ट है ।

सवत् १५५६ वर्षे मार्गसिरमामे द्वितीया द्विवसे बुधवारि गेहरणं नक्षत्रे सिद्धनामजोगे टौंकपुरनाम नगरे पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री, मृत्तसंघे नद्याम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुदाकुदाचार्या-न्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनान्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा-स्तदाम्नाये खडेलवालान्वये टौंक्या गोत्रे साह धरमसी तस्य भार्या ग्यात् तयोः पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह तीको तस्य भार्या गल्ली तत्पुत्र हामा । द्वि० पुत्र जाल्हा । तृतीय पुत्र नेता । चतुथ पुत्र श्रीवन । साह हामा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र तेजसी । साह जाल्हा तस्य भार्या पदमा तत्पुत्र सहसमल्ल । माह नेता तस्य भार्या उंदी तत्पुत्र बुचमल्ल माह श्रीवन तस्य भार्या बाली तत्पुत्र सीहमल्ल द्वि० पुत्र पद्मसी तृ० पुत्र रणमल मा० लाखा तस्य भार्या रोहिणी तत्पुत्र गुणराज द्वि० साङ्गु तृताय पदारथ । माह समदाम तस्य भार्या रय-णादे तत्पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या धरमा तत्पुत्र गाईद साह धरन् तस्य भार्या नीकू साह हूगर तस्य भार्या खेत तत्पुत्र चाया तस्य भार्या चादण्णदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखीपित श्रीपालचरित्र व ई पद्मसिरि जांग्य गताव्यं ।

प्रति न० ३ पत्र संख्या ४३ माहज ११×४॥ इच्छ ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ सवत्सरस्मिन् श्री विक्रमादित्यगच्छे मन्वते १५८४ वर्षे भाद्र शुद्ध ८ रविवामरे मृगसिर नक्षत्रे माके १४४६ गते पञ्चाब्दयोः मध्ये मन्मथनामसंवत्सरप्रवर्तने मुक्तिनामजोगे बुधवारराज्यप्रवर्तमाने श्री कान्तिपागज्यआजमसाहि प्रवृत्त मने दौलानिपुरमुमस्थाने श्री मृत्तसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंद-कुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनान्ददेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवाः । तदम्नाये खडेलवालान्वये जह ममसुद-भर्वाजनवरणकमलचचरोकान दानपूजामुद्यतान परोपकारनिरतान् प्रशान्तिचित्तान् साधु श्री श्रेय तद्भार्या यमपत्नी मुशानी साध्वी अमा । तन्योदरसमुत्पन्न जिनचरणारो धननत्परान् सम्यक्प्रतिपालकान्

सर्वजोत्तमसर्वज्ञतत्त्वज्ञानं हृदयभारधरधुरान् माधु श्री नीरमु तद्भार्या शीलतोयतरंगिनी हीरा तयो. पुत्र
सर्वगुणालङ्कन देवशान्त्रंगुरवचयवत सर्वज्ञोद्भवप्रतिपालमान् उद्धरणधीरान् दानश्रेयांसावतारान् आभार-
मेरान परमशायक महात्मशु श्री महे सुतनेद आपालनामशास्त्र कर्मक्षयनिमित्त लिखापितं । लिखितं पं
वीरमिदु । वाई मानिनी योग्य प्रदानार्थ ।

इति नं० ५ पत्र सख्या ३७ साटज ११५५ इच्छ ।

लेख्य प्रशस्त—

मयत् १६३० वर्षे वैशाख अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शाश्वरतपगच्छे पं० न्यास, श्री पं०
नयस्त्वर्गागणेश पं० न्याम न्याम विद्यासुन्दरगणि लिख्यत चाटसुमथ्ये ।

१) पार्श्वनार्थचैत्यालये चपात्रत्तीमहादुर्गे महाराजाधिराजरात्र श्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसधे
नद्यागनाथे चत्वारंगणो मरस्वतीगच्छे श्री कुंदकु वाचायोन्यथे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
धुमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री
धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तद्वट्टे मंडलाचार्य श्री लालतर्कात्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकीर्तिदेवा खंडेलवालान्वये
साह गोत्रे साह टंडु भार्या साह । तत्पुत्र साह नानू भार्या नारगदे । द्वि० भार्या दिवू । नानू पुत्राः पंच
प्रथम पुत्र साह कपूर भार्या नमा । तत्पुत्र गुणराज । द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिवेद तत्पुत्र
धारित ।

३८. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता प. रट्टु । शाषा अप्पन्न श । पत्र सख्या १२८ साटज ११५४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर
६ पान्या तथा पति पक्ति से २६५३० अक्षर । प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

मगनाधरगु—

सिद्ध सुर्वसिद्ध वसुगुणसिद्ध, हियड कमले धारे वि निरु ।
अन्यमम पणु सारउ सुहमयनारउ, सिद्धचक्रक माहपुवरु ॥

अन्तिम पाठ—

उय परिउ सुहायक बुहयणमणहरु नंदउ महियलि गुणभरिउ ।
भवभमणविणासणु दुरियपणामणु अक्षपसत्त्वहि विष्फुरिउ ॥
मत्थं वदनि प्रतानि कुरुते शास्त्र पठस्यादरात् ।
गोह सुद्धनि गच्छति स्वममयं धत्ते निरोहपव ॥
पापु लुं पात पाति जीवनिप्रह ध्यानं मसालवते ।
मोऽय नंदतु माधुरेव हरमी पुष्पाति धर्म सदा ॥ १ ॥

पुणु देवि मरासइ नविचि समासइ नेमिात्तिहु वंसु जि भणामि ।
पुणु जासु हि रज्जे दुणयवज्जे हुवउ सत्थ तं पुणु थणामि ॥

गोपालचलु दुग्गु पसिद्धु नामु,
गोउर पाथारकिउ सवित्तु,
तहि आत्थिराय अरिकुलकयतु,
सिरि हू'गरेंदु नामेण सूरु,
तहु भित्तिपाल नंदणु गरिद्धु,
तहु रायर जि समाणवतुं,
सावयवयपालण विगयतंदु,
वाहुडु जिसाहु हुउ आसधणु,
तहु भज्ज जसोवइ कमलवत्त,
गण गणु भायणु राह सुजेठु

धएकवणरिद्धु जणाहि ससु ।
परनर अगमु न सयहि चित्तु ।
तोमर कुलि पायडु महमहंतु ।
विण्णुरिय पयावे नाइ सूरु ।
न रुविकासु सविहं मणिह ।
सिरि अइरवाल वसहि महंतु ।
रिसिदाण पहावे जो अमंदु ।
नियजसेण जेण दिसि मग्गु छुणु ।
तहि उवरि उवणाविण्णि पुत्त ।
जिणचरणकमल जो भसलसिद्धु ।

घत्ता

वीयउ नंदणु पुणु भाविय जिणगुणु सकलकलालउ सुद्ध मणु ।
वाटू साहु जिहउ वदियणाहि थउरजिय अहनिसु सयणु यणु ॥ १ ॥

तहु तियसोल विसुद्ध पउत्ती,
नंदण चारि ताहि उर जाया,
पढसु साहु नयणसिद्धु पउत्तउ,
विजपालहिय तासु पुणु भा'मणी,
वाटू साहु हु वीयउ तणुरुह,
वील्हाही पिययम अणुरायउ,
जाटा नामे पढम भणिजे,
जोल्हाही तहु पिययमउत्ती,
गविदहु तिय घोल्ही वुच्चइ ।
धणसीहहु सुउ वीयउ माला,

असपालाहिय नाम साउत्ती ।
चारि दाणभनं पायड जाया ।
नीयमग्गु जि मुण्णउ निरुत्तउ ।
साहुय सील महाधण सामिणी ।
धणसी णामु सुपरियणु कियसुह ।
पुत्तहु जुयलु ताहि उर जायउ ।
गायणेहेँ जो अहनिसु गिजइ ।
सा गोविंद सुवेण सुपत्ती ।
तहु नंदणु पुणु चोचा सुच्चइ ।
तहु तिय लाडो अइसुकुमालो ।

घत्ती

वाटू साहह सुउ तीयउ पुणु हुउवोहिथ नामेदीह सुउ ।
गुणगणरथणापर जिणवयणाय रुनानिग ही पिय भज जुउ ॥ २ ॥

जो पुण्य वाटूमाहु पयासउ,
 हरसी साहु नामु माहि पाचहु,
 तहु फलत्त परिग्रह पहाणी
 देवमत्त शुभ वचणमलायर,
 वार्द भज्जा पुण्य नीलहाडी
 तहु नदण्य पुण्य कडयण वेषिउ,
 नामे करम मीहु सो नदर
 उड गाही तहु तय सुपसिद्धो,
 पुण्य हरसीहु पुत्ति पडत्तो,
 जाड अखडु मीलु वर पालिउ,
 पुण्य विननो तहु लहु सुयसारी,
 एहु गोतु नदनु माहि मडलि,
 एयह सव्वह मत्ति पहाणउ,
 कलिकाले जत्ताणु द्वारियन,
 तणिकाल रयणत्त अ चड,
 जि वलहड पुराण सुद्ध,
 सो हरमीह माहु चिरु नदउ,

तहु चउत्थु नदण्य विजयासिउ ।
 जो जिण भोण्य सैद्ध अत्थहु पडु ।
 जिह सिरि रामहु सोया जाणी ।
 दिवचवही नाम नेहायर ।
 न गोविंदुहु लच्छिपसाई ।
 जो हंगरार्य निरुमणिय ।
 अहनिं सु जिणवंर चरणइ वडिउ ।
 विहु कुल सुद्ध रुवंगुणारद्धि ।
 न मानंतमई गुणजुत्ती ।
 कलिमल्ले असुद्ध मच्चिंतु खालिउ ।
 सयनहु परिवारहु सुपियारी ।
 जा रवि सार्स निवसहि आहंडलि ।
 सत्य पुराण भेय बुह जाणउ ।
 चेषणु गुण अरुद्ध विष्फुरियउ ।
 सुद्ध धम्मो जो अहनिं सु सचइ ।
 वारा वियंन पयत्ते मणहह ।
 मज्जण चित्तु जणिया णदउ ।

वृत्ता

पोमावड पुरवाड वसिउ वणउ कुनतिलउ ।
 हरमिध नघविहु पुत्तु रडधू रडगुण गणनिलउ ॥

उति श्रीप लसिद्धचक्रवर्तिने रडधू पंडितकृत समाप्त ।

संवत् १६३१ वर्षे कार्तिके बुद्धी ६ शुक्रवासरौ पुष्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसधे नद्यम्नाये
 वलात्कारगणे मरुश्वतीगच्छे श्री कुवकुत्राचार्यान्यये पडत्रिशद् गुणावरोजमान व्याकरणेण्णदोलंकारसाहित्य-
 तर्कागमादिशास्त्राण्यवपारप्राप्तान भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभेचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक
 श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकोत्तदेवास्तत् भ्राता
 प्राचार्य श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये मण्डलवालाचार्ये पुस्तिका लिखापित नागरचालमध्ये टौक समीपे साखिया
 नगरे पातसाह श्री प्रकरवज्रजयरात्रे मोलकी महाराय श्री सुरजन श्री साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे
 पुत्र निरजीव साह, उडा, भार्या उत्तरे पुत्र द्वि० चि० साह भीरवा । साह भीरवा भार्या भावलदे पुत्र जैसा
 द्वि० पुत्र मोटा । साह मोटा भार्या सिंगारदे पुत्र चि० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छोट

धमा, लाखा, पर्वत, नानग । साह छीत भार्या चतरंगदे पुत्र खीमसी, सांगा माल्हा । माह घर्मा भार्या धारादे पुत्र ताल् । माह चाटू भार्या चाटंगदे । माह श्री रग भार्या सुहागदे माह हीरा भार्या हीगदे.....।

३६. सकलविधिविधान काव्य ।

रचयिता श्री नयनन्दि । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ३०४ साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४० अक्षर । लिपि सवत् १५८० चैत्र बुदि ४ ।

मंगलाचरण—

धवलमंगलानंदजयवदूढ मुहलमिमिद्धत्यणिव ।
मदिरंमि एरलोय हरिसुव संकामउ सगाउ जियु ॥
जयउ पुरिमकल्लाणकलसुव अहरणं निद्धि वद्विमल ।
मुत्तावालाई गिमित्तु सुहसुत्तिए पियकारणिदि, सिपहि मुत्तिउखित्त ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ —

वत्ता

आराहिय आराहणाए मव्व च्छसिद्धि सुहु भुंजवि ।
लीह महि सिद्धवह्णिलउ एयणंनिय पंडियमुणिरजवि ॥

मुणिवरणयणदीमणवद्वपमिद्धे सयलविहिणहाणे एत्थवव्वे सुभव्वे अरिहपमु हसुत्तुवुत्तु, माराहणाए पभाणउं फूहू संधी अट्टावण संमोत्ति । लेखक काइस्थ सधू । अथ प्रशाभतेका । संवत् १५८० वर्षे चैत्र बुदि ४ गुरवासरे श्री मूलसवे नयान्नाये ।

३६. सन्मति जिन चरित्र ।

रचयिता महापांडित रडधू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १२६ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४२ अक्षर । लिपि सवत् १६२४ ।

मंगलाचरण—

वत्ता

जयसररूहभाणहुं वडिह्यमाणहु वदम एत्तियेसरहु ।
पणिवविपयजमल एहपह्विमल चरिउ भणामि तहु हयसरहु ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

× × × × ×

एदउ राणउ एीइ वियाणउं,

पयपुणु एदउ पाउ एिकदउ ।

शामेण पयडुजणि देवसेणुगणि मजायउ चिरु वुहतिनउ ॥

तासु पट्टिणि रुवमगुणमदिरु,
विमल्लेमई फेडियमलसंगसु,
वत्थसरुवधम्मधुरधारउ,
चयतवसीलगुणहि जो साग्उ,
धम्मसेणु मुणि भवसर तारउ,
दंसणु शाणु चरणु तहं चेषणु,
धम्मामड पोसिठ भव्हं गणु
सुद्धंभासरुउ सभासणु,
सहसकित्ति उव्वासिय भववणु,
वेज्जंभर तत्र केथ आयारु,
उहयण सत्थअत्थ वितामणि,
तहु सिंघासणि सिद्धरि परिट्टउ,
सुजसंपसर चासियदिवसउ,
तहुं आसणि गुणगणिसणिसायरु,
दोचिह तव त वे तत्रियगो,
वेज्जंभतरसगअसगो,
पुव्वापरियहमग्गपयासणि,
णिग्गथु विष्पत्थह सजुत्तउ,
छदतक्कवायर एहि वाइय,
उत्तमक्खभवाण्ण अमंदउ,

णिच्चाभवजणणयणमंदरु ।
विमलसेणु शामे मुणि पुगसु ;
दहविह धम्म भुवणि वित्थारउ ।
वेज्जंभंतरसंग णिधारउ ।
भावणु पुणु भाविय णिय गुणु ।
दोचिह तव तेवण ताविय तणु ।
मूलुत्तर गुणेहि जो पावणु ।
कम्मर लकपंकमोसणइणु ।
तासु पट्टि उदयं दिवायरु ।
१
सिरि गुणभित्ति सूर पायडु जणि ।
मुत्ति र्माण राणो क्कठिउ ।
सिरि जसकित्ति एमदिभासउ ।
पवयणअवभासणसायरु ।
भव्वर मलवण्णोदपयगो ।
जि दुज्जउणि जियउ अणगो ।
सत्थेयणु मउ रदुव णिरुज्जणि ।
सत्थाणाविइयरहं परिचत्तउ ।
जिणि जिणि त्रिसि सिक्खादाविय ।
मलभकित्ति रिस वरु चिरु णदउ ।

घना

एयहं मुणिविदहं भवत्तमचंदह पयकमलहं जे भत्तह्यय ।
ताह जि एांमावालि पयडमिभूयलि वंदिगणहं जाणिच्चथुय ॥

णियजसपसर दिसामुहं वासिय,
अयरवालि कुलकमलदिवायर,
आसि पुरिसजे अगणिय जाया,
जिणपयपंकयाहं णिरुत्तपउ,
जाल्हे शासु साहु चिरु वुत्तउ,

चर हिसार पट्टणहि णिवासिय ।
गोया णगोतिपयडणियमायर ।
ताह जि कि वण्णमि विक्खाया ।
परियाणियउ जेण परमपउ ।
पुत्तु जुयलु तहु हुयउ णिरुत्तउ ।

महजो भवगुणमणिरयथाचरु,
सहजपत्न्यु पदमउ नय वल्लु,
शिवनम रुनसीलचयसज्जा,
पुरिचरयणउ पाय गरुखाणी,

तिविह पत्त दायेण कथायरु ।
तेजु डयरु विवुह जण दुल्लु ।
..... ही पढमिल्लु भय ।
सच्चित्तजि परहु उवसमवाणी ।

घत्ता

तहिं उरि उवणणा लनलणपुणणा छह एदण आणदयर ।
ए जिणव्वर भामियं ढव्व सुहारिय एं छहरसजणपोसयर ॥

ताठ पढनु चक्कीत्तिलयाडरु,
दाणु एय करुणं सुक्खारं उरु
चिणपयाचिहि करणपुरदरु,
भूरि दव्वु नवसाएँ अज्जाय,
जिणणाहिणु पडठु करारविचि,
तिस्ययरत्त गोत्तु जि वद्धउ,
धामाहिय तहु भामिणिभासिय,
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय,
मागणु माइय चिणपय कमला,
पदमउ वायउ तीयउअमला,

दुहिय जणाण दुक्खणखयमरु ।
परिवारहु पोसणे सुरभूरु ।
णियकुलमदिर वहु सोहाहरु ।
लच्छि महाउ चवलु पडि वज्जिअ ।
मणइ छिय दाणवहु दावचि ।
सघहिउ महदेउ जसद्वउ ।
जिणदासहु सुवस्सणेहासिय ।
वहु उवमिज्जइ तहिं सीलहु सिय ।
तिणिय पुत्त हुयतांइ गुणाला ।
वद्धरजुमाभु नामाला ।

घत्ता

महजपत्न्यु मुंडउ यउ पुणु हुउ छोतमु गयतमु विमलजसु ।
दुहियण दुहखडणु णियकुलमडणु, गुणवणणाण कोई सुत ॥

तामु पियग्गिम गुणसील अतुल्लो,
रिउर धरहिय अहिं द्वाणें साहिय,
एह पमाणा भूर्यलि सुवसाणिय,
वणिवर वट्टु चो मुक्खेसरु,
वीरदेउ पदमउ गुणमदिर,
घोयउ हेमाहेसु उ दुल्लु,
लउगी एणमे मानिउ तीयउ,
रुपां रुयें जिय मय रद्धउ,

जायण जण आसातरु वल्ली ।
ताहिं गांभहुय पुत्त गुणाहिय ।
गुरुयण जेहि, णिच्च मग्गमाणिय ।
वीयराय पय पकय महुयरु ।
दाणु एय करु जो नाग सु दरु
णियपरियणयणम्मि अइवाल्लु ।
देव सत्यगुरपाय विणायउ ।
जि महियलि जसु विम्मलुलद्धउ ।

आस्थिथिरा पंचमु घम्मंगो,
गिर एयरहु जत्तहं संघाडिउ,
छट्टउ जालपु वणिणाय जाणणु,
सहजुपाल एदणु पुणु तीयउ,
मणव्रंदिय दायणु चितामणि
भीखू ही तहु पिययमसारी,
पढमु पुत्त खेता खेमकरू,
ठाकुरु णामे तायउ एदणु,

सिरिमहजपालु सुउ तुरय पुणु हु डाला णामे वीण भुउ ।

अःमाहिय तहु पिय णं रामहु सिय चारिपुत्त संजायधुउ ॥

जिणदेवभत्त दुदणु गरिदु,
सेग्वू णामे तिजउ सपुण्णु,
पुणु सहजपाल सुउ पचमिल्लु,
केमवड भासिकलत्त तहं
पहगजु पसिद्धउ गम्भलोड,
हरिराजु जि पडिय गुणवद्दाणु,
जगसाहु जयम्मि मई'पहाणु,
मिरि महजपाल सुउ भ'णउ छट्ट .
सगवसणविरत्तउ धम्मि रत्त,
गेहंमि वसति अहपवित्ति,
तोसडु णामे तोमिय जणोह;
णं कुलहरकमलणिवागलछि,
सुर वल्लिव पणियणपोसयारि,
दाणो पीणिय णिरू तिविहवत्त,
तहि गविभ समुभव पुत्त दुण्णिण,
जेट्टउ वंसणारयणहुं करंडु,
विल्हा णामे गुण सेणि संडु,
कुरुखेतदेस वासिय पवित्त,
जिणपूयाइविह छकम्मरत्तु,
जिणधम्मधुरंधर इत्थलोड,

णिव्ववि हियवुहयणजणसगो ।
चउविह सघभारू णिव्ववाहउ ।
परिवारहु भत्तउ कमलाणणु ।
जिणसामणु वि जेण मणिभायउ ।
खेमदु णामे विक्खायउ जाण ।
पुत्त चउक्कहि सोहाधारी ।
वंःयउ चाचा चाय सुदरू ।
भोजा चउत्थउ जण आणदणु ।

परिवारभत्त दरवे सु सिद्धु ।
जामा चउत्थु एदाणिकणु ।
थील्हा णामे वहु गुणगरिलु ।
तिण्ण पुत्त जाया पवित्त ॥
चउविद्वारो जो भव्वजोड ।
छकम्मर तुगुणगणणिहाणु ।
णियकुलकमलस्स त्रियासभाणु ।
समार महाणव पडणभट्टु ।
पात्तियउ जेण सावयचरित्त ।
धणु अजिजउ जि दाणहु णिमित्ति ।
आजाही तहु पिय न'णय रोह ।
सुर सिधरगामिणि दीहरछि ।
जुवईयण सयलहं मउकमारि ।
महमीलपटव्व यणाहभत्त ।
णं महिपयक्खउ वउय'व'णण ।
कुलकमलवियसणकिरणचट्टु ।
मिच्छत्तसिहरि सिरि वउजवंडु ।
सावय वय पालण विमलचित्त ।
परिवारहु मडणु गुणणिउत्तु ।
तंह गुण वण्णणि को मक्कु होड ।

सदजासाहृ हि पमुहहिर वणु,
मिरि सेट्टिवांस वणु धणु,
तहु पिय जालपा य वणुणीय,
तहि गाठिभउ वणुणासुयपुण्णि,
तुगिया वि पुात्त जा पुण्णमुत्ति,
जेमी ण मा वरसीलजुत्त,
सा परिणिय तेण गुणाथरेण,
णिय भायर रादणु गुण णिउत्त,
हेमा णामे परिचारभत्त,

*

*

*

*

*

जिण वयधारण उक्कटण,
जणणी जणु वि परिवारलोउ,
अणुणु वि न्वसेण्णु तवरणोण,
जसफित्तिसुण्णिदहु रावि विपाय,
तासद्ध रादणु दिवराजु अणुणु,
परिारभत्त गुणसेण्णुत्त,
सच्चच्चद भासि सच्चेवलीणु,
तहु णंदणजाया तुण्णिवार,
चंदुवकालयरु सिखरचंष्ट,
दीयउ पुणु णामे मल्लिद सु,
तोसद्ध पुत्त पुणु विण्णुजाय,
जोठी णामे जीमो जिउत्त,
वयण्णियमसीलपालणुममग्ग,
लहुडी णामे जेल्ली पत्तित्त,
सेले मोहग्गे मिय समाण,
तहि णंदणहू याविण्णुसज,
पंच वि भयरहं जि अण्णुमुथा,

इहु परिणु वुत्तउ सजसपत्तित्तउ, जा कणयायलु सुरसास ।

जावहि गहि मउलु दिवे आहंढलु, णदउ तावहि सजसवसि ॥

भायर चरक्कजु उणुणु चियणु ।
तेजा साहु जि णामे पसणुणु ।
परिवारभत्त सीलेणसीय ।
राजसपालु ढाकरु जि तिण्णुणु ।
णिण्णुच्चजि विरइय जिण्णुणाह भत्ति ।
कोरुइ वण्णुणु इ तहि गुणह कित्ति ।
वहुकालि जति सायरेण ।
मग्गेण्णुणु विण्णुहउ कमलवत्तु ।
तहु घरहु भारदेण्णुणु विरत्तु ।

ससारु असारुउ मुणिसणेण ।

सयलह विपमावणु करि विसोउ ।

जणुणुवेसुधरिउ णीसल्लएण ।

अणुणुवयधारिय ति विगयमाय ।

सा वाहिय पियरोहि पसणुणु ।

णियवसगयण उज्जोयमित्त ।

जिणधम्मकडिजकारणयत्रीणु ।

जिणधम्मधुरधरगुणगहीर ।

पढमउ सउजणह जणइ अगंढु ।

वीसेगूणहुं जिणवरहु दासु ।

जिणधम्मि कम्मि रयत्रिगम माय ।

जिणपयगधोवयण्णुसत्ति ।

जिणसमयहु भरु धरणअभग्ग ।

विहुं परिवारहं जा णिअभत्त ।

णिरु पत्तहं चरविह देइ दाण ।

माढा तेजा णामे मणुज्ज ।

जालही वीरो पमुहहं हुया ।

इय सम्मङ्गिणचरिए शिरुसंवेयरयणसंभरिए वरचउवगययासं वुहयणवित्तस्य जणियउल्लासो मिरिपण्डियरइधूविरइए साहु सहजपाल सुय सिरिसंघाहवसहदेवलहुभायरमहाभव्व साहु तोसडणा-मणामाकिए कालवकतहेव दायाखंमणि देसवणणो णाम दशमो सधो परिच्छेउ मम्मत्तो ।

सव्वत्थे महदोविशुद्ध करणो जो जईणत्तभोरदो । शिसुवादिगुणावली परिचिटो सम्मग्ग सगल्लग। णटो। धम्मंनलाससिक्खदयए सवस्सुजोहाणिस । सो जीवउ सार तोमडो तह कइ रइधू गुणिंभोणाध ॥

सवत् १६२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १७ शुरुवासरे श्री काष्ठासधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक अष्टाविंशति मूलगुणप्रतिपालकान् जिनमदनकरिघटाकु मविघटनकेसरीकिसोरान् श्री श्री श्री हेमक्रीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक परमोदासीनगुणाविराजमान कुमारसेनदेवाःतत्पट्टे भट्टारक हेमचन्द्रदेवापत्पट्टे भट्टारक अधोधजीवमतिप्रतिबोधकान् परोपकारकरणसमर्थान् भव्यांचुजविकामनैकमार्त्तडान् भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे आगमाध्यात्मरसगामिकान् परमपनीयससोपितगात्रान् प.मोदासीनपद्मसत्यागी भट्टारक श्री यशःक्रीत्ति-सूरनामधेयान् तदाम्नाये शिष्यणी शैलतोयतरगिणी विनयवागेश्वरी पञ्चअनोवृत व्रतपालकी अर्जिकादेवी श्री ब्रह्म जिनप्रभावनाकारक हीनदीनदुखितममुद्धरण ब्रह्म पचायण अज्जिकादेवश्री तत् शिष्यणी सीलतोय तरंगिनां विनयवागेश्वरी वार्द्धजी ब्रह्मपचाइण इव बद्धमानचरित्र लिखापित । लिखितं पांडे त्तिपरदास अलवर-गढ-वास्तव्याय ।

४०. सुदर्शनचरित्र ।

रचयिता श्री नयनन्दि । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३५-४० अक्षर । रचना संवत् ११०० त्रिपि संवत् १५६७. विषय-सुदर्शन स्वामी का चरित्र अथवा एमोकार मंत्र का प्रभाव ।

संगलाचरण -

इह पंचणमोकारं लहेवि गोववि हुवउ सुदसणु ।

गउ मोक्खकहु अक्खस्समि तहो चरिउ वरचउवगपयासणु ॥

अन्तिम भाग—

आयहो गंथहो वुहजणियतुट्टि,

पुणु गंथसिद्धि जय मणहरेण,

सोहम्मो जंवृसामि एण,

पुणु णंदिमिउ अपरज्जिएण,

पुणु भइवाहु परमेसरेण,

पोट्टिएण पुणु क्खत्तिएण,

विरइए अरहंतहि अत्थसिद्धि ।

गोयमअहिणारो गणहरेण ।

पुणु विणहुदत्त दिविगामिएण ।

गोवद्धणेण सुरपुजिएण ।

पयडेविणु साहु मुणीसरेण ।

जय णामे धम्मपवित्तिएण ।

शामं सिद्धयै स नएण,
 पुणु विजगमेण^१ पुठिहएण,
 पुणु चम्ममेण णअखत्तएण,
 पणुवु व्रवमेणे । जयमएण,
 भद्रे जय भद्रे पुगमेण,

विदिसेणे तवसिरिंजिएण ।
 पुणु गंगएव शामिहएण ।
 जइपाले मुएिजय पत्त एण ।
 पुणु कंसायरियं गयभएण ।
 लोहज्जे सिवकोडियकमेण ।

घत्ता

गणहरणव मुनिंरनि कुवलचचदहे^२ एयहि अवरहि अविचलु ।
 आहासिउं पवयणे जहं मइभवियणितहं पचणमोकारहो पलु ॥

जिणिदस्स शीरस्म तित्वे उहत्ते,
 मुंनअयाहहारो नहा पामणदी,
 ! जणुविट्टु धम्मं धुराणं विसुट्टो,
 भव ओदि पोउ महीविस्म रादी,
 जिणिडागमत्तामणे एयचित्तां,
 एणिकासिंरुवाहिवाणअवनी,
 अमे नाराणं धम्म पारमिपत्तो,
 गुणायाम भूमीसु तिल्लोकरुणदी,

महाकुंडकुदाणए एंनसते ।
 पुणो विसहुणदी तउ एदणदी ।
 कयाणेय गंधो जयते पसिद्धो ।
 खमाजुत्तसिद्धं तित्तं विसहणंदो ।
 तवायागणिट्टाड लद्धाड जुत्तो ।
 हुउ तस्स मीसो गणीरामणदी ।
 तवे अगवी भव्वराईवमितो ।
 महापांड अ तम्म माणिककणदी ।

घत्ता

पढमसं मुतहो जायउ,
 चरिउं मुदप्पण णाहहो तेण,
 आराम नाम पुरवरणिवेत्ति,
 मुग्गउ मुग्गिअ विवुइयणइट्ट,
 नंरिउट्टर अग्गिअर सेलवज्जु,
 तिहयणु गारायण मिग्गिणिकेउ,
 मंगलगरपडट्टिसिय रविगभित्तये,

जगविस्खायउ मुणिएणयणंदि आणिट्टिउ ।
 अवाह हो विरइउं बुद्धअहिएणदिउ ।
 सुपमिद्व अवंती शाम देसि ।
 तदि अत्थि धारणयरी गरिड्ड ।
 रिद्धियदेवासुरजणियचोज्जु ।
 तहिणरवह पुगसु सोयदेउं ।
 तहि जिणवर वद्धु विहारु अत्थि ।

१ शिष्टेनका २ अविचलु ३ मइभवेणोत्तर ४ पचणमोकारहो पलु ५ महाकुन्दकुदाण ६ सिरिकादि,
 ७ अंति ८ नदीपिट्ट, नहासि ९ मूउ ।

शिख त्रिकरुमरुतंहो ववगएसु,
 तद्द केरलि चरिउ अमरछरेण,
 जो पढइ सुणइ भावइ लिहेइ,

एयारह संवळर सएसु ।
 एयणदी विरयउ विछरेण ।
 सोसामय सुहु अविखल लहेइ ।

घत्ता

णयणंदयहो मुण्णिदहो कुत्रलयचंदहो एरदेवासुगवदहो ।
 देउ देइ मइ शिम्मल, भवियहमगल वायाजिणवरचंदहो ॥

इत्थसुदंसणचरिए पचणमोकारफलपयासरे माणिककणंदितइविज्ज सीसणयणादिणारइए,
 गइहरिविस्थरो सुरवरिदधोत्त तहा मुण्णदसहमडव तसु विमोक्ख वासे गमंतणमोपयफलं दोहदमो पुणो-
 सयलसाहुनाभावलीइ माणकयवणणो भण्णिउ संधि वोदहमो ।

संवत् १५६७ वर्षे माघ मास कृष्णपक्षे द्वितीयाया तिथौ बुधवासरे पुष्यनक्षत्रे श्री कुन्दकुदाचार्या-
 न्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे
 भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवात्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तोडागढमहादुर्गात् राजाधिराज सालकीराउ
 श्री सूयसेन विजइराज्ये तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सह गोत्र साह तेजा भार्या करम इतो द्वितीय भार्या
 लोचमदे । प्रथम भार्या करम इतो तत्पुत्र साह डूलह, द्वितीय भार्या लोचमदे तत्पुत्र साह श्रीपाल, त्राह डूलह
 भार्या डूलहदे तत्पुत्री द्वौ साह आशा द्वितीय पुत्र साह हेमा । आशा भार्या अहंकारदे द्वितीय कनौलादे ।
 साह हेमा भार्या हपमदे । साह श्रीपाल भार्या सरस्वति । तत्पुत्री साह होला द्वितीय साह लाला । होला
 भार्या हुलसरि तत्पुत्र साह सुरत्राण लाला भार्या लजिनादे । पुत्र साह रलसी भार्या रयणादे एतेषांमध्ये
 साह रतनसी इदं पुभक्त सुदशन चरित्रं लिखपितं । पल्पविप्रान व्रत निमित्तंआचार्य श्री अमयचन्द्रदेवा
 तत् शिष्य मुनि पद्मकीर्त्ति समर्पितं ।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ११५. साइज ११।।४१।। इच्च । पत्येक पृष्ठ १२.६ पक्तियां तथा पति पक्ति
 मे २५-३० अक्षर । प्रति मे दो तीन पुस्तको के पृष्ठों की मिलाबट है ।

संवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या तिथौ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारंगणे सर-
 स्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्यये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः
 तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री अमचन्द्रदेवाः
 तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा
 तदाम्नाये चंपावत्यां वास्तव्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये खंडेलवालान्वये बोहरा गोत्रे सा० श्री लीरम तद्भार्या

१ भोजराउ ७ विश्वरेण ।

वयपंचतिक्खणहरो, पवयणमायासुदीहजीहालो ।
 चारित्तकेसरहो जिणवरपंचाणणो जयउ ॥
 तिहुयणकमलदिणोसु, णिणणासियघण'तिमरभरु ।
 पयाडमि चरिउ पसत्थु पणविनि रिसहु जिणोसरु ॥१॥

अन्तिम पाठ—

पुणुलहेवि एयमणुयत्तउं दिक्खिउपत्तवि संजमु
 देवसेणगणबंदियउ होइसिद्ध जयउत्तमु ॥

इय सुलोयणाचरिए महाकव्वे महापुराणहिट्टिए गणदेवसेणविरइए अट्टावीसमो परिच्छेउं, संम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

एंदउ सुइ रुज्जिणिंदहो सासणु, जयसुहयरु भव्वयणासासणु ।
 एंदउ पयजे धम्मपयांसिउ, पाठउजेणसत्थु उ णासिउ ॥

साहुवगुरयणत्तयधारउ,
 दाणु देवि इदिय बलढमगाहं,
 एदउ शरवइ सहु परिवारे,
 एदउ पयपरि मुच्चउपावे,
 वीरसेण जिनसेणापरियह,
 तहसंताणि सभायउ मुणिएपवरु,
 रावणुव्वबहुसीस परिग्गहु,
 गंड विमुत्त सीसु तहो केरउ,
 चालुक्किय वंसहो तिलउल्लउं,
 तिणमिवमुय विरज्जु दिक्खंकिउ,
 जायउसासुसीसुसंजमधरु,
 तासु सीसु एक्को जि मजायउ,
 सीलगुणोह रयणरयणारु,
 मोहमहल्लमल्लतरुगयवरु,
 तवसिारि रामालिगियविग्गहु,
 पंच सर्मादिगुत्तियत्तयरिद्धउ,
 मयरयद्धय सरपसरणिवारउ,
 सिरिमल धारिदेउ पभाणिव्वइ,

एदउ सावउ वयणुणसारउ ।
 वेज्जावव्वु करेउ मुणिएपरहं ।
 पालिय णाणिय यारें ।
 रंगिज्जउ जराधम्मपहावें ।
 आयमभावभेयबहुभरियह ।
 होट्टलमुत्त णाम बहु गुणधारु ।
 सयलायम हुत्तउ अपरिग्गहु ।
 रामभहु णामें तवसारउ ।
 होत्तउणरवइ चाएं भल्लउ ।
 तिरयणरयणाहरणालंकिउं ।
 णिवडिदेउणा मुणिएहणियसरु ।
 णिहणिय पंचेंदिय सुहरायउ ।
 उवसम खम संजमजलसायरु ।
 भन्नियण कुमुयचट्टु च्छणससहरु ।
 चारिय पंचायारु परिग्गहु ।
 गणवंदिउ भुवणयलि पसिद्धउ ।
 दुद्धर पंचम हव्वय धारउ ।
 णामें तिमलसेणु जाणिज्जइ ।

तासु मीसु गिचि मयसुंभ उ,
 क्कहिय धम्मु परिपालयसजसु,
 मच्छपरिगगहु सिहवगुलीलउ,
 उ-मम गिलउ परिच रथरयेणत्तउ.
 देवमेण णामे सुणि गणहुरु,
 अमुण तेण किपि होणाहिउ,
 सयलु विरगउ देववाएसरि,
 पुहु वुठयणु मंहेणियु भह तउ,
 रक्खस संवत्सरे वुद्धिदसए,
 चरिउ सुलोयणाहि णिणउ,

गुरु उअएसें शिव्वाहियतउ ।
 भवियकेमलरविणियासियतमु ।
 वम्भेकेहाए पहावणुः सीलउ ।
 सोम्मु सुयणु जिणु गुणअणुरत्तउ ।
 विरइउ एउ कवु ते मणहर ।
 सुत्तविद्वेउं कौई मिसाहिउ ।
 तिहुयण नणुवेदिय परमेसरि ।
 केरतु पउदेउणवहउ ।
 सुक्क चउहसि सावणमासए ।
 सदअथवणयसंपुणउ ।

यत्तो

एणि गउकदिउत्त गव्वेणुक्रियउ, अवरुण केणवि लाहें ।
 किउ जिणवम्मंडो अणुत्तर गुहमणे कयधमुछहें ॥

अद सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृतिविक्रमादित्यगण्डे सवत् १५७७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ
 मोषा मरे अश्वना नक्षत्रे श्री योगिनीपत्यामने श्री कान्तिदीनहे श्री फेरोजाबाददुर्गे गुणजनव्रतिसंसेव्यमान
 विद्वज्जनाग्निनिनाम'या भव्यजनाध्यासखिात्राखि तनिवासिमनप्रवृत्तनासाया जिनधम्मरत्नाकारप्रियायां
 दुन्दितस्वस्थोकरणकुमाया प्रतापपद्मेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इवराहिसशाहि रत्नमाणार्या जैनवौद्ध-
 वार्वाह मान्य नैयायिक जैवादि पद दर्शना द समव्यताया जयवंत श्री काष्ठासंघे -माथुरान्वये पुष्करगणे
 वादिकविभजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्तिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री यश-कीर्तिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्रीमलय-
 कीर्तिदेवास्तपट्टेदयात्रिभारद् भट्टारक श्री गुणभद्रसूदिना तदात्मनाये अप्रोतकान्त्रये गर्गगोत्रे श्री
 योगिनीपुरवास्तव्य. मुश्रावक नाधुनानिग तस्य माया साध्वी महीधरही लखणसी भार्या-देवराजही तत्पुत्र
 दीन्दास तस्य भार्या धनराजही वृत्तोय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषा मध्ये चउधरी लखणसी तस्य
 भार्या शीलतोय तस्यगिणी शिवा नाम द्विडराजही तत्पुत्र वीरदास द्विजानां पचमहाव्रतधारकः विवेकगुण-
 मपत्र विद्वज्जनमभारजन भव्यनीवप्रतिबोधः मुनि श्री ३ विमलाकीर्तिदेवेरिदं सुलोचना चरित्र लिखा-
 पित निजद्रोपोपानित नमंचयनिमित्तरथं मद्रभायतस्त्रेण लिखापितं आत्मपठनार्थं ।

४२. मुकुमाल चरित्र ।

रचयिता मुनि श्री पूर्णभद्र । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४५ माइज .१०।५५। इच्छ । प्रत्येक
 पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३१×३३ अक्षर । प्रारम्भ के-२० पृष्ठ से .३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है ।

मंगलाचरण—

पदमु जिणवरु णविवि भविण जडमउड विहुसियउ विसह...मयणारि णासणु ।
 असुरासुरणरथुअचलुणु सत्ततन्वणवणयपयासणु ॥
 लोयालोयपयासयरुजमु उप्पणउयाणु ।
 सो पणवेप्पणु रिमहजिणु अक्खयसोक्खणिहाणु ॥

प्रशस्ति—

इय भग्ग खेत्ते संपणवेसु,	विउगुज्जरत्त णामेण देसु ।
तासु वि मज्झह ठिउ सुप्पसिद्धु,	णायरमंडल धणकणसमिद्धु ।
तहि णयरु णाम संठियउ ठाणु,	सुप्पसिद्धु जगतय सियपहाणु ।
सिरि वीर सूरि तहि पत्ररभासि,	विणयालंकिउ गुणरयणरासि ।
मुण्णिभदसीसु तसु जाउ संतु,	मोहारि विणायसु, णिम्मसत्तु ।
तासु वि सुकुमाउह हयाउ,	सिरि कुसुमभद मुण्णि सोस जाउ ।
तासु वि भविणायण आसपूरि,	सजाउ सीसुगुणभद सूरि ।
हउ तासु सीसु मुण्णि पूण्णभदु,	गुणसील विहुसिउ गुणसमुहु ।
मइ बुद्धि विहणइ एहु कवु,	विरयउ भविणयण णिसुणत सवु ।

जमजय सायरु तवइ दिवायरु जाम मेरु महि वलइ शिरु ।
 जो वाइ पहंजणु जणमणरंजणु ताइउ सत्थु जइ होइ चिरु ॥

इय सिरिसुकुमालसामिचरिए भव्वयणाणंदयरे सिरिगुणभदसीसु मुण्णिपुण्णभदविरइए सुकुमाल-
 सामिसव्वत्थसिद्धि गमणाए छट्ठो परिच्छेउ समत्तो ।

४३. सुकुमाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४५ खाइज १०।।५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ
 पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर । रचना संवत् १२०८ लिपि संवत् १५४६ लिपि संवत्
 चाद में लिखा गया है ।

मंगलाचरण—

सिरिपंचगुरुहुं पयपं.मइ पणविवि रंजियसयणहं ।
 सुकुमालसामिकुमरही चरिउ आहासमि भव्वयणहं ॥

प्रशस्ति—

आसि पुरा परमेट्ठिहि भत्तउ,	वधविह चारुदाण अणुरत्तउ ।
सिरि पुरवाड वंस मंडण धउ,	णियगुणणियराणंदिय वंधउ ।

गुणभक्तिय परिणामिय मुगीमर,
 ततो गच्छु शासिण पियमी,
 पविमलमीलाहरण चिह्नमिग,
 ताह तरुण्य पीथे जायउ,
 श्रवण महेंदो बुच्छु वीयउ,
 जाल्लु गामे शणिय चउवउ,
 छट्टु सुवम पुण्यहु यउ जह,
 ण्डेसु सुवण्ड पालु म्मासिउ,
 पटमहु पियणामेण सत्तकखण,
 तनि कुमारु शासिण तणुवहु,
 रिणयविहमण भूमिय कायउ,

गामे साहु रजाणु वणीसर ।
 गहिणि गामणइंइय सुहयारी ।
 सुहि सज्जण बुहयणहपसंसिय ।
 जणसुहयण महियलि विक्खायउ ।
 बुहयणु सणहलु तिककउ तइयउ ।
 बुणु विसलकखणु दाणमहत्थउ ।
 ससुदपालु सत्तमउ भयउतह ।
 विणया इय गुणहि परिभूसिउ ।
 लकखणकलिय सरिर वियकखण ।
 जायउ पकय जेम मरोरुहु ।
 सहियलियमि च्छत्त परिचत्तउ ।

घत्ता

शाण धउर वीयउ पक्खुकुमरहो हुय वरणेहिणि ।

पठना भाणयासुयणहि गणिय जिणमउ रयवहु रोहणि ॥

तहि पालु गामेण पइयउ,
 वीयउ जाल्लु जो जिणु पुज्जइ,
 तउ यउ वलि जाल्लु जणिउज्जइ,
 सुणियउ नायउ सपटु गामे,
 पयणणोपोसटु वम्मसपउ,
 मउकु रि एउ जि ज्जण अण्णो,
 चउरिहु सयु मदीयलि राउव,
 गयहु जाउ पिसुणु तलु दुज्जणु,
 एउ मत्थु मुणियरउ पटिउज्जउ,
 जामणत्तगणि चउदिजायउ,
 पीथे वसु ताम अट्टिणउउ,
 वारहमयउ गयउ कय हरियउ,
 वम्मणपत्त अणहणो जायउ,

पठमु पुत्तं गं मयण सरुवउ ।
 जसु रुवेण गामणसिउपुज्जइ ।
 धंउव सयणह सम्भाणिउज्जइ ।
 गणवइ गियसवुदर सियकामे ।
 जिणमयरयहो दोउ दुक्खकखउ ।
 ससारिय सुहयोसुरवण्णो ।
 जिणवरपयपंकयए वदउ ।
 दुट्टुगसउ गिणिय सज्जणु ।
 भाक्तियभधियणेहि गिसुणियउज्जउ ।
 कुत्तागिरिमेरु महीयलिसायर ।
 सज्जणसुहिमणाइआणंदउ ।
 अट्टोत्तरउ मदीयलि वरिसइ ।
 तिउज दिवसि ससि वामरि मायइ ।

घत्ता

वाटर मउय गयउ नहउ पट्टविगहिउ वण्णउ ।

जगन्मणहरण सुहृदित्थरण एउ'अत्थु सपुण्णञं ॥

इय सिरिसुकुमालसामिमणोहरचरिए सुदरयगुणरयणोणयरभरिए विवुहसिरिसुकुइसिरिहराविरइए साहु पीथे पुत्र कुमारणांभकिए सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणो णाम छट्ठो परिच्छेउ सम्भत्तो । इति सुकुमालस्वामि चरित्र पंडित श्रीधर विरचितं ।

सवत् १५४६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ वृधवासरे पुष्पनक्षत्रे वारावतीनगयो सुरत्राणगयासुहीनराज्ये श्री श्रीमूलसंधे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री नंदसंधे श्री हुन्दकुदाचायोन्धे भट्टारक श्री पद्मनाददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभवन्ददेवा ।

४४. हरिवंश पुराण ।

रचयिता आचार्य श्रुतकीर्त्ति, भाषा अपभ्रंश । पत्रसंख्या ४१७. साइज ११x३ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५ । ४० अक्षर प्रति प्राचीन है । रचना सवत् १६०७ ।

भंगलाचरण—

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

समिद्धं त्रिमसद् स हरिवंसद् पावतिमिरहर विमलवशि ।

गुणगणजसभूसय तुरय अदूसिय सुव्रयणोमियर्हालयहरि ।

अन्तिम पाठ—

वीरजिणिह चक्षणपठावेपणु जिणसासणमहतहो ।

दिसतु सम्माहि सेंति भव्वयणहं धम्मणु रायरत्तउ ॥

इय हरिवंशपुराणे मणहरसरायपुरिसगुणालकारकल्लाणे तिहुयणकित्ति सिस्स अप्सुदकित्तिणा महाक्खु विरयतो णाम चवालीसमो सधि परिच्छेउ समत्तो ।

णिवणियरदेसुरट्ठो, जयसिरि धग्माणु राउमणिहिट्ठो ।

णंदउ जणवउपवरो, सुह संपह दाणकपयरो ॥ १ ॥

चउविह मुण्णिगणसहिउ, एदउ सिरिणंदसंघुसुरहिउ ।

णंदउ जयसिरिजुत्तो, मावयगणुधम्मअणुरत्तो ॥ २ ॥

हरिवंसगयणचंदो जहदसण सयल भुवणआणंदो ।

सयलोयसुजसपवरो णोमिजिणो भवियट्ठुरि पहरो ॥ ३ ॥

प्रशस्ति—

इय हरिवंसपुराणु,

पथइमितहोअविहाणु,

भूभरह पसिद्धउसुह समिद्धु,

अइगरिट्ठु कइणा विहिउ ।

जे लेहाविउ पुणु लिहिउ ।

कुरु भूमियदह विहिरिद्धि रिद्धु ।

तहि च्यालइ त्रिवससिरोमणि,
पोमावइ पुरवारु गुरुक्कउ,
सीखमाववसणदु महपंडिउ,
आयमवेयपुराण पहाणउं,

भवियण कमल पवोहण दिणमणि ।
वसुमय विमणपमायपमुक्कउ ।
णिम्मंल विज्ज चारिदंइहमडिउ ।
जोईमअत्थ संत्थ गुण जाणउं ।

घत्ता

चायहं सुपहाणुं धोइमल्लु सरसइ णिलउ ।
पणोवासरुणींइ सोइइ वुहयण कुल तिज्जउं ॥ ३ ॥

गुज्जर गोठि गुट्टि सुपहाणवि,
धम्मजुत्त संम्मत्तालंकिय,
रजकज्जसज्जंणसुहदाइय,
पूयपतिट्टइट्टसुणिमित्तं,
मंगलगायसदण्डयरस,
जिण मल्लाण मिलिवि णारीणर,
डावभावविठमम अइकुळर,

तेयं सुवपयडेवउदाणवि ।
पुण्यपवित्तणामचटंकिय ।
त्रिद्विज्जिच्छेइहरिताइय ।
णियउणयणरमुक्कलचित्तं ।
णिच्चमहुळव पुण्यहु सरइस ।
तणसिगारसार मोहधर ।
चउाणकाय सुरणवइ सद्धर ।

घत्ता

कि वण्णामिताह गुज्जरगुट्टिसमत्थजहि ।
जिमधेम्मपहाणो पयहुं पहावणधम्मु तहि ॥ ४ ॥

जेणल्लिहाविउ गंथ गरिट्टउ,
गुज्जर गुट्टि आमि पयडियजस,
हेरुकिंया वंसह सुयहाणवि,
हरसीसाहु णामु सुगरिट्टउ,
हरसीभज्जल्लिक्कमलच्छिय,
तासु उवरि गांदेणु उप्पणउं,
तासु सरो गेहिणियगयामिणि,
तासु पुत्र चंदू चंदाणु;
वीयउ मदूमणोहर गारउ,
चदू भज्ज सयल्लगुणसारी;

पयइमित्तोसु वंसु सुविसिट्टइ ।
पीणिय भवेत्तोय चाए रस ।
पीणिय भवेत्तोय चउदाणवि ।
लहुराइसीविवसमणइट्टउ ।
गिहवम्महु पंडिपल्लतणददिय ।
उधू णामु जसरासि मणुणणउ ।
धम्मलीण परिवारहु सामिणि ।
सुक्खियिच्छिल्लिच्छीहलेमाणीणु ।
परम धम्मरइवरघुरघारउ ।
णाम णयण सिंरि णयणपियारी ।

वृत्ता

तहु गेहि उवण्य वेविपुत्त एं चदरवि ।

सिउ गणु पढमिल्लु अयसमहो हरणाइंपवि ॥ ५ ॥

लहु क्षीपसु पुण्यालय खसुअ,
मिउगणतिय रूपारुवहरड,
भीखमभञ्जपटोगुणजुत्तिय,
मिउगुणतणय वेविकुलमंडण,
माणभञ्ज पाथुल मणमोहण,
चट्ट वधु मद चिरु भासिउ,
तासु भञ्ज पदमागुणसारी,
वीई सुद्ध कुवरि णामाकिय,
मीलाहरणविहसियदेहिय,
कुवरिउयरसुउ तिणिएउ वणणड,
णारयणतय धम्महु फारण,
दाट्टु नाहु पढमसुउ भामितउ
जमहरु वीउ भुवणि जस सायर,
दाट्टु णारिउ हयसु मणोहरि,
पढम भञ्ज रुइ सासुय खण ।
खिउ मिरियोम अवर सुपहाणी,
दाणमाण मम्मत्त सुरेवइ,
अतिहि दाणु अणु दिणु वहु दिञ्जइ,
तासु सरीरि पुत्तु उप्पणणउं,
अम्मणु णामेण मणोहरु,
गेहणितासु रजगुणसारी,
परियणु अवरु जडा वणिएउजइ.
एयठ मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु,
दाट्टु नाहु जिणेमरि भत्तउ,
अभयाधारमन्थ पुणु औसह.

धम्मधरा।रुहसिचणअभुअ ।
दाणपुण्यचेत्तणियमहासइ ॥
सीलाणकेयजणाय ण पुत्तिय ।
मीणुवीउ भाउं अहखडण ।
सुह ससिहर समिक्किरण णारोहण ।
जासु सुजसु बुहयण सुपयासिउ ।
रुवरासि वल्लहसुपियारी ।
जा मोहग रुवरड संकेय ।
मुण्यवर विणयदाणसुसणेहिय ।
सुजसंपुंज कव्वह वण्णैकइ ।
कप्परुवजण दुक्खणिवारण ।
जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ ।
णयण सीहु तहु लहु वउभायरु ।
णरइ पीड वैवि कामहु घरि ।
लांछ पयक्किल अगसुह लक्खण ।
सासमुह जिम इवहु इदाणी ।
रइ मोहग सुजस णदेवइ ।
चउविह सध विणय विरइउजइ ।
माणससरिह सुवसु मण्णणणउ ।
चिरु णदउ जें माडउ णिवघरु ।
णाम राइ सिरिपइसुपियारी ।
तउ वीयउ पुराणु विरइउजइ ।
वणिएउ जासु सुयण गुण कित्तणु ।
पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ ।
तिविह पत्तपीणियसंतोसहु ।

वृत्ता

लेहाविउ एह गुणणिहाणु कल्लोत्तणिएहि ।

शिशुसुगत कहंत भवियण जणमण होइ दिहे ॥ ५ ॥

संवच्छरु सोलह सह उत्तल,
मग्गसिरह सियपंचमि शिम्मल,
जोगु महुत्त लग्गुणरकत्तुवि,
चंदवार गढ दुगा दुग्गिम्मह,
रामपुत्त पंगारवलिहियउ,
सुद्धुकरि वि जो भवियण भासइ,
णदउ भवियणु धम्म गुरुक्कउ,
णंदउ पुहइ चंदुवुहु गुण्णहिं,
णंदउ कमू चउद्धर माणउं,
णंदउ-रुहरीवगारिदुउ,
णंदउ साहु सधारणु सुदंरु,
णदउ पदमसीहु जें साहिउ,
एयइ पमुह सघु णंदउ चिकु,
णदउ पढइ सुणइ वर काणइ,

उवरि सत्तवरि सह संजुत्तउ ।
गुरुवासरु गरिट्ठु पयडउइल ।
सुहदायउससिहखुव सु जुत्तुवि ।
सघाडिव चेयाले मब्भह ।
जिम सुइ कित्ति कईसैं विहियउ ।
पोहि लाहु तहु देउ सरसइ ।
णदउ जइण संघु मलमुक्कउ ।
दाणु पूयसुपयासिय वहुविहि ।
णदउ दीपु भुवणि सुपहाणउं ।
णदउ चूहरु चंदु जणिदुउ ।
णदउ राम गरुवगारिमदरु ।
वारसगुसयलु वि अवगाहिउ ।
सुहु संपय समूहुणवाणहि थिरु ।
णंदउ भाव सुद्धु मणिमाणइं ।

घत्ता

णंदउ गुज्जरगुट्टि परियणपुत्तकलत्तज्जुउ ।

जव लाग कह हरिवंस जाम ससि रवि अटल धुउ ॥

४५. हरिपेण चरित्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २४. साइज ११×४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८-३२ अक्षर । प्रति पूर्ण है । विषय-चक्रवर्ति हरिपेण का जीवन चरित्र ।

मंगलाचरण—

भावे पणविधिमुणिसव्वयहो, चरणकमलभवतावमहा ।
निसुणहु भावियहु वहु रसभरियहु, हरसेणहु पयडेमिक्का ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

घुहयणाह णवपरिथव्वहो, गुरु उवए सिजाणियउ ।
काविजीयइ जिणपणवोप्पणु, ते हरिसेण सम्माणु ॥ १ ॥

सवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनमजोगे श्रीमृत्तसंधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तन्नाम्नाये पौरघाडगौत्रे साह कुंभा भार्या पुरी तत्पुत्र हे तस्य भार्या हिरासिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या चाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौडादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय माह बोधु तस्य भार्या राता तस्यः पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्र लिखापितं । चाई पद्मसिद्धि जोग ।



हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां



१. अनित्य पंचाशत ।

रचयिता श्री त्रिभुवनचंद । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य सख्या ५५, छन्दों में अधिकतर छप्पय तथा सर्वेया हैं ।

प्रथम पद्य—

सुद्ध स्वरूप श्रनूपम मूरति जासु गिरा करुनामय मोहै ।

संज्ञमवंत महामुनि जोध जिन्हों घट धीरज चाप धरो है ।

मारन कौ रिपु मोह तिन्है बह तीक्ष्ण साहक पकति हो है ।

सो भगवत सदा जयवंत नमों जग मे परमात्म जो हैं ॥१॥

अन्तिम पद्य—

पदमनंदि मुनिराज तासु आनन जलधारी,

ता तहि भई प्रसूति सकल जन मन सुखकारी ।

धन वनिता पुत्रादि सोक दावानल हारी,

भय दलनी सद्बोध अन्न उपजावन हारी ॥

उन्नत मतिधारी नरनिर्को अमृत वृष्टि ससय हरनि ।

जय यह अनित्य पंचासिका त्रिजग चंद मंगल करनि ॥१॥

॥ दोहा ॥

मूल सस्कृत प्रथ तै, भाषा त्रिभुवनचंद ।

कीनी कारन पाइ कै, पढत बढत अनद ॥

२. अनेकार्थध्वनिमंजरी ।

रचयिता श्री नन्ददास । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य सख्या ६, साडज १२५५ इन्द्र । रचना संवत् १८२४

मंगलाचरण—

यो प्रभु ध्योतिर्मय जगत् मय, कारन करत अभैव ।

विघ्न हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

भाट पुत्र अचर्तस कहि, कुल अवतस सुजानि ।
 सोरह वरिष है सु जो, अभिनव कठं बखानि ॥
 मार्गसीर्ष वशमी रवाँ अक्षित पक्ष सुभ जानि ।
 अन्ध अठारसै वरसि ऊपरि चौबीस मानि ।
 पठन काज लिख प्रेम कर नद किसोर द्विवेद ।
 झानी लेहु सुधारि करि अक्षर ही को भेद ।

३. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ६ साइज ११×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । रचना सवत् १८७१.

मंगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा ततिहु मन बच काय ।
 वरत अठाई की कथा कर प्रथ अनुमारि ॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि मुनीश्वर जेम, कथा करी हिरदै धरि प्रेम ।
 गोधो जीवणराम सुजान, वरत करै विधि सुं अभिराम ।
 ताके कथा कथा या रहीं, या कुं बुधजन सोधो सही ।
 रेखी नगर कसवो सुभ ठाम, वनवाडी वापी अभिराम ।
 पार्श्व जिनालय सोभै सदा, पूरन करी कथा हम यदा ।

॥ दोहा ॥

अठारह सै इकैतरया भाव उजली तीज ।
 वार वहस्पतिवार नैः सतगुरु कथा कहीज ॥

४. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री नुशानचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या ५. पद्य सख्या ११७, रचना सवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनेमुर वंठ फिरि, वर्धमान जिनराय ।
 पदु अठाई की कथा, सुगुज्यो भवि मत्त, लाय ।

सतरासैरचढौतरै, कातिग मास वखानि ।
सुद्धि आठें वरनन ३०. विसपतिधार सुजान ।

अन्तिम पाठ—

कीयो कथान दिल्ली कै माहि, जैभ्यंचपुरं मनोहर गांव ।

दीहा—

सतरासै चौहेतरे, माम असाढ वखानि,
कई सुशाक सुध भायतै, सुकल तीज मानि आनि ।

लिखत पांढे दयाराम । जाति मोनी ।

५. आदिनाथस्तुति ।

रचयिता श्री मुनि कमलकीर्ति । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पृष्ठ संख्या ५. साङ्ग १०x५॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४० अक्षर ।

मंगलाचरण—

श्री जिनवर शुभ सारदा नमते गणधर पाय ।
कर जोड़ी करुं वीनती अवघारु जिनराय ॥

प्रशस्ति—

आदि दिगवर रुद्रहोए, रुद्राडा रुद्राडा श्रीमूल संघ कि ।
सरसति गछ मोहासाणाए, प गछपति गछपति गिरुवासार कि ॥
गच्छ पतीय गिरुवा सुमाति कीरति सकल भूपण सूरी सरु ।
तास पाय प्रणामी मधुरी वाणी कहि कमलकीरति मुनिवरु ॥
नर नारि अति धणु भाव आणी गीत जिनागम गावए ।
सुर नर किन्नर पद लही निमी पछि सिव पुरि पामप ॥

६. आदि पुराण ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) संख्या २१५. साङ्ग १०x५॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८x३० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आदणमेसु ।
सरस्वती सामी ने वलीस्तु,
दुर्घ सारहू मागड निरमल श्री मरुलकीर्ति पाय प्रणमीन ॥

मुनी भुवनार्ति गुरु बंदसौंजला रासऋसीसोहूह बडो ।
 नव परमादे स्वाद,
 श्री आदि जीणद गुण वणवु चारित्र जोहू भवतार ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

राम कौयो मे नामलोण,
 आनपुराण जोई करीए,
 पढे गुणे जे साभलेए,
 मनवाह्यीत फल ते लहए,
 लखे लखावे न बडोए,
 तेह ने नरनीध सरजेए,
 जे भवियण विस्तार मए,
 जिनवर गणवर मुनीवर,
 तार्थर श्री वृषभ जीण ए,
 जुगल्या यर्मनी वरो या उ,
 पद र्म स्वामी गपी पाए,
 मुगति रमणी प्रगट कायो ए,
 तेह गुण मे जाण' या ए,
 भवि र स्वामी सेत्रमु ए,
 आदि जिनमर २ तगो मेरा ए,
 एन अत भाव आणीए,
 जिनमामण गुण अणत जाणीए,
 मुनी भुवनकारति भवतार,

भात्र सहित बीसालतो ।
 सुगम कौयो मे गुणमाल तो ।
 तेह ने पुन्य अपारतो ।
 मुगति रमणी वसी होय तो ।
 करे ह न उधार तो ।
 मुगति रमणी होय हार तो ।
 तेह ने पुन्य अपार तो ।
 गुण गुण्यां मे सार तो ।
 कौयो पर उपगार तो ।
 लोक कयो जयवंत तो ।
 धमावर्म बीचार तो ।
 त्रिभुवन जय र कारतो ।
 एह गुरु तणो पसावतो ।
 लागु सह गुरु पाय तो ।
 कौयो सार सोझमणो ।
 पढे गुणे जे साभले ।
 श्री सखल कीर्ति गुरु प्रणसीने ।
 ब्रह्म जिनवाम कहे निर्मलो ।
 रास कौयो मे सार ।

दोहा

अरारो जे रु बटा सभा मांहि गुणवत ।
 रवि मदिन जे साभले ने ह ने पुन्य महत ।
 ममकीत गुण उपजे वरत नीमझनी सार ।
 तत्र पगरथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार ॥

संवत् १८५६ मंगसौर सुदी ३ गांव श्री मैतवाल मध्ये पार्श्वनाथ उपासरे लिखापितं श्रीमत् भट्टारक जी श्री रत्नचन्द्रजी । सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे आचार्य श्री कुन्दकुदाम्नाये सकलकीर्तिजी आचार्यो म्नाये तसपट्टे भट्टारकजी श्री १०८ देवचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक जी श्री १०८ महीचन्द्रजी तत् शिष्ये आज्ञाकारी ब्रह्म प्रेमचन्द्र ने लिखयो है ।

७. आदित्यनार की कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र १८. साइज ८x४। इञ्च । पद्य संख्या १५७. लिपि संवत् १७२०. विषय—दीतनार व्रत की कहानी ।

मंगलाचरण—

रिसहनाह प्रणमुं जिणंद, जा प्रमाद चित होड आनद ।
प्रणमौ अत्रित पणासै पाप, दुख दालिद्र हरे सताप ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

अजर अमर निर्मल रह्यौ,	मो जिणदेव सुभा कौ जयौ ।
दीन्ही ठौर रच्यौ पुराण,	हीण बुद्धि कौ कियौ बखाण ॥
हीण अधिक अक्षर जो होड,	बहुरि सवारै गुणीवर लोय ॥
अप्रवालीयै कौयो बखान,	कुवारि जननी तिहु नम्री थान ।
गरग गोत मल्ल कौ पूत,	भयौ कविजन भगति सजूत ॥
करण कथा कुं मो मति भई,	तौ यह धम कथा अरठई ।
मन धरि भाव सुणै जो कोड,	मो नर सुरग देवता होड ॥

८. आदीश्वर फाग ।

रचयिता भट्टारक ज्ञानभूषण । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या ३१. साइज १०।।x५ इञ्च । पद्य संख्या ५६१. कवि ने पहिले संस्कृत पद्य लिखे हैं और उन्हीं का हिन्दी पद्य में भाव दिया है । विषय— भगवान् आदिनाथ के जीवन की एक घटना का वर्णन ।

मंगलाचरण—

आहे प्रणमीय भगवति सरसति जगति विधोधनमाय ।
गाइस्युं आदि जिणंद सुरद्वि वंदित पाय ॥

अन्तिम -

आहे उपनउ पंचकल्याणक ऊपरिमानसिरीग ।
ज्ञानभूषण गुरिइ कीधउ तेह भणी एइ फाग ॥

आहे सारीय नर जे भाव धरी नित गाढमिड पढ ।
 इन्द्राद्रि पद पामीय शिवपुर वासिडं तेंढ ।
 आहे पत्राणउ अधिका जत पच सलोक प्रमाण ।
 मृणउ भणिसिडं लिखमिडं ते नर अतिहिं मुजाण ।

इति भद्रारु श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त । संवत् १६३४ वर्षे पौष वुदी १०
 बुधवार लिखितमिडं शास्त्र । सालपुरा मध्ये पाडे श्री हूंगा लिखावितं ।

६. आराधना प्रतिबोध ।

रचयिता श्री भद्रारु सकलकीर्ति भापा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४ पद्य संख्या ४५-३६ नम्बर के
 गुटके मे ४६ मे ४० पृष्ठ तक है । विषय-आराधना । आराधनासारं का मूर्च्छित भाव दिया हुआ है ।

मंगलाचरण—

श्री जिनवरवांगी नमेवि गुरु निघनेथ पाय प्रणामेवि ।
 ऋ आराधना सुनिचार मनेपि सारोद्वार ।

अन्तिम—

जे भगुठे सुणेड नरनारि, ते जाड भवि नेड पारि ।
 श्री सकलकीर्ति कहु विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

१०. अष्टपदविवाहलो ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भापा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या न. साडज ६५५॥ इव्वे । गुटका ५३. नं०
 गुटके के २०७ मे २३४ पृष्ठ तक है ।

मंगलाचरण—

सपर वीसरमतीघोसउ शुभसती करो वरवाणी पसाड लोए ।
 प्रथम तीर्थकर आदि जिनेश्वर धरणाउ ताम विवाहलोए ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

मयत सोल अठोतरे ० मास प्रासाद धेनमार सु ।
 उजगी जीज रली आगरली०... .. ।
 लक्ष्मीचंद्र पाटे निरमलो ०, प्रभयचन्द्र सुनिराय ।
 तम पट्टे अभय... .. रतन कीरति शुभकाय ।
 कुमुदचन्द्र मन उजला०,.....

११. कर्णात्मृतपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्यां ८२. साइज ६×६ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । रचना संवत् १८२६. अन्तिम पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये हैं । प्रशस्ति दी हुई है । लेकिन पत्रों के चिपक जाने से नहीं दा जाँसकी ।

मंगलाचरण—

॥ दोहा ॥

बानी जानी भारती अपनी जिन मुख जैन ।
सो सब कौ मंगल करौ, हरौ दरिद्र दुख मैं ॥ १ ॥
विमल बुद्धि वह सारदा, श्री गौतम गणधार ।
बंदौ वंदित देवकौ, देय भवोदाधि पार ॥ २ ॥

प्रशस्ति का एक अंश—

संवत् अठारह सौ छबीस, ग्रन्थ रचित.... बीस ।
कार्तिक वदि वारस गुरुवार, रूप नगर में रच्यौ सुसार ॥१॥

११. कल्याणमन्दिर स्तोत्रभाषा ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्यां ७. पद्य संख्या ४४.

मंगलाचरण—

परमज्योति परमात्मा, परमजाणि परवीन ।
बंदौ परमानन्द मे, घटि घटि अंतर लीन ॥ १ ॥
निरभै करन परम परधान, भाव समुद्र जल तारन जानि ।
सिवमंदिर अघहरन अनंद, बंदौ पारस धरन जिनंद ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

इहं विधि श्री भगवंतं सुजसे जे भविजन भायै ।
ते निज पुंनि भंडार संचिर पाप पनासै ।
रोमराय बलसंति अग प्रभु के गुन गावै ।
सुरग संपदा भुजि, वेग पंचमि गति पावै ।
इह किलाण मन्दिर कियौ कुमचन्द्र की धुधि ।
भाषा कहत बनारसी, कारण समकति सिधि ॥१॥

१३. कथा कोश संग्रह ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ६७. साइज ६x५ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति में १६-२० अक्षर । कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष मगनी व्रत कथा, चादण पाठ व्रत कथा, आकृश पचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पच परमेष्ठी गुण व्रणन का संग्रह है । गुटका नवीन है । मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग-अलग है । दश लक्षण व्रत कथा का मंगलाचरण इस प्रकार है—

मंगलाचरण—

श्री कीर जिणवर पाय, पाय प्रणामनि सरस्वती ।
स्वामिणी वलीस्तवु, बुद्धि सार हू वेगि मांगड ॥ १ ॥
वलि गणधर स्वामी नमस्कृतं, श्री मकल कीरति पाय वंदतु ।
रास करीस्यू हू निरमलो, ब्रह्म जिणदास भयों मार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—(पच परमेष्ठी गुण व्रणन)

श्री मकल कीरति पाय प्रणामीने, श्री भुवन कीरति भवतार ।
ब्रह्म जिणदास गुण वरणया, पच परम गुण सार ॥ १ ॥
पढे गुणे जे साभले, मनि घरी निरमल भाए ।
सन वड्डित फलरुखा, पावै शिवपुर उठा ॥ २ ॥
इति श्री पंच परमेष्ठी गुणवर्णनरास समाप्त ।

१४. चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टोकम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या २० साइज १२x५ ॥ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति में १२-३४ अक्षर । रचना सवत् १७१२. लिपि सवत् १७६३. विषय—अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा ।

मंगलाचरण—

प्रथम नदि पार्श्वे जिनदेव, तीनि लगत जाकी करे सेव ।
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणै जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

सतरह सै वारहत्तरै फागुण तेरसि जाणिए ।
वो छौ अधिकाँ शुद्ध करि, पढित कहै बखाणिए ॥ १ ॥
बुद्धि सार टोकम कहै, काल परमाँ हू वास ।

पडित होइ छोटी बढौ हुं सबही कौ दास ॥ २ ॥
 भोजराज को राज है दादौ भयौ खंगोर ।
 घणौं भार दे थापियौ, सुखमल साह हुजदार ॥ ३ ॥
 चौइसी कै देहरं, वैठैं श्रावरु आय ।
 राति दिवस चरचा करै, बंदै जिनवरं पाय ॥ ४ ॥

संवत् १७६३ का मिति वैशाख बुदी १२ दिल्ली का जैसिंहपुरा मे पांडे दयाराम ने लिखा ।
 जाति मोनी ॥

१५. चरचासमाधान ।

रचयिता श्री भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४१. साइज १०x५ इञ्च । रचना संवत् १८०६. प्रांत पूर्ण है । विषय—धार्मिक चर्चाओं का वर्णन ।

जयो वीर जिन चंद्रमा उठे अपूरव जासु ।
 कलिजुग काले पापमय कीनौ तिमिर विनाशु ॥
 वदौ बांणी भगवती विमल जौन्हि जग माहि ।
 भरमातप जासो मिटै भवि सरोज विगसाहि ॥
 गौतम गुरु के पद कमल हृदय सरोवर आनि ।
 नमो नमो नित भाव सों करि अष्टांग विधान ॥

प्रशस्ति—

ठारहसे षटहोतरें माघ मासे अत्रसान ।
 सुरुल पक्ष तिथि पंचमी ग्रथ समापति ठान ॥
 भूधर विनवै विनय करि सुनिये सज्जन लोग ।
 गुण के गाहक बहु जिंयौ यह विनती तुम योग ॥

१६. चन्द्रनृपरास ।

रचयिता पं० लब्धरुचि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८०. साइज ६।।x४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ४०-४३ अक्षर । रचना संवत् १९१३. लिपि संवत् १७६४. विषय—चन्द्रप्रभु भगवान का जीवन चरित्र ।

संगलाचरण —

श्री जिननायक सक्षरीय ऋषभदेव अरिहन् ।
 चञ्चित पूरण सुरगुरु, भय भंजण भगवंत ॥

प्रशस्ति—

शिव सुखदायक सेवीयै, शांतिनाथ जिणचन्द ।

यादववश नभो मणी, नमीडं नेमि जिणद ॥

जुगप्रधान श्री हरिविजै गुरु सोह रमसम अश्वतारे ।

पातसाइ अकन्नर प्रतिबोधक जिणसामण सिणगार रे ॥१॥

तस पटोघर सूरि सवाई श्री विजैसेन सुरीमरे ।

साध परुपणह परम गुरु गुण नाध गच्छाधीशरे ॥ २ ॥

पट प्रभावक गछ धुरंधर श्री विजैदेव गणदेवरे ।

नाम जपंता नवनिधि लहीये उपसम रस मंडारीरे ॥ ३ ॥

तास पटोघर वलित सुहकर उदयो अविचल जायरे ।

श्री विजैप्रभ सूरि पुशंदर सुंदर गुणमनि खानि रे ॥ ४ ॥

तम गच्छ पडित वह वैरागी सवेगी गुण भरीयोरे ।

श्री गुरु सहज कुमल सुखदायक उपसमरसनो दरीयोरे ॥ ५ ॥

साखी पांच तिहां प्रगटी कुसल चद रुचि सार रे ।

वधेन धर्म घमंता घोरी सहज गुणौ मिरदार रे ॥ ६ ॥

प्रथम ऋषि श्री सहज कुमलना सकलचद उवजीयारे ।

वीजा श्री लक्ष्मी रुचि पडित नामें नवनिधि पायरे ॥ ७ ॥

तास सीस सुध सयमधारी श्री विजै कुसल बुध ईसरे ।

क्रियावत पडित कुलदीपक 'जै कारी सु जगीसरे ॥ ८ ॥

तस पदपकन भ्रमर वीरजी श्री उदै रुचि विराय जी ।

दुमत मतगज कुंभ विदारण कंठीरुध कहि वायरे ॥ ९ ॥

तास सीस संवेग महोदधि श्री हपे रुचि विबुध कहीईरे ।

उपगारी मुज गुर मिलीयो दरसण सुख लहीयेरे ॥ १० ॥

विबुध सिरोमणि मुकट नगीनो, श्री विद्यारुचि तस सोसरे ।

गुण मणि मांडत पूरो पडित सुखदायक सुजगीसोरे ॥ ११ ॥

तस लघु बंधु विबुध लव्य रुचि रच्यो चद नृप राम रे ।

उं छो अधिको जे रुहियो ऊ वैमि वामिहू कड तीसरे ॥ १२ ॥

मुनिसुवत जिन चारित्र घकीयै सरस संवध वखाणुरे ।

चारित्र प्रभावक मांहि पणिए प्रगट प्रणमै जाण्यो रे ॥ १३ ॥

संवत् सतरहसोतेरह कात्तिक मास उदार ।

सुदी तेरस दिन निरमलो वलवंत गुरुवार ॥ १४ ॥

संवत् १७६४ वर्षे वैशाख सुदी १४ दिने लिखित सकलर्पाडित पढितोत्तमर्पाडित श्री पं० विनयसागर जी तत्त शिष्य पं० विनोदसागर जी तत्त शिष्य गणी वृद्धिसागर लिपि कृत ।

१७. चिद्विलास ।

रचयिता श्री दीपचन्द काशलीवाल । भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र संख्या ६६. साइज ६x६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रातः पंक्ति मे १६-२० अक्षर । रचना संवत् १७७६.

मंगलाचरण—

अविचल ज्ञान प्रकाशमय गुण अनंत की खान ।
ध्यान धरत शिव पाइये परमसिद्ध भगवान ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इस ग्रंथ में प्रथम परमात्मा का वर्णन किया । पीछे उपाय परमात्मा पायवे का दिखाया । जे परमात्मा को अनभो कियो चाहै ते या ग्रन्थ को बारबार विचारो । यह ग्रन्थ दीपचन्द साधर्मी कियो है वास सांगानेर । आमेर मे आये तब यह ग्रन्थ कियो संवत् १७७६ मितो फागुण बुदी पंचमी को यह ग्रन्थ पूणे कियो ।

देव परम मंगल करो परम महासुखदाय ।
सेवत शिवसुख पाइये हैं त्रिभुवन के राय ॥ १ ॥

१८. चेतनकर्म चरित्र ।

रचयिता भैया भगवतीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १७. साइज ११।x५। इञ्च । पद्य संख्या १६८. रचना संवत् १७३२

मंगलाचरण—

श्रीजिनचरण प्रणाम करि भाव भक्ति उर आनि ।
चेतन ओर कछु कर्म कौ रुहु चरित्रवहानि ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

चेतन अरु यह कर्म कौ कछु चरित्र प्रकास ।
सुतन पर सुख पाइये. कहई भगोतीदारा ॥
संवत् सत्रवत्तीसकै, ज्येष्ठ सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कीनी अनादि ॥

इति श्री चेतनकर्म चरित्रं सम्पूर्णं ।

संवत् १८४३ वर्षे क्वारमासे कृष्णपक्षे मिति क्वार बुदी १४ शुक्रवारे मट्टारक श्री रत्नकीर्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतनकर्म चरित्र लिखायो शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये ।

१६. चौदह गुणस्थान चर्चा ।

रचयिता श्री अखयराज श्रीमाल । भाषा हिन्दा गद्य । पत्र सख्या ६६. साइज ६।।×५।। इञ्च । लिपि

संवत् १८०३.

श्रन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप सक्षेप मात्र कह्या । जिनवाणी अनुमारि कथन करि पूरन किया । जो कहीं भून् चूक भड होइ तौ जो पंडित जिनवाणी से प्रवीन होइ सो सुधारि पढियो ।

॥ दोहा ॥

चौदह गुणस्थानक कथन भाषा सुनि सुख होई ।

अखैराज श्रीमाल ने करो जया मति जोड ।

इति श्री गुणस्थान की चर्चा सपूर्ण । प्रथ कर्ता साह अखैराज श्रीमाल शुभ भवतु । लिपि वक्ता साह सवरदास स्वामा चाटसू ।। संवत् १८०३ मित्ता वैशाख सुदी ७ बुधवार सपूर्ण भयो ।

२०. छद्दशिरोमणि ।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ । भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र सख्या ३० साइज ६×५ इञ्च ।

य सख्या २००. रचना संवत् १८२५ लिपि संवत् १८२६

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोर की, कृपा चाहि अभिराम ।

सोभनाथ पंडित कियो, छद्द शिरोमणि नाम ॥ १ ॥

× × × × × ×

संवत् अठारह सतर ता पर वरष पचोस ।

जेष्ठ मास सुदि सुदिन लहि, भयो प्रथ चह गीम ॥ २ ॥

सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज ।

इक छित गज छत्र धरि, पृथ्वीस्यध मझाराज ॥ ३ ॥

ताके तीछन तेज ते, गारति होत गनीम ।

पीथल नृप साधव तनै, वृ है चल की भोम ॥ ४ ॥

ताकौ चारथो चक्र क, नृपति नवावै सोस ।

सूरजि वुल मडन मही पृथ्वी सिंह अवनिस ॥ ५ ॥

माधव माहि नरेस नै, मनि में करिकै हरप ।

सोभनाथ पै कृग करि, राख्यौ कै गुन परख ॥ ६ ॥

पृथ्वी सिघ के सुजस कौ, आलंवन अभिराम ।

प्रथ कियो इक अवर यह, छंद सिरामणि नाम ॥ ७ ॥

x x x x x x

आरम्भ्यो जय नगर में पृथ्वीसिघ जह भूप ।

पंडित बहुत प्रकार के जित बडे कविन के भूप ॥ ८ ॥

इति श्री महाराज गुरुदेव सरसि रसिककिसोरमणि सेवक कवि सोभनाथ कृते छंद शिरोमणि चरण वृत्ति संपूण ।

संवत् १८२६ तिथौ फागुण सुदी १० शनिवासरे लिखतं जोसी स्योजीराम स्थान देवपुरीमध्ये ।
लिखापितं पाडे देवकणजी ।

२१. जबूस्वामोचारित्र ।

रचयिता पाडे भी जिनदास । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ३५. साइज ६।।५४। इच्छ । सम्पूर्ण पद्य संख्या ५०३. रचना संवत् १६४२. लिपि संवत् १८४३.

प्रारम्भिक मंगलाचरण —

प्रथम पंच परमेष्ठी नडं दूजौ सारद को वीनड ।

गणधर गुरुचरणन अनुसरो होय सिध कवित उचरुं ॥१॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

संवत मोलैसे जे भये बयालीस ता उपर गये ।

भादौ वदि पंचमो गुरुवार, ता दिन कथा कीयो उचार ॥ १ ॥

अकवर पातसाह कै राज, कोनो कथा धम के काज ।

भूल्यो विछूरो अछर जहां, पांडित गुनी सवारो तहां ॥ २ ॥

करै धर्म सो ढीया साह, टोडर सुत आगरै सनाहु ।

ताकी नाम कथा यह करो, मथुरा मे जिन निस ही करी ॥ ३ ॥

रिखवदास अरु मोहनदास, रुपचंद अरु लक्ष्मनदास ।

धम्म बुधि तुम रहियो चित, राजकरहु परिवार संजुत ॥ ४ ॥

ब्रह्मचर्य भये संतीदास, ताको सिप पांडेजिनदास ।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥
 पढै सुनें मन लावै कोय, मनवाँछित फल पावै मोय ।
 जब लग मेरु सुर सांस रहे, तब लग खीर समुद्र जल बहै ।
 जल लग तारा गन अरु चढ़ं, जब लग सूर उद्योत करंत ।
 जब लग जैन धम अबलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सवैया

सवन सत्रैहसे इक्यावन फागुन बृज दुधि बढि आई,
 अंतिम केवली केरी कथा रचिकै जिनदास विचित्र बनाई ।
 सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमनुभाई,
 तथापि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, वरनी परम पवित्र ।
 और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजंवूस्वामीचरित्रे भाषा पाडे जिनदासविरचिते कथा संपूर्ण । संवत् १८४३ पौषमासे शुक्ल-
 पक्षे गुरुवासरे शेरगढमध्ये अष्टमी जादू लिखितं ।

प्रति न० २. पत्र संख्या ३४. साइज ११।।५५ इञ्च । लिपि संवत् १७६३.

संवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज वृहस्पतिवारि जहांनावादजैसिहपुरामध्ये श्री
 वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसखे नथाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री
 १०८ देवेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्तिजा तदाज्ञानुवर्णी पं० दयारामेने
 जंवूस्वामी ग्रंथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता प० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४. साइज ६×४।। इञ्च । पद्य संख्या १०७
 रचना सवन १७८१.

संगलीचरण—

ग्यान जिहाज वैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नाहिं तरे हैं ।
 अमर समूह आन अबनी सौं घसिं घसि सीस प्रणाम करे हैं ॥
 किधौं भाल कु करम की रेखा दूरि करण की बुधि धरै हैं ।

औंसे आदिनाथ के आदि निसि हाथ जोर हम पांय परै हैं ॥

प्रशस्ति—

आग्नेमें बाल बुधि भूधर खण्डेलवाल ।
बालक के खयाल से कवित करि जाने हैं ॥
औस ह। करत भयो जैस्यंघ सवाई सूवा ।
हाकिम गुलाब चंद आये तिए थाने हैं ॥
हरोस्यंघ साह के सुवम धर्मरागी नर ।
तिनके कहे भी जोर कीनी एक ठानै है ॥
फिरि फिरि परे रे मेरे अलाम को अत भयो ।
उनको सहाय रह मेरे मन मानै है ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सत्राहसं इक्य सि पोप मास तम लीन ।
तिथि तेरस रविवार कौ सतक संपूरन कीन ॥ २ ॥

२३. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा ।

भाषाकार मुनि प्रभाचन्द्र । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या १४२. साइज ८।५।४। ६३। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । लिपि संवत् १८०३. सूत्रों का विस्तृत अर्थ दिया हुआ है । प्रथम अध्याय की समाप्ति—

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः । इति तत्त्वार्थसूत्रप्रभाषाग्रन्थे मुनि धर्मचन्द्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र विरचिते ।

अन्तिम पाठ—

केईक जीव कर्म भूमि विना सिद्ध होइ है । केईक जीव दीपस्यौ सिद्ध होइ है । केईक जीव उदस्यौ सिद्ध है । केईक जीव थल सिद्ध हैं । केईक जीव रिधि प्राप्त सिद्ध हैं । केईक जीव रिद्धि विना सिद्ध है । केईक जीव चारणी रिधि करि सिद्ध है । केईक जीव चारणी विना सिद्ध है । केईक जीव घोर तप करि सिद्ध है । केईक जीव उद्ध सिद्ध है । केईक जीव मधि सिद्ध है । केईक जीव अधो सिद्ध है । कई भांति करि घणा ही भेदस्यौ सिद्ध हुआ है । सो सिद्धान्त थे ममकि लीज्यौ ।

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे ढसमोऽध्यायः

संवत् १८०३. वर्षे असाठ बुदी १ शनिवारै लिपि कृतौ जोसी कुस्यालगांम टोंकनगरमध्ये वास्तव्य लिखापितं पांटे भी कुंभाकरण जी स्वयं पठनार्थ ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १५५. साइज ११।५४ इञ्च ।

संवत् १७२२ का । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी का सिष्य दयाराम लिखित । मिति वैशाख सुदी ३

दीतवार के दिन सपुरण करो ।

२४. त्रिभुवननी विनती ।

रचयिता श्री गगादास । भाषा, हिन्दी गुजराती । (पद्य) । पत्र संख्या २७. पद्य संख्या ६३. ६ पक्तियों

का एक पद्य माना गया है ।

मंगलाचरण—

गभीरार्थ्य त्रिदुना नभ तारा सख्या,
गहन मही मे वृक्ष जे वृण ते पण लेख्या ॥
दारिद्र भजणा अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या ।
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणवर गुण भाख्या ।
कर-थां कविता चणा ए, ते मिइ किंपि न थाय ।
हितवर दिव मुक्त सारदा, थोडि बहु बोलाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महापुराण समुद्र थी,	मड काख्या मोती ।
खरा करो निकंठ करी,	मणि माला मोती ।
सूरत नगर सोहामण्ड,	वणिकोत्तम वास ।
नरसिंहपुरा न्यातिमा,	जिन घर्म अभ्यास ।
परवत सुत कविता कइड,	गगादास गुणवत ।
भणइ भणावए पय करी,	तेहन पुण्य महंत ॥ २ ॥

२५. त्रिलोक दर्पण ।

रचयिता कविवर श्री खड्गसेन । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १५७. साइज १०×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३१-३३ अक्षर । रचना संवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नम सिद्धं नमूं जिनराय, हुवा और होसी कर भाय ।
साधु सकल जे सम्यक् सार, सरस्वति आदि नमूं सिरधार ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही लाभपुर नगर में, श्रावण परम सुजांण ।
सच मिलि करि चरवा करै, जाकौ जो उनमान ॥

खड्गसन तित्तमै रहे,
जिनबाणी हिरवै वसै,
ताकू यह इच्छा भई,
इ कृत्तम जे जज्ञ भवन हैं,
एकदिवस रजनी समै,
नाम पंच परमेष्ठा,
हृदये परम आनंद भयो,
प्रति अधिक चित्त मे भई,
अधो मध्य ऊरुध जिते,
ते प्रतिभासे सहज ही,
ता दिन तैं आनंद ब्रह्मयो,
अब यह किस विधि धारिये,
तव विचार ओसी भई,
जब चाहे तव देखिये,
परि विवेक जीव मे तवै,
ग्रन्थ चारि मे देख लैं,
काल पांचमौ अति विषय,
ए सजोग तिन ही मिलै,
इ पणै, समझन कारणै,
दूषण कोउ लेहु मति,
या कथ तैं सुख अति लखौ,
अंतर सब सांची लखी,
घट मद लाकी ताल मै,
ऊपरि है वदरंग सा,
जो कछु या में सार है,
दोष भरै सब जगत जीव,

सबकी सेवा लीन ।
ग्यान मगन रस चीन ॥
काल लखि परभाव ।
ते सुमरु चितलाय ॥
पढी एक जयमाल ।
तामै अकृत्तममाल ॥
लखी लोक विधिसार ।
सुलट्यो बोध विचार ॥
हे जिनवर के धाम ।
सुमरत गुरु सुख ग्यान ॥
भयो परम रस पोप ।
सो कीजे निरदोष ॥
रचिये कथा अनूप ।
यह त्रिलोक सरूप ॥
किस विधि सीमै काम
तव पायी विश्राम ॥
अलप पुनी ए जीव ।
निकट भनी सु अतीव ॥
यह गूथो गुणमाल ।
भूषण दीव्यो घाल ॥
मुख करि कछो न जाय ।
अरौन कछु सुहाय ॥
उठै तरंग अपार ।
अंतर वदरंग असार ॥
ताहि गहौ बुधवंत ।
तीन्यौ काल अनंत ॥

चौपाई

जिनवर चैत्य लाभपुर मांही,
तहां आय बैठे सध लोक,

महा मनोहर उत्तम ठांहि ।
गुण गावै पढिये बहु थोरु ॥

तहां त्रौठि यह क्रियौ विनोद,
 पूरण करि पूरव विधि धरी,
 जो यह मथा पढै वरि कंठ,
 उघडे पलक तिमर मिटि जाय,
 पहित राय नरिद समान,
 सभा मध्य बडा गुणवत,
 सभा सिगार हार मुख सर,
 वाणी सुणत तृपात नहि होय,
 सुर ता पढै अति गुणवंत,
 तिन का नाम सुणौ तुम जोय,
 पहित हीरानंद प्रवीण,
 मधवी जग जीवन गुण खाण,
 रतनपाल ग्याता बुधवत,
 अनूपराय अनूपम रूप,
 वामोदर उंसण गुण लीन,
 हीरानंद हिरदै परगास,
 विपनदास बुधि तीपण संरी,
 मोहनदास महा गुण लीन,
 कुंदन कनक नारायणदास,
 पांडे हिरदै पूजा करै,
 हृदय राम भो जग हितकार,
 ए मध ग्याता अति गुणवत,
 सब श्रावक अति ही गुणवन्त,
 * * * * *
 साहि जहां सुलितान महान,
 छत्रपति सेवै तसु पाय,
 संवतसर विक्रमचै आदि,
 चैत्रशुक्ल पंचमी प्रमाण,
 * * * * *
 चागडै देश महा विसतार,

तोन लोक का है यह मोद ।
 रची माल ते बहु विधि सगी ॥
 मुक्ति श्री लायै तसु कंठ ।
 दूजे वेद तयो परभाय ॥
 मिमर गिरधर जगत प्रमाण ।
 ग्रन्थ बखारौ सुरित्तवंत ॥
 सुणत सवै रजै चित्त धार ।
 अमृत वचन पीवै सहु कोय ॥
 अपणो बुधि अनुसार लहत ।
 भूर पुण्य उपजै तहां सोय ॥
 चौदह विद्या मे लय लीन ।
 सकल शास्त्र मय अर्थ सुजाण ॥
 हिरदै ग्यान कला गुणवंत ।
 वाल पणौ जिम साहै भूप ॥
 माघोदास मधुर प्रवीण ।
 तिलोकचद तहा ग्यान विलास ॥
 प्रतापमह पूरण मति धरी ।
 हंसराज जि हिरदै प्रवीन ॥
 ग्यान कला आगम परवास ।
 हिरदै हरप सेव चित्त धरै ॥
 सेवा करै सुजिन गुणधार ।
 जिनगुण सुणै महा विकसत ॥
 सुणै ग्रन्थ पावै विरतंत ।
 * * * * *
 फेरी चहुं चक्क में आन ।
 चक्का चक्कै सुभीहान ॥
 सतरह सै तेरहै सुखस्वाद ।
 यह त्रिलोक दरपण सुपुराण ॥
 * * * * *
 नारनोल तहां नगर निवास ।

तहां पौण छत्तीसों वसै,
 श्रावक वसै परमगुणवन्त,
 सब भाई में परमित लियै,
 तिसके दोग पुत्र गुणश्रास,
 ठाकुरसी कै सुत है तीन,
 बढो पुत्र धनपाल प्रमाण,
 करमषदं श्राति भये प्रधान,
 लृणराज के सुत दोग भये,
 धरमदास सबमें गुणगस,
 खडगसेन दूजौ बुधवंत,
 गुरु प्रसाद कीयौ श्राति घणौ,
 चतुरभुज वैरागी जांण,
 तिन बहुत्तौ कीयो उपगार,
 तबतैं बुध बढी श्रातिभार,
 पायौ मरम हृदय भयौ चैन,
 बहुत बार आये लाहौर,

अपणै करम तरा रस लसै ॥
 नाम पापडीवाल वसन्त ।
 मानू साह परमगण कियै ॥
 लृणराज - ठाकुरसीदास ।
 तिनकौ जाणौ परम प्रवीन ।
 सोहिलदास महा सुख जाण ।
 माने श्री जिनवर की श्राण ॥
 पुन्यवंत सुन्दर बहु कहे ।
 मूरति धमवत प्रतिभास ॥
 ताकैं हृदय ग्यान विलसंत ।
 द्रव्यरूप लिख्यौ बहु मुणौ ॥
 नगर आगरै मांहे प्रमाण ।
 द्रव्य सरूप दीये भहर ।
 सोलहसै पिचयासीया धार ॥
 अगणित जिन गुण लागौ लैण ।
 फछू न उपजी मन में और ॥

x x x x x x

संवत् १७६८ का वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया दिने सोमवारवारे भगवतगढ नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी तत् शिष्य पं० दयाराम जाति मोनी नरायण का चासी इदं पुस्तकं लिखितम् ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. साइज १२×५॥ इच्छ ।

संवत् १७६८ वर्षे मितिमासोत्तममासे पौष शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमूलसधे अलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री मट्टेन्द्रकीर्त्ति जी आचार्यजी श्री ज्ञानकीर्त्ति जी तस्य पट्टे आचार्य श्री सकलकात्ति जी तस्य शिष्य पांडित खेतसा लिखापित श्री उदयपुर नगरमध्ये राणाजी श्री जगतसिंहजी राजकरे श्री मंडाकू देहुरै लिख्यो ।

२६. त्रेपनक्रिया ।

रचयिता श्री ब्रह्मगुलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४. स इज ६×५ इच्छ । रचना संवत् १६६५.

मंगलाचरण—

प्रथम परम मंगल जिन चर्चनु, दुरित तुरित तजि भाजै हो ।
कोटि विघन नासन श्रिरनंदन, लोक सिखारि-सुख राजै हो ।
सुमिरि सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ वानी हो ।
गन गधर्व जस्य मुनि इद्रनि, तीनि भुवन जन-मानी हो ।

अर्थात् म पाठ—

ए त्रेपन विधि करहु क्रिया भवि पाप समुहनि चूरे हो ।
सोरह से पेसाठ संमच्छर कातिग तीज अधियारी हो ।
भट्टारक जग भूपन चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो ।
ब्रह्म गुलाल विचारि बनाई गढ गोपाचल थानै ।
द्वत्रपती चहु चक्र विराजै साहि सलेम मुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोप ।

रचयिता श्री किशनसिंह । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७५. साइज १०x६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पत्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । रचना संवत् १७८४. लिपि संवत् १८२६.

मगजाचरण—

समवसरण लछमी सहित, बधेमान जिनराय ।
नमो दि दित चरण, भविजन कू सुखदाय ॥

प्रशस्ति—

खडेलीवालं वंसविमाल नागरचालं देसाधिय ।
रामापुरवासं देवनिवासं धर्म प्रकासं प्रगटकियं ॥
संगही कल्याणं सत्रगुणजाणं गोत्र पाटली सुजसलियं ।
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपायं नमै सकति । नज दानदियं ॥ १ ॥
तसु सुत दुय एवं गुरुमुखदेवं लहुरो आणंविधिघसुणौ ।
सुखदेव सुनंदन जिनपदवंदन थान मान किसनेस सुणौ ॥
किसन इह कीनी कथा नवीनी निजहित वीनी सुरपद की ।
सुखदायक्रियाभनि यह मनवचननि सुद्वपलै दुरगति पदकी ॥ २ ॥
माथुरराय वंसंत कौ जानै सकल जिहांन ।
तसु प्रधान सुत कौ तनुज किसनसिंघ मतिमान ॥ ३ ॥

अदिल्लखंद

क्षेत्रविपाकी कर्म उदै जत्र आईया, निजपुर तजि कैं सांगानेरि बसाईया ।

तह जिनवमप्रसादि गर्मै दित्त-सुख लही, साधर्मिजन सजनमानैदे दित गही ॥

॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥

इह विचार मनि आइयौ क्रिया कथन विधिसार ।
॥ छोई चौपई बंध-तौ सत्र-जन-को उपगार ॥

x x x x x

अठिबल्लछन्द

किसनसिह इह अरज करे सवें जैन सुनौ, करि मिथ्यात कौ नास निजातम पद मुनौ ।
क्रिया सहित व्रतपाल करणवसिकीजिये, अनुक्रमलहि, सिवधान सास्वता लीजिये ॥

सवैया

सत्रहस संवत चौरासिया सु भादौमासे वर्षागितिश्चेत तिथि पुन्यौ रविवार है ।
सतिविपारिपिध्रतनाम जौग कुंभ सासस्यंध-कौ दिन समूहरत, अति सार है ।
दूंदारह देश जान धसै सांगानेरि थान, जैसिहसवाई महाराज नितिधार हैं ।
ताकै राजसमै परिपूरण की इह कथा, भव्यन कै हिरदै हुलास दैनहार है ॥

x x x x x

श्री सकल पंडितोत्मपंडित श्री ३ श्री नायक विजयगणि तत् शिष्य सेवक पं० मुक्तिविजयेन लिपि-
कृत श्री पञ्चानगरमध्ये साह स्वरूपचन्द्रजी शास्त्र लिखायौ । संवत् १८२६ का मिति मंगसिर मासे शुक्लपक्षे
तिथौ सप्तमी भगुवासरे ।

२८. त्रेयनक्रिया विनती ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पद्य संख्या १३.

मंगलाचरण—

वीर जिनेश्वर मनि घरुं, प्रणमुं गुरु पाय ।

। त्रेयन किरिया नो विचार, कहि सु सुखदाय ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

ए त्रेयन उपवास, सर्व कहि लक्ष्मीचन्द्र ।

अभयचन्द्र गुरु अभयनन्दि गत माया तन्द्र ॥ १ ॥

रत्नकीरति वाणी विशाल गुणवंत मुनीन्द्र ।

ललित वाणी कहि कुमुदचन्द्र पद नामत नरेन्द्र ॥ २ ॥

जे नर नारी गावसे ए वीनवी' सुचंग ।
ते मन वंछित पावसे नित्य नित्य मंगल तरंग ॥ ३ ॥

२९. दशलक्षणाव्रतकथा ।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४, साइज १०×४॥ इच्छ । पद्य संख्या ५५. लिपि संवत् १८३८.

मगलाचरण—

प्रथम नमन जिन वरनै फरुं सारदा गणघर पद अनुसरुं ।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखुं जिन अगम अनुसार ॥
मद्दारक श्री भूषणधीर सकल शास्त्र पूरण गभीर ।
तसु पद प्रणमो बोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

संवत् १८३८. श्रवाणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्या पट्टणनगरे मद्दारक सुरेंद्रकीर्तिना लिखितं ।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी ।

रचयिता श्री दिलाराम । भाषा हिन्दी पद्य । साइज ६×५॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में २७-३० अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

मगलाचरण—

परम पुरुष परमात्मा	परम जोति परधान ।
परमेशुर परब्रह्म प्रभु	पूजौ परम पुरान ॥ १ ॥
सवै काल के सिध सहु	नमौ सदा पद तास ।
जा प्रसाद जग विस्तरौ	यह दिलाराम विलास ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिचर्चन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज बूंदी मवासेदहाये,
भये भोज नामी बडे राव वंसी तनै रत्न सांचे भये रतन अंसी ।
भये नाथ गौपी न टीके विराजे भये छत्रसालै तिन्है राज साजे,
लखै राजधानी सवे शत्रु कपै चहुं चक के चकवै सास जपै ।
भये तास के देवता राव भाऊ सवै देस मै दक्ष नीभौ पुजाऊ,
लह्यो भाग तै पाट अनुरुद्ध जाको व्हयो देश मे राज आतंक ताको ।

भये बुद्ध ताकें तिनहै राज माजा क्रिया छत्रधारी कीयो रावराजा,
मवै तास के राज मैं राजधानी रुहै भोग देवा पुरी सुभिमाना ।

बूंदी नगर वर्णन—

वन उपवन चहुँ नंदन से मधि गिर मेर नदी गग सम मोभह बढ वती ।
अतुल विलास में वसत सबै घनपति घन भोन भोन रंभातिय गावती ।
महल विमान सभा सुर मधि जै राव बुद्ध ईद जिमजाके किति लछि अ वती ।
प्रथनि मै सुनियत नैनान को अभिलाप पूजत लखै तैं औंसी बूंदी अमरावती ।

कवि वश वर्णन—

वसि विपुल आदर सहित ल्याए रतन नरेश ।
सो कविकुल वंसावली वर्णन करत सुदेस ॥
प्रथम खडले तैं प्रगट 'जाति धर्म' जिनराज ।
पुर पहन तैं पाटनी जाको विपुल समाज ॥
सो वर्णन सक्षेप सौं दस पीढी मध्य चारि ।
टोहै प्रथम विचार पुनि पट् बूंदी मध्य धारि ॥

सरवन कीरति सुनी जो साह सरवन दृल्लहै कविकुल के सुदृल्लहै गुनद.० द.।

गुनदत गेगराज भार्म जग भार्म माह,

धनपाल घनकार सुजस अघाए ह.।

चत्रभुज बाहुवली तनय दोलनिराम,

भजनेरी दो बलकार संगही कहाए ह.।

ताही के प्रसाद हिंदै रामकुलमंडनभो,

तनुज साहिवराम वंस वरगाए ह.।

॥ दोहा ॥

सतरासै अठसठि ममै

लगन महरत चार सुभ

औंसो रस या प्रथ मैं

सो नर कर्म निवार करि

सहसकृत प्राकृत नहीं

वाल ख्याल रचना रची

दसमी विजैकुमर ।

भयो प्रथ तत सार ॥ १ ॥

जो थापै घट मांदि ।

भवदधि आवैं नांदि ॥ २ ॥

नहीं छट अलंकार ।

सुकीवसु लेहु सुधारि ॥

सहस्रंकरं संमजिन परै	पराक्रितं गम नाहि ।
भाषा कछु एक कवि कला	रुची प्रथया माहि ॥
मवै काल के सिधि महु	नमों जौरि पढ तास ।
जा प्रसाद जग विरतरो ॥	यह दिलांगम विलास ॥
धनि सम यो धनि वा बढी	धनि वा वार मिलाय ।
अनुभव करण सुर पूजिये	गोगि सधमी पाय ॥
बहुत गये मिथ्यातमों	अजहुं नाहि श्रघाय ।
धानां सु दल वीनती	मेरो वेगि बलाई ॥

३१. धनपालरास ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र ६: साइज ११।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर ।

मंगलाचरण—

वीर जिनवर २ नमुं ते सार, तीर्थकर चोवीस मो ।
वञ्छित फल बहु दान दातार, सारठ सामिण वीनतुं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार ।
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहें सार ॥ १ ॥
पढे गुणें जो सामलें, मनधरी निरमल भाऊ ।
मनवाञ्छित फलरु बडां, लाभें शिवपुर ठार ॥ २ ॥

इति श्री दानफलमहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतवधे धनपालधनमतीरास संपूर्ण । संवत् १८२८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तियौ रविवासरे पांडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे ।

३२. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या १२४. साइज १२×५। इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००.

मंगलाचरण—

प्रणमुं अरिहतदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम ।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

प्रशस्ति—

घमंपरीक्षा पूरी भई बुधिसारु मनौहर निरमई ।
मुझैँ दोस मति लावौ कोई जैसी मति तैसी गति होई ॥

॥ सोरठा ॥

सुमुनि अमितगाति जान सहसकीर्ति पूर्व्व कहा ।
यामैँ दुधि प्रमान भाषा कीनी जोरि कै ॥

॥ दोहा ॥

विक्रम राजा कौ भयौ सात अधिकुसहजार ।
वरप तवै यह सहसकृति, भई कथा सुभ सार ॥
देश दादरो परवति भली, तहां घामपुर सोभा भली ।
चहूँ दिशि शोभित बाडी बाग, करै कोकला पंचम राग ॥
कूपं वाउरी शुभ पोपरी, दीसैँई निर्मल पाणी भरी ।
मधि व मलनी करै विगास, मधुकर आइ लेहि तिस बास ॥
तहां वसै धनपति सब लोगु पांन फूल के कीजे भोगु ।
तहां सराउग नीकै सुखी, कर्म उदै कोई होइ है दुखी ॥
चित्तसारुं सब दांन करहि, जुगम धार जिन थानक जांहि ।
तिन मधि आसू जेठ साह, खरचं द्रव्य लेह धन लाह ॥
दुरजन कोई धीरन धरै, करण मतै सोही विधि करै ।
घणी बात को करै बढाइ नगर सेठ है मन वचकाय ॥

॥ दोहा ॥

जेठमल सुत त्रिधाचद दाता दीन दयाल ।
सज्जन भगतां गुण उदधि दुर्जन छाती साल ॥
कुल धन जोवन रूप मद, अवर काणि मद ताहि ।
एते मदन विमद करै बढौ तमासौं आहि ॥
सध ही भाई हैं भले, अपणे अपने काजि ।
मति कोच मानौ वुरी सत्त कहत हौ राजि ॥

॥ सबैया ॥

वाणारसी सेठ प्रतिसागर पृथ्वी प्रसिद्ध कौटिक कौ घनी तामैँ पाप उदै आयो थो ।

सदन सौ निशि अजोध्या कौ गमन कीनों अजोध्या कै सेठ उह उछिम करावै थो ॥
 अपनी वरावरि को करि नाना भांति सेती देऊर चढाई निज धानं कौ पठायौ थो ।
 जैसे हम आसू साह राखे निज वांह देके कहै मनौहर हम पुनि जोग्य पायौ थौ ॥

॥ दोहा ॥

मातौ पहुँचे शुभग गति वारो सुभग बजाई ।
 त्रिषी चद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित्त लाई ॥
 हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार ।
 दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरवै घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रहति सालवांहण आगरै कौ बुधिवंत हिरवै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है ।
 जगदत्त मिश्र गौड हिसारको वासी शुभ विद्यावलि जगत मे सरजस लीयो है ॥
 गोगुराज वामण पंडित है नगर माहि जौतिया कौ पाठी सरस्वती वर दीयो है ।
 इतने साई भये दोही जिनराज जू की तव मैं विचार करि भापा बुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया समं ब्रह्मदालीया भयौ दूसरो नात्र ।
 निरलोभी मन कौ सरल दया धर्म शुभ गाव ॥
 सो भी हम प्रेरक भयौ दिन में वारंवार ।
 तव हम यह भापा करी लघु बुधि द्वार विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धामपुर मांदि करी भापा बुधि सारु
 धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन धरि वारु ॥
 ना कछु कीर्त्ति हेति न कुछु अरति धनु वछन
 जथा जुक्त मडली रचो पद २ रस चंदन ॥

'पढे सुणै उपजै सुबुधि है कल्याण शुभ सुख धरण ।
 मनरसि मनौहर इम कहै सकल संघ मंगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पूर्णिमा वार वृहस्पतिवार श्री सवाई जैपुरमध्ये
 ईश्वरीसिंह राज्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण
 लिपिकृतम् ।

३३. धर्म स्वरूप।

रचयिता ब्रह्म श्री गुलाल । भाषा हिन्दी (पद्य) । पद्य संख्या ६२. रचना संवत् १७२०. लिपि संवत् १७३२.

मंगलाचरण—

प्रथम सुमरौ सारदा, गणपति लागू पाय ।
गुण गाऊं श्री जिण तणा, सुनो भन्त्य मन लाय ॥

प्रशस्ति—

संवत् सतरासैं वतीस, भादवा मास सुकल पख तीज ।
सोमवार सुभ बेला घटी, तव यह कथा वंचे कस्यौ करी ॥ १ ॥
जैसो विप्र श्री गुर कहा, तैसी ही सगला सर रही ।
सुभचन्द्र भट्टारक भलो, बराड देस मही छै निलो ॥ २ ॥
सभा मांहि घणा वैण साह, खरचै द्रव्य पुनि कौ लाह ।
वीरजी सगहो विद्यावंतं, धनजी लालचढ़ गुणवत ॥ ३ ॥
सब ही मिला यौ कारिज कियो, भासा श्रावग ने पोरिस दियो ।
कौजै वाणी श्री जिणवर सार, समार संग उतरै पार ॥ ४ ॥
खानदेश मे सोहे सलो, प्रहानपुर नम है भलो ।
छतीसपुरा विधि वाजार, साहिदरो सोहे अति सार ॥ ५ ॥
श्रावक गोठ उजम आचार, व्रत विधान निश्चै व्योहार ।
मदिर वेदी दरघ होइ, जीणवर धरम जपै सो होइ ॥ ६ ॥

३४. धर्मरासो ।

रचयिता श्री अचलकान्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २४ माइज ८×४॥ इच्छ । पद्य संख्या ७१. रचना संवत् १७२३. लिपि संवत् १७२६.

मंगलाचरण—

प्रथम जोतीस्वर लांगौ जी पाइ, सिद्धि सतगुरु नमाँ ।
सरस्वति स्वामिणी दे मति माइ, राज भणौ जिण तणौ ॥

प्रशस्ति—

सत्रह सै जु तेईस मै, पौष सकल पक्ष सुभ दिन जोग ।
दोज सोमवार सुहं घण्यौ, उत्तम नक्षत्र तहां उत्राण्पाढ ॥

सहर नगर सुभ थांन में, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥
 श्री काष्ठाये सघनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण ।
 श्री कुत्रसेण कुल केवल दिण्ण, विद्या वचन, गुण चारिधि ।
 रतन कीरति तस सीप सुजाण, दिली मंडलाचार्य दीपता ।
 आम्हा कारी तस आचार्य जाण, अचलकीरति अवगाह कै ।
 धरम रासौ कीयौ धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर उपगाहु ॥
 पढत सुणत सुख सपदा होइ, सुरग मुकति सुख सास्वता ॥ २ ॥

३५. धर्मोपदेश श्रावकाचार ।

रचयिता श्री धर्मदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ४६. साइज ६×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर । रचना सवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है । विषय-आचार धर्म दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शानलनाहु, शीतलगुन निज अधिक अगाहु ।
 दह भेय जिन भास्यौ सव्व, वंदहु ताहि सयल तजि गव्व ॥

प्रशस्ति—

पत्रहसें अद्दहत्तरि वरिसु, सवच्छरु कुसलह कन सरसु ।
 निर्मल वैसाबी अपतीज, बुधवार गुनियहु जानीज ॥

ता दिन पूरो कियो यहु ग्रंथ,
 मंगल करु अरु विघनि हरनु,
 अच्छाससवदछद ऊरि हीन,
 सो मो मद बुधि जानैहु,
 सुव असुध मात्र करि हीन,
 सो सब खमहुं देवि सगसुती,
 वारहसेनी उत्तम जाति,
 जिनवर पय भसउ होरिल साहु,
 तासु मनु सत्य जस गेह,
 त सु पुत्र जेठो करमसी,
 दया आदि दे धर्म हि लीन,
 पदम नाम ताकै भो पूत,
 अवरु बहुत गुन गहिर समान,

निर्मल धर्म मनौ जो पंथ ।
 परम सुख भवियन कहु करणु ।
 किंचितु मात्र मैं जुयहु कीन ।
 तातें वहु जन पिमा करेहु ।
 इहु भ्रमाव ज्ञान में कीन ।
 जान ही मोहि बालक सममती ।
 मूल सघ श्रावग विख्यात ।
 सो जु दान पूज कौ पवाह ।
 धर्म शीलवतु जानेह ।
 जिनमति सुमति जासु मन वसी ।
 परमाविवेकी पाप बिहीन ।
 कवियनु वैदरु कला सजूतु ।
 महा सुमति अति चतुर सुजानु ।

अरु मो सज्जनता गुण लीन,
 यहू मित्रो तम मन वि कोइ,
 राम सिन्धी तसु तनिय कलत्त,
 तासु उदर सुत उपनौ वेवि,
 जे कौ घमुं विबुद्ध सिरमनी,
 दया लीन जिनवर पय धुनो,
 पचौंदर न मिथ्या जेवि,
 जैन धर्म सेवै नित्त,
 नित निग्रंथ मुनि मानंड,
 निः केवल अरहत थुनै,
 तिहि यहू. ऋष्यौ धर्म उपदेशु,
 विघ्नरुलक पाप कहू हरै,
 पठतन हुं मति हरइ चित्त,
 जे जिन सासन लीन निरुत्त,
 घन कन दृध पूत परिवार,
 मेदिनी उपजहु अनत अनत,
 मंगल वाजहु घर घर वाग,
 घरि घरि सीत उपजहु सुख्य,
 घरि घरि दान पूज अनिवार,
 नंदउ जिन सासन सत्वार,
 नदहु जिन पडिमा जिन गोह,
 नंदउ धर्म धुरधरु साहु,
 जिन केवल जति व्रत पालत,
 ए भत निधिमांगै जिनदेव,
 भवि भवि श्रावगकुलि अवतारु,
 जन्मि जन्मि उपसम चित हेउ,
 भवि भवि गुर निग्रंथह संग,
 भवि भवि दया उपजौ चित्त,
 भवि भवि जैन धर्म की लीव,
 कहै धर्म कवि सुनहु संत,

पर उपगारी विघना कीन ।
 सलहहो देस देस के लोइ ।
 परम सील वे पण्य पवित्त ।
 जिनु तिजि अवरुन चाहि तेवि ।
 जिहि परराम अंवागनी ।
 पर पायो धनु धूलिसम गिनी ।
 अह निशि झूठे मानै जेवि ।
 अरु दइ लक्षण भाव पवित्त ।
 जिन अगम कहू पठतु सुवड ।
 और देवि लिख्य करि गिनै ।
 धर्म सुण्य जो करै असेसु ।
 मंगल सचं सुजन कहू करै ।
 उपजइ निर्मल बुधि पवित्त ।
 तिन कहू उपजै सुख बहूत ।
 घ है मंगल सुजसु अपार ।
 चारि मास भरि जल घरसंत ।
 कामिनी गावाह मंगल चारु ।
 नासे रोग आपदा दुख ।
 श्रावग चलहु आप आचार ।
 धर्म दयादिक चलौ अपार ।
 नदहु गुर निर्ग्रंथ अमोह ।
 दान पूज जे करहि अगाह ।
 धर्म कथहि कर्मनि जालत ।
 भव भव करौ तुम्हारी सेव ।
 जिनके घमुं अघमुं विचार ।
 जन्म जन्म जिन सासन भेउ ।
 जातें होइ पाप कइ भग ।
 क्षमादि . . भाट पवित्त ।
 पावहि मुक्ति जासु ते जीव ।
 नर भव पायो बहूत भमंत ।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु,
जिन पूजहु जिनवर धुनहु,
जिन सिद्धात जुं कछो विचार,
कहै धर्म कनि वेकर जोहि,
मति सारु हम कीनौ एहु,
जह अह तह सुद्ध करहु,
साधु नित नौ भाउ बह नित,

पायौ तो दूर करि मानेहु ।
गुरु निप्रथ सत्ये करि मुनहु ।
सो पालहु त्रिभुवन माहि मार ।
पंडित जन मन लावहु खोडि ।
कपटु मुनि विमनि दया करेहु ।
अपनी सज्जनता विस्तरहु ।
पर उपगारु धरहिं ते चित्त ।

इति धर्मोपदेशशावकाचार पं० धर्मदास विरचित समाप्त । मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्यां तिथौ शनिवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथो । पं० शत्योदयेन मुनिना लिखितमिति ।

३६. नयचक्र भाषा ।

भाषाकार श्री हेमराज । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २४, माइज ६×४ इञ्च । रचना संवत् १७२६ विषय—नैगमादि सात नयों का बखाने ।

मंगलाचरण—

बंदी श्री जिनके बचन,
ताहि सुनत अनुभव तहीं,
तां कारण नयचक्र की,
आधिक हीन अवनोकि के,

स्यादवाद नये मूल ।
है मिथ्यात निरमूल ॥
सरल वचनिका कीन ।
करहु सुद्ध परवीन ॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरै,
लबधी रग उवमाय मुनी,
विबुध नारायण दास नै,
जो नयचक्र सटीक हँ,
तिनै प्रसन्न है के सही,
तव हमहुं उद्यम कियो,
हेमराज की वीनती,
थहु भाषा नय चक्रकी,
सत्रहसेर छवीस कौ,
उज्जल तिथ दसमी जहाँ,

जिनप्रभु सूरि सतानि ।
तिनके शिष्य सुजान ॥
यह अरज हम कीन ।
पढे सवे परवीन ।
भली भली यह बात ।
रची वचनिका भाव ।
सुनियो सुकवि सुजान ।
रची सुबुधि बनमान ।
संवत् फागुण मास ।
कीनो वचन विलांस ।

इति श्री पं० नारायणदासोपदेशेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्त ।

३७. नेमीश्वर गीत ।

रचयिता श्री चतुरमन । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५. साठज ६५३। इन्द्र । पद्य संख्या ४४.

रचना संवत् १५७१. लिपि संवत् १८२०.

संगलाचरण—

प्रथम चलन जिन स्वामि जुहारु,
लहड मुफति टुति दुति निरै,
सुमरित उपजै बुद्धि अपारु,
गुरु गीतसु मो देउं पमीउ,

व्यो भव सागरु पावहि पारु ।
पच परम गुरु त्रिभुवन मारु ॥ १ ॥
मारु मनाविउ तोहि ।
जौ गुन गांड जादुराड ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रावग मिरीमल अरु जमवंत,
घरु चलन भवि वंदतौ,
जनमत नाउ चतुरु तिन लियो,
नेमि चरित ताकै मन गहै,
नेमि देसु सुख मयल निवान,
एक सोवन का लंका जसि,
भुव वल आयु जु माइम धीर,
ताके राज सुखी मय लोगु,
जैन धर्म बहु विधि चलै,
निहचै चितु तावैहि जिन धर्म,

निहचै जिय धर्म धरंत ।
पुत्रा एक ताके घर भयो ।
जैन धर्म दिठु जीयह धरो ।
सुनि पुरान उर गानो कहै ।
गढ गोपाचलु उत्तिम ठन ।
तौ वरु गर सवल बरवीर ।
मानमिह जग जानिये ।
राज ममान कराह दिन भोगु ।
श्रावग दिन जु करै पट वमे ।
नेमि कुवर नेमि जिन वंदि ह्ये ।

(२)

संवत् पंद्रहसै दो गनें,
भादौ वदि तिथि पंचमीवार.
लगुन भली सुभ उपजामती,
चतुरु भने भावी मयलान दागु,
लखि उपसमै वुचि हीन,
पढत मुनत जी उपस्यं ग्यान,
राजमती जिन सजमु लियो,

गुन गनुहुं तरि ताउपर भने ।
मोम नपितु रेवती ।
चद्र जन्म वलु पाइयो ॥
गुनिय सुनत जिय करहिनगामु ।
मैं स्वामी सो क्रियो वगानु ।
मन निहचल करि जिय धरहु ।
नेमो कुवर नेमो मयन मयो नयो ।

नेम कुवर नेमाजन वंदि ह्ये ॥

संवत् १८२ ...वर्षे माह बुदी १४ लिखित गुरु देवेन्द्रकीर्ति आचार्ये ।

३८. नेमीश्वर चंद्रोदय—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८, साइज ६ x ४ इञ्च । पद्य संख्या १०४ । लिपि संवत् १६६० । विषय—नेमिनाथ का जीवन ।

मंगलाचरण—

परम चिदानन्द मन्यवरी अनि प्रणामी श्री गुरु पाय ।
हरष अण्डि सु स्तवुं श्री नेमीश्वर चिनराय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महीयल महिमिमावत बखाणो, श्री मूत्तसय गळपात जाणो ।
विजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्टे दायक श्री शुभचन्द्र ॥
तत्पट्टे पंकज सुर समान, सुमति कारति सुरी गुणहै निवान ।
ते चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेंद्रकीर्ति कहि रे रमाल ॥
नरेंद्रकीरति पाठक कहि अनि नेमिचंद्रोदयसार ।
भाव सहित भणि सामलि ते पावे भव पार ॥

संवत् १६६० वर्षे भाद्रवा सुदी ६ रवौ श्री मूलमध्ये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुटुंबायां नव्ये
भट्टारक श्री वादिभूषणदेवा तरुट्टे भट्टारक श्री रामकोत्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत्
गुरु आता मुनि श्री देवकीर्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याण कीर्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिंहजी लिखित ।

३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २२, साइज ७ x ६ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य
संख्या १२६, उक्त रचना गुटक में है । गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों में है । रचना संवत् १६१८,
लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमासर जिननाथ, चरणं वदे धरि मस्तक हाथ ।
गन अरु वचन माया थुणौ, सोभा जी सावला वर्ण सरीर ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

अहो मूल सगि मुनि सरस्वति गच्छे, छोटि हो चार कषायनि निर्भछि ।
अनतकीर्ति गुरु वंदितै अहो वास तणो सखी कीयो बखाण ।
राइमल ब्रह्म सो जाणिव्यो, स्वामी हो पारसनाथ के थानि ॥ १ ॥

अहो सोलहसै पन्द्रह रच्यौ रास, सांवालि तेरसि सावण मास ।
 वार ते जी बुधवासर भलै, जैसि जी बुद्धि दिन्हो अवकाम ॥
 पहित कोड जी मत हंसौ, अहौ तीसि जि बुधि कियो परमास ।
 अहो वाग वाढी घणा, नीकौ हो ठाणि ।
 वसै हा महाजन नगर भौणि पौणि छत्तीस लाला करे ।

४०. पद्मनंदिपंचशिका —

चयिता श्री जगतराय । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या १३२. साइज १०।। x ६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे २७ । ३० अक्षर । रचना संवत् १७२२. लिपि सवत् १८१८

मगलाचरण —

अमल कमल दल त्रिगुल नयन भल—
 सकल अचल बल उपसमन्तरि है ।
 अखिल अवनितल अटल प्रबल जस
 सुरपति नरपति स्तुति बहुकरि है ।
 धृति मति पति धर सब जन सुक्कर
 कनक वरण तन सिद्धि बधु वरि है ।
 वृषभ लङ्घिन धर प्रगट तनय भर
 अघ तिम रवि कर भव जल तरि है ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

पद्मनंदि पचवीसी मार, जगतराय भाखी सुविचार ।
 उठो अधिको जे कबु होड, मो अपराध खमहु कवि सोइ ॥
 पांनी पंथ सुदेस सहर गुहानो जानिये ।
 कबहीं न दुखको ले सुख वरतैं जहां सवदा ॥

दोहा

अग्रवाल है उमग्यानि,	निघल गोत्र बसुधा विन्यात ।
माई दास श्रावक परसिद्ध,	उत्तम करगी कर जस लिद्ध ।
नदन द्रोड भये तसु धीर,	रामचंद्र नंदलाल सुगौर ।
मालिभद्र कलियुग में एह,	भाग्यवत सब गुण हो गेह ।
रपगार आंणी मन मांहि	जगतराय भावक चढ़ांदि ।
पद्मनन्दि पचवीसी किद्ध,	भाषा बंध भई परसिद्ध ।

पद्मनन्दि की बानि गंभीर,
भाषा पढतै न ह्वै खेद,
सहर आगरो है सुख धान,
धारौ बरन रहै सुख पाइ,
सवत् सतरासैं बाबिस,
तिथि दशमी पुष्य मंगलवार,
नवखड मे है जाकी आन,
राल करै श्री अवरंग साहि,
न भई भीति कछु ताके राज,
निजमति के अनुसारे यह,

ताकाँ अर्थ लहै कोइ धीर ।
मूरख जन पुनि जानै भेद ।
परतपि दीसै स्वग विमा ।
तहा पहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ ।
फागुण मासि सुविपन्न जगीस ।
ग्रन्थ समाप्त भयो जयकार ।
तेजवंत दीपे जिन भान ।
जाके नहीं किसी परवाहि ।
धर्मो भविजन पढन कै काजि ।
भाषा कीनी मन धरि कै नेह ।

॥ छंप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गृणि दीपै ।

आगम युगति अनेक भेद करि बादी जीप्ये ।

कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भापी ।

पंडित महामार्ति मंत वीरदास जु है सापी ।

बाढे बहुविधि सकल पाप संताप हर ।

इहुं ग्रथ संतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर ॥

चौपई—

सुजान सिध नंदलाल सुनद, जगराय सुत है टेकचंद ।

जौ लौं सागर ससि दिनकार तो लौ अविचल म परिचार ॥

सोरठा—

अभय कुसल आनंद पद्मनन्दि पंचबोसि की ।

भाषा भई निरदंद सुनियो भविजन सर्वदा ॥

इति श्री जगतराय विरचितार्था पद्मनन्दिपचविशिकाया भाषा समाप्ता संवत् १८११ वर्षे मिति...

४१ पंचेन्द्रिय बोल

रचयिता कवि घेल्ह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७. साइज ७x७ इञ्च । पद्य संख्या ६. रचना संवत् १५८५. लिपि संवत् १६८८. पाच इन्द्रियों की बात चीत ।

प्रशस्ति—

कवि घेल्ह सुजन गुण ठावो,

तौ बेलि सरस गुण गाया,

जगि प्रगट ठकुरसी नावो ।

चित चतुर सुरिख समझया ।

मृरिख मनि संकउ पाड,
नहुजपौ घणौ पमारो,
सवत पंद्रासैर पिच्यास्यो,
इ पांच इंद्री वसि राखै,

तहि तणौ न चिति सुडाइ ।
यौ एक वचन मै सारौ ।
तेरमि सुदि कातिग मासे ।
सो हरत परत सुख चाखे ।

४२ पंचारितक य भाषा,

भाषाकत्तो पाडे हेमराज । पत्र संख्या १४८. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्ति या तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर । रचना सवत् १७३६. लिपि सवत् १७३६. विषय-सिद्धान्त ।

सवत् १७३६ वर्षे आपाठ मितपक्षस्य द्वादशीतिथौ गुरुवारे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वल्लात्फारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचायान्वये भट्टारक श्री चंद्रकोर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ जगत्कीर्ति जी तदाम्नाये अग्रवालान्वये गोइल गोत्रे सा. धानू तभ्य भार्या धनादे तयोः पुत्र सा. श्री रूपचंदजी तभ्य भार्या तारादे तयोः पुत्र सा० श्री तेजन तस्य भार्या मथुरा ननू तयोः पुत्र सा० श्री रूपचंदजी तस्य भार्या माणकदे तयोः पुत्रो द्वौ प्रथमपुत्र सा० श्री चूडमलजी तस्य भार्या गगा तयो. पुत्रारचत्वार प्रथम पुत्र चि० रणधोर द्वितीय पुत्र चि० मानसिंह तृतीय पुत्र चि० चतुर्भुज चतुर्थे पुत्र चि० जोषसिंह । द्वितीय पुत्र सा० श्री वनारमी-दासजी तस्य भार्या कपूरां तयो पुत्र चि० सिवदासजी एतेषा मध्ये सा० श्री वल्लारसीदासेनेमं पचास्तिभाया-भिध ग्रथं लिखाप्य आचार्य श्री दयाभूषणजी तत् शिष्य पंडित हीरानंदाय वत्तं ज्ञानावरणी वसंत्यार्थं । कामानगरमध्ये ।

४३ परमार्थ दोहा ।

रचयिता कवि रूपचंद । भषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४. पग संख्या १००. मुद्रर २. पणों का सकलन है ।

मगजाचरण —

अलखरूपचिद्रूप जोतिमय ज्ञान प्रकाश

अचल अनाधित अगम्य परम आतम सुभाउ धर ।

निराकार अवगाह मैनेगन मूम गगन वत

अमल अनाजुल परम तेज वन सुद्र मरुगति ।

सुखधाम अनादि अनत अज जगत मिरोमानि मिद्र गन ।

मनघरि सरूप अनुभवनि पुन करहि चंडना भद्र वन ॥

अन्तिम पाठ—

रूपचंद सद्गुरुनि की जन वलिहागी जाः ।

आपुन जे सिवपुर गये, भव्यनि पंथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध ।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकात्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३७. साइज १०।।४।। इन्द्र ।
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३८-४२ अक्षर । रचना सवत् १७२२. विषय—जीवन चरित्र ।

मगजाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि विनेश्वर पाय ।

यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमु तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशास्ति—

श्री मूलसद्य मुहूर्तमणि श्री सकल कीर्ति गुरु पायगे ।

भुवनकीर्ति तेह निपाटि, बहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥

ताम्र पटांबर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण भवतार रे ।

विजयकीर्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥

तेह यह कुमुद पूरण सग्री, शुभचन्द्र भवतार रे ।

न्याय प्रमाण पचड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥

तस पटोधर प्रगटोया श्री सुमतिकीर्ति जयकार रे ।

तस पट्ट धारक भट्टारक, गुणकीर्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥

तेह तणि पारि प्रसिद्ध गणी श्रीयवादि भूषण सूरी सत रे ।

रामकीर्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावत रे ॥ ५ ॥

तम पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे ।

विद्यावाद विनोदथी जेहि नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥

तम पट कमल रुमज बधु, श्री देवेन्द्रकीर्ति गच्छ ईशरे ।

प्रद्युम्न प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥

सवत् सत्तर वावोसि सुदि चैत्र तोज बुधवार रे ।

महेश्वर मांहि रचना गचि, रहि चद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥

सूत वासी संवपती जेमाजि सूरजि दातार रे ।

तेह आग्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुथ्यो करि विवेक ।

प्रद्युम्न गुण सूत्रिकरी, सव जन कुसूम अनेक ॥ १० ॥

भवीयण गुणि कंठि कगे,
 चरि मगललदमीवणी,
 भणि-भणावि साभलि,
 देवेन्द्रकीत्ति गच्छपतीरुहि,
 एह अपूरव हार
 पुण्यतणो न्हि पार ॥
 लिखि लिखावइ एह ।
 स्वर्गमुक्ति लहि तेह ॥

इति श्री प्रद्युम्नप्रबन्ध संपूर्णः ।

४५. प्रवचमार भाषा —

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ७२. साइज १०।।x४।। इञ्च ।
 प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३६ अक्षर । प्रति नवीन है । विषय-सिद्धान्त । लिपि
 संवत् १८४६ । रचना संवत् १७२६ ।

प्रारम्भिक मगलाचरण—

परम ज्योति परमात्मा नमौ सुद्ध परधान ।
 एक अनूपम जोध कहि सिव दायक सुखथान ॥

प्रशस्ति—

कुदकुद सुनिराज वृत, अथ कवि कौ व्यवरन रुहौ, मूल ग्रंथ करता भये, तिन प्राकृत गाथा करी, तिन ऊपर टीका करी, सहसकन अति ही सुगम, ता टीका कौ देखि कै, करी वचनिका अति सुगम, देख वचनिका हरपियौ, तव मन में इह धारिकै, सत्रह सें छवीस सुभ, अरु भादों सुदि पंचमी, सुनय धरम हि सुख करन, भान वंस जयस्यघ सुव, ताकै राज सु चैन सौं, सगानेरि सुथान मे,	पूरन भयो वखान । सुनहु भविक धरि कान ॥ कुदकुद सुनिराय । प्रथम महा सुख पाय ॥ अमृतचन्द्र सुख रूप । पंडित पूज्य अनूप ॥ हेमराज सुखधाम । तत्त्व शीपिका नाम ॥ जोधराज कविनाम । कीये कवित सुखधाम ॥ विक्रम साक प्रमान । पूरन ग्रंथ चखान ॥ सत्र भूपनिभिर भूप । रामस्यघ सुख रूप ॥ कीयो ग्रंथ यह जोध । हिरदे धारि सुबोध ।
---	--

जौ कहुँ मेरी चुरु ह्वे,
वरण छंद कौ देखि कै,
यहां मित्र हरिनामजी,
ताकी संगति जो करी,

लीच्यौ सत सुधारि ।
गुण औगुण सुविचारि ॥
रहौ सदा सुखरूप ।
पायो काव्य सरूप ॥

सर्वेभ्या—

कोई देवी खेतपाल व्रीद्यासनिमानंत है,
केई सती पित्र सीतलां सौं कहै मेरा है ।
कोई कहै सावलौ कवीर पद कोई गावै,
केई दादू पंथी होय परे मोह घेरा है ।
कोई खजाजै परमान कोई पथी नानग के,
केई कहै महाबाहु महारुद्र चेरा है ।
याही द्वारा पंथ मे भरमि रहौ सबै लोरु,
कहै जोध अहो जिन तेरापथी तेरा है ।

x x x x x x

इति श्री प्रवचनसार सिद्धान्ते जोधराज गोदीका विरचिते त्रि वरणे नाम द्वादश प्रभव ।
संवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार सवाई जयपुर मे लिख्यौ अमल महाराजाधिराज श्री सवाई
प्रतापसिंहजी का मे पुस्तक जोधराज गोदीका की है संवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखो पुस्तक जीवण-
राम गोधा रैणी का को । लिखत कन्होराम चाकलीवाल सप्तगामगोधा ।

४६. प्रवचनसार ।

भाषा प्राकृत सस्कृत-हिन्दी) (गद्य) । पत्र संख्या ४४ साङ्ग १२×४॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पक्तिया
तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४२ अक्षर । लिपि संवत् १७२७. प्रस्तुत ग्रंथ मे प्राकृत और सस्कृत मूल ही दिया
हुआ है । हिन्दी मे प्रत्येक गाथा मे वर्णित विषय का संकेत दिया गया है । इसके अतिरिक्त हिन्दी में फुटकर
टीकाभी दी हुई है । भाषा परिमार्जित है ।

भाषा का प्रारम्भ—

आगै श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम ही आरंभ विषै मंगलाचरण निमित्त नमस्कार करै है ।
..... । आगै आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध औं से तीन भावनि की ठीकता करै है ।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रुद्र गुणविषै अनन्त अंश भेद है । एक परमाणु दूजे परमाणु सौं तब वधे जब दोइ अश
अधिक स्निग्ध अथवा रुद्र गुण का परिणाम होइ

संवत् १७२७ वर्षे अषाढ मासे शुक्लपक्षे नवम्या गुरुवांनरे रामपुरे श्री जिनचैत्यालये लिखापितं
प० विहारीदास आत्मपठनार्थे । लिखतं ब्राह्मण दीनानाथेन ।

४७. प्रद्युम्नरासो ।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १८ साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ
पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३५×३८ अक्षर । रचना संवत् १६२८ लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

हो तीर्थंकर बटू जगनाथ ।

तोह सुमरण मनि होइ उछाह तो हुवा छैं अरु होयट्टी जी ॥

तिह कारण रंहे घट पूरि गुण छीयालीस सोभै भला जी ।

दोप अठारह क्रिया दूरतो रास भणो परधमन को जी ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटे लोय, अनतकीर्ति जांणै सहु कोय ।

तास तणो सिष्य जाण्यो जी, हो रायमल ब्रह्म मुनि कियो वखान ॥

बुधि थोही जाणूं नहीं जी, तिहि दीठो हरिवंशपुराण तो ॥ १ ॥

हो सोलासै अठवीस विचारो, भादवा सुदो दुतिय बुधवारो ।

गढ हरसोर महा भलो जी, तिह में भला जिनेसुर थान ।

आवक लोक बसै भला जी, देव शास्त्र गुरु राखे मान तो ॥ २ ॥

४८. पार्श्वनाथ चौपई ।

रचयिता श्री आचार्य महेन्द्रकीर्ति । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १७. साइज १२×५ इञ्च ।
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४० अक्षर । पद्य संख्या २६८. रचना संवत् १७३४.
लिपि संवत् १७६३.

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्वजिनदेव, तीनि जगत जाकी ररे नेत्र ।

रिद्धि सिद्धि वर सुखदातार, बाल पण्यौ जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

संवत् सत्तरासै चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।

नौरंग तपै दिली सुलतान, सबै नृप अति बड़े सिंगि आण ॥

नागर बाल देस शुभ ठाम, नगर बणहटो उत्तम धाम ।

सत्र श्रावक पूजे जिनवसे, करे भक्ति पावै बहु राम्मे ॥
 कर्मद्वय नारायणभूहेत पार्श्वनाथ चौपई समेत ।
 पढित लाखो लाख समान सबौ वर्म लहौ सुख थान ॥

महाराक श्री देवेन्द्रकीर्ति का शिष्य पाडे दय राम नारायण का वामी जाति सोनी । महाराक श्री
 महेन्द्रकीर्ति का राजपट विषै दिल्ली का जैमिहपुरा का देहुरा मे पार्श्वनाथ चौपई लिखी ।

४६. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्री भूधरदाम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १०।।×४।। इञ्च । रचना सबत्
 १७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है ।

मंगलाचरण—

मोह महातम वलिनदिन तनलदमी भरतार ।
 ते पारस परमेस मुक्त होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गान ।
 श्री पारम परमेस कौ पूरन भयौ पुरान ॥
 पूरंव चरित त्रिलोक कै भूधर बुधि समान ।
 भाषा वंध प्रवध यह कियौ आगरै थान ॥

× × × × ×

दोहा—

संवत सत्रैसे सभे और निवासी ली न ।
 सुदि अषाढ तिथ पचमी, अथ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण । लिखावित साहजी श्री चैनरामजी ठोलया सवाई माधोपुर
 मध्ये । महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराव्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटाका ।

५०. पोसहरास ।

रचयिता महाराक श्री ज्ञानभूषण । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ११५.

मंगलाचरण—

सरसति चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आण ।
 वार वरत महि साह वरत -पोसहवरे कारण ॥ १ ॥
 आठमि चउदसि नीम -सहित नित-पोस लीजे ।
 उत्तम मध्यम अधम भेदि त्रिहुं विधि जाणी जे ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

चारि रमाण्य मुगति जमम अनुप सुख अनुभवइ ।
भवमकारि पुनरपि न आवइ, इहक फल जस गमइ ॥
ते नर पोसह फांन भावइ, एणि परि पोसह धरइ ।
जे नर नारि सुजण गुरु रम भणइ ते करउ वखाण ॥ २ ॥

५१. बनारसी धिलास ।

रचायता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या ६६. साइज ११।।X५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४० अक्षर । रचना संवत् १७७१. लिपि संवत् १८२१.

मगलाचरण—

परमदेव परनाम करि गुरकों करुं प्रणाम ।
बुद्धि बल चरनों ब्रह्म के सहस्र अठोतर नाम ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

गुरु उपदेश सहज उदयागत मोह विलकलता छुटें ।
कहत बनारसि होइ करुना मय अचल अपैनिधि छुटें ॥
नगर आगरे मे अग्रवाल आगरो
गरगगोत आगरे में नागर नवलसा ।
सघ ही प्रसिध अभिराज राज माननीक
पचवाल नलना मे भयो है फवलसा ।
ताके प्रसिद्ध लघु मोहनदेसघइनि,
जाके जिनमारग चिराजित धवलसा ।
ताहि को सपूत जगजीव सुदिठ जैन,
बनारसा वैन जाके हिए मे सवलसा ॥ १ ॥
समें जोग पाइ जग जीवन वित्यात भयो,
ज्ञान की मंडली मे जिसको विनास है ।
तिन तैं विचार कीनां नाटक बनारमी का
आपछे निहारवे को आरसी प्रकास है ।
और काविधनी खरी करी है बनारसी नैं
सो भी एक क्रम सेती कीजैं धान भास है ।

असौ जानि एऊ ठौर भीनी सब भाषा जोरि
ताको नाम धरयो यो बनारसी विलास है ।

॥ दोहा ॥

सत्रहसै एकौत्तरे समै चैत सित, पाख ।

दुआसौ पूरन भई इह बनरसी भाष ॥ १ ॥

सत्र १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापित पंडित जोधराज जी वृंदावती मध्ये ।
साह शम्भूराम वाक्लीवाल ओवांका लिपि कृतं ।

५२. वाशिठिया बोलरो रत्न ।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार । भाषा हिन्दी पद्य, पत्र संख्या १५, साइज ८x३॥ इच्छ । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६-३० अक्षर । रचना संवत् १७८३, विषय-सिद्धान्त

मगलाचरण—

श्री गुरुवचनलेही करी आगम नै अणुसार ।
बोल वींशाठिया मार्गनो, द्वार तणो सुत्रिचार ॥
वासठि बोल कथा जिनै, घन ते जिन चौवीरा ।
ते माहै वाशिठिया बोलत बन पभणीश ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सतरै त्रयाशिया वरसै,	नगर उदयपुर माहि रे ।
नर नारि समभावरण हेतै	एह तवन करयो उद्धाहि रे ।
तपगच्छ, माहि सुर शिरोमणि	श्री विजयक्षमा सुहारायो रे ।
गुणवंता जयवंता वर तो	जस अनैतेज जस बायो रे ।
कान्तिसागर पहित सुपसाया	जसवंत सागरराय रे ।

इम धुएयो जिनवर सयल सुखकर-तीर्थकर चौवीस ए ।
वासठि बोलै अमिय तोलै जे कथा जगदीस ए ।
जसवंत सागर मुजस आगर, जिनैसागर शिष्य ए ।
नवनिधि होस्यै सब नै घर दिएं इम आसिष ए ॥

इति श्री वाशिठिया बोलरो रत्नं संपूर्णं । मुनि मोहनविजय वाचनार्थ ।

५३. भरतनाहुवलि छंद ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६. गुटके नं० ५३ के ४० वें पृष्ठ से ४८ तक । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर । रचना संवत् १६०७.

मंगलाचरण—

परणविवि पद् आदीश्वर केरा,
ब्रह्म सुता समरू मर्ति दाता,
वंदवि गुरु विद्यानांद सूरि,
तस यह कमल दिवाकर जाणु,
तस पट्टे पट्टोघर पढित,
अभय चंद्रं गुरु शीतल दायक,
अभयनदि मगुरु मनमोह,
तेह तणि पट्टे गुणभूषण,
भरत, महीपति कृत मटी रक्षण,

जेह नामें छूटें भव फेर ।
गुण गण मंडित जग विख्याता ॥
जेह नी कीर्ति रही भर पूरी ।
मल्लि भूषण गुरुगण बन्धायुं ॥ २ ॥
लक्ष्मीचन्द्र महाजश मंडित
सेहेर वंश मंडन सुख दायक ॥ ३ ॥
भव भूला बल गाडे चाहि ।
वदाव रत्नकारति गत दूषण ।
बाहुबलि बलवन विचक्षण ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सवत् सोलसमे सत सहें,
कविबर वारें घोघानंयरे,
अष्टमं जिनवर ने प्रासादें,
रत्नकीरति पदवी गुण पूरे,

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तिथि छहें ।
अति उत्तम मनोहर सुवरें ॥
सांभलोये जिन गान सुमादें ।
रचियो छद् कुमुद शशि सुरें ॥

॥ कलश ॥

उरुकट विकट कठोर गोरगिरि भंजन सपवि,

त्रिहत कोह संशोह मोह तम उग्रहरण रवि ।

द्विजित रूप रति भूप चारु गुण कूप अनुत गवि.

धनुष पांच से पचवीश वर उग्र तनु द्रवि ॥

संसार सर्गिस्वति पार गत विबुध बट वदित चरण ।

कहे कुमुद चन्द्र भुज बली, जयो सफल संघ मंगल करण ॥ १ ॥

५४ भविष्यदक्ष कथा ।

रचयिता कविवर धनू रायमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६३. माउज ७x६ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १८-२१ अक्षर । रचना संवत् १६३३ तिथि संवत् १६६०.

मगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिज्ञानाय, नमो चरणधरि मस्तक हाथ ।
लंछिन वरथौ चद्र माता सु, काया उज्ज्वल अधिक उजासु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल सद्य शारद शुभ गच्छि, छोड़ी चार कयाय निरभच्छि ।
अनत कीर्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कोयो वखाण ॥

ब्रह्म रायमल थोडि बुधि,
जैमी मति दीने -श्रीकास,

जो इह कथा सुणे दे कान,
सोलह सै तैतासा सार,
स्वाति नक्षत्र सिद्ध शुभजोग,
देस दूढाहड सोभा घणी,
निमल तले नदी बहु फिरै,
चहु दिशि वाण्या भला वजार,
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा,
राजा राजै भगवतदाम,
परजा लोग सुखी सुख वसें,
श्रावक लोग वसै धनवत,
उपराठ परी वैरन कास,
मगल श्री अरहत जिणि,
मंगल पढइ काई वखाण,

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

अक्षर मात जु भूजौ होय,
अति अयाण मति थोडी भई,
वारवार नवि भयै पसार,
जो नर जीव दया को पाल,

अखिरपद की न लहै सुधि ।
व्रत पचमी को कीयो परकाश ॥
केवल पाइ तहिने फुरै ।
काल लहिबपहुचै निरवान ।
कातिग सुदी चौदसि मनिवार ।
पंडा ख न व्यापै रोग ।
पुजं तहा आ ल मण तणी ।
सुख स वमै बहु सांगानेर ।
भरे पटोला मोनी हार ।
सोभै चद्रवा तोरण घणा ।
राजकंवर सेव'ह बहु तास ।
दुखी दलिद्री पुरवै आस ।
पुजा करइ जयहि अरहंत ।
जिह अहिमिद सुगे सुख वास ॥
मगल अनंतकीर्ति मुणिद ।
मगल ब्रह्म राइमल सुजाण ॥

पंडित जन सहु खमिब्यो माहि ।
कथा पचमी व्रन की कही ॥
जामै जीव दया व्रतसार ।
रोग सोगा न व्यापै काल ॥

संवत् १६६० वर्षे भाद्रवा बुदी १ शुक्रवारे पोथी लिखी साठ जता पाटणी दानुकाकी लिखी आगरा मध्ये साहिबीजहां की हवेलों श्री जलाखांकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी ।

५५. भक्तोत्तमस्तोत्र भाषा ।

रचयिता श्री नथमल विलाला और श्री जालचन्द्र । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७१. साङ्ग १०×४॥ इच्छ । रचना संवत् १८२६. लिपि संवत् १८५३.

मगलाचरण—

परम सघन वन दहन अग्नि कन तपत कनक तन दुति रवि करसी,
परम धरम मग परमत तम खग नमत सकल जग लखि सिव दरमी ।
प्रवल मदन आरि निज बल वसि करि वसु मद् हरि करि सिध तिय परसी,
समवसरन शक्त महित अतुल बल रिपभ सुजिन नम मन वच सिरसी ।

प्रशस्ति—

यह भाषा रचना करो नथमल निज पर हेत ।
पढ़ें सुनै जे नर सदा ताहि अखें सुखदेत ॥ १ ॥
हृदय बस मगार वनिक पृथिवी सुनामधर,
मीलवती गुनधाम नाम चपासु नारिधर ।
जिनचरणवृज भवर तुल्य ताकें सुत सोहै,
रायमल्ल गुनगेह व्रती देवत मन मोहै ॥ १ ॥
श्री वाढिचन्द्र सुतिराज के प्रनमि चरन जुग जोरि कर ।
कोनी कथा इसतवन की पढत सुनत सुग होय ॥ २ ॥
संवत सोलहसैं परधान तापै मरसठ वरप प्रमान ।
मास अषाढ स्वेन पख सार, तिथ पाचै जानौ बुधवार ॥ ३ ॥
सिधु नदी के तट विपै प्रोवापुर अभिराम ।
तुंग कोट जुन तहं लसै सानि प्रभ जिनसैं घाम ॥ ४ ॥
ब्रह्म कमसी बचन तैं रायमल्ल अग्रचार ।
भगतामर की कथा वर वरनी मति अनुमार ॥ ५ ॥
जिहि विधि भाषा रचना भई, सो अथ कथन सुनौ पित दई ।
कारन बिन कारज नहि होय, सो अथ कथन सुनौ बुध नाय ॥
नगर आगरे मांछि वसै जैसहं पूननीको,
तहाँ जैठमल साठ भगत मोर्म जिनजी गो ।
सासु तनुज गुणवंत सतं जुग कुल मुख दायक,
जेठो सोभाचरं चंद्र गोहक लघु लायक ॥

५६. मृगावती चरित्र ।

रचयिता श्री समयसुन्दर गणि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३०. साइज ६।।४।। इञ्च । रचना संवत् १६६८. लिपि संवत् १६८७. प्रति जीणो हो चुकी है । जगह २ उसके अक्षर मिट गये हैं ।

प्रशस्ति—

श्री खरतरगच्छे कमलदिण्डा
प्रथम शिष्य श्री पूज्याकरो.
तसु प्रसाद किया प्रंध पूरा,
सोलइसइ अठसठा वर्षइ,
मृगावती चरित्र कछो तिहुं खंडे,
भोदण वेल चउपई सुणतां,
समयसुंदर घइ सघ आसीस,

युगप्रधान जिनचंदा वे ।
सफलचन्द्र गुरु मेरा वे ।
प्रगट्या सुजसपट्टू राखे ।
दुई चउपई घणे हरणइ वे ।
घणे आणंद घामंडइवे ।
भणतां नइ वलि गुणतांवे ।
रिद्धि वृद्धि सुजगीसावे ।

संवत् १६८७ कार्तिक सुदी ५ शनिदिने श्री मालपुरा मध्ये श्री खरतरगच्छे वा० श्री गुणरंगगणि शिष्य प० श्री रत्ननंदिगणि शिष्य मुख्य पं० सुमतिसेन गणिना लिखितं ।

५७. माधवानल चौपई ।

रचयिता श्री कुसललाभ गणि । भाषा—हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४१. साइज ७५७ इञ्च । पद्य संख्या ५५१. रचना संवत् १६१६ लिपि संवत् १६६०. लिपि कर्ता श्री जौता पाटणी ।

भगलाचरण—

देवी सरसति देवी सरसति, कासमीर फमलावती ।
ब्रह्मपुत्र कर बीण सोलहइ, मोहन तरु वर मंजरी ॥

प्रशस्ति—

संवत सोल सोलोतई,
फागुण सुदि तेरसि दिवसि,
गाहा दूहा चउपई,
काम कंदला कामिनी,
कुसल लाभ वाचक कहइ,
जे वाचइ जे सांभलड,
गाथा साढी पांचसइ,
तेइ सुणता सुख दीयइ,

जैसलमेर नद्यारि ।
विरचि आठित्यवार ॥
कवित कथा संबंध ।
माधवानल संबंध ।
सरस चरित्र सुपसिध ।
तीया मिलइ नवनिधि ।
ए चउपइ प्रमाण ।
जे दुइं चतुर मुजाण ।

रावल मालि सुपाट धरि,
विरचिएह सिणगारसि,

कुवर श्री हरिराज ।
तास कतुहल काज ।

५८. मिथ्या दुकड ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी । पद्य संख्या २३. लिपि संवत् १७६२.

संगलाचरण—

आदि जिणोसर भुवि परमेसर सयल दुख विण्णासणो ।
भुवि कमज दिणोसर मोह तिमर हर तत्तव पदारथ भासणो ॥ १ ॥
हूँ विनती करुं हवें आपणोय ।
तूं त्रभूवन स्वामी सुणिए धणीय ॥
जे पाप करया ते कहूँ अनुष् ।
ते मिथ्या दुकड होउ नमष् ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी सुगति हिं गामी सिद्धि नयर मंडणो ।
भव बंधण खीणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय बंदणो ॥ १ ॥

५९. यशोधर चरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २५. साङ्ग १०॥४१॥
इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १८२६. पंडित रूपचंद्रजी
के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

संगलाचरण—

मुनिसुव्रत चिन मुनिसुव्रत जो नतवु ते सार ।
तीथकर जे बीसमुं चांछित बहु दान दातार ॥
सारवा स्वामिणिए वलीस्तवुं, जिमितुद्धि सार हुं वेगी मागुं ।
गणधर स्वामिनमस्कहं, वली सरुलकीरति गुरु भवतार ॥
तास चरण प्रणमीनें, करे सुरासुर सार ॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणुं जे रास जीवचयानुं पीहर ।
पाप मिथ्यात निकदसार, रागमोह विहंडणुं ॥
गुणहतणुं भंडार सुणिएं, जेनर अनुदिन भणें
हिय मैं धरी बहुभाव, ब्रह्म जिणदास इम परिभणें
तेहनें शिवपुरे डाम ॥

इति श्री ब्रह्म जिनदास विरचिते श्री यशोधरस्वामीरास संपूर्णः । सवत् १८२६ वर्षे आषाढमासे
कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे पङ्क्ति रूपचन्द्रजी तस्य वाचनार्थे उदयपुरवरे ।

६०. यशोधरचरित्र ।

रचयिता श्री लक्ष्मीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ४६. साइज ११x५ इञ्च । रचना सवत्
१७८१. लिपि संवत् १८०१.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

आदि जिनद नमूँ सदा
सोभै महिमा अनंत जुत

त्रिजगत गुरुं जिनराय ।
धर्म राज पति थाय ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राज यशोधर की कथा
भवि सु'णज्यौ इसकूँ सदा
जीव दया कै कारणै
मेरो बुधि माफिक इहा,
जे सुणिसी इमकूँ सदा
ते जग कै सुख पायकै
अक्खर जौ चूक्यौ जु हौँ
श्रुत की विधि जाण नहीं,
राजा जयहि राजई,
तेज प्रताप घणूँ यक्षा
मागेनेरि सुधान मे
भट्टारक देवेन्द्र कीरति,
पंडित लिखिमोदासजी
रहिस्य सकलकीरति महा
पद्मनाभ काईच्छ्र कौ
लीन्हूँ है इस ग्रन्थ में
पूरणै कीन्हौ भाव सो,
लागत है सदा,
दया कारणै वाचसौं
राव यशोधर ता विना

ओसी विधि भापी ।
सब धिर चित राखो ॥
चरित्र सु कीन्हूँ ।
अखियर सुभ लीन्हूँ ॥
मन बच सुध काई ।
पीछे शिव जाई ॥
बुध सुष करि लीज्ये ।
फोड रोस न कीज्यो ॥
विस्तसिष कौ नदौ ।
मध्यांन दिनदौ ॥
मूचनार्ईक धानौ ।
की जहि आनो ॥
तिन करि कीन्ह ।
मुनिवर कौ लीन्ह ॥
कछु इक अनुमारो ।
भवियण सुखकारो ॥
रामैं सुभ बैरा घारो ।
भवि जीवान केर ॥
निति सुणि जे भाई ।
नाना गति पाई ॥

दिल्ली साह्र विषे भलो
 घम संथान समानया
 सुन्दर नद खुस्यालए
 भव्य धरौ निज चित्त में,
 संघत सतरासै भले
 जे पढिसी सुगिसी सदा,
 कातिक षष्ठी भावती,
 भव्य जीव सुगि जे पछे,
 जैन धर्म परभाव सौ
 तारै घम सुधारिहै

जेसिहपुर जानु ।
 अनि थानन मानू ॥
 रचना ठहरानी ।
 भगवन की वांनी ॥
 अरु और इक्यासी ।
 ते ही सुख पासी ॥
 ससि कै उजियारै ।
 वे ही विसतारै ॥
 सबही सुख होई ।
 तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन् श्रीमन्नुपति विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्ष-
 माने कार्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्यां वृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहानावादस्थ जेसिहपुराम्मध्ये श्री
 महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाधिराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री
 मूलसंघे नंदाग्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी
 तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तदाग्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पंडित श्री रूपचदजी
 तत् शिष्य पंडित दयारामेण इद पुस्तकं हस्तेन लिखित ।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा ।

मूलकर्ता कायस्थ श्री पद्मानाभ । भाषाकर्ता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या १३३.
 साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२६ अक्षर । रचना संवत् १७२१ लिखि
 संवत् १८०३.

संगलाचरण—

तीर्थकर जिन वीसमौ मन मनें सुव्रत बंदि ।
 तां समया की यह कथा हिरवै धरि आनद ॥

प्रशस्ति—

बीव नधर खैराड महंत,
 तामै गढ वृंदी सुभ थान,
 मीशाराज राजा सिरंतोज,
 राव रतन गुन रतन समान,

हांडोती वर देस कहंत ।
 ईंद्रपुरी सम सोभै आन ॥
 पातिसाही थाननदधिपार्ज ।
 सुरभान ।

दयः सील सागर ध्रुममेर,
तिनकी महिमा कही न जाय,
तिन सुत त्रिलोक समान,
जिनकै दस सुत भुंदिगयाल,
निवलराम श्वपण समरथ,
पतिसाही पतिभखणहार,
राजनीति निति पालनहार,
चौदा विद्या जान प्रवान,
जिन लखि वैरी घोरन घरै,
तास तखत वर वखत बिलंद.

अरि धरि जित कायौ जुग जेर ।
चहुवान मुकट मनिराय ।
गोपीनाथ बड़े प्रभ जान ।
सत्र सकल धो धरि अरिकाल ।
सबल उथ पणहार सुहथ ।
हींदुव भ्रम आगल भुज भार ।
विक्रम भोजराज अवतार ।
सुरवीर दाता गुर कीन ।
दसूँ दिसा नृप सेवा करै ।
भावस्यध प्रतपै जियमयंद ।

॥ कवित्त ॥

मेर अचल ध्रुव अचल अचल सूर्जेतिराज घर,
तेज पुंज रवि ते मन पहुँपौ हमी प्रसिध पर ।

गुण गंभीर धरवीर धीर सागर रतनागर,
रतन वंस अवतंस अस सत्र सल सुत नागर ॥

श्री भागस्यंघ हिंदवानपति
संभरि नरेस राजै तखत
मही अडोल मेर सस राव,
चदं सूर धर सेष महेस,
घर घर वृषि वषाहोई,
तिनकै राज सुखी सब लोग,
चाग दावड़ी महल अपार,
चवार तलावै चहुँ दिसि कुढ
कौ लग सोभा ऋहुँ अगार,
अन धन कपडौ घोर कपुर,
सिहर वध देवल धुज सीस,
इन्द्र पुरी तै अघिक अपार.

छत्र तिलक सुभ सिरधरथौ ।
वखत दसुँ दिसउ धरथो ॥ ८ ॥
दिन दिन वधी चौगनी घाव ।
तौ लग राज भोगवो देस ॥ ९ ॥
कान पड्यौ नविसुन जे कोई ।
जानै पांन फूल रस भोग ॥ १० ॥
मैडी छाजा जाली सार ।
वै दुरग घिचि वमै सह म ॥ ११ ॥
गली गली सौभे वाजार ।
भरि वैचै ले मौलि जम्हर ॥ १२ ॥
छौलि घुलावै लगि मुर ईस ।
चूँदी गढ देखौ श्वर सार ॥ १३ ॥

॥ सवैया ॥

चूँदी इन्द्रपुरी जयपुरी किङ्कर पुरी,
रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिका सी धरो धर मै ।

धौलहर घाम घर घर मे विवित्र वाम,
 नर कामदेव केसे संवै सुखसर में ॥
 वापी वाग वारुण वजार वीथी, विद्या वेद विबुध विनोद ।
 वानी वोलें मुख नरमें, तहां करै राज राव भावग्रंथ महाराज ॥
 ह्रिदु धर्म लाज पाति सही आज कर में ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

श्रावक लोग वसै धर्म बतं पुजाकरै जपें अग्रिहत ।
 तिनजौ सर्वक लोहट साह, करौ चौपई धरी सुभ लाह ।
 वस वघेर बाल भोवाल, दुगैरथा वरगो भवि साल ।
 धरम धुरंधर धरमौं धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।
 हीरो सुन्दर वढे सुमान, लघु लोहट बुधि कौनिधान ।
 श्रा जिनदेव सगुरको दास, कीनौ भापा ग्रन्थ प्रकास ।
 लघु दारघ गण अगण विचार मात छद् विस्तार ।
 सब्द शास्त्र कौ लहौ न भेद, तातैं बुधि मति करौ न खेद ।

x x x x x x

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।
 पाखे उजाल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥
 सर्वत सत्रासै ईकईस करी चोपई फली जगीस ।
 मन अभिलाप संपूरने भए, जिन गुरु चगन सीस धरि लाए ॥

इति श्री राव जसोधर को चउपई वध कथा संपूर्ण । ग्रन्थ कर्ता श्री पद्मनाभ दत्तनुसारेण साह
 लोहट दुगरथौ गोत्रे धर्मा सुत वघेरवाल वामिगढ वृद्ध राजराव श्री भावसिंहजी विजयराव्ये ।

६२. योगीरासो ।

रचयिता पाडे श्री जिनदास । भाषा (पद्य) । पत्र संख्या २, साङ्ग १॥१॥ इन्द्र । पृष्ठ पर १२
 पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ४६-५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुरुषें जो आदि जु गीतमें आदि जती आदिनाधी ।
 तास परंपरहुवा मुनिवर दिगधर सहताणी कुंठकुंदाचारिजगुरुमेग ॥१॥

अन्तिम पाठ—

हूँ बनिहारी चेतनकेरी सोइक चित्तमनि ध्यावै ।
छोडि अचेतन क्युं पडा रे भाई आपण सिवपुर जावै ॥ १ ॥
जोगोरासौ सीखौ रे भाई श्रावण दोष न कोइ दीज्यौ ।
जो जिणदास त्रिविधि त्रिविधिकरि सद्धिह सुमिरण कोज्यौ ॥ २ ॥

६३. रत्नपालरासो ।

रचयिता श्री सुरचन्द । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६३. साइज १०x३। इच्छ । पत्तेरु पृष्ठ पर
६ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७३२. लिपी सवत् १८२३. प्रति पूर्ण है
लिखावट सुन्दर है ।

प्रारम्भिक मंगलाचरण —

श्री वृषभादिक जिन नमुं, वर्त्तमान चौबीस ।
श्रीमधर प्रमुखां नमुं, बिहरमानवली बीस ॥ १ ॥
वृषभसेन गौतम नमुं, गणघर तथा गुणवतं ।
चउदेसि ज्वावन नमु, मोटा महिमावतं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

गळ दिगंबर गीरुया गौतम,	इद्रं भूषण सूरी रायरे ।
तास सीष्य श्री पतिव्रणचार,	जिनवर भक्ति सुनायरे ॥ १ ॥
कथा कोस प्रंध जो ईने,	रच्यो रास मीरदार रे ।
सुरचंद भंया नें आदर,	एह प्रबंध उदार रे ॥ २ ॥
अल्पबुधि श्रावक अवतार,	पटित सुर प नाम रे ।
शुरुपमायें बुधि प्रकासी,	मज्जन मुणि सुगुणमैरे ॥ ३ ॥
संवत सत्तरह घत्रिसा वर्षे,	शुभ मूरत शुभ वाररे ।
आसोज सुदि ईग्यारस रविदिन,	वर्द्धनपुर मन्तर रे ॥ ४ ॥
रत्नपाल मूनीना गुण गाथा,	मन नाम मनोरथ फलीयारे ।
अनेक देश देसनी देशी,	रास उत्तम मे कियोरे ॥ ५ ॥
कवियण कहें मे पुरो क्रिधो,	त्रिजोग्यह रमाल रे ।
विनति करहु बुधि जन साधें,	शुभ करो सुविमानरे ॥
भणता गुणतां नें साभलता,	मुग्गता ह्ये अपार रे ।
गुण गाता वली गुणवतं बेरा,	वस्त्यौजयजयकारे ॥ ६ ॥

इति रत्नपाल श्रेष्ठिनो रास सपूर्णम् । संवत् १८२३ वर्षे पोप बुद्धि १३ सोमवारे श्री मूलसधे सरस्वति गच्छे, बलात्कारगणे कुवकुंदाचार्यान्वये श्री सुरतबद्धिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानन्दंजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्ति जी लिखापितं ।

६४. राजुल पञ्चीसी ।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च । पद्य संख्या २५.

मंगलाचरण—

प्रथमदि सुमरुं जादौराय, पुनि सारठ हि मनावस्यौ जीव वे ।
वंदौ अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वे ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावे, सुनत सब जन गह बरौ ।
राजुल पति श्री नेमि जिन सब संघ कौ मगल करौ ॥

६५. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ८५

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो थाय ।
रात्रि भोजन कहुं निहाल, सांभल ब्यो सहुं वाल गोपाल ॥

अन्तिम पाठ—

भोला काई भ्रमें पढो जीत्यो जू उ महार ।
रात्री भोजन परहरो जेस पावो भवपार ॥ १ ॥
मूल संघ महल मणी सरस्वती गच्छै राय ।
भट्टारक शुभवन्द शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय ॥ २ ॥

६६. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता श्री किशनसिंह । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज ६×४ इञ्च । पद्य संख्या ४१५.

मंगलाचरण—

समोसरण सोभा सहितै जगतपूज्य जिनराज ।
ममौ त्रिविध भवदुखिनकौ तरण विरुद जिहाज ॥ १ ॥

जिन मुख अंबुज खरी, म्याद्वान मय सोय ।
ता स्वरसुति कौं भावधरि, नमौं मन्त्र मन्त्र खोय ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

माथुर वसंतराय वोहरा कौं परधान ।
संगही कल्याणदास पाटणी बखानिये ।
रामपुर वास जाकौं सुत सुखदेव सुधी,
ताकौं सुत किस्तिमिह रुविनाम जानिये ॥
तिह निरसिभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी,
तांकी कीनी चोपई सुआगमप्रमाणिये ।
भूलि चूकि अक्षरधर जौ वाकौं बुवजन,
सोधि पढ़ि वीनती हमारी मनि आनिये ॥ १ ॥

६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा ।

भाषा श्री पं० दौलतराम भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र सन् १९४४. साइज ६×४॥ इच्छ । गाथाओं के
उपर ही भाषा में अर्थ लिखा हुआ है ।

मंगलाचरण—

टोहा

हंटर सुकट के रतन की जोती हुई जलधार,
ता करि सिचे पद कमल जिनके भव तप हार ॥ १ ॥
केवल बोध प्रबोध करि परकासे महु तत्व ।
सुकल सु ध्यान विधान करि, टारि सकल धतत्व ॥ २ ॥
श्रावक अर जति धर्मकौं, क्षीयो जिह उपदेम ।
सुरनर मुनीवर गणधरा, भ्याये जाहि धमेम ॥ ३ ॥
ताहि प्रणमि श्रावक धरम, भासौं गति अनुमार ।
श्रेणिक प्रति ज्ञा प्रगढ़, भार्या जी गणधार ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ—

अस्तुम पुनहु भव्य इक धेन,
उदयापुर में कौयो बखान,
वान्छी श्रावक व्रत विचार,
क्षोले सेठ बेलजी नाम,
दवा होय जो गाथा तनों,
जा विघट्टवा भयो सुग टेंन ।
दौलतराम अनन्द सुत गंन ॥
वसुनन्दी गाथा अविचार ।
मुनि नृप मंत्री दौलतराम ।
पुन्य उपरो बियजौ तनी ।

सुनि के दोलति बेल सु वेंन,
नंदौ बिरथौ जिन मतसार.
दौलति बेल लहो नित्र बोध,

मन धरि गायो मारग जैन ।
सुखपावो बड संघ अपार ।
होहु दोहु सब को प्रतिबोध ।

संवत् १८०८ कार्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ १४ भौमवामने उदयपुर मध्ये सेवकालुनालालजी सुल
जी की बहु बाई मीठी तथा राजबाई ने लिखा ।

६८. व्रतकथाकोष ।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११४ साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक
पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७८७. लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ बंदू जिनराय,
बनुप पचसै जाकी काय,
बद्धमान बंदौ जिनदेव,
सप्त हस्त तन हेम समान,

कर्मफलक रहित सुकषाय ॥ १ ॥
वृष लक्षण सोभे अधिकाम ।
प्रियकारिणी मात सुत एव ॥ २ ॥
सिद्धारथ नृप को सुत जान ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिसि की कूट में जो सु कथौ आबस ।
तिस मंदिर मांही रहे पंडित लिखमीदास ॥ १ ॥

॥ सबैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलस्यंग भट्टारक कौ पदस्थ जाकौ सोहितु है ।
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनो सुभूरति लखेतें मोहितु है ॥
जाही के सुगच्छ मांही पंडितश्रीय जु दास वांनी कामधेनु तैं सुग्यान दोहि इतु है ।
लिखावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति घोस आगम विचार दोहि इतु है ॥२॥

x x x x x

औसे लिखमीदास ढिग में कुछ पढ्यो सुग्यान ।
पठन कीयो मो बुध्य लौं वै तो ग्यांन निधान ॥
तिनिहीं के उपदेस तैं भाषा सार बनाम ।
श्रुत सागर ब्रह्मचार कौ सुभ अनुसार सुनाय ॥

॥ चौपई ॥

सांगानेर धकी इकवार,
श्री जिनराज तर्णी बरसेव,

मैं आयौ दिह्यौ सुमकारि ।
करिहूँ सुखदा मनबच एव ॥

X X X X X
 और सुणौ आगे मन लाय, मैं सुन्दर कौ नदं सुभाय ।
 सिंह तिया अभिधा मम माय, ताहि कूखि मै उपजू आय ।
 चदं खुशाल कहै सब लोक, भापा कीनी सुणत असोक ।

॥ दोहा ॥

एकसात अठसात लखि संवत सुख दातार ।
 फाग अरिष्ट त्रिपे जु थिति चारित नाम विचार ॥
 सतरासे क सित्यासिये फागुण तेरसि सार ।
 कृष्ण पक्ष मांहि लखो उत्तम मंगलवार ॥

मिती जेठ शुक्ल १३ संवत् १८२० लिखापित पंडित जोधराजजी भूरामल लिपिकृत वृंदा नगर मध्ये ।

६६. वैद्यमनोत्सव ।

रचयिता श्री केशवदास नयनसुख । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३६. साइज १२x५ उच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में २२-२५ अक्षर । रचना संवत् १६४६. लिपि सवत् १७७४.

प्रशस्ति—

वैद्य मनोत्सव प्रथ यह	कह्यो सकल निज आनि ।
दुखकदन पुनि सुख करन	आनंद परम निधान ॥ १ ॥
फंसराज सुत नयनसुख	फागौ प्रथ अभिरुद ।
सुभग सहज सीहजंद में	अक्षर राजनरेन्द्र ॥
अंक वदे रस मेदनी	शुक्ल पक्ष शुभ गाम ।
तिथि दुतिया भृगुवार पुनि	पुख्यचन्द्र सुप्रसाम ॥

सवत् १७७४ जेठ सुदी ११ को श्री दयारामसोनी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपी बनायी ।

७०. समयसारकलशा भाषा ।

मूलकर्ता आचार्य अमृतचन्द्र । भाषाकार श्री राजमल्ल । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ५३. साइज ११x४। उच्च । केवल दसवें अध्याय को प्रति लिपि है । प्रति की हालत विगेर अन्दा नहीं है । लिपि संवत् १६५३, लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६५३ फागुण बुदी १४ शनिवामने गडरगस्थंभ मध्ये चन्द्रप्रभरंस्यान्ने भो मृतमने

बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्ति आम्नाये खण्डेलवालान्त्रये शेरपुरा की श्राविका लिखाडत मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थ उपदेशे वाई धनाई । लिखत पाडे कैसोसाह मान्या सुन संगही पूरा संगुणदत्त का देहुरा को पाडे लिखी ।

७१. समयसार नाटक ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११८. साइज १०x५६ इञ्च ।

रचना सवत् १६६३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कहौ है जैसे,
कुदंकुडं मुनिमूल उधरता,
समैसार नाटक सुखदानी,
पंडित पढै मूढमति वृष्णै,
पाडे राजमल्लजिनधर्मी,
तिह्री गरथ की टीका कीनी,
इहि बिधि बोध वचनिका फैली.
प्रगटी जगत मांहि जिनवानी,
नगर आगरे मांहि विख्याता,
पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने,

नाटक भाषा मयौ सु अैसे ।
अमृतचन्द्र टीका के करता ।
टीका सहित संस्कृत वानी ।
अल्पमती कौ अरथन सूफै ।
समैसार नाटक के मर्मी ।
वालाबोध सुगमकरिदीनी ।
समै पाइ अध्यातम सैली ।
घर घर नाटक कथा वखानी ।
कारन पाइ भये बहु ज्ञाता ।
निसिदिन ग्यांन कथा रस भीने ।

॥ दोहा ॥

रूपचंद पंडित प्रथम,
तृतीय भगौतीदास नर,
धरमदास ए पंच जन,
परमारथ चरचा करै,
कवहौ नाटक रस सुनहि.
कवहौ विग बनाई कै,
वास हमारा टोडो जानि,
फेर जिहांनावाद मम्कारि,
महावीर को मन्दिर जहां,
चित कौ रागरु धरम धरु,
चतुर भाव धिरता भए,

दुतीय चतुर्भुज जान ।
कौरपाल गुणधाम ॥
मिलि वैठहि इक ठौर ।
इन्हीं के कथन ने और ॥
कवहौ और सिधत ।
कहै बोध वितंत ॥
सागनेरि वसे पुनि आनि ।
आप रहै जैयंघ पुरिसार ॥
सकल पंच जन आवै तहा ।
सुमति भगौती पास ।
रूपचंद परगास ॥

इहि विधि ज्ञान प्रगट भयो,
देस देस महि विस्तरयो,

नगर आगरे माहि ।
मृपा देस महि नाहि ॥

॥ चौपई ॥

जहां जहां जिनवानी फैली,
जाके सहज बोध उतपाम,

लखै न सो जाकी मति मेली
सो ततकाल लग्ये यहु वान ।।

॥ दोहा .।

घट घट अन्तर जिन वसैं,
मत मदिरा के पान सौ,

घट घट अंतर जैन ।
मतवाला समुझै न ॥

॥ चौपई ॥

बहुत बढाउ कहां लौ कीजें,
नगर आगरे माहि विख्याता,
तामैं कवित कला चतुराई,
पंच प्रपच रहित हिय खोले.
नाटक समैमार हित जी का,
कवित बद्ध रचना जाँ होइ,
सोरहसैं तिरानवे धीते,
तिथि तेरसि रविचार प्रवीना,

कारज रूप वात कहि लीजें ।
वनारमी नाम लघु ग्याता ।
कृपा करिहि ए पाचौ भाई ।
ते वनारमी मौ हनि चौजे ।
सुगमरूप राजमल टीका ।
भाषा प्रथ पढै मत्र कोउ ।
असू मास मित पत्र वितीते ।
ता दिन ग्रन्थ समापन कीना ।

॥ दोहा ॥

सुख निधान सक बंध नर,
सह समाहि मिर मुकुट मम.
जाके राज सुचैन मौ,
डेनि भीति व्यापी नहीं,

साहित्य साकिरान ।
माहिजहां सुलतान ॥
कीनी आगममार ।
एतु उनौ उपमार ॥

॥ मयेंचा ॥

तीनिसे वसोत्तर सोरठ दोहा दूद दोडं जुगल में पैतालीम शरनीया अनि है ।
द्विधामी सू चौपेण मैतिस तेईम सर्वेण श्रीम लक्षण पटारक रहित वगाने है ॥
सात पुनिदां प्यहिल्ल प्यार कुंडलिन, मिलै मदन म.वसे मनाईम टोण टाने है ।
वसीस अत्तर के मिलोक शीने ताके, लने द. संगरा मजदने मान अहितने है ।

॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरब,
सोह आगम नाम मैं,
नाटक भाव अनत ।
परमारथ विरतत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धांत पूरणम् ।

७२. समयसारनाटक भाषा ।

भाषाकार श्री रूपचंद । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या १३७, साइज १२।५। इच्छ । पद्य संख्या ७२४, महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य में अर्थ लिखा गया है । रचना संवत् १७००,

मंगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ,
रूपचंद नौहूँ लखै,
कौ लग होय बखान ।
अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्हे,
सत्रहसै बीते परिठानु आव रस मैं ।
आसू मास आदि चौंसु सपूरन ग्रन्थकन्ही,
वारतिक करिके उदारमसिमै ।
जौ पें यहु भाषा ग्रन्थ सबद सुबोध या कौ,
ठौहू चिनु सप्रवाय नारैं तत्व बस मैं ।
याते ग्यान लाभ जांति सबनि कौ वैन मानि,
बात रूप ग्रन्थ लिख्ये महा शांत रस मैं ॥ १ ॥

खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मैं ।
खमसाखमांडि जिनहर्ष जू वैसगी,
कवि शिष्य सुखवद्ध शिरोमनि सधम मैं ।
ताके शिष्य दयासिंध गयी गुणवंत,
मेरे धरम आचारिज विख्यात श्रुत धर मैं ।
ताकौ परसाद पाह रूपचंद आनद सौं,
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मैं ॥ २ ॥

वाचत पढत अरु आनंद सदा एकसौं,
सांग ताराचंद अरु रूपचंद बाल के ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

देसी भाषा कौ कहै अरुथ विपर्यय कौन ।
ताकौ मिछा इक्क मे सिद्ध सखी हम कौन ॥ ४ ॥

७३. सम्यक्त्व कौमुदी कथा ।

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६१, माइज १०५॥ इ. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । रचना संवत् १७२४, लिपि संवत् १७६३.

संगलाचरण—

परम पुरुष आनंदमय	चेतनरूप सुज्ञान ।
नमूं शुद्ध परमात्मा	जग परकासक भान ॥
परम जाति आनंदशय,	सुमिति होइ आनंद ।
नाभिराज सुत आदि जिन,	वंदो पूरण चंद ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलग्रन्थ मैं ब्यां सुनी	कथा कहै कवि जोध ।
मोई ए भषा मही	दायक दरसन घोध ।

॥ चांपई ॥

मिश्र एक हरि नाभ सुनी	पढगो छंद व्याकरण प्रमानि ।
ब्यौतिप ग्रन्थ पढ्यो बहु भाय,	मित्र जोष कहै मुत्तराय ॥

॥ दोहा ॥

तिनहि पढायो जोध को	मूलग्रन्थ परवान ।
ता पर भाषा गुन कीशो	जोधराज सुख थान ॥
पढित चतुर सुज्ञान है	इह जोष दरनाभ ।
ताकी संगति जोध को	भर्यां सामतर लाभ ॥
परम प्रजा पालै सदा	सत्र भूपति सिरमौर ।
रामसिंह राजा प्रगट	ता सम नांही श्रीर ।
ताकै राज सुचैन र्यो	कियो ग्रंथ इह जोष ।
नाम समकति कौमुदी,	दायक बेबल घोष ।

सांगानेर सुधान मे
ता सम नहि कौ और पुर,
अमर पृत जिनवर भगत,
वासी सांगानेर कौ
धर्मदास को पूत लधु
नाम कल्याण सु जानिये
ताके पढिबै कारनै,
नाम समकित कौमुदी,
इहै समकित कौमुदी,
सो सुर नर सुख पाय कै

देश दुहांडि सार ।
देखे सहर हजार ॥
जोधराज कवि नाम ।
करी कथा सुखधाम ॥
जाति लुहाड्यौ जोय ।
कवि कौ मामौ सोय ॥
कियो ग्रन्थ यह जोध ।
दायक केवल बोध ॥
जो नर पढै सुभाय ।
अनोकरमि सिव जाय ॥

॥ चौपई ॥

संवत सत्रासै चौबीस
सुकरवार सो पूरन भई

फागुन बुदि तेरस शुभ दीस ।
इहै कथा समकित गुन ठई ॥

॥ दोहा ॥

न्यारासै अठहत्तरि इहै छंद चौपई जान ।
कह्यौ कौमुदी ग्रंथ कौ जोध सुमति अनुमान ॥

महाराम के हेतो सौं राखे अपने पास ।
काम खजानां कौ द्यौ नथमल कौ सुखरास ॥

पुनि भापा रचना विषै धारयो मै उपयोग ।
पै सहाय विन होय नहीं, तवहि मिल्यौ इक जोग ॥

कारन विन शुभकाज की सिद्ध न होय लगार ।
तातैं सो कारन सुनौ, बुध जन सुख करतार ॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खान, बीजामत सु गङ्ग नभ मान ।
बसवा नाम नगर सुखधाम, मूलवास जानौ अभिराम ॥
अमोदक के जोग बसाय, बसुवा तजै भरतपुर आय ।
जिनमन्दिर में कियो निवास, मूलवास जानौ अभिराम ॥

जो कहूँ मेरी चूक है	लीज्यौ संत सुधारि ।
वरण मातरा देखि कै	गण आँगण सुविचार ॥
बंदौ सिव अवगाहना	अर बंदौ सिव पंथ ।
असह देव बंदौ विमल	बंदौ गुरु निरगंध ॥
जिनवाणी पूजो सही	तातै सब सुख होय ।
कविता दुखन नहीं लगौ	सुख से पूरण होय ॥
चढ़ं सूर पानी अवनि	पवन अरु आनास ।
मेरादिक जब लग अटल	तब लग जैन प्रकास ॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीकथायां साह जोधराज गोदीका क्षिरविताया उचितोदय भूप अरहदाम
सैठादिक सुरग गमनो नाम एकादसम परिच्छेदः ।

संवत्सरे १७६३ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुधवारै जिहानावाठ जैसिदुग मध्ये भी
बद्धमान चैत्यालये श्री मूलसंधे नंधान्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक शिरो-
भाण भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयार्द्रिदिनमाणप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तद्वासा-
नुवर्त्ती पं० दयारामेन इदं सम्यक्त्वकौमुदी भाषा चौपई ग्रन्थ स्वहस्तेन लिपि कृता ।

७४. सम्यक्त्वरास ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी । पत्र सरया २६, नाराज १०×११ इंच ।
प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३०-३४ अक्षर । प्रथम पत्र नहीं है ।

दूसरे पत्र का प्रारम्भ पाठ—

घोटक

जयवंत जय जगि सार सुंदर रामचंद्र वखानिये ।
लक्ष्मीधर अरु भरत शत्रुघ्न क्यारि पुत्र घरि जाणीउये ॥
कुलकमल दिनकर सरुल शास्त्र सुमानवत महामती ।
देव धर्महं गुरु परीक्षण रामचन्द्र क्षतिपती ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति--

समिकित रासो निरमलाए मिथ्यातमोटाकदाता ।
गावो भवीयण रुवढो ए जिमि सुरा होइ अर्नगता ॥ १ ॥
धो सकल कीर्ति गुरु प्रणामीनए, धो भवन कीर्ति भयतार तो ।
भग्न जिणदास भणो ध्याएए गाउए सरस अपारतो ॥ २ ॥

७५. सिद्धान्तसारदीपक ।

रचयिता श्री नथमल बिलाला । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र सन् १९६६ साङ्ग १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तियाँ तथा प्रति पक्ति में ३२-४२ अक्षर । भट्टारक सफलक्रीति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है ।

सर्वदर्शी सर्वज्ञ महत् सफल अर्थ दायक श्रोत ।
गणधर पद वर्धन जगनाथ, वदौ चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिमगाथ तथा प्रशस्ति—

जिहि विधि भाषा प्रव चह, भयो परम हितकार ।
सो वरनन बुधजन सुनो, करि नि न चित्त डक ठार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

नगर आगरो परमपुनीत,	साधमीजन वसें विनीत ।
जहाँ जेठमल साह सुजांन,	गुन गन मंडित परम निधान ॥
ताके तनुज दोय गुनवान,	निजकुल कमल प्रकाशन भान ।
जेठौ सोभा चंद चंदार,	लघु सुत गोकुलचंद विचार ॥
वंस खण्डेवाल अवदात,	गोत बिलाला जग विद्यान ।
अन्नोदक को जाग्य पाय,	वने भरतपुर माही आय ।

॥ शोहा ॥

नदन सोभाचंद कौ. नथमल निपट अयान ।
छद कोस पिंगल तनौ ज्ञान अस नहीं जान ॥

॥ चौपई ॥

संगही चादूवाढ प्रसिद्धि, केसोवास घरन बहु रिद्धि ।
मयाराम ताकौ सुत सही, पोतदार जानै सब मही ।
मोदी.....महाराज जाकौ सनमान दीक्षनौ,

फतेचंद पृथ्वीराज पुत्र धनमाल के ।

फतेचंद जूके पुत्र जसरूप जगन्नाथ,
गौतमानधर में धरैयासुभवाल के ।

ता में जगन्नाथ जूके बुधिनके हेतु,

हम वयौरी के सुगम क्रीन्हे बंधन दयाल के ।

नथमल नै सुखरास सौं, कही प्रीति दरसाय ।

मूलग्रन्थ कौं अथे तुम मोकूँ देय वताय ॥

मूल ग्रन्थ अति कठिन है पढ़ै जू पढित होय ।

भाषा रचना होय तो पढ़ै सुधी सब लोय ॥

अर्थ समझि सुखराम तैं मध्य लोक को मार ।

नथमल नै भाषा रची निजमति के अनुमार ॥

महावीर जिन जात्रा हित

नथमल आये संघ समेत ।

पांडे लालचंद्र सौं कही

पूरन ग्रंथ करो तुम सही ।

॥ श्लोक ॥

नथमल बच हर आनि के,

अरु निज हेत विचार ।

श्री सिद्धान्त मार की,

भाषा कीनी मार ॥

आर्थो लोक की कयन अरु

उरु लोक विचार ।

भाषा पांडेलाल नै

कीनी मति अनुमार ॥

॥ छप्पद ॥

भहारक विख्यात सस्कृतीति विसाहमति,

कियो सहस्रकृत पाठ ताहि समझे न तुच्छ मति ।

ताही के अनुसार अरु मन में आयो,

निजमति के अनुसार किमपि भाषा करि गयो ॥

जो छंद अर्थ अनमिल फहं बरन्यो होय सुजाति के,

लोग्यो सवारि बुधजन सकल यह पिनती उर धानिके ॥

नमौ देव अरिहतं मुक्ति मारग परकामो,

नमौ सिद्ध चिद्रूप लोक के अग्र निवामो ।

जमौ माधु निग्रन्थ सकल परिगह परिहारी,

महत परोपह घोर सकल जन के हतारो ।

घदी जिन धर्मधर देव सकल सुख संपदा,

बइ उत्तम निहुं लोक मे करै छेम रंगल सदा ॥

॥ चौपई ॥

संवत् अष्टादश शत ज्ञान

ऊपर पुनि पीतीम प्रधान ।

माह शुक्ल पाँचै रविवार

ग्रन्थ समाप्त कीनी मार ॥

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यतं महात्मा गुमानीराम नासरीदा मध्ये ।

७६. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२, साइज ६×४ इञ्च । पद्य संख्या १०४. रचना संवत् १६६१.

मंगलाचरण—

सोमित तप गजराज सीस सिन्दूर पुर छवि,
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि
मंगल तरु पल्लव कषाय कंभार हुतासन
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासन
इहि विधि उपमा सहित अरुन वरन संताप हर ।
जिनराय पाय नपजोतिभर नमत बनारसी जोरि कर ॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगल इक चित्त ।
तिन गरंथ भाषा कियो बहुविध छंद कविता ॥
नाम मुक्ति मुक्तावली द्वाविंशति अधिकार ।
शत शिलोक परवान सध, इति गरंथ विस्तार ॥
सोलासै ईक्यानवे रितु श्रीपम वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मित पाष ॥

७७. सीताचरित्र ।

रचयिता कविवर रायचंद । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४४, साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३०-३३ अक्षर । रचना संवत् १७१३, लिपि संवत् १८०८, प्रति पूर्ण है ।

मंगलाचरण—

प्रणमौ परम पुनीत नर बद्धमान जिनदेव ।
लोकालोक प्रकास तस करे समकित्ती सेव ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

कियो प्रन्ध रविपेण नै रघु पुराण जिय जान ।
बहै अरख ईण मै कछौ रायचंद उर आण ॥

× × × ×

संवत् सतरंतेरौत्तरै मंगसिग् प्रन्ध संमापति करै ।
सुकल पक्ष तिथि है पंचमी, आपो जाणि कुमति जिणवमी ॥

संवच्छरे १८०८ वर्षे वैसाखमासे शुक्लपक्षे अक्षयतीजतिथौ वृषवारै श्री सवाई जयपुर नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंघाम्नाये घलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुटकुंदाचार्यान्वये भट्टारक सिरो-मणि भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयाद्रि दिनमणिप्रख्यः भट्टारकजी श्री १०८ महेन्द्रकीर्त्तिजी श्री १०८ श्री माधोसिंह राजपाटाविराजिते साह श्री डाहूरामजी का देहुरा मध्ये पंडित श्री ईसरदाम सोभाराम रूपचंदविराजिते संगही श्री नीकरागजी की पुस्तक सौ तदाज्ञानुवर्त्ती पं० दयारामेण सीताचरित्र चौपई भाषा ग्रंथ स्वहस्तेन लिपि कृता ।

७८. सीता हरण ।

रचयिता श्री जयसार । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११४. साइज ६।।४।। इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४-२८ अक्षर । रचना संवत् १७३२. लिपि संवत् १६१४ प्रति पूर्ण है तथा साधारणतः अन्धी है ।

प्रारम्भक मंगलाचरण—

सकल जिनेश्वर पद नमूँ
गणधर गुरु गौतम नमूँ
सहै गुरु पद नमौ
सीता हरण जहँ कहँ

सारदा सुमरुं माय ।
त्रिभुवन चंदि पाय ॥ १ ॥
रामचन्द्र घर नार ।
सांभल जो नरनाग ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ सरसती वर गच्छे
वीद्यानन्दि गुरु गोयम सरपो
गंधार नगरे प्रस्यक्ष अतीसय,
तेह तणो पाटे मलीभूषण
लक्ष्मीचंद्र ते अनूकमे जाणो
धीरचन्द्र भट्टारक वांणी
ज्ञानभूप तस पटे सोहे
लाहजं वंमे उणोतज कीयो
प्रभाचन्द्र गुरु तेहने पटे,

घलात्कारगण नार जी ।
प्रणमूं श्रीरो वार जी ॥
फलीयुगे छं मनोहार जी ।
वीणा नो नही पार जी ॥
लक्षण मंडीत फय जी ।
सांभली तां सूपथायजी ॥
ज्ञानतणो भंठार जी ।
भयतणो आघार जी ॥
पांणी अमी रसास जी ।

वादोचन्द्र वाद बहु जीत्या
 महीचन्द्र मुनि जन मन मोहन,
 परवादी नामा नमू काव्या
 मेरुचन्द्र तस पटे सोहि,
 व्याख्यान्य कोशी श्रुतीवसमांणी,
 गौर महीचन्द्र भोव जयसागर,
 नरनारि जे भए छे सुख छे
 हूँ बड वसी रामो संतोपी,
 तेह तयो पूत्र से तस घरे
 तेह तयो आदे सासी हरयो,
 सांभल भांगां तां सुख हो सी,
 सर्वत संतरवर्त्रीसानरसे
 वृषवारै परिपूर्ण ज चरयुं,
 आदी जिखेसर तयो प्रसादी
 सांभलतां गातां ए सहजें,
 महापुराण तयो अणुसारी,
 कवि जिन दोष में देसो कोई,
 मुक आलसूने उजय चढयुं,
 तेह प्रसादे ग्रन्थ ए कीषो,
 सीता सील तयो ए महीनां,
 भावधार जे गाए महीनां,

बट सरतां गुणमाल जी ॥
 चाणी जेह वीस्तार जी ।
 गर्वन करी भगार जी ॥
 भौंहे भनीधण भज जी ।
 सांभलोए के बत जी ॥
 रच्यो सीता हरण नो रास जी ।
 तस घरे जय जय कार जी ॥
 रामादे तेह नी नार जी ।
 जय जय कार जी ॥
 कीषु मन उतास जी ।
 सीता सील विलास जी ॥
 वैसाख सुदी बीज सार जी ।
 सूर तनय रयभार जी ॥
 पद्मावती पसाय जी ।
 मन मां आनंद थाये जी ॥
 कीषुं से मनोहार जी ।
 सोषजो तमे सुखकार जी ॥
 सारदा ए मती दाष जी ।
 श्यामदासे जसलीव जी ॥
 गाँठ सह नरनार जी ।
 तस घर भगल च्याग जी ॥

॥ दोहा ॥

भावधार जे भए सुणे सीता सीलविलास ।

जयसागर रई उचरे यह चेतस मन नी आस ॥

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-
 वर्णन नाम पद्यमोक्षिकार समाप्त ।

संवत् १६२५ वर्षे पौषकुदी २ शुक्लवासरे गांम श्री देवदनगरै पद्मप्रभचैत्यालयै श्री मूलसर्षे सर-
 स्वतीगच्छे बलात्कारमण्ये श्री कुंदकुर्वीचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवचन्द्रजी
 तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत् शिष्य ब्रह्म गोकलजी वल्लघु आता ब्रह्ममैत्रजी लिखितं स्वहरतं ।

७६. सुदर्शन रासो ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११. साइज ११॥ × ५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में ४२. ४५ अक्षर । रचना सन्त १६२६ ।

मंगलाचरण—

प्रथम प्रणमों आदि जिण्ड, नाभि राजा कुलि उदयाजी चंद ।
नगर अजोध्या उपने स्वामी पूरव नाव, चौरासी सी जी प्राड,
मरुदे जी मात हें उर धरिउ ॥

प्रशस्ति—

अहो श्री मूल संघ मुनि प्रगटौ जी लोड,
ऊनंत कीर्ति जाणै सहू कोइ तास ज्ञणौ सिप जाणव्यौ ॥
अहो रायमल ब्रह्म मनि भयो जी उछाह, बुधि करि हीण जाणै नहीं ।
अहो वणयो रास सुदर्शन साह ॥ १ ॥
अहो सोलहसैं गुणनीसइ जी वप वैसाख सातें जी ऊजलौ पाव ।
साहि अफवर राजई, अहो भोगवै राज प्रात इंद्र समान ।
और चर्चाउर राखें नहीं अहो छह दरसण कौ राखेंजी मान ॥ २ ॥

८०. श्रावकाचार रासो ।

रचयिता श्री जिनमेधक । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ११२. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना सन्त १६०३ लिपि संवत् १८००. रामो के कर्ता ने अन्य भी ग्रन्थ रचना की है प्रशस्ति ठीक तरह से लिखी हुई नहीं है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर २ चरण कमल ते नमुं
गुण छुशतालीसधारक, धारक मोहतिमिगनिभर, पंच फल्यगुण नायक
पायक सिवसुग्य सार मनोहर, सारवा सामनिमनिवरुं
अणुसकृगुरुनिर्मथपाय, धावकाचार विधि वरगुणु जो तम्हो ररो पमान ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ सरवर्ता गच्छ	धलाहकार गुण विनाकनो ।
कृ इकुंदाचार्य हुवा	अनुप्रमि गुरु गुणमाननो ॥
भी जिनसेन गुणभद्रमूरी	अनजंक अमृतचद्रनो,
ज्ञानी ध्यानी दिगवर जती	परंपरा नूरी प्रभषंद्रनो ॥

श्री पदमनन्दि पाट हुंवा
 भुवनकीर्ति तपमूर्ति
 श्री विनय कीर्ति पाटि उपव्या
 भव्य कुमुदचंद्रजसो,
 आम्नाय गुरु श्री शुभचंद्रतो
 अध्यात्म गुरुकर्मसी ब्रह्म,
 अथर शास्त्र कवित गुरु,
 जैण धर्म उपदेश दियो
 ते सहु गुरु हुवा मुक्कणां,
 गुरु गुण नविलोपिये,
 सुक हृदय पदम मांहे,
 मोह तिम्बर दूरै हरी,
 सामंतभद्रसूरी कृत,
 आसाधर पंडित कृत,

× × ×
 वानवार देश सोहांमणि,
 हाट हार मंदिर मालीया,
 श्री आदिनाथ तीरथ तणों,
 समोसरण कल्याण त्रय आदि,

× × ×
 त्रेपनक्रिया रास जेणें कीर्यो,
 श्री महावीर रास कीर्यो,
 कर जोडि पद मौं कहे,
 निज बुद्धि नै अनुसरै,

× × ×
 संवत संख्या जिन भावना,
 मास मांहे सुहामणों,
 तिथ संख्या चारित्र भेदी,
 शुभ नक्षत्र शुभ योगि,

× × × × ×
 श्रावकाचार तणो श्रावकाचार तणो रास किर्यो मै एणी-

सकलकीर्ति भव तारतो.
 श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो ।
 भट्टारक श्री शुभचंद्रतो ॥
 कुवावी गजमृगेंद्रतो ।
 आगम गुरु मुनिचंद्र तो ।
 शिष्य गुरु हीर ब्रह्मिद्रतो ॥
 ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो ।
 शास्त्र श्लोक पट भाषता ॥
 कर जोडि करु प्रणाम तो ।
 गुरु लोपी पापी नाम तो ॥
 गुरु भानु वाणी किरण तो ।
 ते गुरु तारण तरण तो ॥
 वसुनन्दि श्रावकाचारतो ।
 सकल कीरति कृत सारतो ॥

× × ×
 शाकपुर नथर मकारि तो ।
 प्रजा वासि वर्ण च्यारतो ॥
 सोदै जिन प्रासाद तो ।
 जिनविं, कारि आह्लादतो ॥

× × ×
 जेणें कीर्यो ध्यानामृत रासतो ।
 तेणि कीर्यो एह भासतो ।
 श्रावका चार कीर्यो रासतो ।
 साह्यकारी मित्र जिणदास तो ॥

× × ×
 संवच्छर संख्या प्रमाद तो ।
 भादवा सुदि मर्याद तो ॥
 रस संख्या शुभ वारतो ।
 कीर्यो मै श्रावकाचार तो ॥

× × × × ×

परिभव जन मन रजन, भंजन कर्म कठोर निर्भर ।
 पंच परमेष्ठिनि धरी समरी शारदा गुरु निरग्रंथ मनोहर ।
 अनुदिन जे धर्म पालजी टाली मने अतीचार ।
 जिनसेवक पद मो कहि ते पांसों भवपार ॥

संवत् १८२० भट्टारकोत्तम भट्टारक जी श्री देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक जिद्धी महेंद्रकीर्ति तत्पट्टे
 भट्टारक जिद्धी १०८ ज्येष्ठेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टित पठनार्थ हेमराज जाति वधेरवाल गोत्र थगडा घाम मत्र क्षिपि
 कृतं सहास्यं भूरामल वाकलीवाल ।

८१. श्रीपालचरित्र ।

रचयिता कविता श्री परिमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२५, साइज १०x५॥ इन्द्र । प्रत्येक
 पृष्ठ पर १२ पृष्ठ तथा प्रति पक्ति में २६-३३ अक्षर । प्रति सुन्दर है । लिपि संवत् १७६४.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्धि गुण अनंत फल जाकै सिद्धि ।
 प्रणमुं परमसिद्धि गुरु सोड भविक वंध ज्यौं मंगल होड ॥

प्रशस्ति—

उग्रं गोपगिरि च दुर्गमगढं रत्नवरं भूपितं,
 जधीरं कृतमंवरं मदगलं पापाण्येरावतं ।
 तन्मध्ये श्रीभानसाहिषिपते भूलोकवरविद्यतं,
 ततराज्यं सुरनाथ तुल्य गदिनं तत फेन स वर्णितं ॥ १ ॥
 जातु कुरुलौ नामेन चंद्रेतयं,
 तत्पुत्रं गुरु रामदासविपुलं भुक्तं न भोग्यं सदा ।
 तत् सूनुः कुलदीपकाक्षप्रगटं नामं स कर्णे शुभं,
 तत्पुत्रं परिमल्लं घम्मेमदनं प्रथरिदं क्रियते ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

गोत्रि गीरी ठाढौ वत्तिम धान,	सूरधीर यह रामान ।
ता आर्गे चदन चौधरी	कीरति नय जगमे प्रियतरी ॥
जाति विरहिया गुणहगंभीर,	अति प्रताप एल नंजन घीर ।
ता मुत रामदास परवान,	ता मुन प्ररित नडा नूर र्यान ।
तसु कुल मंडल है परिमल्ल,	मचै आगग में अरिगन ॥

तासु महिन बुद्धि नहि आन,
 होय अशुद्ध जहाँ पदहीन,
 वार वार जंपों करि जोर.
 वंदौ जिन सासन कौ भम्म,
 वंदौ गुरु जे गुण के मूर,
 वंदौ माता सीह वाहिनी,
 वंदौ मुनियन जे गुन घम्म,
 वंदौ सज्जन कुल सुख धाम,
 महिमा सागर महा सुजांन,
 जाकै हवें दया कौ वास,
 ताकै एक अपूरव रीति,
 सुख में जल पीवै तृणा खाय,
 तिनको सक सीह मनि धरें,
 मारसवद मुख थैं नहि चवै,
 नवौ रिद्धि पूरण भंडार,
 नृप अनेक सेवैं दरवार
 सुखो भये जिनसए पाय,
 परनारी परधन अति आहि,
 सत्तराज महि मंडल तेज,

कोयौ चौपई वध प्रवांत ।
 फेर सवारौ गुणियन वीन ॥
 बुधिजन मोहि देहु मति खोरि ।
 ज.पसाय नासै अघ कर्म ।
 जिनके होय ग्यान कौ पूर ।
 जातैं सुमति होय अतिघनी ।
 नवरस माहिमा उदतिन कर्न ।
 वंदौ भम्म बुद्धि वर नांम ।

जीवन कवह देयन त्रास ।
 सुरही सौ अति राखै मोति ।
 अपणैं मारग आवै जाय ।
 अकवर कै आयस ते डरै ।
 एक छत्र महि मडल तवै ।
 हय गय वाहण अगण अपार ।
 दुःखी दीदन कौ आधार ।
 विमुख भये दुख लहै अचाय ॥
 तिन तन कोउ सकयन चाहि ।
 सुरपनि हू थै अधिकमतेज ।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई वध परिमल्ल कृत मंपूर्ण । सवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १०
 भोमत्रासरे तत्दिने इदं पुस्तकं लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्यं । तत्दिने इदं पुस्तक लिखायत वाई
 तुलसा पठनार्थं ।

८२. श्रीपालरास ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४०. साइज ७x६ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य
 संख्या २६७, रचना संवत् १६३०, लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

हो स्वामी प्रणमो आदि जिणंद, वंदौ अजित होई आनंद ।
 संभौ वंदौ जुगति स्यौ, हो अभिनंदन का प्रणमो पाई ॥

अन्तिम पाठ—

हो मूलसध मुनि प्रगटै जानि, कीरतिअनंत सोल की गानि ।
 ता तस तनी सिपि जानिजे, हो ब्रह्म राइमल्ल छट करि चित्त ॥
 भाव भेद जानें नही होत, हि दीठै ओपाल चरित्र ॥
 हो सोलासै तीसौ सुभ वप, तीर्थ तैरस सित सोभिता ।
 हो अनुगथा नापत्र सुभ सर, वरन जोग दोसौ भल ।
 हो भनै वार सनोसरवार ॥ १ ॥

हो रणथधरमर सोभा कविलास, भरिया नीरतान चहु पास ।
 बाग विहर बाघडी घणी हो धन कन सपत्ति तणौ निधान ।
 साहि अकवर राजइ, हो सोभा घणो जिंसो मुर धान ॥ २ ॥
 हो श्रावक लोग वसौ धनवत, पूजां करे जपे अरहंत ।
 बहुविध यात्रा दान दे हो नम लोग धम सजोग ।
 सामाइक योसौ करै हो तन नीड़ा फिरौ ॥ ३ ॥
 हो दोसौ अधि क छानवें छट, रुधियन भनौ तसु मति मट ।
 यद अक्षर कोइ घटै, हो पंडित मति को ररौ प्रगाम ।
 जेसो मनि मोहि उपनी, हो तोली मति मौ बने राम ।
 राम भनौ सरिपाल रौ ॥ ४ ॥

सवत् १६८६ वर्षे आसोज बुदी ५ दिने सुक्रवार आगरा राये माहिजहां..... लिखनं जैता पाटणी दानु पुत्र ।

८३. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता लक्ष्मीचन्द चांदवाह । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र नवम्बरा १२५, माहज १०४५। ८३ । प्रथम पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३१ अक्षर । रचना संवत् १७४६, लिपि मय्यन १८०८.

मगलाचरण—

गणपति श्री अरहंत पद	महावीर भगवान ।
पाति करम मिथ्याग तम	हरि उदयाचल भान ॥
ममवसरण लक्ष्मी त्रिपे	नहिमा अगम अक्षर ।
एष्ट आं व चरण नने	नमै भूमि मित्र चरण ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री सरस्वती गच्छ गण वल्लात्कारान्वय कुदकुज महान ।
 नद्यम्नाय भव्याचित कमलसु पदमनन्द जिम भान ॥ १ ॥
 तिनके पटि श्री सकलकीर्त्ति मुनि भवि जीव समोद दिवाड ।
 सुकवि सरल वानी करि महीयल बुधजन मन रजवाड ॥ २ ॥
 तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तमकीर्त्ति भवनपसरान ।
 ज्ञातातत्त्वपूरान काव्य करता जिन विंघ प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥
 तिह पर श्री ज्ञान भूपण विगर्जे परकासन सुभ ग्यान ।
 निज वचनें दिन कर सम उद्यै अद्यत मनाम भञ्जान ॥ ५ ॥
 तिन पट विजय कीर्त्ति जैवतं गुरु अन्यमती परवत समान ।
 स्याद्वाद वजे करि फौडत तिन सिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥
 जिन पुंती पुरुष पुगान पवित्र सुभ कहियौ सुभग बखान ।
 ना कवि मद् थे न कीर्त्ति अहंकार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥
 निज अवहण कारन ग्रंथ संस्कृत ता मुनि संशेष आनि ।
 भाषा करी ढाल बौवन मे लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥
 सुनौ भवी भावीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुभचन्द्राचार्य तिन्ह,
 ते मुनि, लक्ष्मीदास भनि,
 ना मैं देख्या ग्रथ कौड,
 तुच्छ मति रह भाषा रची,
 आगम चूक पनीसकाति,
 तासा मित्रापन अधिक,
 कूसलसीध करनी उचित,
 पंडित जसरथ सुत सुभग,
 ता उपदेम भाषा रची,
 सवत् सत्तरासैं उपरि
 पंचमी ता दिन पूर्ण लहि
 फेरि लिखी गुनचास मैं
 भूलौ चूकौ सवद कौड

कष्टयौ सहसकृतसार ।
 भाषा ढाल पियार ॥ ९ ॥
 व्याकरण छद न जानि ।
 बुधजन मत्तीह सवानि ॥ १० ॥
 उदीर कै धन जूत कपनतनूर ।
 प्रति पर सपरस मान ।
 ताकी सम नहीं आंती ॥ ११ ॥
 तदानद तस नाम ।
 भविजन कौ विसराम ॥ १२ ॥
 तेतीस जेठ सु पाख ।
 मंगल कारी भाष ।
 लक्ष्मीदास निज बोध ।
 बुधजन लीव्यौ सोधि ।

इति श्रीश्रेणिकमहाराजचरित्र भाषा लक्ष्मीदासचादवाढकृत सपूर्णा । सवत १८०८ फात्तिर
सुदी ६ गुरौ ।

८४. श्रेणिकरास ।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास । भाषा गुजरातीमिश्रित हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ५२, साइज १॥४४॥ पद्य ।
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति पर २६-३२ अक्षर ।

मंगलाचरण—

वीर जिरोध्वर पाय प्रणमेश, तीधकर स्तुवीममे ।

घाँछित फल बहू दान दाता, सारदा स्वामीनि वनिस्तुवुढ धियुधि मार ॥

अन्तिम पाठ—

श्रेणिकराजा श्रेणिकराजा तरणो ए रास, पढे गुरो जे माभलिया ।

कमनेँ धरि भाव बऊजत, तेह घरेँ न बहनीद्धन ।

संपजे सरग मुगती फलदार निमेल, श्री सकलकीर्ति गुरुप्रणामिति ॥

मुनि भुवनकीर्ति भवतार, ब्रह्म श्री जिणदामभणो निरभलो मुगता पुण्य पावार ॥१॥

८५. हनुमत कथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ६२, साइज ६×६ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर
१२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे २३-२४ अक्षर । रचना संवत १६१६, लिपि सवत १७१६

मंगलाचरण—

स्वामी सुव्रतनाथ जिनद, सुमिरत होइ सिद्धि आणक ।

नमौ मीम जोइ कर होय, नामे पाप भलो मति होइ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्त्र—

मूलसंध भयतारण हार,

रत्नकीर्ति मुनि अर्थिक मुजाण,

अनंतकीर्ति मुनि प्रगट्ये नाम,

मेव घृष्ट ले जाटन गिनी,

ताम सीप्य जिण चरणां लीन,

हणू कथा की कियो प्रकास,

भगी कथा मन में भरि हर्ष,

मारग गदु गरवी ममार ।

ताम पटि मुनि गणानिधान ।

कीर्ति अर्नत विश्वरो नाम ।

ताम मुनिगण जाइन भणी ।

हणू रायमल मति की हीन ।

उत्तम क्रिया सुगीबकर ताम ।

नौजानेँ न्योसा शुभ बर्ष ।

रितु वसंत मास वैशाख,	नौमि सनोसर वृष्ण.हे पक्ष ।
x x x :	x x x
स्वामी सुव्रत न.थ जिनत्,	दुमगत होइ सिद्धि आणंद ।
न.सै पाप भली मति होइ,	न.मौ सीत जौडे कर दोर ॥

८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुलाशचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या २५६, साइज १२x११। इत्य । पत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ५०-४२ अक्षर । रचना संवत् १७८०, लिपि संवत् १८६०, लिखि सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीर वदौ जिनदेव,	इद्राविक करिईं तिनसेव ।
तीन लोक में मंगल हर,	ते वंशौ जिनराज अरूप ॥ १ ॥
नेमिसुर वंदौ शित लाय,	तिहु जग वरि पद अघाय ।
पाप विनाशन है जिन नाम,	सब जिन न म वदौ गुणघ स ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन,	सब ज वन सुखदाय ।
तहां ब्रह्म जिनदास जू,	करि लीही अघमा ॥ १ ॥
ताही श्री जिनदास नी,	ग्रन्थ रन्थौ इह सार ।
सो अनुसार खुश्याल ले,	कह्यो भविक सुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

मेरी बात सुनो अर्वे,	॥ दोहा ॥	भव्य जोष मन लाय ।
कालौ जाति खुश्याल जु,		सुन्दर सुत जिननाय ॥

॥ चौपई ॥

देश दुंढाहर जांगौ सार,	तामैं धरम तणु अचिकार ।
विसनसिंघ सुत औसिहराय,	राजकरै सबकूं सुखदाय ॥
देशतनी महिमा अति बनी	जिन गेंहा करि अति ही बनी ।
जिन मंदिर भवि पूजा करै,	वइक व्रत ले केडक धरै ।
जिन मंदिर करवाये नना,	सुरग विसल तनी वर छवा ।
रख जात्रादि होत बहु जहां,	पुन्य उपावन भवियन तहां ।

इत्यादिक महिमा जुत देश,
जा मैं पुर सांगावति जानि,
जाकी सौभा है अधिकार,
जा मधि श्री, मूलनायक थानि,

रहि न सकौ मैं और असेस ।
घरम उपावन कौ वर थान ॥ ५ ॥
कवलीं भाखूं भवि विस्तार ।
सोभै गि जीवा सुख दानि ॥ ६ ॥

∴ सवैया ∴

संघ मूलसंघ जानि गढ़ सारदा बखानि,
गणजु बलातकार जानि मन लयकै ।
कुंदकुंद मुनि की सु आमनाय मांहि,
भये देवइन्द्रकीर्ति पठ्यतर पायकै ॥
जिन सु भये तहां नाम लिखमीदास,
चतुर विवेकी श्रुत ज्ञान कृपाय कैं ।
तिहने पास मैं भ। कछु अल्प सौ प्रकाश भयो,
फेरि मैं वस्यो जिहानावाट मध्य आयकै ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

महर जिहानावाट मे जैमिघ पुरी सुधान ।
मैं बसिहूं सुखतैं मरा जिनेशऊ चित्त आनि ॥ ८ ॥

† छप्पय -

महमहसाह पातिसाह राजकरें सुचिक्छाँ,
नीतवत बलवंत न्याय विन लेत अरगौ ।
ताके अमल मुमांहि ग्रन्थ आरंभरु कीन्हौ,
पर कौ भय दुख मोफ कभूह हम कौयन लोन्हौ ।
इह विचार राजा तनौ इतनो ही उपगार है,
फौक दहन सकै जिनमत को विनवार है ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

महर मध्य एक वसिह नर,
ताके गेह विषै रद,
निन दिग मैं जाउ मरा,
निनगौ वर उपदेश ले,
गाह सुधानः जानि ।
गोहृत्तपर समाधि ॥ १० ॥
पटुं गाम्प्र सुभाष ।
मैं भाषा मनषाय ॥ ११ ॥

ग्रन्थ तनी भाषा रची,
जसका कारिज ना करयो,

॥ चौपई ॥

श्रीसी जानि भविक सुखदाय,
काला जाति सुन्याल सुनास,
मंत्रन् सतरासै अरु असी,
सुकरवार अति ही वर जोग,
पहर डोढ दिन वाकी रह्यौ,
कमर देखि पंडित जन कौय,
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नाहि,
यातैं दोष न दीजौ कोय,
जिनवर चरित सुवर्णतैं,
जे भवि सुमरैं भाव भौं,
हरिवंशं महाराष्ट्रं
नान्ना सुन्यालचंद्रेण

जिन सेवक अनुसार ।
करयो भावक उपगार ॥ १२ ॥

पाठजें सुनिजैं मनचचकाय ।
भाषा रची परम सुख घाम ॥ १३ ॥
सुदी वैशाख तीज वर लसी ।
सार नख्यनर कौ संजोग ॥ १४ ॥
भाषा पूरण करि सुख लह्यौ ।
सुन कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ॥
सार विचार नही मुक्त मांहि ।
अक्षय यणौ गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥
उपजैं पुन्य अपार ।
ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥
तत्य भाषा त्रिनिर्मित ।
भव्याना खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

संवत् १=६० का भाद्रमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ = लिखते वैष्णव चेतनदास नासरोदा नगर मध्ये शुभं भवतु ।

८७, हरिवंशपुराण ।

रचयिता श्री नेमीचन्द्र । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७७, साइज १२x५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५ रचना संवत् १७६६, लिपि सवत् १७६३, प्रति पूर्ण है । इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है ।

मंगलाचरण—

श्री भगवान जो वीनडं, अरहंत देव निरदोष अटारतौ ।
छीयालीस गुण शोभना, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतौ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस हुंटाहड सोभितौ नाना
कलपवृद्धिकी बोपमा जसी
चहुं विसि सरवर वापिका
निरमल पांणी स्यौं भरया,

विधि बृच्छ भला सुसार तौ ।
मन बांछित फल का दचारतौ ॥ १ ॥
नदी कुवा अर कुड अपार तौ ।
कमल उपरि भ्रम करै गुंजार तौ ॥ २ ॥

अंचावती गढ सोभिता,
कोट बुरजि अर कांगुरा,
वाजार सोहै चौपाड तणा,
पाटंवर भारिया सवै,
कौलग सोभा वरण्डं,
अन धन कपडा स्यौ भरया,
महिलां की पंकति मोभिति
मैढी चौवारा अति घणा,
चन्द्रवदन मी कामिणी,
गोखा भांकी भांकती,
घरि घरि तोरण ब्रांड जे
घरि २ गावै कामिणी

गिर विचि वमै अपार ।
दरवाजा बहु मार ॥ ३ ॥
त्रिविध २ की वस्त अपारतौ ।
मणि नाणिक मोती पद्मारतौ ॥ ४ ॥
गली २ मोभो वाजारतौ ।
भरिवेचें लो मोल पारतौ ॥ ५ ॥
सतभूमि उपरि विसतार तौ ।
नरनारी सब देव कुमार तौ ॥ ६ ॥
चन्द्राभूषण पहिरयां मार तौ ।
चन्द्र मूर्य लीजै तिहि वारतौ ॥ ७ ॥
घरि घरि मंगल होयविवाह तौ ।
घरि २ जानै पुत्र उदाह तौ ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

अंचावती सुभ थान सवाड जैसिच महाराजई ।
पातिसाह राखै मान राजकरै परिवार स्थुं ॥

दया सील पालै सदा,
तिन की महिमा अतिघणी,
श्रावण लोक सवै सुप्पी,
मन वाछित सुख भांगवै,
रथयात्रा निकसे सदा,
पोसो सामायिक करै,
जिनवर थानिक सोभिता,
मोवन फलम सिम्हरा परे,
आवक लोग सवै मिलै,
निहर्षी देव गुरु गाम्ब को.

वैरी नीति कीया सब जेर तौ
हिट्टु की पति रागण मेरनी ॥ १० ॥
नचनिधि स्यौ भरिय भटार तौ ।
दुर न जांगे कोट लगार तौ ॥ ११ ॥
अष्टविधि पूजा की अधिराय तौ ।
गुरु को विनेवरै भव्य रायतौ ॥ १२ ॥
धवला गिर पश्यत कैं अग तौ ।
घटा बाजे भुजा दतग तौ ॥ १३ ॥
पूजा करि जप अगहनतौ ।
चारयो दान परे दयाप्रस तौ ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

आवक की बरगान करयो,
अत्र जो गुरु उपदेन दे.
गृहसंघ महिमा पगौ.

जिनधर्म दत्त महान ।
नो कहै सादमात्रन ॥ १५ ॥
धन्यकार गल मार ।

सरसति गच्छ महा सोभिता,
 कुदकुट्ट मट्टारक भणौ,
 सूत्र सिधात ल्याया तवै,
 ता पाछै क्रमि क्रमि भया,
 पच महाब्रन पालवै,
 भट्टारक सत्र उपरै,
 कीरति चहुं दिांम विस्नरी,
 प्रमेत मै जीतै नही,
 खिमा खडग स्यौ जीतिया,
 ताको सिप नेमचंद जी,
 सेठी गोत पदमावत्या,

नेमचंद कै सिख भला,
 पंडित चतुर विवेक सब,
 लिखमीदास दोदराज जी,
 ज्यां दीयो उपदेस नै,
 देव गुरु शास्त्रप्रसद थी,
 रच्यौ रास श्री नेम कौ,
 आचार्य ब्रह्म वाई भवै,
 नेमचंद विनती करे,
 सतरासै गुणहत्तरै,
 रास रच्यौ श्री नेमि कौ,
 दोय सवेया दीपता,
 दोई सै साठि दोहा कहा,
 एकहजार दम ढाल की,
 वार्त्ता ठाम पैतीस मै,
 गाथा दोहा मोरठा,
 वार्त्ता उपरि जाणिए स्यौ,

कुंदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥
 जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।
 प्रगट वात जाणै सब एव तौ ॥ १७ ॥
 मट्टारक गुणधाम ।
 आचारै अभिराम ॥ १८ ॥
 जग कीरति जग जोति अपारतौ ।
 पाच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥
 चहुं दिसि मै सब ताकी आणतौ ।
 चौराणवै पट नायक भाणतौ ॥ २० ॥
 लघु भ्राता तसु भगड्डु जाणितौ ।
 खडेलवाल तसु वै सब खाणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

इ गरमी रुपचंद ।
 मील तणा सब कंड ॥ २२ ॥
 पंडित सब मनकं सिर मोरतौ ।
 रासौ रच्यौ विविध स्यौ दोरतौ ॥ २३ ॥
 सरसति माता तणौ पसावतौ ।
 नेमिचंद मनि धरकरि भावतौ ॥ २४ ॥
 पंडित सत्रयन स्यौ मनहारितौ ।
 कवियन सबही लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥
 सुदि आसोन दसे रवि जाणतौ ।
 दुधि सारु मै कीचौ वखाणतौ ॥ २६ ॥
 सोरेठा कहियै तहां पचीस तौ ।
 एकोदास कंड खैर जगीसतौ ॥ २७ ॥
 गाथा कही सबै शुभ शुद्ध तौ ।
 कहे अधिकार छत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥
 सबमिलि कहा तेरासे आठतौ ।
 सब प्रथ इकईस सेवाल आठसौ ॥ २८ ॥

जा लगी भापा विस्तरी,
सकल सब आनंद रही,

चन्द्रसूर गिर मेर सुनीसती ।
नेमचन्द्र इस देय अभीसती ॥ ३० ॥
रास भरीं भी नेम की ॥ टेर ॥

ई कथन में श्रेणिक ने गणधर कथो । पाछैरुवि अरज देस नाम वर्णन राजा को वर्णन, देवस्थल को, गुरु को वर्णन, कवि को वर्णन वर्णन : इति श्री नेमिचन्द्र कृत हरिवंश भाषायां देशगुणवर्णन प्रत्य कर्ता कथन वर्णनो नामाधिकार पटत्रिंशत्तमः ।

इति श्री भट्टारक श्री जगत्कीर्ति शिष्य नेमिचन्द्र कृत नेमरामो संपूर्ण । भट्टारक श्री नेमिचन्द्रकीर्ति का शिष्य पांडे दयाराम जाति खोनी नरायणा का वासी दिल्ली का जेंसिहपुरा मध्ये लिखी मिति चंत सुदी १३ रविवार सवत् १७६३ का । भट्टारक जो श्री महेन्द्रकीर्ति जी का पट समय लिखो ।

८८. डोलो की कथा ।

रचयिता श्री छोतर ठोलिया । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या ६. साउज ११॥४५॥ इत्य । सम्पूर्ण पद्य सख्या १०१. रचना संग्रह १६६०. लिपि सवत् १८१०.

संगलाचरण—

वंदी आदिनथ जुगिसार जा प्रसाठ पवुं भव पार ।
वरधमान की सेवा करै जोँ समार अहुरि नहि करै ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सौलासे साठ शुभ वप,
मोहै मोजावाड निवाम,
मोहै राजा मान की राज,
सुखी मवें नगर में लोग,
इहि त्रिषि कलवुगर्भे दिनगत,
इतर ठाल्यो सोनती करै,
पढित धामे जोहै हाथ,
घार घार या विननी जाण,
पढिन हासो को मति करै,

पालगुण शुभल पूर्णिमा हवे ।
पूजें मन की मंगली आम ॥
जिहि धाधी पृथ्व लग पात्र ।
दान पुण्य जामे मए भोग ।
जामे नही दुःख की जाति ।
दिवया माहि जिन घामे भरे ।
भूलो हँ तो विनि न्यो नाथ ।
भूलो अहर प्राणि ठग ।
नया भाव मुक्त नरि भरो ।

परिशिष्ट

१. पउमचरिय ।

रचयिता महाकवि स्वयंभु त्रिभुवनस्वयंभु । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ३७५. साइज ११×४। इञ्च ।
प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर । लिपि सवत् १५४१ वैशाख सुदी १५ ।

प्रारम्भिक अंश—

(१)

एमह एवकमल-कोमल-मणहर	—	चर-बहल-कति-सोहिल्लं ।
उसहस्स पायकमल		ससुरासुरवादय सिरसा ॥ १ ॥
चउमुहमुहम्मि सद्दो		दंती सह च मणहरो अत्थो ।
विण्णि वि सयभुकव्वे		कि कीरइ कडयणो सेसो ॥ २ ॥
चउमुहएवस्स सद्दो		सयभुएवस्स मणहरा जीहा ।
भइस्स य गोग्गहणं		अज्जवि कइणो ए पावत्ते ॥ ३ ॥
जलकीलाए सयभु		चउमुहएव च गोग्गहकहाए ।
भहं च मच्छव्वेहे		अज्जवि कइणो ए पावत्ति ॥ ४ ॥
तावच्चि य सच्छंदो		भमइ अव्वभस-मच्च मायंगो ।
जाव ए सयंभु-वायरण-		अकुसो पडइ ॥ ५ ॥
सच्छइ-वियउ-दाढो		उदालकार-णहर-दुप्पिच्छो ।
वायरण-केसरड्ढो		सयंभु पचाणणो जयउ ॥ ६ ॥
दाहर-समास-णालं		सइदलं अत्थकेसरगविया ।
वुह-महुयर-पीयरस		सयंभु-कव्वुप्पलं जयउ ॥ ७ ॥

(२)

वड्ढमाण-मुह-कुहर विण्णिगय,	रामकहाणए एह कमागय ।
अक्खरवास-जलोहमणोहर,	सुयलंकार-उदमच्छोहर ।
दीह-समास पवाहावंकिय,	सक्कय-पायय पुल्लिणालकिय ।
देसीभासा-उभय-तडुज्जल,	कविदुक्करवणसइसिलायल ।
अत्थबहल-कल्लोलाणिट्ठय,	आसासय-सम तूहपरिट्ठिय ।

एह रामकह-सिर मोहती,	गणहरदेविहि विष्ट बहंती ।
पच्छइ इदभूइ-आयरिं,	पुणु धरमेण गुणालपरिं ।
पुणु एवहि ससाराराणं,	कित्तिठरेण अणुत्तरघाणं ।
पुणु रविसेणायरिय-पासाणं,	बुद्धिण अवरगाहिय कट्ठाण ।
पउर्माण-जणणि-गन्धसंभूणं,	माकयणव-रूय-अणुराण ।
अडतणुएण पईहरगत्ते,	झिञ्चवरणामे पविरस्त-उत्ते ।

घत्ता

णिम्मलपुएणपविक्करुह कित्तणु आदप्पड ।
जेण समाणिज्जंतएण थिरकित्ति विटप्पड ॥ २ ॥

तुहयण सयभु पड विण्णवड,	मइं सरिसउ अएणु गात्थि कुकट ।
वायरणु कयावि ण जाणियउ,	णउ वित्ति-सुत्तु वग्गणियउ ।
णउ पञ्चाहारहो तत्ति किय,	णउ सधिहे उचरि बुद्धि ठिय ।
णउ णिसुणुउ मत्तविहत्तियाउ,	छान्दवदर मगाम-पउत्तियाउ ।
छक्कारय दस लयार ण सुय,	कोसो वमग्ग पञ्चय पट्टुय ।
ण बलावल-घाउ-णियाय-गणु,	णउ लिगु उणाइ वउरु वयणु ।
णउ बुज्जिउ पिगल पत्थाक,	णउ शुम्भह उटियलंताक ।
ववसाउ तोवि णउ परिहरमि,	वणि रयटा वुत्तु पञ्चु फरमि ।

मन्थ ममाप्ति-

इय पोमचरियसमे मयभुएवस्सहविउत्तरिण,
तिहुयणयंसभुरइण । रावणहवण्णिउनाणपउवणपउवमिणं ॥ १ ॥
वट्ट आभिय तिहुयणमयभुवरिवीरइ यस्सिमहणञ्चे ।
पोमचरियस मेम सपुण्णो गउःमोमगो ॥
संधि ६० ॥ पोमचरियं मन्थनं ॥

प्रशस्ति-

मिरिञ्जित्तरुहटे मंधीओ हांति वीमपरिमाण ।
वउरुवउत्तमि तहा प्राधीस मुणेह गगणण ॥
वउरुवउत्तमि तहा एसाहिय वीम उउत्तंते य ।
उत्तरउत्ते नेग मंधीओ गउः मउवाउ ॥

तिहुयणसयंभु रावर एकको कडरायचक्रिकणुपणो ।
 पदमचरियस चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥
 कडरायस विजयमेसियरुनवित्थारिओ जमो भुवणे ।
 तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥
 तिहुयणसयंभुधवलस को गुणा वणिणल जए तरइ ।
 वालेण वि जेण सयभुक्कभारो समुव्ववूढो ॥
 वायरणदढक्खधो अ गमअ गोपमारोविचडपओ ।
 तिहुयणसयंभुधवलो जणित्थे वडड कव्वभरं ।
 चउमुइसयभुवाएण वणिणयत्थं अचक्खमारोण ।
 - तिहुयणसयभुरइय पंचमचरिय महच्छरियं ॥
 सव्वे वि सुयापंजर सुयव्वप ढअक्खराडंसिक्खति ।
 कडरायंस सुओ पुणसुयव्वसुइगव्वसंभूओ ॥
 तिहुअणसयभु जइ णहो हंतुणंदणो सिरिसयंसुदेवस्स ।
 - क्वं कुलं कवित्तं तो पच्छको समुद्धरइ ॥
 जइ ण हुउ च्छंदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुत्रलहुत्तेणव ।
 तो पंढेडियाकव्वं सिरिपचमि को संमारेउ ॥
 सव्वो वि जणो गिणहइणियतायचिडत्तव्वसत्ताण ।
 तिहुयणसयंभुणा पुणुगहियं वसु णिडत्तव्वसत्ताणो ।
 तिहुयणसयंभुमेककं मोत्तूणं सयंभुकव्वमघेरहरो ।
 को तरइ गंतुमतं मज्जेणिस्सेसमीमाण ॥
 इय चारुपोमचरियं सयमुपवेण रइयसमत्त ।
 तिहुअणसयंभुणा तं समाणियं वरिसमत्तमियं ॥
 चेट्ठितमयणं चरितं करणं चारित्रमिरयमोयशब्दापेदया ।
 यां रामोयणमित्युक्तं तेन चेट्ठितं रामस्यवोषपति ॥
 शृणोति जन तग्यायुवृद्धिं भोयते पुण्यं वा ।
 श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरिण करोति वैरमुपसमेति ॥
 मो वरसुयसिन्धिवइ रायतण्यकयपोमचरिय अचसेसं ।
 सपुण्ण वंदइवलहुउसपुण्णं गोईदमयणसुयणंतविरइय ॥
 वदइ पंढमतण्यसस वच्छदव दाए तिहुयणसयंभुणारइय ॥
 महत्पयं वंदइयणांगसिरिपालपेहुइ भव्वयणसमूहस्स ।

आरोगतमसिद्धी साति सुहृदो मध्यरस ॥
 सत्तमहामगंगीतिरयणमूमामुरामहण्णा ।
 तिहुयण मयभुजातयापरिणत वंदे यमणतण ॥

मवत् १५४१ वर्षे वैशाख सुदी १२ सामवाप्त सख्या १२७०५ मरे अनुगधा नक्षत्र घटिका ६०
 सुरिताण बहलोल राज्ये—

सकलविधाविधान (नयनन्दि) पृष्ठ १८१ नं० - ३६ के मगलाचरण के प्रागे
 का भाग ।

दरमियसुवण गुणगणसल्लघु,
 णं वसुहविलासिणि हियग्रहार,
 पडिक्खवपक्ख पर्याहिय णगोदु,
 तदि सुकड कडाऽवाचत्तहार,
 ताह मरसड कटाहरणु देउ,
 तिहुयण णारायणु भुअणभाणु,
 पम्माखमगयणेककच्चदु,
 तहो रोमिणामु ठक्कक गारदु,
 ते लोककामि किकामि णहे ध मु
 महिमा णणहे मउडुवर्माणदु .

मुत्तार्त्तकारित महामहणु ।
 अत्थीहावन्ती विमर मार ।
 सिगारविलासविसममोदु ।
 णयगी चउग्गण धरणधार ।
 रणरगमल्लु आलीसमेउ ।
 परमेमरु अत्थी जणणिहारु ।
 जय सरिणिधाम भूउऽणारदु ।
 म णणुणुणुणुणुणुणुणुणुणु ।
 मुपनिद्धउ चदुविह क णणु ।
 कार विउ कित्तणु ते गारदु ।

घत्ता

ताह अत्थसूरहरिसिधुमुणि,
 चणमि तरंगिणि मयग्रहक,
 मजाविणउदु, णयच्छाऽतेण,
 पउत्त पउरिय चित्ताहनासु
 तुमणुक्क क्किपि क्कित्तु मणिदु,
 तिणा भणियं ण कडत्त मुणेमि
 निणा भणियं ण कडत्त मुणेमि,
 पर महु अट्टगुणाहय जेवि,
 ण देवदि वाणय विदाह पत्त,
 गुणेक्कयु विक्कयवि पायित जेण,
 मण पुरु अ गुलि उट्ठिय तासु.

धृत्ता

परिणदायिहलेसलदण,
कलिऋदल अट्टवि गुण गरुव,
परिदपमृदगुणे जडेपवत्त,
मा चारु चायसुहडत्तणेण,
वभेणं भुवणु काओो ए अठ्वु,
परुसेण परुपरा मेहयात्त,
कणणेण कणयकोडिडि कयत्थ,
चाएणविदुत्थिय कयविरगमु,
तत्रखयरक्खणे गरुदहो अभगु,
दिएणवं सिवेण सण्होपसंसु,
जेणिएह दवीइणा अट्टिदएण,

सद्वदरत्तां यादृष्टिय ।
मड मुएत्रिकसुसोठय ॥३॥
महुतोत्रिकत्तिणउ किंवरत्त ।
अह हवड सरस सु इइत्तणेण ।
गयकणमत्तेदिएणउं दियहंसंत्तु ।
त्तयहणेवि दिएणयहरत्ति ।
वर्यात्तत्तचित्त विप्पाण सत्थ ।
हरचंदु चंदमाण्हियणासु ।
जीमूयवाहणेणावि अंगु ।
दइ क्खणमसरीरमंसु ।
को पावड तिहुयणे तहो पइएण ।

धृत्ता

-तहो चारुचाय सेल्लेणहचलिय,
अल्लेत्रिजणेणियेण रौंदभरे,
णिकेकलककिंसेयाए जुत्तवीरवित्तियाए,
कुसुकुमयएणसुंभु सारणो सुओणिसुंभु,
जुवुजं ववंभुतारु णीलुमारुइकुमारु.
दोणु भीममो असंगु दुद्धरो कलिगुत्तुं गु,
अज्जणो णियां रज्जुं आसथामु आसपूरु,
आहवे अदिएणपिडि कालसेणु पचहुडि,
कावली तहेन मुच्छु सूरवीरुणिएषवंचु,
कुट्टु चंदे डिडएत्र खडयएण खंदएउ,
साहमीउ साहामल्लु भीमएउ भाइमल्लु,
मिणलो महामहणु घुघु सोसलणु वणु,
मिणइ उवण्यइउ वज्जत्तत्तिवंपएउ,
आरुणोउ आरुणत्थु पट्टहोइ ओविहत्थु,
सुदवसु बीरराउ कक्कसीमु अंगराउ,

किंत्तिरंमणिविंभंयंकिं ।
भेणोइं भुवणं मवंणंतरे ॥ ४ ॥
देवदोणोवांहेमंल्लु रावणो जगेक्कमल्लु ।
इंदई महिददक्खु अक्खओो गवक्खु वक्खु ।
लक्खणो विवक्खतासु रामचंदु सणयासु ।
सावहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भोममल्लु ।
कीण्डु कसि कंसणासु दुद्धरिडुकालपासु ।
एषओो तलेषहंनि लुण्णत्थु, रोपहारि ।
वंडिवीरिउन्निभेयेंकु सेंकुकेसरी णियंकु ।
वामएउ मोरएउ केउथोसुसावलेउ ।
इइ, सखलाहु गुल्लु देवेईउ देवतुल्लु ।
रोमसोसरोमजंघु रिच्छकहिताडिजघु ।
चंडइइ इडंसंमु मुट्टिउं मणिएह, रंमु ।
वोसलोत्रिसालवत्थु इत्थिवक्खु सुदवत्थु ।
सालिवाहणो रंसल्लु कुतली सुकुंतलिल्लु ।

धत्ता

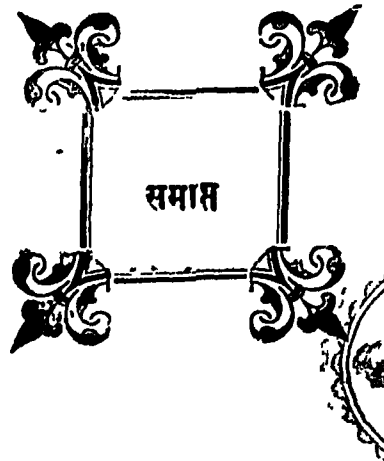
इय श्र्वर्गविरै विर्वपयात्रजुंय,
समिकामकुमुमसंकामस,
मणु जण्णवक्कु वम्भीडं वासु,
काऊहलु वाणु मऊरूसूरु,
वारायणु वरणाउ विवियह,
जसइधु जण्णय रायणासु,
पालित्तउ पाण्णिण पव्वसंखु,
सिरि सिहण्णदि गुण्णनिहभद,
अरुलकु विममवाइय विहडि
भम्भुइ भाराह भरह्वां म्हेत्तुं,

सुहीडमवित्तए असरिसं ।
पसरपूरपूरिथदिस ॥ ५ ॥
वररुइ वामणु कावकालियासु ।
जिणसंणु जिणागम कमलसूरु ।
सिरिहाहसुराय सहरु गुण्णह ।
जयदेउ जण्णमणाण्णंदकामु ।
पायजलि पिगलु वीरसेणु ।
गुण्णभदु गुण्णल्लु समंतभद ।
कामहुरुहु गांविट्टु दंदि ।
धैउमुहु सयंभु कइ पुप्फयत्तु ।

धत्ता

सिरिचंदु पहाचंदु वि विवुह,
कइ सिरि कुपाक सरसइ कुमरु,

गुण्णगण्णण्णदि मणोहह ।
कित्ति विलासिणि सेहह ॥ ६ ॥



शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

१४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
१. उत्तमपुराण [पुष्पदंत]	१३६१ ज्येष्ठ वृद्धी ६ शुक्रवार	
२. क्रियाकलाप [अज्ञात]	१३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार	

१५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

३. आदिपुराण [पुष्पदंत]	१४६१ भाद्रपद सुदी ६ बुधवार	
४. पार्वनाथचरित्र [पद्मकीर्ति]	१४६४ भाद्रपद सुदी २ जनिवार	११८६
५. षट्कर्मोपदेशारत्नमाला [अमरकीर्ति]	१४७६ अषाढ सुदी ५ बुधवार	१०७४

१६ वीं शताब्दी

मंस्कृत

६. आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१५८७ मर्गमर सुदी २ सोमवार	
७. उत्तरपुराण सटीक [प्रभाचन्द्राचार्य]	१५७७ अषाढ सुदी २ रविवार	१०८०
८. धन्यकुमारचरित्र [सकलकीर्ति]	१५३३ पौष सुदी ३ शुक्रवार	
९. धर्मपरीक्षा [अमितिगति]	१५६६ पौषसुदी ६ शुक्रवार	१०७०
१०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार [मेधावी]	१५४२ कार्तिक सुदी ५ गुरु	१५४१
११. प्रतिष्ठापाठ [आशाधर]	१५६० वैशाख सुदी १५ शनि.	१०८५
१२. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति [ब्र० रत्नदेव]	१५७७ अषाढ सुदी ३	
१३. " "	१५४३ भाद्रपद सुदी ६	
१४. राजवार्त्तिक [भट्टाकलकदेव]	१५८२ अषाढ सुदी १३	
१५. श्रावकाचारसार [पद्मानन्द सुनि]	१५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार	
१६. सम्यक्त्व कौमुदी [अज्ञात]	१५८८ फगुण सुदी १४	

१७.	"	१५६०	माघ बुदो १३ रविवार
१८.	हरिवशपुगण [ब्रह्म जिनदास]	१५५५	मगमिर बुदो १३ रविवार

प्राकृत—अपभ्रंश

१६.	अमरसेनचरित्र [माणिककराज]	१५७७	कार्तिक बुदी ४ रविवार	१५७६
२०.	आत्मसबोध काव्य [रङ्गू]	१५३४	श्रावण सुदो ५ मंगलवार	
२१.	अदिपुराण [पुष्पदंत]	१५६४	श्रावण सुदी ३ मंगलवार	
२२.	करकडुचरित्र [कनकमर]	१५८१	चैत्र बुदी ६ गुरुवार	
२३.	कर्मप्रकृति [नेमिचन्द्र]	१५७७	आषाढ सुदी ३	
२४.	क्रियाकलापस्तुति [समंतभद्र]	१५७७	वैशाख सुदी ४ शुक्रवार	
२५.	चन्द्रप्रभचरित्र [यशःकीर्ति]	१५८३	आषाढ सुदो ३ बुधवार	
२६.	जम्बूद्वीपचरित्र [महाकवि चोर]	१५१६	मंगसिर सुदी १३	१०७६
२७.	नागकुमार चरित्र [माणिककराज]	१५६२	पौष बुदी ५ मंगलवार	१५७६
२८.	पद्मचरिय [त्रिभुवन स्वयम्भु]	१५४१	वैशाख सुदी १५ मंगलवार	
२९.	पद्मपुराण [रङ्गू]	१५५१	फाल्गुन सुदो ६ मंगलवार	
३०.	पार्श्वनाथचरित्र [श्रीधर]	१५७७	आषाढ सुदी ३	११८६
३१.	प्रद्युम्नचरित्र [श्री सिंह]	१५८७	माघ बुदी ५ रविवार	
३२.	"	१५६५	भाद्रपद सुदो १३	
३३.	"	१५१८	ज्येष्ठ सुदो ६ शुक्रवार	
३४.	बाहुबलिचरित्र [धनपाल]	१५८६	वैशाख सुदी ७ बुधवार	१४५४
३५.	"	१५८४	आसोज सुदी ६ बुधवार	
३६.	भद्रिष्यदत्त चरित्र [धनपाल]	१५६५	माघ सुदी १५ रविवार	
३७.	"	१५८६	मंगसिर बुदो २ वृहस्पतिवार	
३८.	"	१५८७	श्रावण सुदी ११ रविवार	
३९.	"	१५४०	आसोज सुदो १२ शनिवार	
४०.	मदनपराजय [हरिदेव]	१५७६	कार्तिक सुदो १३	
४१.	मेघेश्वरचरित्र [रङ्गू]	१५६६	ज्येष्ठ बुदी ५ मंगलवार	
४२.	यशोधरचरित्र [पुष्पदंत]	१५७५	मंगसिर सुदी ४ शुक्रवार	
४३.	"	१५८०	आसोज सुदी १० शनिवार	

४४.	रत्नकरडशास्त्र	[श्रीचन्द्र]	१५२२	शक १४४७	११२०
४५.	वद्ध मान चरित्र	[जयमित्रइल]	१५६३	ज्येष्ठ सुदी ४ बृहस्पतिवार	
४६.	"	"	१५४५	वैशाख सुदी २ रविवार	
४७.	पटकर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्ति]	१५६२	कार्तिक सुदी ५ शनिवार	
४८.	"	"	१५५८	चैत्र सुदी १० मोमवार	
४९.	"	"	१५५३	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
५०.	पटपाहुड सटीक	[कुन्दकुन्दाचार्य]	१५८२	माघ सुदी ४	
५१.	"	"	१५६४	माघ सुदी २ बुधवार	
५२.	श्रीपालचरित्र	[नरसेन]	१५१२	चैत्र सुदी १२ मंगलवार	
५३.	"	"	१५८४	शक १४४६ भाद्रवा सुदी ८ रविवार	
५४.	"	"	१५७६	मंगसिर सुदी २ बुधवार	
५५.	सकलविधिविधानकाव्य	[नयनन्दि]	१५८०	चैत्र सुदी ४ गुरुवार	
५६.	सुदर्शनचरित्र	[नयनन्दि]	१५६७	माघ सुदी २ बुधवार	११००
५७.	"	"	१५०४	मंगसिर सुदी ६ गुरुवार	
५८.	सुलोचनाचरित्र	[गणिवेसेन]	१५७७	पौष सुदी ६ मोमवार	
५९.	सुकुमाल चरित्र	[श्रीधर]	१५४६	ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार	१२०८
६०.	हरिपेण चरित्र	[अज्ञात]	१५८३	आसोज सुदी १० शनिवार	

१७ वीं शताब्दी

संस्कृत

६१.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१६६३		
६२.	जयकुमारपुराण	[ब्रह्म कामराज]	१६६१	भाद्रवा सुदी ३ शुक्रवार	
६३.	जीवंधरचरित्र	[शुभचन्द्र]	१६३६	अषाढ सुदी १३ सोमवार	१५६६
६४.	दुर्गापदप्रबोध	[श्री बल्लभगण]	१६८१	कार्तिक सुदी ७	
६५.	धमपरीक्षा	[आसक्तिगति]	१६६६	कार्तिक सुदी ३ शुक्रवार	
६६.	नेमिनाथपुराण	[ब्र० नेमिदत्त]	१६४३	शक १५०८ फाल्गुन सुदी ८ सोमवार	
६७.	"	"	१६७४	फाल्गुन सुदी ७ शुक्रवार	
६८.	पद्मपुराण	[धर्मकीर्ति]	१६७०		
६९.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	[गुणसुंदर]	१६५४	कार्तिक सुदी १४	

७०.	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति [ब्रह्म रायमल्ल]	१६६८	कार्तिक बुदी १३ शनिवार
७१.	" [अमरप्रभसूरि]	१६३६	माघ सुदी २ सोमवार
७२.	" "	१६६५	पौष बुदी ११ वृहस्पतिवार
७३.	यशोधर चरित्र [ज्ञानकीर्ति]	१६६१	श्रावण बुदी २ वृहस्पतिवार
७४.	" [सकलकीर्ति]	१६३७	आषाढ सुदी २ सोमवार
७५.	वरांगचरित्र [वद्धमानदेव]	१६६०	ज्येष्ठ सुदी १४ शुक्रवार
७६.	सम्यक्स्त्रकौमुदी [अज्ञात]	१६२५	शाके १४६० मंगसिर शुक्ला ८
७७.	" [गुणाकरसूरि]	१६११	भाद्रवा सुदी ४
७८.	हनुमच्चरित्र [ब्रह्मजित]	१६८०	मंगसिर सुदी ५ रविवार
७९.	हरिवंशपुराण [ब्र० जिनदास]	१६६१	ज्येष्ठ सुदी ४
८०.	" "	१६४५	कार्तिक सुद ५ सोमवार
८१.	हरिवंशपुराण [जिनसेन]	१६६२	पौष सुदी ५
८२.	" "	१६१६	आसोज सुदी १ शुक्रवार

प्राकृत -अपभ्रंश

८३.	आचारांग सटीक [शीलांकाचार्य]	१६०४	मंगसिर बुदी ३
८८.	आत्मसबोधकाव्य [पं० रङ्गधू]	१६०७	आषाढ बुदी ८ शनिवार
८५.	आदिपुराण [पुष्पदत्त]	१६६२	१६६३ श्रावण सुदी ५ मंगलवार
८६.	" "	१६६४	कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार
८७.	उपासकाध्ययन [वसुनन्दि]	१६२३	पौष बुदी २ शुक्रवार
८८.	" "	१६१२	भाद्रवा सुदी ८
८९.	कर्मकाण्डसटीक [सुमतिकीर्ति]	१६२२	भाद्रवा सुदी १५
९०.	चन्द्रप्रभचरित्र [यशःकीर्ति]	१६०३	शाके १४६८ श्रावण सुदी १० शनिवार
९१.	जिनदत्तचरित्र [प लाखू]	१६११	चैत्र बुदी ११ सोमवार
९२.	धनकुमारचरित्र [प० रङ्गधू]	१६३६	फाल्गुन सुदी ७ रविवार
९३.	नागकुमारचरित्र [पुष्पदत्त]	१६१२	ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार
९४.	पद्मपुराण [रङ्गधू]	१६५६	मंगसिर बुदी १३ सोमवार
९५.	पाण्डवपुराण [यशःकीर्ति]	१६३६	भाद्रवा सुदी १ रविवार
९६.	" "	१६१६	भाद्रवा सुदी १४ बुधवार

६७	वासुदेवपुराण	[यशः कीर्ति]	१६०२	माघ सुदी १४
६८.	पाशुपतेनाथ चरित्र	[पद्मकीर्ति]	१६११	आषाढ सुदी १६ शुक्रवार
६९.	पचारितकायप्रामाण्य	[टी. अमृतचन्द्र]	१६३७	आषाढ सुदी १४ शनिवार
१००.	मृगाकचरित्र	[भगवतीदास]	१७००	फागुण सुदी ७ रविवार
१०१.	मेघेश्वरचरित्र	[रःधू]	१६१६	माघ सुदी ११ बुधवार
१०२.	चणोवरचरित्र	[पुष्पदन्त]	१६१२	आश्वीज सुदी १२ गुरुवार
१०३.	"	"	१६१०	भाद्रपद सुदी ६ सोमवार
१०४.	वद्वेमानचरित्र	[जयसिद्धल]	१६२७	अषाढ सुदी ६ ५
१०५.	"	"	१६३१	माघ सुदी ११ शुक्रवार
१०६	पट्टपाहुड भटोक	[कुन्दकुन्द]	१६०२	वैशाख सुदी २ र ववार
१०७.	श्रीपाल चरित्र	[नरमेत]	१६३२	वैशाख सुदी १५ मंगलवार ।
१०८.	श्रीपाल चरित्र	[पं- रङ्घू]	१६३१	कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार
१०९.	मन्मतिजिनचरित्र	"	१६२४	ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार
११०.	मुद्रशान चरित्र	[नयनानन्द]	१६७७	माघ सुदी १२
१११.	"	"	१६३२	चैत्र सुदी १४

हिन्दी

११२.	आदीश्वरफाग	[म. ज्ञानभूषण]	१६३४	पौष सुदी १० खवार
११३.	नेमीश्वरचन्द्रायण	[भ. नरेन्द्रकीर्ति]	१६६०	भाद्रपद सुदी ६ रविवार
११४.	पञ्चेन्द्रिय धोल	[वेल्ह]	१६८८	
११५.	भविष्यदत्त रथा	[त्र. गायमल्ल]	१६६०	भाद्रपद सुदी १ शुक्रवार १६१५
११६.	मृगावतो चरित्र	[नमयसुन्दरगण]	१६८७	कार्तिक सुदी ५ शनिवार
११७.	सावित्रानलबौपद्म	[कुसुमलामगण]	१६६०	
११८.	नमयसारङ्गेश भाषा	[राजमल्ल]	१६४३	फागुण सुदी १४ शनिवार
११९.	श्रीपाल रास	[त्रयशायमल्ल]	१६८६	१६३०

१८ वीं शताब्दी

संस्कृत

१२०.	आदिनाथपुराण	[सफरकीर्ति]	१७७५	आश्वीज सुदी ५ बुधवार
१२१.	उददेशरत्नमाला	[सफलभूषण]	१७४५	माघ सुदी १४ गुरुवार

१२२.	कर्मकाण्ड सटीक	[ज्ञानभूषण]	१७७७	आषाढ सुदी ६ मंगलवार
१२३.	जयकुमार पुराण	[ब्रह्म कामराज]	१७३०	
१२४.	"	"	१७१६	
१२५.	धर्मपरीक्षा	[अमितिगति]	१७३३	कार्तिक सुदी ६ मंगलवार
१२६.	पद्मपुराण	[सोमसन]	१७५१	शाके १६१६ भाद्रवा सुदी १४ वृहस्पतिवार
१२७.	प्रतिष्ठापाठ	[आशाधर]	१७२२	भाद्रवा सुदी १ गुरुवार
१२८.	प्रद्युम्नचरित्र	[सोमकीर्ति]	१७२४	कार्तिक सुदी १३
१२९.	मेघदूतावचूरि	[टी. सुमतिविजय]	१७५१	
१३०.	"	[मेघराज]	१७८५	वैशाख सुदी ६
१३१.	यशोधरचरित्र	[कायस्थ पद्मनाभ]	१७६६	
१३२.	श्रीपालचरित्र	[व० नेमिदत्त]	१७१४	श्रावण सुदी २ मंगलवार
१३३.	श्रेणिकचरित्र	[शुभचन्द्र]	१७६६	कार्तिक सुदी १ सोमवार
१३४.	"	"	१७३०	माघ सुदी ४ वृहस्पतिवार
१३५.	सारस्तचन्द्रिका सटीक	[टी. चन्द्रकीर्ति]	१७४६	
१३६.	स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा	[टी. शुभचन्द्र]	१७२१	
१३७.	सम्यक्त्व कौमुदी	[खेता]	१७६३	कार्तिक सुदी ८ शनिवार
१३८.	हरिवंशपुराण	[जिनसेन]	१७८५	पौष सुदी ४ सोमवार
१३९.	पटपाहुड सटीक	[कुन्दकुन्द]	१७६५	माघ सुदी ५

हिन्दी

१४०.	चतुर्वेदी चौपई	[टीकम]	१७६३	वैशख सुदी १२	१७१२
१४१.	चन्द्रनृपरास	[लब्धरुचि]	१७६४	वैशाख सुदी १४	१७१३
१४२.	चिद्विलास	[दीपचन्द कासलीवाल]	२७७६	फागुण सुदी ५	१७७६
१४३.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१७६३	श्रावण सुदी ३ वृहस्पतिवार	
१४४.	त्रिलोकदर्पण	[खड्गसेन]	१७६८	वैशाख सुदी २ सोमवार	१७१३
१४५.	"	"	१७६८	पौष सुदी १३ गुरुवार	
१४६.	धर्मरासो	[अचलकार्ति]	१७२६		१७२६
१४७.	पंचास्तिकाय भाषा	[पाडे हेमराज]	१७३६	आषाढ सुदी १२ सोमवार	
१४८.	प्रवचनसार भाषा	[अह्लात]	१७२७	आषाढ सुदी ६ वृहस्पतिवार	
१४९.	वेद्यमनोत्सव	[केशवदास नयनसुख]	१७७४	ज्येष्ठ सुदी ११	१६४६

१५०.	सम्यक्त्वमौमुदी कथा [जोधराज गाडीका]	१७६३	ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार	१७२४
१५१.	श्रीपालचरित्र [परिमल]	१७६४	पौष सुदी १० मंगलवार	
१५२.	हरिवंशपुराण [नेमीचन्द्र]	१७६३		१७६६

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

१५३	आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१८०३	माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार
१५४	आदिनाथपुराण [सकलकीर्ति]	१८३३	भाद्रवा शुक्लपक्ष
१५५.	उपदेशरत्नमाला [सकलभूषण]	१८२६	मगसिर सुदी २ वृहस्पतिवार
१५६.	करकण्डुचरित्र [शुभचन्द्र]	१८६१	
१५७.	ज्ञानसूर्योदय नाटक [याद्विचन्द्र]	१८३५	अषाढ सुदी १३ सोमवार
१५८.	दुर्गापदप्रबोध [वल्लभगण]	१८१२	पौष सुदी १० रविवार
१५९.	पादवपुराण [शुभचन्द्र]	१८३१	वैशाख सुदी ६ रविवार
१६०.	पुराणसार समूह [सकलकीर्ति]	१८२२	कार्तिक वृत्त ८ सोमवार
१६१.	" "	१८२४	मगसिर सुदी ८ शनिवार
१६२.	भोजप्रबन्ध [रत्नमन्दिरगण]	१८०५	चैत सुदी ११
१६३.	महीपालचरित्र [चारित्रसुन्दरगण]	१८२५	ज्येष्ठ कृष्णा
१६४	मुनिसुव्रतपुराण [रायकृष्णदास]	१८५०	पौष सुदी ५ सोमवार
१६५.	वरागचारित्र [वर्धमानदेव]	१८७३	आसोज सुदी ५ बुधवार
१६६.	वर्धमानपुराण [सकलकीर्ति]	१८०४	माघ सुदी १४ वृहस्पतिवार
१६७.	सिद्धान्तमारसंग्रह [नरेन्द्रसेन]	१८०३	
१६८.	सिन्दूरप्रकरण [सोमप्रभसूरि]	१८२६	भाद्रवा सुदी २ वृहस्पतिवार
१६९.	हरिवंशपुराण [ब्र० जिनदास]	१८२७	ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार
१७०.	श्रावकाचार [लक्ष्मीचन्द्र]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार

हिन्दी

१७१.	आदिपुराण [ब्रह्म जिनदास]	१८५६	मगसिर सुदी ३
१७२.	छंदशिरोमणि [शोभानाथ]	१८२६	फागुण सुदी १० शनिवार
१७३.	जम्बूस्वामीचरित्र [पाडे जिनदास]	१८४३	पौष शुक्ला वृहस्पतिवार

१७४.	तन्त्रार्थसूत्रभाषा	[प्रभाचन्द्र]	१८०३	आषाढ बुदी १ शनिवार	
१७५.	त्रेपनक्रियाकोष	[किशनसिंह]	१८२६	मंगसिर सुदी ७ शुक्रवार	१७८४
१७६.	दशलक्षणव्रतकथा	[ज्ञानसागर]	१८३८	श्रावण सुदी ७	
१७७.	धनपालरास	[व्र० जिनदास]	१८२८	श्रावण सुदी १ रविवार	
१७८.	धमंपरीक्षा	[मनोहरलाल]	१८०२	श्रावण सुदी १५ वृहस्पतिवार	
१७९.	नेमीश्वरगीत	[चतुरुमल]	१८१	माघ बुदी १४	१५७१
१८०.	पद्मनन्दपंचविशिका	[जगतराय]	१८११		१७२२
१८१.	प्रवचनसार	[जोधराजभोदीका]	१८४६	कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार	१७२६
१८२.	बनारसीविलास	[बनारसीदास]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार	१७७१
१८३.	भक्तामरस्तोत्र भाषा	[नथमलविलाला लालाचन्द]	१८५३	माघ सुदी १४ शुक्रवार	१८२६
१८४.	यशोधर चरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१८२६	आषाढ बुदी ६ रविवार	
१८५.	यशोधर चरित्र	[लक्ष्मीदास]	१८०१	कार्तिक बुदी ५ वृहस्पतिवार	१७८१
१८६.	यशोधर चौपई बधकथा	[साह लोहट]	१८०३		१७२१
१८७.	रत्नपालरासो	[सुरचंद]	१८२३	पौष बुदी १३ सोमवार	१७३२
१८८.	वसुनन्दश्रावकाचार भाषा	[दौलतराम]	१८०८	कार्तिक सुदी १४ मंगलवार	x
१८९.	व्रतकथाकोष	[खुशालचन्द काला]	१८२०	ज्येष्ठ शुक्ला १३	१७८६
१९०.	सिद्धान्तसारदीपक	[नथमलविलाला]	१८६०	आसोज बुदी १३ मंगलवार	१८२४
१९१.	सीताचरित्र	[रायचद]	१८०८	बैशाख बुदी ३ बुधवार	१७१३
१९२.	श्रावकाचाररासो	[जिनसेवक]	१८२०		१६०३
१९३.	हरिवंशपुराण	[खुशालचद]	१८६०	भाद्रवा सुदी ८	१७८०

ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

ग्राम व नगर का नाम	शासक का नाम	समय	पृष्ठ तथा पंक्ति	विशेष
अदेहद्वारपल्लानगर	X	संवत् १५६७	३४×१०	
अजमेर	राव श्री जगमल	१५८६	१४६×१	
"	X	१५६५	१३८×३	
अकबरनगर [बंगाल]	महाराजा मानसिंह	१६६२	५०×१५	महाराजा मानसिंह बंगाल के राज्यपाल थे
आगरा	अकबर	१६२२	६७×७	
"	"	१६४२	२१३×१२	
"	X	१७८१	२१४×५	
"	औरंगजेब [अबरगसाह]	१७२०	८३४×८	
"	X	१७७१	२४१×१५	
"	X	१६६०	२४४×२६	
"	X	१७६३	२५६×१२	
आमेर [अवावती]	सवाई जयसिंह	१७७७	७×७	
"	राजाधिराज भारमल	१६१६	७७×२	
"	"	१६११	१०४×२१	दूसरा नाम आम्रगढ है
"	"	१६१६	१२६×१५	
"	" पृथ्वीसिंह	१८२५	२१२×२३	
आल्हणपुर	X	१६११	१२८×१६	
चदयपुर	महाराणा जगतसिंह	१७६८	२१६×२१	
"	X	X	२६५×२७	
"	X	१८०८	२५५×४	
करौली	X	१८२६	२४६×८	
कालख	X	१७१२	२०८×२८	
कुंभमेरु [कुंभलमेर]	X	१६०४	८५×१०	
कृष्णगढ़	बहादुरसिंह	१८८१	३५×१६	

रघुरदुर्ग [वृंही]	कवर नरवद	१५६०	६३×२४	इनके पिता का नाम अख्यराज था
श्रीवापुर	×	१६६७	२४५×२०	सिधु नदी के किनारे पर स्थित
गोपाचल [ग्वालियर]	महाराजा मानसिंह	१५५८	१७३×१४	
”	राजा श्री वीरम्मदेव	१४७६	१७३×२४	
”	डूंगरेन्द्र	×	१५६×६	
”	सलीम [जहांगार]	१६६५	२२०×७	
”	महाराजा मानसिंह	१५७१	२३१×१४	
गोर्पागरि [ग्वालियर]	”	×	२७१×१५	
गोवर्गिरि [,,]	डूंगरेन्द्र	×	११७×३	
घठ्यालीनगर	राव श्रीरामचन्द्र	१५८१	६६×८	
घटियालीपुर	×	१५८२	१६७×१७	
चंपावती [चार्टिसू]	महाराजाधिराज भारमल	१६२३	६४×२	
”	समामसिंह	१५८३	६६×२०	राव श्रीरामचन्द्र नगर प्रधान थे।
”	शाह आलम	१६०२	१५४×२५	
”	महाराजा भगवानदास	१६३२	१७८×६	
जयपुर	×	१८३३	२×११	बालचन्द्रजी छावडा इस समय दीवान थे।
”	×	१८२६	४×१६	
”	×	१८५०	४८×११	
”	महाराजा प्रतापसिंह	१८०४	५६×२७	
”	×	१८०३	६६×३	
”	×	१८२७	७०×१७	
”	महाराजा साधवसिंह	१८२१	१७५×२०	
”	महाराजा ईश्वरीसिंह	१८०२	२२६×२६	
”	महाराजा प्रतापसिंह	१८४६	२३८×१६	
”	×	१७०७	२६७×३	
जावाहपुर	×	१६११	६×१४	
जसलमेर	कुवर हरिराज	१६१६	२४७×२०	

जिहानावाद [आगरा]	x	१७६३	२१४x१५	जैसिहपुरा का नामोल्लखभो हुआ है।
जयसिहपुरा [दिल्ली]	x	१७७४	२०३x४	
" "	x	१७६३	२०६x५	
" [आगरा]	मुहम्मदसाह	१८०१	२५०x१२	महाराजा ईश्वररीमिह का शासन भी लिखा है
जैसिहपुरा [देहली]	x	१७८१	२५०x१	
मिलाय	महाराजा कुशलसिह	१७८५	७७x१२	
टोक	x	१८२५	४७x५	
"	x	१५७६	१७७x१०	
"	x	१८०३	२१५x२७	
ढाका	x	१७५७	२x८	
तत्तकगढ[टोडारायसिह]	महाराजा जगन्नाथ	१६६४	८६x२४	यह गढ जयपुर प्रांत में स्थित है।
"	राजाधिराज राव श्रीरामचन्द्र	१६१२	११३x४	
"	"	"	१६०x१६	
"	सलीम [जहांगीर]	१६१०	१६३x१३	
देवपुरी	x	१८२६	२१३x१०	
देहली	x	११८६	१२६x१३	कवि ने 'दिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है।
"	औरंगजेब	१७३४	२३६x२६	
दौलतपुर	वावर	१५८४	१७५x२४	
घामपुर	x	"	२२५x६	
नयनपुर	गयासुहीन	१५३३	१६x१७	
नरसिहपुरा	x	x	२१८x१८	सूरत प्रांत में स्थित है
नागपुर	फिरोजखां	१५४१	२३x५	
"	महाराजा विजयसिह	१८२४	४१x२७	
"	x	१५७७	६६x२६	
"	x	१५६७	१३२x२	
नारनोल	x	१६८५	२१८x२८	
नेणवाहपत्तन	आलाउद्दीन	१५१८	१३८x१२	

पडावा	X	१८२६	२२१X२४	
फरुखाबाद	X	X	६६X१६	
फिरोजाबाद	इब्राहीम	१५७७	१६२X१५	
बगरु [जयपुर]	X	१७६५	१७४X१०	
बणहटा [जयपुर]	X	१७३४	३३६X२७	
बीजनाडा	जहांगीर	१६७४	२८X१	
बू दी	रावराजा भावसिंह	१७६८	२२२X२७	
"	"	१७२१	२५०X२७	
"	X	१८२०	२५७X६	
भगवतगढ	X	१७६८	२१६X२१	
मधूक नगर	X	१६४८	१६X१२	
महू	X	१८२०	२७१X६	
महीसार	X	१६०१	६८X१८	
मान्यखेट	X	X	११०X२०	
मालपुरा	महाराजा मानसिंह	१६४५	७३X७	
"	भगवानदास	१६४१	१७०X१६	
"	X	१३४	२०६X६	
"	X	१६८७	२४७X१२	
" मेहता	X	१६११	६४X१२	
मेदनीपुर [मारवाड]	अकबर	१६३६	१०८X२	मुहम्मदखां वहां का राज्यपाल था
मोजमाबाद	करमचंद	१५६५	१४८X१६	
मैतनाल	X	१८५६	२०५X१	
योगिनीपुर	मुहम्मद तुगलक	१३६१	६२X२१	देहली का नाम पहिले यही था।
"	"	१३६६	६७X१६	
"	X	१३६५	१६०X२७	
रणार्थभ [रणधम्भोर]	X	१६५३	२५७X२६	
राजमहल	महाराजा मानसिंह	१६६१	५५X१४	
"	"	"	७७X२२	

रामपुर	x	१७८४	२२०x१६	
"	x	१७२७	२३६x१	
"	x	x	२२५x६	
राणापुर	हेमकरिणो	१५६४	८८x२०	
रावरवचन	राजाधिराजहूँगरसिंह	१५१२	१७६x२	
रेणी	x	१८७१	२०२x१६	
रोहतक	अकबर	१६१६	१५६x१५	
"	सिकन्दर लोदी	१५७६	८०x१६	
"	अकबर	१६५६	११६x२४	
लवाण		१७५१	२६x१६	पचवारा प्रान्त में स्थित है
लाभपुर	x	१७१३	२१६x२८	
लालसोठ	महाराजा प्रतापसिंह	१८११	८x११	
वहादुरपुर	हुमायूँ	१५६४	५६x१५	मेवात में स्थित है।
बाराबतो	गयासुद्दीन	१५५६	१६५x५	
बुगहानपुर	x	१७३२	२०७x१६	खानदेश में स्थित है
बेराट	x	x	२६x३	
बृंदावन	रावराजा विष्णुसिंह	१८३५	१६x१६	
"	सूर्यमल	१६०३	६६x६	चौहान वंशजों का राज्य था।
"	x	१८२१	२४२x६	
शेरगटि	x	१८४३	२१२x२	
शेरपुर	महाराजा जगन्नाथ	१६६५	४०x३	
"	x	१८५३	२५८x१	
श्रीपालव	इत्राहीम	१५८२	१४६x१०	
श्रीवालपुर	कणोनरेन्द्र	११२०	१६६x२५	
सरानपुरी	x	१६६६	३८x२७	
सहारनपुर	बाबर	१५८७	१३७x२	
संभ्रामपुर	महाराजा मानसिंह	१६६२	७६x२१	
सागपचन	x	१६६८	५७x१५	
साखुण	राय श्री सुरजन	१६३६	१५x४	वागड देश में स्थित है

	राव श्री मालदे	१५६५	५४×४	रा. त श्री खेतमो प्रधान शासक था
सांगानेर	×	१७८४	२२०×२८	
"	महाराजा जयसिंह	"	२२१×११	
"	राजा भगवानदास	१६३३	२४४×१४	
"	महाराजा रामसिंह	×	२४६×१८	
"	×	१७८७	२५६×२७	
"	महाराजा रामसिंह	१७२४	२६१×२६	
साहदरा	मुलकगीर	१७३३	२०×१६	
सांरुढानगर	×	१६५४	४२×१	
सिकन्दरावाद	डन हीम लोदी	१५८०	१६४×१	
सिरिउजपुर	×	११४४	१०६×६	मेवाड में स्थित
सिंहनद	हुमायु	१५६२	१७३×८	
सूरत	×	१६६१	१३×२	
"	×	१७२२	२३६×२५	
सुलतानपुर	×	१७२४	३५×१३	मालवा प्रांत में स्थित.
सुवर्णपथ	×	१५७७	८५×१	
हरसोरगढ	×	१६२८	२३६×१५	
दिसार	बहलोलसाह	१५४२	२६×१५	
"	×	१७००	१५५×२०	

आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

अकलक	१४, ५४, १६४, १६५, २८७	कुमारसेन	१८५
अखयराज	२१२	कुमुदचन्द्र	२०६, २०७, २२१, २४३
अचलकीर्ति	२०७, २२८	कुशालचन्द्र	२१०
अजित (ब्रह्म)	६६	कुसुमभद्र	१६८
अनतकीर्ति	१८, ३५, २३२, २३६, २४, २६६	कुसललाभगणि	२४७
अभयकीर्ति	८६	केशवदास	२५७
अभयचन्द्र	२०६	केशवसेन	६१
अमरप्रभसूरि	४३	केसर	६६
अमरकीर्ति	१७१, १७३	कौरपाल	२६६
अमरेन्द्रकीर्ति	४१	खडगसेन	२१६
अमृतचन्द्र	१३२, २३७, २५७	खुशालचन्द्र	२५६
अवसेनगणि	१४२	खेता	४६
आशाधर	२४, ३३, ४४, ६००	गगदेव	१८८
इन्द्रभूत	६०, ११६	गंगादास	२१६
चद्वरसेन	१०७, १४६	गाल्हा	१३८
कल्याणकीर्ति	२३२	गुणकीर्ति	८५, १०५, १२५, १२६, १३७, १४६, १५६, १७३, १६०, १६२, २३६
कमलकीर्ति	२०२	गुणचन्द्र	४२, ५७, १५५, १५६
कर्मतिलक	६४	गुणभद्र	१, २६, ६७, ११६, १६५
कल्याणसागर	४३, ६१	गुणभद्रसूरि	८५, १३७, १४६, १५८, १६२, १६३
कृष्णदास	४७	गुणाकरसूरि	६४
कान्तिसागर	२४२	गुणसेन	६६
कामराज	१०, १३	गुणसुन्दर	४२
किशननिह	२२०, २५४	गुणरगणि	२४७
कुन्दकुन्द	१३२	गुणलाभगणि	८५
कुंवरमेन	११६, २२८	चन्द्रकृति	१५, २८, ३०, ३१, ३४, ४१, ४३, ५३,
कुमारकीर्ति	१७३		

	५५, ६२, ६५, ७३, ७६, ८७, २२५,	जिनसुन्दरसूरि	८५
	२३२, २३५, २५८, २८०, २८६	जिनहर्षसूरि	८५
चन्द्रसेन	१२७	जिनशालसूरि	८५
दत्तकमल	२३१	जिनसेन	१, १३, ७३, ६०, १२८, १४०, १६५,
चारित्रसुन्दरगणि	४५		१६१
चेतरामजी	६६	जिनसेवक	२६६
जगकीर्त्ति	१५६	जीवणराम गोधा	२०२
जगत्कीर्त्ति	४, २६, ५७, ७७, १७४, २३५	जीवराज	१२, १३
जगतराय	२३३ २३४	ज्ञानकीर्त्ति	५७
जयकीर्त्ति	६३, ८५	ज्ञानकुञ्जरगणि	८५
जयमित्रहल	१६७, १६६	ज्ञानातक	६४
जयसागर	२६७	ज्ञानसागर	२२२
जयसन		ज्ञानभूषण	३, ५, ६, ७, ११, १६, ५०, ६२, ६८,
जयशेखर	६५		७३, २०५, २३६, २४० २६७, २७०
जयनदि	१७०	टीरुम	२०८
जटिलमुनि	१४२	त्रिभुवनचन्द्र	२०१
जम्बूस्वामी	६०, ११६, १२४, १८७	त्रिलोककीर्त्ति	३२
जिनचन्द्र	१, २, १५, १६, २०, २१, २३, २८,	दयासागर	६१
	३६, ५३, ५४, ५५, ५७ ६३, ७२,	दिलाराम	२२२
	७३, ७६, ८६, ६४, ६६, ६८, ६६,	दीपचंद कासजीवाल	२११
	१०८, ११३, १२५, १२६, १२५,	दुलभसेन	६७
	१२८, १३८, १४६, १४८, १४६,	देवेन्द्रकीर्त्ति	४, ६, १४, २८, २६, ३२, ४४, ५७, ६१
	१५४, १६२, १६३, १६४, १६७,		६७, ७६, ७७, ८६ २१४, २१६,
	१६६, १७०, १७४, १७५, १७७,		२१६, २३१, २३२, २३६, २४०,
	१७८, १८०, १८६, १९०, २००		२४६, २५०, २६३, २६७, २७१,
जिनदास [पांडे]	२१३, २५२		२७७
जिनभद्रसूरि	४२	देवेन्द्रभूषण	३५
जिनकुशलसूरि	८५	देवनन्दि	१३६
जिनराजसूरि	८५	देवसेन	११६, १२६, १३५, १४६
जिनवर्द्धनसूरि	८५		
जिनचन्द्रसूरि	८५		

देवमनगरिण	१८३, १६०, १६२	नेमिचन्द्र	२०, १४
दालतराम	२५५	नेमीचन्द्र	३, १७, ६६, ६७ १२६, २७८
धनपाल	१३८, १४२, १४६, १४८	नेत्रानन्द	१३८
धनराज	७	नेमिदत्त (ब्रह्म)	२६, २७, ५६, ८७, ६८
धमचन्द्र	०, १५, ३६, ४१, ५३, ५५, ७३, ८८, ६५, ६६, ६६, १०४, ११३, १२५, १२६, १२७, १२८, १३१, १३२, १३८, १४८, १४६, १६०, १६६, १७०, १७४, १७५, १७८, १८०, १८६, १६०, २००	पद्मनादि	१३, ७६, ८०, १३८, १६८, १८७, १८८, २०१, २३४
धर्मशक्ति	२०, २१, ३१, ३०, ३३, ८५, १०८, १६३, १६६	पद्मकीर्ति	२७, १२७, १२८
धमदाम	१०, २२८	पद्मनाद (मुनि)	५७
धमनामगरिण	६३	पद्मनाभ	२५०
धर्मप्रपण	११६	पद्मप्रभसूरी	६५
धर्ममुन्दर	१७३	पद्मसेन	७३, १४२
धमसेन	३०, ११६, १०६, १३८, १४६, १८३, १८८	परिमल	२७१
धीरसेन	१३६	प्रचण्डकीर्ति	८५
धु-सेन	१८८	प्रभाचन्द्र	२, १५, १६, २०, २८, ५४, ५५, ६३, ६७, ७२, ७३, ७६, ८५, ८७, ८८, ८६, ६४, ६६, ६८, ६६, १०४, १०८, ११३, १२५, १२६, १२७, १२८, १३१, १३२, १३८, १४६, १४७, १४८, १४६, १५४, १६२, १६३, १६४, १६७, १६६, १७०, १७३, १७४, १७५, १७७, १७८, १८०, १८६, १६०, २००, २६५, २६७
धेल्ह	०३४	प्रथागदास	४४
नथमन विलाला	०४५, २६४	पुष्पदत्त	८५, ६०, ६२, १०८, ११०, ११२, १४२, १५४, १६२, १६५, २८७
नन्ददास	२०५	पूरणचन्द्र	४७
नन्दमित्र	१८७	पूर्णभद्र	१६२, १६३
नयनन्द	१८१, १८७	वनारसीदास	२०७, २४१, २६६
नयसेन	६७	वल्लभगरिण	१८
नरमिह	७३	भगवतीदास	१५४, १५६
नरमेन	१७०, १७१, १७६	भद्रबाहु	६०, १८७
नरेन्द्रकीर्ति	४, २४, ३४, १७५, २३२		
नरेन्द्रमेन	६३		

भवसेन	१६०	रत्नकीर्ति	२, २२, ३५ ३६, ४१, ४७, -६, १०८
भानुकीर्ति	६७		१४६, २०६, २१२, २२८
भारमल्ल	१०७	रत्न	२
भावसेन	११६, १२८, १२६, १३७, १४६, १७३, १८३	रत्नचन्द्रजी	२०५
भीमसेन	३५	रत्नभूषण	१६
भुवनकीर्ति	३, ५, ७, ११, २०, ३७ ५७, ६८, ७१, ७३, १५० १६०	रत्नमादिरगणि	४४
भूधरदास	२०६, २११, २४०	रत्नाकरसूरि	४८
भैरव्या भगवतीदाम	२११	रत्नमिह सूरि	४६
मगलदास	४८	रत्नशेखर	६५
मलयकीर्ति	८५, ६७, ११६, १३७, १४६, १८३, १६२	रत्ननांदिरगणि	२४७
मल्लिभूषण	१४, २७, ३४	रत्नदेव (ब्रह्म)	३६
महसेन	१३८	रविषेण	२८, ३७, ७१, ७६, १४२
महेन्द्रकीर्ति	६, १८, २८, ३५, ४८, ५६,	राघव जी	६६
महीचन्द्र	२६८	राजमल्ल	२५७
माघनंदि	६३	राजकीर्ति	४३
माधवसेन	२०, १४६	रामकीर्ति	११, १३, १७३, २३६
माणिक्यकराज	६६, ८४, ११३, ११४, ११५	रामचन्द्र	३६, १६१
महेन्द्रसेन	१५५, १५६	रामनंदी	१८८
मेधावी	२०	रामसेन	३०, २५, ४७
मेरुचन्द्र	२६८	रायचद	२६६
मोहनविजय	२४२	रायमल्ल	४३
यशकीर्ति	२०, ४१, ४७, ५७, ६१, ८५, ६८, ११६, ११६, १२२, १२४, १२५, १४६, १५५, १५६, १५६, १७३, १८२, १८३, १८५, १८७, १६०, १६२	रूपचद	२३५, २६०
	८५, १०४, १०७, ११६, ११६, १६६	लच्छीराम	६६
	१५६, १७८ १८१	लब्धकाच	२०६
		ललितकीर्ति	१५, ३२, ५३, ७३, ७७, ६४, १०३, १२५, १२६, १३२, १६२, १६६, १७०, १८६
		लक्ष्मीचन्द्र	७, २७, ३४, ४१, २०६
		लक्ष्मीदास	२४६
		लक्ष्मीसेन	३५

लाखू	१०१	विजयसेन	१७३, १८८, २१०
साह्यका	१३	त्रिष्णुदत्त	१८७, १८८
लाभमेरगणि	६३	विजयप्रभसूरि	२१०
लोहार्य	७४, ६०, १५६, १८८	विनोदीलाल	२५४
वज्रसूरि	१३६	वीर	१००, २५४
वज्रसेन	६५	वीरसेन	२०, ६६, ६०, १६५, १६१
वसुनन्दि	२४, ४०, ६३, २७०	वीरनन्दि	१६५
ब्रह्म गुलाल	२२०, २२७	वीरचन्द्र	२६७
ब्रह्म जिनदास	६, १०, ७१, २०३, २०८, २२४, २६३	वेगो	१०४
ब्रह्मरायमल	२३२, २३६, २४३, २४५, २६६, २७२	वृषभदास	३४
बादिचन्द्र	१५, १६, २४५, २६८	वर्धमानदेव	५४
बादिभूषण	११, १३	शककीर्त्ति	८७
बादीभसिंह	४०	शिवगुप्त	७४
बासाधर	५८, १४२, १४४, १४५	शुभचन्द्र	१, २, १५, २०, २१, २३, २८, ३६, ५४, ५५, ६३, ७२, ७३, ७६, ७७, ८६, ६४, ६६, ६८, ६९, १०८, ११३, १२६, १२७, १२८, १३१, १३८, १४६, १४७, १४८, १४९, १५४, १६२, १६३, १६४, १६७, १६९, १७०, १७४, १७५, १७७, १७८, १८०, १८६, १९०, १९५, २००, २०१, २२२, २३६, २५७, २७०
विनयसागर	१	शोभानाथ	२१२
विद्यानन्दि	६, १४, १८, ३४, ३५, ६७, ७०, १६५	श्रुतकीर्त्ति	१२०, १४५, १६५, १६५
विजयकीर्त्ति	७७, ३५, ३८, ३९, ६२, ६८, २०७	श्रुतसागर	१३
विमलसेन	३०, ११६, ११६, १३७, १४६, १८३	श्रीधर	१२०, १५०, १५३, १६५, १६३
विद्य भूषण	४३	श्रीधरसेन	७३,
विजयेन्द्रसूरि	४६	श्रीचन्द्र	१६४, १६५
विजयसिंह	६७	क्षेमकीर्त्ति	४१, ४८, ५६, ५७, ७६, ११६, १४६,
विश्वभूषण	१	क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	११६, २७१
विवेकनदि	१७	क्षेमासारि	८६
विसालकीर्त्ति	२३, ३०, ४१, १७३		
विश्वसेन	३०		
त्रिष्णुकुमार	१२४		
त्रिष्णुमेन	१४०		
त्रिशुद्धमन	१५३		
विनयसुन्दर	१-३		

सकलचन्द्र	५७, १५६, २४७	सोमसेन	२८, २६
सकलकीर्ति	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १६, १६, ३७, ४१, ५३, ५६, ५७, ६२, ६८, ७०, ७३, १५०, २०४, २०५, २०६, २०८, २१६, २२४, २३६, २४६, २६३, २६५	सोमसुन्दर	४४
सकलभूषण	२, ३, ४, ५, ६, २०१	हरिदेव	१५३
समंतभद्र	१४, २४, ६७, १६५	हरिनंदि	१६५
समयसुन्दरगणि	२४७	हरिभूषण	१७३
सहस्रकीर्ति	३६, ४१, १०५, ११६, १२६, १३७	हरिराज	५८
स्वयंभु	१४६, १६६, १७३, १८३, १०८, १४२, १६५, २८२, २८४, २८७	हृषकीर्ति	५३, ६५
सिद्धकीर्ति	१६, ८५	हरिषेण	१०६, ११०
सिद्धनंदि	२०, २७, ५६, ६७, ८५, १४२, २८७	हरिकुञ्जरगणि	८५
सिद्धसेन	१०८, १०८	हृषसागर	१
सिंह	१३२	हेमकीर्ति	७६, १८७
सिद्ध	१३२	हेमचन्द्र	१८, ७६, ८२, ११६, १८६
सुधर्म	६०	हेमरत्न	६५
सुधर्मसेन	७३	हेमराज	२३०, ३३५
सुभद्र	७३	वररुचि	२८७
सुनदसेन	७३	वामन	२८७
सुमतिकीर्ति	३, ७, ११, २३२, २३६	कालिदास	२८७
सुमतिविजय	४८	वाण	२८७
सुरेन्द्रकीर्ति	१, ४, ८, ८, २६, ३६, ४८, ५६, ५७, ७०, ७७, २३२	मपूर	२८७
सुरचन्द्र	२५३	श्रीहृष	२८७
सोमदेव	१७, ५८, १६५	राजशेखर	२८७
सोमकीर्ति	३४, ३५, ४७, १७३	जयगम	२८७
सोमप्रभसूरि	६६	पफीनि	२८७
सोमरत्न	६५	प्रवरसेन	२८७
		विंगल	२८७
		गोविंद	२८७
		दृष्टो	२८७
		भामह	३८७
		भर्षि	२८७

कुल-वंश-जाति आदि की सूची

अग्रवाल-६२, ६७, ११७, १२२, १३०, १५७, १७३, २०५

गोयल	६०, ८२, ८५, १३५
गर्ग	११६, १३७, १४८, १५६, १६०
वामल	६७
सिधल	८२, २३३
इश्वाकु	१०५, १०६, ११४
कायस्थ	२५०
कामध	६०, १११

खण्डेलवाल—

अजमेरा	४, २८, ५५, ८४, ६४, १०७, १३८, १६३, १७०
काला	८६, २०२, २५६
कासर्लावाल	५५, ७३, ६६, २११
गगवाल	२०, ६६, १५४
गोदोका	२३७, २३८, २६१
गोधा	७२, १२६, १३०, २०२, २३८
चौधरी	१२८
चादवाड	७६
छावडा	४, १२६, १६२
टोंग्या	५६, ८८, १७७
नायक	८६
पाटणी	२, ४, ४१, ४८, ५३, १४८, २३३
पांड्या	४, १६६
पाहाड्या	६६, १०८
पाटोदी	१७५
पापडोवाल	२१६
घाकलीवाल	५६, १०४, १७५, २३८
त्रिलाला	२४५, २६४
घटनाल्या	१५
धज	४

वैद	३६
भौमा	२८
रात्रका	१७०
लुहाड्या	८७
साह	४, १५, १६, ६३, ६६, १३८, १६३, १६७
सठा	४, १६०, २८०
मोनी	४
मौगाणी	४४, ७७
साबडा	११३
गुल्लर	१३५
गोलशृ गार	७०
चालुक्य	१६१
चन्द्रश्रीष गोत्र	६५
जैसवाल	६५, १०१, १०५, ११३
तोमर	१७६, १८२
घक्कड वश	१४७
परमार	४५
पुरवाड	१३८, १८०, १६३, १६६, २६०
पद्मावतीपुरवाल	११८, १८२
वारहसेनी	२२८
माथुर	१५०
यादव	१३६
राठौह	१७५
लमेचू	५८, १७७
व्याघ्रवाल	१७, ३४, ६८, १४७
वाडवस	१४६
बोरु	६३
श्रीमाल	२१०
हुचड	१३, ४३, ५७, २४५

‘आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर, की ‘ग्रन्थ सूची’ के सम्बन्ध में कुछ पत्र पत्रिकाओं एवं विद्वानों के विचार

१. नोकनाथी (साप्ताहिक जयपुर)— इस सूची के प्रकाशन से देश के पुरातत्वान्वेषी विद्वानों और साहित्य-कारों का ध्यान इस ‘भण्डार’ की ओर आकर्षित होगा। उस श्रम के लिये जो सम्पादक ने इस सूची को प्रस्तुत करने में उठाया है, हिन्दी जगत् उनका सम्मान ही करेगा। हम आशा करते हैं कि विद्वान् इस शास्त्र भण्डार की ओर आकर्षित होंगे और उनके अन्वेषण कार्य के परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति के कुछ अमूल्य रत्न दुनियां के सामने प्रगट होंगे। ऐसे प्रयत्न में सहयोग लेने के लिये ही इस ग्रन्थ सूची का उपयोग है। आमेर शास्त्र भण्डार के साथ ही इसमें श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहा-वीरजी शास्त्र भण्डार चान्दनगांव (जयपुर) की पूरी सूची दी गयी है जो इस पुस्तक की उपयोगिता को द्विगुणित बना लेती है।
२. वीरवाणी (जयपुर) सूची को प्रकाशित कर क्षेत्र के मन्त्री महोदय ने एक अनुकरणीय कार्य किया है। इसके प्रकाशन के लिये हम क्षेत्र की प्रबन्धक समिति के मन्त्री महोदय को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते कि ऐसे साहित्योद्धार के कार्यों की ओर उनकी अभिरुचि और प्रवृत्ति हुई है।
३. ज्ञानोदय (बनारस)— प्रस्तुत सूची शोध विषयक कार्य करने वाले विद्वानों के लिये बहुत ही उपयोगी है। अति प्रसन्नता की बात है कि आमेर ग्रन्थ भण्डार के ग्रन्थों की प्रशस्ति भी निकट भविष्य में प्रकाशित होगी। सूची संप्रहणीय है।
४. जैन सदेश (आगरा)— पुस्तक साहित्य सेवियों और अनुसंधान कर्त्ताओं के बड़े काम की है। इस उपयोगी प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी को साधुवाद है। विद्वान सम्पादक ने इसमें जो पारश्रम किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।
५. खण्डे बाल जैन दिते-छु। इन्दौर — यह बहुत बड़ा और सच्चा सेवा कार्य है जिसे महावीर क्षेत्र कमेटी ने अपने हाथ में लिया है।
६. जैन जगत् (वर्धा)— इस प्रशस्त कार्य के लिये क्षेत्र के कार्यकर्त्ता और सम्पादक विद्वान् धन्यवा-दाह हैं।
७. जैन-मंत्र (सूरन)— इनकी सूची बनने की आवश्यकता थी अतः यह कार्य श्री खिन्दूकाजी ने महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से उठा लिया है। मंदिर के शास्त्र भण्डारों के लिये अवश्य मंगाइये। साहित्य खोजी विद्वानों को तो अवश्य मंगाना चाहिये।
८. अनेकान्त (देहली)— महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से साहित्य प्रकाशन का यह कार्य अभिनन्द-नीय है। पुस्तक अन्वेषक विद्वानों के बड़े काम की है।

६. बीर—(देहली)— सूची के सम्पादक का प्रयत्न सराहनीय है जिन्होंने प्रयत्न और परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों को जनता के सामने उपस्थित किया। आशा है शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से साहित्य एवं इतिहास प्रेमी विद्वानों को अनुसंधान में काफी सहायता मिलेगी। विद्वानों को ऐसी पुस्तकों की सूची अवश्य देखना चाहिये।

१०. जैन गजट (अंग्रेज) लखनऊ)—The Mahavir Kshetra Committee Jaipur deserves congratulations on publication a catalogue of the ancient manuscripts as old as 1334.

संवत् १३३४ तक के प्राचीन प्रतिलिपि वाले ग्रन्थों की सूची प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी धन्यवाद की पात्र है।

११ डाक्टर ए अन उपाध्याय कोल्हापर, लिखते हैं—By bringing to light the valuable contents of the Amer Bhandar you have highly obliged the students of India literature and those of Jain literature in particular. It is a highly useful catalogue. It is necessary that wide publicity should be given to the contents of the Amer Bhandar and I shall do my best in that direction.

आमेर शास्त्र भण्डार के बहुमूल्य ग्रन्थों को प्रकाश में लाकर आपने भारतीय साहित्यिकों तथा विशेषतः जैन साहित्यसेवियों के लिये बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ सूची बहुत उपयोगी है। आमेर शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों पर विस्तृत प्रकाश डालना आवश्यक है और मैं भी इस दिशा में सभी प्रयत्न करने के लिये तैयार रहूंगा।

१२ प्रो० रामसिंह तोमर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लिखते हैं—भण्डारों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री है। इस सामग्री से आपने इस ग्रन्थ द्वारा प्राच्यविद्या अनुसन्धान में रुचि रखने वाले जगत का परिचय कराया है। इसके लिये आप बधाई पात्र हैं। आपने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी।

१३. श्रीदलसुध माणगिया जैन कलचरल रिसर्च सोसाइटी (बनारस)—आपने संगोधन विभागकी स्थापना करके अत्युत्तम कार्य किया है। ऐसी सूचिया ही आगे जाकर साहित्य के इतिहास को लिखने में बहुत काम की मिद्ध होती है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हू।

१४ श्री अणारचन्द्र नी नाइटा (बीकानेर)—आपने इस उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर वि० समाज में अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। प्रशस्ति संग्रह छप रही हैं यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई। आप अनुसंधान विभाग को जारी रख जयपुर के समस्त भण्डारों का निरीक्षण करवा कर सूची पत्र प्रकाशित कीजिए एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाइये।

१५ श्रीयुत प्रकाशचन्द्रनी जैन व्यवस्थापक पन्नालाल सरस्वती भवन (व्यावर) आपका इस दिशा में यह महान् प्रयत्न स्तुत्य है। इस सूची से साहित्य प्रसार में खासी सहायता प्राप्त होगी।

